काल करे सो आज कर

जैसे कोई मनुष्य वनमें बेधड़क फूल तोड़ रहा हो और उसी समय कोई हिंसक जानवर उसपर आक्रमण कर दे वैसे ही विषयभोगोंमें लगे हुए मनुष्यको, उसकी कामना पूरी होनेके पहले ही मौत अचानक आकर दबोच डालती है। जिस कामको कल करना हो उसे आज ही करो और जिसे दूसरे पहर करना हो उसे इसी पहर कर डालो, क्योंकि मृत्यु तुम्हारा काम पूरा हुआ या नहीं, इसकी बाट नहीं देखती। कोई नहीं जानता कि किस समय किसकी मृत्यु होगी। कार्य पूरा होनेके पहले ही मौत आ जाती है, अतएव जो कुछ करना हो उसे आज ही कर डालो। बुढ़ापेकी प्रतीक्षा न करके जवानीमें ही धर्मका आचरण करो। धर्म करनेसे दोनों लोकोंमें सुख मिलता है। मनुष्य मोहके वश होकर, उचित-अनुचित सब तरहके काम करके, स्त्री और पुत्रोंको सन्तुष्ट रखता है; किन्तु जैसे सोये हुए बाघको नदी अपने प्रवाहमें बहा ले जाती है और जैसे भेड़िया भेड़को ले भागता है वैसे ही मृत्यु स्त्री-पुत्र आदिसे सम्पन्न मनुष्यको सहसा उठा ले जाती है। 'यह काम हो गया, अब यह करना है और यह काम अधूरा पड़ा है' इस प्रकारकी चिन्तामें पड़े हुए मनुष्यपर मृत्युका आक्रमण अचानक हो जाता है। काल किसी कामके पूरे होने और उसका फल मिलनेकी प्रतीक्षा नहीं करता। खेत, दूकान और घरके कामोंमें लगे हुए दुर्बल, बलवान्, बुद्धिमान्, शूर-वीर, मूर्ख और पण्डित, किसीको काल नहीं छोड़ता। जब मरना निश्चित है तब धन, परिवार, प्रतिष्ठा और स्त्री-पुत्रकी इच्छा क्यों करते हो? इस शरीरमें ही स्थित परमात्माका ही ध्यान करो! (महाभारत)

[illegible]त्य और सांतपन और पराक चांद्रायण और ब्रह्मकूर्च इत्यादि हे होरजो व्रतहैं सो [illegible]आदिके अंतर्गत क्या मध्य विषे हिहोणेंते ॥ इत्थे जो कृच्छ्र शब्द [illegible] द्विजादिशब्द [illegible]से एक द्विज शब्द ब्राह्मणवर्णविषे है और ब्राह्मणक्षत्रि वैश्य तिनांवर्णांविषे भी [illegible] कृच्छ्रशब्द सामान्यकरकेव्रत मात्रविषे किहाहै और विशेषकरके प्राजापत्यविषे कहा [illegible]णिका असा वचनहै जो दूसरे पदतें रहित केवलकृच्छ्रहै सो प्राजापत्यका हि [illegible] शब्दके साथ हे जेसे पर्णकृच्छ्र [illegible] तिस व्रतका वाचकहै इसके [illegible] अगे कहांगे ॥ किंचोति कुछक होर [illegible]विषे जैसे हथकीयां [illegible] और [illegible] और पंच इंद्रि इत्यादिक [illegible] की गिणती [illegible] करणे वाले प्रसंग विषे गिणतीके [illegible] हि व्रत हैं

तानितु॥ प्राजापत्य सांतपन पराकचांद्रायण ब्रह्मकूर्चाख्यानि व्रतांतराणा मेतदंतःपातित्वात् कृच्छ्रशब्दोहिद्विजादिशब्दवत्सामान्यविशेषवचनः॥ शूलपाणिस्तु निरुपपदःकृच्छ्रःप्राजापत्यापरपर्यायः। सोपपदस्तु तत्तद्वा चक इत्याह एतल्लक्षणानि भेदाश्चवक्ष्यंते किंच कविसंप्रदाये करांगुलि महाकाव्यव्रतपांडुसुतेंद्रियमित्यादिपंचसंख्याबोधकप्रस्तावे गणनात्पं चैव व्रतानिभवंति तानि एकभक्तनक्तायाचितोपवासनिषेधपालनरूपा णिज्ञेयानि सर्वेषां तदंतर्गतत्वात् ॥ अथादौकृच्छ्रादिव्रतप्रत्याम्नायाद्युप योगितया मानपरिभाषालिख्यते। तथाचयाज्ञवल्क्यः। जालसूर्यमरीचि स्थंत्रसरेणुरजः स्मृतम् तेऽष्टौलिक्षास्तुतास्तिस्रोराजसर्षपउच्यते १

[illegible]सी दिन विषे एक वार भोजन करणा १ और नक्त भोजन २ और अयाचित भोजन ३ और उपवास ४ क्या कुछनां भक्षण करणा और निषेध का पालना ५ जैसे श्रावण मा सविषे शाककों त्यागे असे जानणे॥ होर संपूर्ण व्रतांकों तिनांकेहि मध्यविषे प्राप्तहोणेंते ॥ अथे ति इसतें उपरांत आदविषें कृच्छ्र आदिव्रतकेहि पुण्य फलके देण वाला होर उपयादि तिसके उपकारी होणेंते मान परिभाषा लिखीदी है ॥ तांते याज्ञवल्क्याजी का वचनहै झरोखेके रस्ते की सूर्यकीआं किरणा विषे धूलिका किणका प्रतीतहै तिसका नाम त्रसरेणु कहीदाहै और त्रसरेणु अठ ८ होण तिसका नाम लिक्षाहै लिक्षा त्रय होण तो राज सर्षप कहीदाहै तिनां की गणना करीदी है १

राज सर्षप त्रय होण तिसका नाम गौर सर्षप है गौर छे होण तिसका नाम यवहै सो त्रय होंण
तिसका नाम कृष्णल होताहै क्या रत्ती कहींदीहै सो पंच होंण तिसका नाम मासा है
सोलां होण तां तिसका नाम सुवर्णहै सो चार होण वा पंच होण तिसका नामपल क्या छ
क होताहै २ जो यवमध्य कहाहै सो छोटा और बडा जो यव तिसके दूर करण वास्ते क
अब होर मतकर्के कहतेहैं स्मृत्यंतरविषे नौं मासे १ परिमाणहै जिसका ऐसा जो स्वर्ण तिस
नाम वराह है ऐसेभी जानणा ॥ दो वराह होंण तिसका नाम निष्कहै ॥ मार्कंडेय ऐसे क
है झरोखेके रस्ते सूर्यकी किरणों वि जो पर ब्रह्मस्वरूप वायुकर्के प्रतीत होताहै तिसका न

गौरस्तुतेत्रयः षट्तेयवोमध्यस्तुतेत्रयः कृष्णलःपंचतेमाषस्तेसुवर्णश्चषो
डश २ पलंसुवर्णाश्चत्वारःपंचवापिप्रकीर्तितम् यवोमध्यइतिलघुबृहद्य
वनिरासार्थम् ॥ नवमाषमितंस्वर्णंवराहइतिकीर्तितइ तिस्मृत्यंतरे। द्विवरा
हस्तुनिष्कःस्यादित्यपिबोध्यम् मार्कंडेयस्तु गवाक्षांतर्गतोयत्रवायुनासं
प्रदृश्यते परब्रह्मस्वरूपंयत्त्रसरेणुउदाहृतं १ त्रसरेण्वष्टकंलिक्षातत्त्रयंय
वउच्यते तत्त्रयंगुंजमात्रंस्याद्रक्तंवाश्वितमेववा २ पंचगुंजात्मकोमाषोरूप
कंतदुदाहृतम् रूपकाणांनवानांतुवराहइतिगद्यते स्वर्णंकृच्छ्रंवराहःस्याद्ब्र
ह्महत्यादिपावनमित्याह ॥ शब्दकल्पद्रुमेराजवल्लभः यवपरिमाणमाह
यवःपरिमाणविशेषः सतु चतुर्धान्यमानरूपइति ॥ शुभंकरः षट्सर्षपप
रिमाणात्मकश्च

त्रसरेणु कहाहै ॥ १ ॥ त्रसरेणु अठ होण तिसका नाम लिक्षाहै सो त्रय होणतो यव कहोदाहै
सो त्रय होण तिसका नाम गुंजा क्या रत्तीहै रक्त वाश्वित तुल्यहै ॥ २ ॥ पंचरत्तीयांका नाम
मासा तिसीका नाम रूपक भी कहोदाहै नवां १ रूपकांका नाम वराह कहींदाहै ॥ अब
इसको फल परतासे कहतेहैं स्वर्णमिति स्वर्ण दान और कृच्छ्र व्रत और वराह परिमाण
स्वर्णका दान करणा एह तीन ब्रह्महत्यादिपापके नाशकरणे वालेहै १ शब्दकल्पद्रुम विषे
राजवल्लभजीका वचनहै यवपरिमाण विशेष चारधान्यका तोलरूपहै ॥ अब शुभंकरका वचनहै
छे ६ सरोंका तोल जो है तिसका नाम यवपरिमान कहाहै

जैसे झरोखे करके अंदर आम होई जो सूर्य की किरण तिस विषे देखीदी जो धूलि तिस की अणु संज्ञा है ॥ चार अणु होण तिसका नाम लिख्याहै लिख्या छे६ करके एक १ सर्षप होताहै ॥ छे ६ सर्षप करके एक यव होताहै ॥ तीन यव होण तिसका नाम रत्तीहै १ ॥ एहवाक्य शब्द चंद्रिका विषे किहा है इस विषे जो परिमाण भेद है सो समर्थ और असमर्थ मनुष्यकों देख कर जोडना ॥ एह स्वर्णका उन्मान किहा है ॥ अब रजतके उन्मान कों कहता हूं ॥ दो रत्तीका नाम रूप्य माष है यह सोलां १६ होण तिसका नाम धरणहै और दश धरणहोण तिसकों पल कहतेहैं ॥ १ ॥ और चार सुवर्ण होण तिसका नाम निष्कहै

यथा जालांतर्गतेभानौयत्स्वाणुदृश्यतेरजः तैश्चतुर्भिर्भवेल्लिख्यालिख्याषड्भिश्चसर्षपः षट्सर्षपैर्यवस्त्वेकोगुंजैकातुयवैस्त्रिभिः १ इतिशब्दचंद्रिका अत्रपरिमाणभेदोहिशक्ताशक्तादिव्यवस्थयायोज्यः ॥ इतिस्वर्णोन्मानम् अथरजतोन्मानम् ॥ द्वेकृष्णलेरूप्यमाषोधरणंषोडशैवते शतमानंतुदशभिर्धरणैःपलमेवतु ॥ १ ॥ निष्कंसुवर्णाश्चत्वारः कार्षिकस्ताम्रिकःपणः २ शतमानपलशब्दौपर्यायौ ॥ निष्कंसुवर्णाश्चत्वारइति अस्यार्थमाहविज्ञानेश्वरः पूर्वोक्ताश्चत्वारःसुवर्णारौप्यानिष्कइति तथाच सुवर्णचतुष्टयसमानं रजतानिष्कमित्यर्थः ॥ ज्योतिश्शास्त्रेप्रकारांतरेणनिष्कमुक्तम् वराटकानांदशकद्वयंयत्साकाकिनीताश्चपणश्चतस्रः तेषोडशद्रम्मइहावगम्योद्रम्मैस्तथाषोडशभिश्चनिष्कइति ॥ १ ॥

और तांबेका जो पणहै सो कार्षिक कहीदाहै ॥ २ ॥ और पलका दूसरा नाम शतमान भी कहीदाहै ॥ निष्कामिति इसके अर्थनुं विज्ञानेश्वर कहता है पूर्व कहे जो चार सुवर्ण तिस चार सुवर्णके परिमाण जो रजतहै तिसका नाम रौप्यनिष्क कहिदाहै ॥ ज्योतिःशास्त्रविषे प्रकारांतर करके निष्क किहाहै वराटेति वराटकाके जो दश दो हैं क्या वीस २० वराटका होण तिसका नाम काकिनीहै चार काकिनी होण तिसका नाम पण है सोलां १६ पणका नाम द्रम्म है और सोलां द्रम्म होण तिसका नाम निष्क किहाहै और वराटिका नाम कउडीकाहै ॥ १

धेनुका मूल शूलपाणि स्मृतग्रंथविषे संग्रह कीता जो षट्त्रिंशन्मत तिसविषे किहाहे ॥ जो पुरुषधन वाले हैं तिनाकों धेनुका मूल पंचकार्षापण किहाहे जो मध्यम पुरुष हैं तिनाकों त्रय पुराणक किहाहे और पवित्र पुरुषाकों एक कार्षापण कहाहे ॥ १ ॥ किसे स्थानविषें पवित्राणां इस जगा दरिद्राणां ऐसा भी पाठहै ॥ पुराणमिति बत्ती रत्तीयांके तुल्य जो तोल होवे चांदी तिसका नाम पुराणक किहाहै और दो रत्तीके सम जो तोल है तिसका नाम रूप्य मासा किहाहै ऐसे सोलां मासे होण तिसका नाम धरण किहाहै २ जो पुराणक किहाहै सो रुप्ये विषें जानणा एहे विज्ञानेश्वरजीके ग्रंथ विषें और स्मृति बचन विषें है ॥ बत्ती रत्तीयां करके जो सम तोल रुप्यहै तिसका नाम कार्षापण किहाहै । अब भट्ट सोमेश्वरका बचन है ॥ पू

धेनुमूल्यमानेशूलपाणौ षट्त्रिंशन्मते । धेनुः पंचभिराढ्यानांमध्यानांत्रि पुराणिका कार्षापणैकमूल्याहिपवित्राणांप्रकीर्त्तितेति १ दरिद्राणामि त्यपिक्वचित्पाठः ॥ पुराणंनामद्वात्रिंशत्कृष्णलसमतोलिरूप्यम् ॥ द्वेकृष्ण लेसमधृतेविज्ञेयोरूप्यमाषकः तेषोडशस्याद्धरणंपुराणंचैवराजतमिति विज्ञानेश्वरपरधृतस्मृतेः कार्षापणोनामद्वात्रिंशत्कृष्णलपरिमितंराजतमि ति भट्टसोमेश्वरः ॥ कर्षकृत आपणो व्यवहारःकार्षापणः अन्येषामपीति दीर्घतायां कार्षापणःकार्षः षोडशमाषकः ॥तेषोडशास्याकर्षइतिकोशात् तथाच धरणपुराणकार्षापणशब्दाअन्योन्यपर्यायाभासंते यत्तु हेमाद्या दिलिखितनारदवचनम् ॥ कार्षापणोदक्षिणस्यांदिशिरौप्यः प्रवर्त्तते पणै र्निबद्धःपूर्वस्यांषोडशैवपणाःसहितिति १ तत्राप्येतावदेवराजतंबोध्यम् ॥

र्व किहा जो कर्ष तिस करके कीया जो व्यवहार है तिसका नाम कार्षापण किहाहे ॥ अन्ये षामपि इस सूत्र करके दीर्घके होयां होयां कार्ष किहाहै सोलां माषका नाम कोश विषें कर्ष है इस बचनतें ॥ तातें धरण और पुराण और कार्षापण यह जो शब्द तोल वाचक हैं सो आपस विषें पर्याय क्या एक रूप हैं जो फेर हेमाद्यादि लिखित नारद बचन है सो कहते हां दक्षिण दिशा विषें कार्षापण व्यवहार रुप्येके व्यवहार विषें है और पूर्व दिशा विषें पणां करके व्यवहार विषें जानणा सो फेर पण सोलां जानणें ॥ १ ॥ तिस बचन विषें भी इतनाहिपरिमाणक (राजत) है क्या पूर्वोक रजतका भी इतनाहि परिमाण है ॥

अब प्रायश्चित्तेंदुशेखर विषें कहते हैं गुंजेति गुंजा क्या रत्तीके प्रमाण है कृष्णल और पंच कृष्णल क्या पंच रत्ती प्रमाण स्वर्णका मासा जानणा इस जगा ८ चावलके परिमाणकी रत्ती जानणी ॥ और अक्षशब्द कर्के सुवर्ण शब्द कर्के और कर्ष शब्द कर्के और निष्क शब्द कर्के एक हि अर्थ कहाहै क्या सोलां १६ मासयांका हि नाम है ॥ और चार ४ सुवर्ण का नाम पल है और दश १० पल का नाम धरण किहाहै ॥ अब मनुस्मृति विषे कहतेहैं निष्क जो शब्द है सो एकसौ अठ १०८ जो सुवर्ण तोल कर्के है तिस विषें और छातीके भूषण विषें और छटांकविषें और मोहरविषे किहाहै यह अमरका वाक्य है । और राजत जो पुराणहै तिसीका नाम धरण कहीदा है और दश १० धरणका नाम राजतहै और इसीका

प्रायश्चित्तेंदुशेखरे। गुंजापरिमितकृष्णलपंचकंस्वर्णमाषः। षोडशमाषा अक्षशब्देन सुवर्णशब्देन कर्षशब्देन निष्कशब्देन प्रोच्यंते सुवर्णाश्चत्वारः पलम् दशपलानिधरणमिति। मनुस्मृतौ। साष्टेशतेसुवर्णानांहेम्न्युरोभूषणेपलेदीनारेपिचानिष्कोऽस्त्रीत्यमरः राजतःपुराणोधरणइत्युच्यते । दशभिर्धरणैराजतंशतमानमित्युच्यते तदेवराजतंपलमप्युच्यत इति पलशतं तुला तुलाविंशतिकंभारआचितोदशभाराःस एव शाकट इत्युच्यते। मूल्याध्यायेकात्यायनः ॥ द्वात्रिंशत्पणिकागावश्चतुःकार्षापणोऽवरः। वृषेषट्कार्षापणका अष्टावनडुहिस्मृताः दशकार्षापणाधेनुरश्वेपंचदशैवत्विति १ ॥

दूसरा नाम शतमान भी है सोइ राजत पलभी कहीदाहै ॥ और पल १००होवें तिसका नाम तुला है और वीस २० तुलाका भार होताहै और दस १० भारका आचित होवा है तिसीका नाम शाकट भी जानणा ॥ अब मूल्याध्यायविषें कात्यायनजीका वचन है जिसमें गोदानका प्रत्याम्नाय दिखाया है बत्तीस ३२ पणिकके दान कर्के एक गोदान होताहै और इसीतरां छोटे वच्छेके स्थान चार ४ कार्षापण दान किहा है और वलद विषे छे ६ कार्षापण दान किहा है और गाडीवाले वलद विषें अठ ८ कार्षापण दान किहा है और वच्छेके साथ जो गौ है तिस विषें दश १० कार्षापण दान कहा है और घोडें विषे पंदरां १५ कार्षापण दान कहा है १ ॥

एह जो मूल्यविषें भेदहैं तिनांकी मर्य्यादा समर्थ और असमर्थ पुरुषकों देखकर्के कहणी ॥ अब व्रतार्कविषें अन्नका मान भविष्य पुराणके वचनसें कहतेहां पलोंनि दो २ छटांकका नाम प्रसृतहै और दो २ प्रसृतका कुडव होता है और चार ४ कुडव का प्रस्थ होता है और चार ४ प्रस्थका आढक होताहै ॥ १ ॥ और चार ४ आढकका बुद्धिमानोंने द्रोण किहाहै और दो २ द्रोणका कुंभ किहा है और इसी का दूसरा नाम सूर्प भी है ॥ २ ॥ पल और कुडव और प्रस्थ आढक और द्रोण एह संज्ञा धान्यमान विषें क्रम कर्के चार चार ४ गुणा अधिक जानणी ॥ ३ ॥ और सोलां १६ द्रोणकी खारी कही है और वीस २० खारीका कुंभ होता है और दश १० कुंभ का वाह होताहै ऐसें धान्यकी संख्या कथन कीतीहै ॥ ४ ॥

एतेषांचमूल्यपक्षाणांशक्ताशक्तभेदेनव्यवस्था। अथव्रतार्के धान्यमानं। भविष्ये पलद्वयंतुप्रसृतंद्विगुणंकुडवंस्मृतं चतुर्भिःकुडवैःप्रस्थःप्रस्थाश्चत्वार-आढकाः १ आढकैस्तैश्चतुर्भिश्चद्रोणस्तुकथितोबुधैः कुंभोद्रोणद्वयंसूर्प्पः खारीद्रोणास्तुषोडश २ द्रोणद्वयस्यैव सूर्प्पइतिसंज्ञा। पलंचकुडवःप्रस्थआढकोद्रोणएवच धान्यमानेषुबोद्धव्याःक्रमशोऽमीचतुर्गुणाः ३ द्रोणैःषोडशभिःखारीविंशत्याकुंभउच्यते कुंभैस्तुदशभिर्वाहोधान्यसंख्याप्रकीर्तिता ४ विंशत्येत्यत्रापिद्रोणैरितिसंबध्यते तथाच कुंभोद्रोणद्वयमितिपक्षाद्विंशतिद्रोणमितः कुंभइतिपक्षांतरम् एतेषांन्यूनाधिकपक्षयोः परिमानांतरमुक्तंपराशरेण। पुस्तकांतरेतुश्लोकद्वयमुपलभ्यते पादोनगद्यानकतुल्यटंकैर्द्विसप्त ७२ तुल्यैःकथितोऽत्रसेरः। मणाभिधानंखयुगै ४० श्चसेरैर्धान्यादितौल्येषुतुरुष्कसंज्ञा १ द्व्यंकेंदु १९२ सख्यैर्घटकैश्चसेरस्तैःपंचभिःस्याद्धटिकाचताभिः मणोऽष्टभिस्त्वालमगीरशाहकृतात्रसंज्ञानिजराज्यपूर्षु २

इस विषें विंशति द्रोणकर्के कुंभ संख्या ग्रहण कीती है तिसतें (कुंभोद्रोणद्वयं) इस पक्षमें वीस २० द्रोण कर्के कुंभ किहा है एह दूसरा भेद जानणा ॥ इनांविषें न्यून और अधिक जो पक्षहैं तिनांविषें परिमाणका भेद पराशरने किहाहै ॥ इसमें औरभी दो २ श्लोक देखीदेहैं पादोन जो गद्यानक क्या १६ रत्तीयां इनके तुल्य जो टंक क्या परिमाण विशेष तिनां ७२ वहत्तरी कर्के १ सेर होता है और ४० चाली सेर मण होता है एह धान्यादितोल विषें तुरकोंकी कीतीहोई संज्ञाहै ॥ १ ॥ अब और मत कहते हैं घटक नाम ४२ रत्तीयां का है और १९२ एकसउ बानवें घटकां कर्के १ सेर होता है और पांच ५ सेरकी १ धड़ी होती है और ८ अठ धड़ी का १ मण होता है एह आलम गीरशाहकी मान परिभाषा अपने राज्य मे नगरोंके लिए बनाई होई जानणी ॥ २ ॥

पराशरजीने वेद और वेदांगोंके जाननेवाले और धर्म शास्त्रके पालक जो ब्राह्मण तिनोंने बाई २२प्रस्थका द्रोण किहाहै दो२ प्रस्थद्रोण तिसका नाम आढक किहाहै ॥ १ ॥यह जो पूर्वोक्त न्यून और अधिकपक्षहै तिनांका ग्रहण पुरुषांकी शक्ति और हिमालयादि देश और वसंत ऋतु आदि समयको देख करके किहाहै ॥ विष्णु धर्म्मोत्तरविषेभी किहाहै कि किसे जगा मान करके व्यवहार और किसे जगा उन्मान करके व्यवहार किसे जगा परिमाण करके किसे जगा संख्या करके किसेजगा समनाकरके व्यवहारहोताहै ॥ १ ॥ इसको स्पष्टकरके कहतेहैं ॥ अंगुलाद्यमिति २ ॥ अब शब्दकल्प द्रुमविषे कहतेहैं अठमुष्टि अन्नहोवे तिसका नाम कुंचिहै अठ कुंचि होवे तिसका नाम पुष्कलहै इति ॥ और कोई २॥ मुष्टि मानकरे जो अन्न है तिसको अन्नमात्र कह

परशरमतेन वेदवेदांगाविद्विप्रैर्धर्मशास्त्रानुपालकैः प्रस्थाद्वाविंशतिर्द्रोणः स्मृतोद्विप्रस्थआढकः । १ । इत्येषांच न्यूनाधिकपक्षाणां शक्तिदेशकालाद्य पेक्षया व्यवस्थाज्ञेया । विष्णुधर्म्मोत्तरे । क्वचित्संख्याक्वचिन्मानमुन्मान परिमाणकम् ॥ समाहारः क्वचिच्चेष्टोव्यवहारायताद्विदाम् ॥ १ ॥ अंगुलाद्यं स्मृतंमानमुन्मानंतुतुलास्मृता परिमाणंपात्रमानंसंख्यैषाद्याद्दिसंज्ञिका २ । शब्दकल्पद्रुमेतु ॥ अष्टमुष्टिर्भवेत्कुंचिःकुंचयोष्टौचपुष्कलइति ॥ सार्द्धमुष्टि द्वयमितमन्नमन्नमात्रमुच्यते इतिकेचित् । अथ मानवीयप्राजापत्यलक्षणो पयोगितयादौ याज्ञवल्क्यीयपादकृच्छ्रमुच्यते ॥ एकभक्तेननक्तेनतथैवाया चितेनच उपवासेनचैवायंपादकृच्छ्रःप्रकीर्त्तितः ॥ १ ॥ अत्रच ग्राससंख्या नियमः पराशरेणदर्शितः । सायंतुद्वादशग्रासाः प्रातर्द्वाविंशतिःस्मृताः चतुर्विंशतिरायाच्याः परंनिरशनंस्मृतम् ॥ १ ॥

तेहैं ॥ इसतें उपरंतमानवीय जो प्राजापत्यलक्षण तिसका उपकारी होणेतें आदविषे याज्ञवल्क्य श्लोक जो पाद कृच्छ्र सो कहिदा है चार दिनका जो व्रत सो पाद कृच्छ्र किहा है सो कहताहुं एक दिन दिन विषे एक वार भोजन खाणा दूसरे दिन रात्रि विषे भोजन खाणा और तीसरे दिन याचनातें विना भोजन खाणा । और चौथे दिन उपवास करणा क्या कुछनहिखाणा ऐसे पाद कृच्छ्र किहाहै ॥ १ ॥ इसविषे ग्रासांकी संख्याका नियम पराशरजीने दखायाहै । संध्या कालविषे बारां १२ ग्रास भक्षण करे और प्रातःकालविषे बर्ता२२ ग्रास भक्षण करे और चौवी२४ ग्रास याचनातें विना भोजनमें भक्षण करे तिसते परे चौथे दिनविषे कुछ न भक्षण करे ॥ १ ॥

अब ग्रासका प्रमाण कहताहुं कुकुड़के अंडके प्रमाण कथाइसनाहि स्थूलग्रास कहाहै अथवा जो ग्रास सुख करके मुख विषे भक्षणकों प्राप्त होवे इनां दोहां २ प्रमानोका सामर्थ्यादि देख कर भेद है ॥ अब ग्रास संख्या का दूसरा भेद चतुर्विंशति २४ मतविषे किहाहै ॥ प्रातःकाल विषे १२ बारां ग्रास और संध्या कालविषे पंदरां १५ ग्रास और अयाचितविषे सोलां १६ ग्रासभक्षण करे तिसतें आगें वायु भक्षण करे अर्थात् निराहारव्रत करे । १ । यह प्रकार अतिसमर्थ पुरुषविषे जानणा ॥ अब आपस्तंब ने ॥ प्राजापत्य प्रायश्चित्तनूं चार प्रकारका विभाग करके चार पाद कृच्छ्रांकों दस्या कर ब्राह्मणादि वर्णांकी योग्यता करके मर्यादा दस्साई है ॥ त्र्यहमिति अब दिन

कुक्कुटांडप्रमाणस्तु यच्चास्यं विशेत्सुखमिति तयोश्च कल्पयोः शक्त्याद्यपेक्ष या विकल्पः ॥ ग्राससंख्यायाः प्रकारांतरं चतुर्विंशतिमते ॥ प्रातस्तु द्वादश ग्रासाः सायं पंचदशैव तु अयाचिते षोडशावष्टौ परं वै मारुताशनः इत्यतिशक्तवि षयमेतत् । आपस्तंबेन तु । प्राजापत्यप्रायश्चित्तं चतुर्धा विभज्य चतुरः पाद कृच्छ्रान्कृत्वा वर्णानुरूपेण व्यवस्था दर्शिता ॥ त्र्यहं निरशनं पादः पादश्चा याचितं त्र्यहम् सायं त्र्यहं तथा पादः पादः प्रातस्तथा त्र्यहम् ॥ १ ॥ प्रातः पादं चरेच्छूद्रः सायं वैश्यस्य दापयेत् अयाचितं तु राजन्ये निरन्नं ब्राह्मणे स्मृत मिति ॥ २ ॥

कुछ न खावे एक पाद कहा है और त्रय दिन मंगणेते विना भोजन करणा एभी पादहै और त्रयदिन संध्या काल में भोजन करणा एक एभी पादहै और त्रयदिन प्रातःकाल विषे भोजन करणा इह चार प्रकारके पाद कहेहैं ॥ १ ॥ अब इनकों वर्णांके क्रम करके कहतेहां शूद्रवर्ण प्रातः काल के पादकों करे और वैश्य संध्या कालके पादकों करे और क्षत्री अयाचित पादकों करे ॥ और ब्राह्मण निराहार पादको करे यथा कुछ न भक्षण करे ॥ २ ॥

यदेति जेकर तु पुनः अमाणेतें विना त्रय दिन भोजन करे और त्रय दिन उपवास करे तो अर्द्ध कृच्छ्र व्रत होताहै ॥ और सायं कालके दिन त्रय तें विना अगले त्रय त्रय दिनों विषे जो अनुष्ठान करणा तिसका नाम पादोन कृच्छ्र जानणा । इसमे वचन कहते हैं सायमिति एह तिसी आपस्तंब ऋषि करके कथन होणेते । और अर्द्ध कृच्छ्रका दूसरा भेदभी आपस्तंबने दखाया है एक दिन संध्या काल विषे भोजन करे और एक दिन प्रातः काल विषे और दो दिन अयाचित क्या कहणेतें बिना कोई पुरुष भोजन ले आवे तो भक्षण करे और दो दिन कुछ न भक्षण करे सो दूसरा भेदवाला कृच्छ्रार्द्ध कहाहै १ अबकुकुटांडप्रमाण ग्रासविषे शंकाहै(प्रश्न)

यदात्वयाचितोपवासात्मकत्र्यहद्वयानुष्ठानं तदार्द्धकृच्छ्रः सायंव्यतिरिक्तापरत्र्यहानुष्ठानंतुपादोनमितिविज्ञेयम् । सायंप्रातर्विनार्द्धस्यात्पादोनंनक्तवर्जितमितितेनोक्तत्वात् । अर्द्धकृच्छ्रस्यप्रकारांतरमपि तेनैव दर्शितम् । सायंप्रातस्तथैकैकंदिनद्वयमयाचितम् दिनद्वयंचनाश्नीयात्कृच्छ्रार्द्धंतद्विधीयते १ नन्वार्द्रामलकाम्रफलादीनां ग्रासोपमानतासंभवे किमर्थं मुनिभिः कुकुटमयूरांडीयवीभत्सोपमानं ग्रासस्य स्वीकृतमिति चेदेवंप्रतिभाति क्रमशः प्रवर्द्धमानानांफलानामुत्पत्तिसमकालग्रासाकारभाकुकुटांडाद्यपेक्षयोपमानता न युक्ता ॥

हरे जो आंवले और अंबयों लेकर फल हैं तिनांकों ग्रासकी उपमा देणे योग्यथी किस कारण वास्ते मुनियांने कुकुड और मोरके आंडदेकी निंदित उपमा दित्तीहै ग्रासके ग्रहण करण विषे (उत्तर) तांतें ऐसे जाणीदाहै कि फल जो हैं सो क्रम करके वृद्धिकों प्राप्त होते हैं और कुकुडके आंडेको उत्पत्तिके समकालहि स्थूल होणेतें ग्रासकी उपमा बण सकती है फलांकों वडा छोटा होणेतें उपमा विषे योग्यता नाहि है एह तात्पर्य्य होवेगा आगे विचार बुद्धि मान् करें ॥

किंनु भक्ष्यत्व करके गिणे जो वनके कुक्कुड और मोर तिनांके अंडेयोंकी न्याईं ग्रासकी उपमाहै सो ग्लानिकों नहि प्राप्त करती ॥ जैसे भगिनी शब्द और भगवती शब्द और शिवालिंग आदि शब्द और गोधूम आदि शब्द लज्जादिके देणेवाले भी हैं तथापि जगत्‌ने प्रसिद्ध होणे कर्के लज्जाकों नहि देते जैसे भगिनी उसको कहते हैं कि जिसको भग क्या योनिहोवे इस अर्थसे लज्जा आउतीहै परंतु कोइं नहि करता तैसे कुक्कुटांडादिकी तुल्यता दिखाणेतें बीभत्सा नहि करणेयोग्य ॥ अब प्राजापत्य व्रत मनुजीनेभी कहाहै त्र्यहमिति त्र्यदिन प्रातःकाल विषे भोजन खावे और त्रय दिन सायंकाल और त्र्यदिन मांगणेतें विना क्या कोइं पुरुष अन्न

किंतुभक्ष्यत्वेन गणितानावनकुक्कुटमयूरादीनामंडस्य ग्रासोपमानता भगिनीभगवतीशिवालिंगादिगोधूमादिशब्दवन्नाश्लीलतामावहतीतिसर्वमनवद्यम् ॥ अथप्राजापत्यं । मनौ । त्र्यहंप्रातस्त्र्यहंसायंत्र्यहमद्यादयाचितम् त्र्यहंपरंचनाश्णीयात्प्राजापत्यंचरेद्द्विजः १ याज्ञवल्क्यः ॥ यथाकथंचित् त्रिगुणः प्राजापत्योयमुच्यते ॥ देवलः ॥ त्रिदिनंचदिवाश्णीयात्त्रिदिनंरात्रिभोजनम् अयाचितंस्यात्त्रिदिनंनिराहारोदिनत्रयम् १ कृच्छ्रमेतद्विजानीयाद्गोदानंगव्यभक्षणम् ब्रह्महत्यादिपापानामेतत्कृच्छ्रंविशोधनम् २ ॥

देजावे तां भक्षण करे और त्रय दिन कुछ न भक्षण करे ऐसा जो प्राजापत्य तिसकों ब्राह्मणादि वर्ण करें ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्यजीका वचन है जिसकिसे उपाय कर्के लघु कृच्छ्र लेकर त्रिगुण होवे तां प्राजापत्य कृच्छ्र किहाहै ॥ अब देवलजीका वचन है त्रीति त्र्यदिन दिन विषे अन्न भक्षण करे और त्रय दिन रात्रि विषे भोजन करें और त्रय दिन अयाचित भोजन करे और त्रय दिन निराहार करे ॥ १ ॥ तो इसकों कृच्छ्र जाने और पीछे पंचगव्य भक्षण कर्के गोदान करे एह ब्रह्महत्यादि पापांके दूर करणे वाला कृच्छ्र है ॥ २ ॥

इस विषे जो निवृत्तिवास्ते ब्रह्महत्या शब्द कहाहै सो आतिदेशिक ब्रह्महत्याके दूरकरणे वास्ते है आतिदेशिक हत्या क्या है जैसे ब्राह्मणकी निंदा और अधीत विद्याका विसारदेणा एह ब्रह्म हत्याके तुल्य है और पारिभाषिक हत्या क्या है जैसे गुरां विषे द्रोह करण वालेको ब्रह्महत्या का प्रायश्चित देणा और रहस्यानुष्ठानहत्या रहस्याऽनुष्ठान प्रकरण विषे कहीहै तिस हत्याकी निवृत्ति विषे प्राजापत्यका विधानहै क्योंकि यथार्थहत्या विषे प्रायश्चित्त कों अधिकहोणेतें ॥ और निराहार जो कहाहै सो उपवास जानणा केवल भोजनका निषेध नहि है तिसका स्वरूप दिखातेहैं उपेति दोषांतें रहितकों और गुणांकर्के युक्त होकर्के संपूर्ण विषयभोगतें वर्जितहोणेका नाम उपवासकहाहै ॥एह होरस्मृतिविषे लक्षणवाला जानणा ॥ १ ॥और जैसे कैसे इत्यादिवचन की व्याख्या ऋषियोंनें कहीहै सो कहतेहैं अयमिति एही पादकृच्छ्र जिसकिसे उपायकर्के दंडका

अत्र ब्रह्महत्याऽऽतिदेशिकपारिभाषिकरहस्यानुष्ठानादिविषया बोध्या।तात्त्विकायां प्रायश्चित्ताधिक्यश्रवणात्। निराहारोऽत्रोपवासएव नतु भोजन निवृत्तिमात्रम्। सच उपारतस्यदोषेभ्योयस्तुवासोगुणैःसह उपवासःसविज्ञेयःसर्वभोगविवर्जितइति स्मृत्यन्तरलक्षणोबोध्यः १ यथाकथंचिदित्यादिव्याख्यातमभियुक्तैः ॥ अयमेवपादकृच्छ्रोयथाकथंचिद्दंडकालितवदावृत्त्या स्वस्थानविवृद्ध्यावाज्ञेयः ॥ अत्राप्यानुलोम्येन प्रातिलोम्येन वा तथा वक्ष्यमाणजपादियुक्तं तद्रहितंवात्रिरभ्यस्तः प्राजापत्यंविधीयते ॥ तत्र दंडकालितवदावृत्तिपक्षोवशिष्ठेनदर्शितः। अहः प्रातरहर्नक्तमहरेकमयाचितम् अहःपराकंतत्रैकमेवंचतुरहौपरौ १ अनुग्रहार्थंविप्राणांमनुर्धर्मभृतांवरः बालवृद्धातुरेष्वेवं शिशुकृच्छ्रमुवाचहेति २ ॥

लितकी न्याई आवृत्तिकर्के अथवा स्वस्थानकी विवृद्धिकर्के जानणा ॥ इसविषे भी रात्रि और दिन ऐसे अनुलोम और प्रतिलोमकर्के जानणा ॥ और तांने आगे कहणे जो जप आदिक तिनांकर्के युक्त वा रहित त्रयवार अभ्यासकिया जो लघु कृच्छ्रव्रत सो प्राजापत्यकहाहै एह अर्थ है तत्रेति तिसविषे दंडकालितवत् जो आवृत्तिपक्षहै सो वशिष्ठजीनें दखाया है एकदिनप्रातःकाल और एक दिन संध्याकाल विषे और एकदिन अयाचित और एकदिन पराक एह चारदिनएक वार होए ऐसेंहि दो२वार चारदिन फेर करणे ॥ १ ॥ जैसे दंडेकर्के इकठियां गौयांलेजाईदीयां हैं और लेआवीदीयां हैं इसतरां एह ब्राह्मणांके उपर अनुग्रह करणवास्ते धर्म धारणवालयां विषे श्रेष्ठ जो मनुजीहैं सो बालक और वृद्ध और आतुर एनां विषे शिशुकृच्छ्र व्रतकों कहतेभये २

अनुलोम क्रम कर्के स्वस्थान वृद्धिका अर्थ जैसे त्रय दिन प्रातः काल विषे अन्न भक्षण करणा इत्यादि मनुने दिखायाहै सो पूर्व कहदियाहै ॥ प्रातिलोम्या वृत्ति भी वशिष्ट जीने दखाईहै प्रातीति चांद्रायण पीछे जो कृच्छ्र है सो प्रातिलोम्यहै तिसव्रतकों ब्राह्मण करे और कृच्छ्र है पहले जिसके ऐसा चांद्रायण अनुलोम क्रम कर्के होताहै ॥ जद चांद्रायण है पीछे जिसके ऐसा कृच्छ्र होवे तां प्रतिलोम कर्के जानणा एह अर्थ है ॥ जप आदिकांते रहित जो पक्षहै सो स्त्री शूद्र आदियोंविषे अंगिराऋषिनें दखाहै तस्मादिति तिसका रणतें सदांहि धर्ममार्गविषें स्थित जो शूद्र तिसकों प्राप्त होकर जपहोमादितें रहित प्रायश्चित्तदेणे योग्यहै १ और जपादियोंकर्के युक्त जो पक्षहै सो शूद्रतें भिन्न ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य इन्हां

आनुलोम्येन स्वस्थानवृद्धिपक्षस्तु मनुनादार्शितः ॥ सतुप्रागभिहितः । प्रातिलोम्यावृत्तिरपि वशिष्ठेनदर्शिता ॥ प्रातिलोम्यंचरेद्विप्रःकृच्छ्रंचांद्रायणोत्तरमिति कृच्छ्रोत्तरं चांद्रायणमानुलोम्येनभवति ॥ यदातु चांद्रायणोत्तरंकृच्छ्रंक्रियते तदा प्रातिलोम्येन ज्ञेयमित्यर्थः ॥ जपादिरहितपक्षस्तु स्त्रीशूद्रादिविषयेंगिरसादार्शितः तस्माच्छूद्रंसमासाद्यसदाधर्मपदेस्थितम् प्रायश्चित्तंप्रदातव्यंजपहोमादिवर्जितमिति ॥ १ ॥ जपादियुक्तपक्षस्तु परिशेषाद्योग्यतयाच त्रैवर्णिकविषयः सच गौतमादिभिर्दार्शितः ॥ तथाचगौतमः ॥ हविष्यान्प्रातराशान् भुक्त्वा तिस्रोरात्रीर्नाश्नीयादथापरम् त्र्यहंनक्तंभुंजीत अपरंत्र्यहमुपवसास्तिष्ठेदहनिरात्रावासीतक्षिप्रकामः सत्यंवदेदनार्यैः सह न भाषेत रौरवयौधाजयेनित्यंप्रयुंजीतानुसवनमुदकोपस्पर्शनमापोहिष्ठेतितिसृभिःपवित्रवतीभिर्मार्जयेत ॥

तिन्ना वर्णां विषे योग्यता कर्के गौतमादि ऋषियांने दखायाहै ॥ तैसें गौतमजीका वचनहै ॥ प्रातःकालविषें हविष्यअन्न कणक चावल मुंगीआदि त्रयदिन भक्षण करे फेर त्रय रात्रिविषें(नाश्णीयात्)कछ्रा भोजन न करे त्रयदिन रात्रिमे खावे दिने नहि खावे और तिसके आगें किसेतें याचना न करे याचना विना मिले तां भक्षणकरे और त्रयदिन कुछ न भक्षण करे और दिनविषे खलोवे रात्रिविषे वैठा रहे क्षिप्रकामना वाला हुआ २ और सत्य वचन कहे और दुष्टांके साथ संभाषण न करे और रौरव यौधाजय जो साम हैं तिनां कों नित्य जपे और त्रयकाल स्नान करे और आचमन करे और आपोहिष्ठातें लेकर त्रय जो ऋचाहैं पवित्र तिनां कर्के पुरुष मार्जन करे तो तिसका पाप शीघ्रहिदूर होताहै ॥

और हिरण्य वर्णा इसथीं आद लेके अठां पवित्रवतियां ऋचां कर्के मार्जन करे ॥ अथेति इस तें उपरंत जलकर्के तर्पण करे तर्प्पण के मंत्रोंकों कहतेहैं नमोहमाय इत्यादि और इहां हि मंत्रोंकर्के सूर्य्य भगवान् जीका उपस्थान भी करतेहैं इस मंत्रका अर्थ वहुत है तथापि ... कोई उपयोग नहि इसकर्के कुछक दिखाइंदा हैं (अहमाय) क्या अहंकारके अभिमानी क्या प्रवर्त्तक जो शिवजी तिनके ताईं नमस्कार होवे ,कैसे शिवजी हैं (मोहमाय) मोहके स्थापक हैं अथवा नाशक हैं फेर कैसे हैं मंहमाय कामकेनाशक हैं

हिरण्यवर्णाः शुचयःपावकाइत्यष्टाभिः। अथोदकतर्पणम् नमोहमायमोह मायमंहमायधन्वने तापनाय पुनर्वसवेनमो मौञ्ज्याय ऊर्म्याय वसुविंदाय सर्ववर्णविंदायनमः पाराय महापाराय पारदाय पारयिष्णवे नमोरुद्राय पशुपतयेमहते देवायत्र्यंवकायैकचरायाधिपतये हराय शर्वायईशानाय उग्रायवज्रिणेघृणिने कपर्दिनेनमःसूर्य्यायादित्यायनमो नीलग्रीवायशिति कंठायनमःकृष्णायपिंगलायनमः ज्येष्ठायश्रेष्ठायवृद्धायेंद्रियायहरिकेशाय ऊर्द्धरेतसेनमःसत्यायपावकाय पावकवर्णायैकवर्णायकामायकामरूपिणेन मोदीप्तायदीप्तरूपिणेनमः तीक्ष्णायतीक्ष्णरूपिणेनमःसौम्यायपुरुषायम हापुरुषायनमो मध्यमपुरुषाय नमउत्तमपुरुषाय नमो ब्रह्मचारिणेनमः चंद्रललाटायनमःकृत्तिवाससेनमइति एतदेवादित्योपस्थानमेताएवा ज्याहुतयोद्वादशरात्रस्यांते चरुं श्रपयित्वा एताभ्यो देवताभ्यो जुहुयात् अग्नयेस्वाहा सोमायस्वाहाअग्नीषोमाभ्यां इंद्राग्नीभ्यां इंद्राय विश्वेभ्यो देवेभ्योब्रह्मणे प्रजापतये अग्नयेस्विष्टकृते इति

फेर कैसेहैं कि (धन्वने) त्रिपुर दैत्यके विनाश वास्ते तैसे वडे विलक्षण धनुषके धारणवाले हैं और जो तापनाय क्या तापक हैं और जो पुनर्वसु हैं इनके ताईं नमस्कार होवे इत्यादि नमोहमाय इसथीं आदलेके एनां कर्के सूर्यका उपस्थान करणा और इतनियांहि घृतकी यां आहुतियां करणीयां और वारां दिनांके अंत विषे चरुकों पका कर इनां देवतयांके ताईं आहुतियां देवे (ॐअग्नयेस्वाहा इसतें आदलेके अग्नये स्विष्टकृते इस तक) नउ ९ आहुतियां देवे १

श्रोर अंत विषे ब्राह्मणोंके ताईं भोजनदेवे ॥ कुछ श्रोर कहतेहैं तत्रेति जो पुरुष मन कर्के कीया जो पाप तिसके शीघ्राहि एक कृच्छ्र कर्के दूर करणेकी इच्छा करे तिसका नाम क्षिप्रकाम है सो क्षिप्रकामना वाला पुरुष दिन विषे खलोवे श्रोर रात्रि विषे वैठा रहे ॥ एही अर्थ विशद कर्के कहीदाहै जो एह पुरुष दिन विषे कर्माके नहि जो विरोधि कक्या खलोणे कर्के कार्य दूर न होवे तिस विषे स्थित होवे क्या खलोवे श्रोर रात्रि विषे वैठे इसी प्रकार रौरव उर योधा जय नाम कर्के जो २ सामवेदकीयां ऋचा तिनांका जप करं नमोहमाय इत्यादिकां कर्के तर्पण श्रोर सूर्यका उपस्थान श्रोर चरुका पकाणा श्रादि

अंतेब्राह्मण भोजनम्। तत्रतिष्ठेदहनि रात्रावासीतक्षिप्रकामइति अस्यार्थः यस्तुमनसोप्येनसःक्षिप्रमेकेनैवकृच्छ्रेणमुच्येयमित्येवंकामयते सक्षिप्रकामः असावहनि कर्माविरुद्धेषुकालेषु तिष्ठेद्रात्रावासीत एवंरौरवयोधाजयाख्यसामजपं नमोहमायेत्यादिभिस्तर्पणादित्योपस्थानादिकं चरुश्रपणादिकंच योगीश्वराद्यनुक्तमपि क्षिप्रकामःकुर्वीत अतश्च योगीश्वराद्युक्तप्राजापत्यद्वयस्थाने गौतमीयमनेकेतिकर्त्तव्यतासहितमेकमेवप्राजापत्यंद्रष्टव्यम् ॥ एवमन्यान्यपि स्मृत्यन्तरोक्तानि व्रतविशेषणान्यन्वेषणीयानि ॥ मार्कंडेयः एकभक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच उपवासेनचैकेनगोदानंगव्यभक्षणम् ब्रह्महत्यादिपापानामितरेषांविशोधनम् १ ॥

जो कृत्य इसनूं योगीश्वरश्रादिकर्के न कहे होयेनूं भी शीघ्रकामना वाला करे ॥ इसकारणतें योगीश्वर कर्के पापके दूर करणे वास्ते कहे जो प्राजापत्य दो २ हैं तिनां दोनोंके स्थान विषे गौतम ऋषि ने अनेक ऐसी कर्त्तव्यताके साथ एकहि प्राजापत्य दखायाहै ॥ एवमिति ऐसेहि होर भी स्मृतियांकर्के कहे जो विशेष व्रत सो [illegible] ॥ अब मार्कंडेयजीकावचनहै एक दिन एक वार भोजन करणा श्रोर दूसरे दिन संध्याकाल विषे श्रोर तीसरे दिन विषे मांगणेतें विना श्रोर चौथे दिन विषे उपवास करणा श्रोर पीछे पंचगव्यका भक्षण कर्के गोदान करणा एह व्रत संपूर्ण जो ब्रह्महत्यादिक पापहैं तिनांके दूर करणे वालाहै १ ॥

अत्र गौतमजीकावचन है एह जो प्राजापत्य कृच्छ्र है सो संपूर्णपापांको दूरकरणे वाला है तिसका स्वरूप एह है कि त्रय दिन दिनाविषे और त्रय दिन रात्रि विषे अन्न खाणा ॥ १ ॥ और त्रय दिन याचनातें विना और त्रय दिन वायुभक्षण करणा और पीछे पंचगव्यको क्या दुग्धादिकों भक्षणकर्के गोदानकरे तो अनुत्तमशुद्धि क्या जिससे उत्तम और कोई शुद्धिनहि तिसको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ अब आपस्तंब ऋषिका वचनहै त्रय दिन न संध्या कालविषे भक्षण करणा अर्थात् दिनविषे भक्षण करणा और त्रयदिन रात्रि विषे और त्रयदिन मांगणे तें विना भोजन करणा और त्रय दिन कुछ न भक्षणकरणा इति ॥ १ ॥ अत्र इसीविषे जावालि ऋषिका वचनहै प्रति

गौतमः। प्राजापत्यंकृच्छ्रमिदंसर्वपापप्रणाशनम् त्रिदिनंस्याद्दिवाभुक्तिस्त्रि दिनंरात्रिभोजनम् १ अयाचितंच त्रिदिनंत्रिदिनंवायुभक्षणम् गोदानंपंच गव्यांतेशुद्धिमाप्नोत्यनुत्तमाम् २ आपस्तंबः। त्र्यहमनाक्काशनं त्र्यहंरात्रि भोजनम् त्र्यहमयाचितव्रतस्त्र्यहंनाश्नातिकिंचनेति १ जावालिः ॥ प्रजाप तिरिदंसाक्षात्सृष्टवान्देवसन्निधौ सर्वलोकोपकारायसर्वपापापनुत्तये १ ॥ दिनत्रयंदिवाभुंक्तेतथारात्र्यांदिनत्रयम् अयाचितंस्यात्त्रिदिनंनिराहारोदि नत्रयम् २ पंचगव्यंततःपश्चाद्गौरेकाचविशोधने एवंकुर्याद्द्विजोयस्तुसर्व पापविमुक्तिमान् ३ कृच्छ्राणांनामान्याहमार्कंडेयः ॥ यवमध्यंचमंदंस्याद्य तिशिश्वोर्महद्व्रतम् महाचान्द्रमितिप्रोक्तंपंचधापरिकीर्त्तितम् ॥ १ ॥

प्रजापति जो ब्रह्मा सो साक्षात् विष्णुके समीपविषे इस प्राजापत्य व्रतको सबलोकोंके उपकार वास्ते और सबपापांके दूर करणेवास्ते रचिताभया सोकहतेहैं १ ॥ त्रय दिन दिनविषे अन्नको भक्षण करे और त्रय दिन रात्रि विषे और त्रय दिन याचनातें विना और त्रय दिन निराहार रहे २ ॥ और पीछे पंचगव्यको भक्षणकर्के एक गोदानकरे शुद्धिवास्ते इसप्रकार जो द्विजव्रतकरता है सो संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ ३ ॥ अब कृच्छ्रांके नामोंको मार्कंडेयजी कहतेहैं एक यव मध्य १ और मंद क्या पिपीलिका मध्य २ और यति महद्व्रत ३ और शिशुमहद्व्रत ४ और महा चांद्र ५ एहपंच प्रकारका चांद्रायण व्रत कहाहै ॥ १ ॥

और तैरां १३ प्रकारका कृच्छ्र व्रत कहाहै सो कहतेहां ॥ प्राजापत्य १ और तप्त कृच्छ्र २ और पराक ३ और यावक ४ और सांतपन कृच्छ्र ५ और महासांतपन ६ और औदुम्बर ७ और पर्ण कृच्छ्र ८ और फलकृच्छ्र ९ और माहेश्वर कृच्छ्र १० और ब्रह्म कृच्छ्र ११ और धान्य कृच्छ्र १२ और स्वर्णमय कृच्छ्र १३ एह तेरां प्रकारका कृच्छ्र कहाहै ॥ ३ ॥ अथेति अथक्या इसतें अनंतर याज्ञवल्क्यजी करके कही जो कृच्छ्र चांद्रायण की साधारण इति कर्त्त व्यता क्या सामान्य विधि करणेकी योग्यता एहहि है ॥ इस विषे कोईक पदार्थ पीछे दूसरे और तीसरे प्रकरण विषे कहेहैं फेर इहां प्रसंगतें कहीदेहैं। तिस विषे भी पूर्व कहा जो पाठ तिसतें भिन्न होरी ग्रंथका है सो बाहुल्यता करके जिनांपाठां विषे लोकांकी श्रद्धा है तिसके वधाणे वास्ते स्थापन कीताहै इसतें नवीन कृत्य विषे वैकल्य दोषकी संभा

प्राजापत्यंतप्तकृच्छ्रंपराकंयावकंतथा। ततःसांतपनंकृच्छ्रं महासांतपनंतथा २ औदुम्बरंचपर्णंचफलकृच्छ्रमतःपरं कृच्छ्रंमाहेश्वरंचैवब्रह्मकृच्छ्रंतथैवच धान्यंस्वर्णमयंकृच्छ्रंदशत्रिधाप्रकीर्त्तितम् ३ दशत्रिधा त्रयोदशधाइत्यर्थः अथयाज्ञवल्क्योक्ताकृच्छ्रचांद्रायणसाधारणीतिकर्तव्यता अत्रकानिचि त्पदार्थानिप्राग्द्वितीयतृतीयप्रकरणयोरभिहितान्यपि पुनरत्र प्रसंगादु च्यंते तत्रापिग्रंथांतरीयएवात्रपाठः प्रायेण प्रचरितश्रद्धधानार्थंस्थापित इति न नवीकरणवैकल्यसंभावनाविधेया। कुर्यात्त्रिषवणस्नायीकृच्छ्रंचांद्रा यणंतथा पवित्राणिजपेत्पिंडान्गायत्र्याचाभिमंत्रयेत् १ एतच्चतप्तकृच्छ्रव्य तिरेकेण। तत्रसकृत्स्नायीसमाहितइति मनुना विशेषाभिधानात्। यत्तु। पु नःस्मृत्यन्तरे। तप्तकृच्छ्रेषु अहोरात्रं त्रिषवणस्नानमभिहितम्। त्रिरन्हित्रि र्निशायांतुसवासाजलमाविशेदिति तदतिशक्तविषयम् ॥ यत्पुनर्वैशंपाय नेन द्वैकालिकंस्नानमुक्तम् स्नानंद्विकालमेवस्यात्त्रिकालंवाद्विजन्मनइति

वना नहि करणे योग्य है ॥ कुर्यादिति त्रयकाल स्नानकरता हुया कृच्छ्र चांद्रायण व्रतकों करे और पवित्र जो मंत्र हैं तिनांकों पडे और पिंड जो ग्रासहैं तिनांकों गायत्री करके अभि मंत्रण करे ॥ १ ॥ एह विधि तप्त कृच्छ्रतें भिन्न करके जानणी तिस विषे एक वार स्नान इंद्रियांकों रोक करके स्थित होया २ करे एह मनुजीकरके विशेष कहणेतें ॥ यत्त्विति जो फेर और स्मृति विषे तप्त कृच्छ्र व्रत विषे दिन विषे त्रय स्नान और रात्रि विषे भी त्रय स्नान कहेहैं सो स्मृति दिखाईहै ॥ त्रिरिति त्रय स्नान दिनविषे और त्रय स्नान रात्रिविषे सहितवस्त्रांदे जल विषे करे सो बहुत समर्थ पुरुषकेविषे जानणा। फेर जो वैशंपायन ऋषिनें दिनविषे दो काल हि स्नान कहाहै स्नानमिति ब्राह्मण आदिवर्णकों स्नान दोकाल अथवा त्रय कालकरणा चाहिए

यह विधि तिस पुरुषकों कहीहै जो दिन रात्र त्र्य कालके स्नान विषे सामर्थ्यतें रहित है ऐसे जानणे योग्यहै ॥ जो फेर गार्ग्यजीनें कहाहै कि एक वस्त्र धार कर्के स्नान करें और वस्त्रका निपीडन न करे क्या भिज्जेहोये वस्त्र कर्के युक्त होया होया भिक्षाकों मांगे और थोडाखावे और पृथिवी विषे शयन करे एह एक वस्त्रता जो कहीहै सो शंखजीने एक पक्ष विषे कहणेंते अर्थात् शंखने विकल्पकर्के एक वस्त्र धारण किहाहै तिसी के मतकर्के इसनेभी किहाहि एभी सामर्थ्य विषे जानणे योग्यहै ॥ स्नान विषे हारीत ऋषि नें विशेष किहाहै त्र्य स्नानतें पीछे शुद्धवती ऋचां कर्के स्नान करके जल विषे स्थित हो याहोया अघमर्षणकों जपे और पीछे शुद्द वस्त्रकों धारके सामवेदके विषे सोमहै देवता जिसका

तत्त्रिषवणस्नानाशक्तस्य वेदितव्यम् ॥ यत्पुनर्गार्ग्येण ॥ एकवासा श्चरेद्भैक्ष्यंस्नात्वावासोनपीडयेत् ॥ तदपिशक्तस्यैव ॥ एकवासाऽऽर्द्र वासा लघ्वाशी स्थंडिलेशयः॥इत्येकवस्त्रताया अपि शंखेन पाक्षिकत्वा भिधानात्। स्नानेचहारीतेनविशेषउक्तः॥ त्र्यवरंशुद्धवतीभिःस्नात्वाऽघमर्ष णमंतर्जले जपित्वा धौतमहतंवासःपरिधाय साम्नासौम्येनादित्यमुपतिष्ठे दिति ॥ त्र्यवरंत्रिभ्यःपरमित्यर्थः ॥ स्नानानंतरं पवित्राणिचजपेत्। पवित्राणिच अघमर्षणंदेवकृतःशुद्धवत्यस्तरत्समाइत्यादिवाशिष्ठादिप्रति- पादितानामन्यतमामर्थाविरुद्धेषु कालेषु जपेत् सावित्रीं वा ॥ सावित्रीं वाजपेन्नित्यं पवित्राणिचशक्तित इति मनुस्मरणात् ॥

तिस मंत्र कर्के सूर्य्यके उपस्थानकों करे त्र्यवर शब्दका अर्थ कहतेहैं कि त्रयते आगे जो है सो त्र्यवर किहाहै चार वार स्नान करे एह अर्थ है ॥ स्नानतें पीछे पवित्र मंत्रांकों जपे सो कहतेहां ॥ अघमर्षण मंत्र और देवकृत और शुद्धवत्यः और तरत्समा इसतें आद लेके वसिष्ठआदिकोंने कथन कीते जो मंत्र तिनांकों पढे ॥ और कर्मके नहि दूर करणे वाला जो समा तिस विषे जपे अर्थात् जिस जिस काल विषें प्रातः संध्यादिके विषें जपनें योग्य जो मंत्र है तिस विषे हि जपे अथवा सावित्रीको जपे ॥ सो मनुजी कहतेहैं गायत्री कों जपे नित्य वा कर्म करणेके वेलेमें पवित्र जो मंत्र तिनांको जपे ॥

जो फेर गोतमजीने कहाहै रौरवयोधा जय ऋचा कों जपविषे नित्यहि ग्रहण करे सो पवित्रादि इस कहणें करके हिकथन किया गया कोई फेर नियमके वास्ते नहि किहा तैसें होयां हीयां श्रुति मूलकी कल्पनाका प्रसंग होणेतें क्या ऐसी कोई श्रुति नहि जिस विषे नियम कहाहै होर श्रुतिकों मूल विषे कल्पना करणी चाहिये तां कल्पना दोषका प्रसंग होवेगा ॥ इसीकारणतें नही पठनकीया सामवेद जिसनें तिस पुरुषनें गायत्री आदक हि जपनें योग्यहै ओर जो नमो इमाय मोहमाय एह पठन करे घृत कियां आहुतियां देवे ऐसे कहाहै एभी नियम नहि जानणा क्या अवश्य करणे योग्य नहिहै किंतु महाव्याहृतियां करके ब्राह्मणक्षत्री वैश्यने तिलांका हवन करणे योग्यहै एह मनुने महा व्याहृतियांककेंभी हवनका विधान कहणेतें ॥ इसविषे घृतकरके हवन ओर दूसरे स्थान विषे तिलां करके हवन इन दोनों

यत्तु गौतमेनोक्तम् रौरवयोधाजयेनित्यंप्रयुंजीतेति तदपि पवित्रादेवोक्तम् न पुनर्नियमाय तथासति श्रुत्यंतरमूलत्वकल्पनाप्रसंगात् अतोनधीतसामवेदेन गायत्र्यादिकमेवजप्तव्यम् ॥ यदपिनमोहमाय मोहमाय इत्यादिपठित्वा एताएवाज्याहुतय इत्युक्तं तदपि न नैयमिकंकिंतु महाव्याहृतिभिर्होमास्तिलैःकार्योद्विजन्मनेति मनुनामहाव्याहृतिभिर्होमविधानात् ॥ तथाषड्विंशतिमतेप्युक्तम् ॥ जपहोमादियत्किंचित्कृच्छ्रोक्तंसंभवेनचेत् सर्वंव्याहृतिभिःकुर्याद् गायत्र्याप्रणवेनचेति १ आदिग्रहणादुदकतर्पणादित्योपस्थानादेर्ग्रहणम् ॥ अतएववैशंपायनः॥स्नात्वोपतिष्ठेदादित्यंसौररश्मिभिस्तुकृतांजलिरिति एवमन्येष्वपि पदार्थविरोधिषु विकल्प आश्रयणीयः ॥

पक्षोंते जाणीदा है कि नियम नहि किंतु विकल्पहै ॥ तैसेंहि षड्विंशति मतविषेभी कहाहै॥ जो कृच्छ्र व्रत विषे कहाहै जप होमादि तिसके करणेका संभव न होवे तां संपूर्ण व्याहृतियां करके करे अथवा गायत्रीकरके वा ओंकारकरके करे १ इस श्लोक विषे जो आदिग्रहण कीताहि तिसतें जलतर्पण ओर सूर्यके उपस्थानादिका ग्रहणहोताहै इसी कारणते वैशंपायन ऋषिका वचनहै स्नानकरणेते पीछे हथ जोडकरके सूर्य जीके मंत्रांकरके सूर्यका उपस्थान करे इति ॥ इसी प्रकार होर जो पदार्थ विरोधि हैं जैसे कहाहै व्याहृतियां करके वा गायत्री वा ओंकारकरके करे तिना पदार्थ विरोधियां विषे विकल्पहै भावें जिस किस करके कीता होया आश्रय करणे योग्यहै

और जो नाहि विरोधी तिनांविषे संपूर्ण करणे योग्य है शाखांतराधिकरण न्याय करके ॥ कर्मको संपूर्ण स्मृतियांकर्के प्रतीतहोणेतें ॥ न्यायनाम युक्तिकाहै तिसको दिखाते हैं न्यायइति जो अपणी शाखाविषे नहि कहा सो दूसरी शाखासे लेलेणा और वो अपणी शाखाका विरोधि नहि हो इत्यादिक कहाहूया जानणे योग्यहै ॥ जपकी संख्या विषे विशेष तिसी वैशंपायनने हि दिखायाहै ऋषभ मंत्र और विरजमंत्र और अघमर्षणमंत्र एनांको जपे अथवा गायत्री जो पवित्रवेदांकी मातातिसकों जपे १ ॥ एकशत१००वा अठसौ८००अथवा अष्टांते अधिक सो१०८वा इकहजार१०००जपकरे वा अधिककरे और उपांशुक्या मंत्रकों अप्रकट उच्चारणकरे और मनकर्के पितरोंका और देवतांको और मनुष्य जो सनकादि और भूतोंका तर्पणकरे तिसते उपरंत शिरकर्के नमस्कारकरे ॥ २ ॥ एह जो कृच्छ्रादि व्रतहैं जद पापांके दूर करणे वास्ते अनुष्ठान

अविरोधिषुसमुच्चयः शाखान्तराधिकरणन्यायेन ॥ कर्मणःसर्वस्मृतिप्रत्ययत्वात् ॥ न्यायस्तु यन्नाम्नातंस्वशाखायां पारक्यमविरोधियदित्यायुक्तोबोध्यः ॥ जपसंख्यायांचविशेषस्तेनैवदर्शितः ॥ ऋषभंविरजंचैवतथाचैवाघमर्षणं गायत्रींवाजपेद्देवीं पवित्रांवेदमातरम् ॥ १ ॥ शतमष्टशतंवापिसहस्रमथवापरं उपांशुमनसाचापितर्पयेत्पितृदेवताः ॥ मनुष्यांश्चवभूतानि प्रणम्यशिरसाततइति ॥ २ ॥ एतानिच कृच्छ्रादिव्रतानि यदा प्रायश्चित्तार्थमनुष्ठीयंते तदा केशादिवपनपूर्वकं परिगृहीतव्यानि। वपनाच्चव्रतंचरेदिति गौतमस्मरणात् ॥ अभ्युदयार्थेतु नैववपनम्। वशिष्ठेनाप्यत्र विशेषउक्तः। कृच्छ्राणांव्रतरूपाणां श्मश्रुकेशादिवापयेत् अक्षिरोमशिखावर्जमिति कृच्छ्राणांव्रतरूपाणां व्रतरूपाणि वपनादीन्यंगानिवक्ष्यंतइति ॥ शेषः ॥ अक्षिरोमेत्यादि कक्षोपस्थरोमोपलक्षणम् ॥ पर्षदुपदिष्टव्रतग्रहणंमुंडनादिकंच व्रतानुष्ठानदिवसात् पूर्वेद्युःसायाह्निकार्यम् ॥

करणेहोण तां केशआदिकांके मुंडनको करवाकर ग्रहणकरणे योग्यहैं(वपनाच्चव्रतंचरेत्)इस गौतमजीकेस्मरणतें ॥ और ऐश्वर्य आदिकी वृद्धिके निमित्त प्रायश्चित्तविषे मुंडन नहिकहा ॥ वशिष्ठजीनेभी इस विषे विशेष कहाहै। कृच्छ्र जो व्रतरूप हैं तिनांके ग्रहण विषे दाडी और केश आदिका मुंडन करे परंतु अक्षिरोम और शिखातें विना इति ॥ इसको स्पष्ट करतेहैं कृच्छ्रेति कृच्छ्र जो व्रत रूपहैं तिनांके व्रतरूप जो मुंडन करवाणे योग्य जो अंगहैं सो कहैं गे इतना इसजगा लगालेणा कि अक्षिरोम इत्यादि कहणकरके कच्छके और लिंगके रोमोंकाभी मुंडन न करवाये ॥ इसमे और विशेषहै पर्षदिति पर्षद् क्या सभा कर्के उपदेश कीया जो व्रतका ग्रहण और मुंडनादि व्रतके ग्रहण करण वाले दिनतें पहले दिन संध्या कालविषेकरणे योग्यहै

जैसें वशिष्ठजी कहतेहै सर्वेति संपूर्ण पापांविषे संपूर्ण व्रतांके ग्रहणकों विधिपूर्वक कहनाहां प्राय श्चित्तके करणकी इच्छाहोवाहोयां ॥ १ ॥ दिनके अंतविषे नख और रोमादिकोंकों कटाकर स्नान करे और जो स्नान कहाहै सो इसप्रकार जानणा कि प्रथम मुखकी शुद्धि वास्ते दातन करे पीछे भस्मकर्के और गोके गोहे कर्के और मृत्तिका कर्के और जल कर्के और पंचगव्या दिक जो रचेहोये हैं तिनों कर्के स्नानकरे ॥ २ ॥ अभिप्राय कहतेहैं मलेति बाह्यदेहकी शुद्धि वास्ते देहकी मल दूर करणे योग्यहै और पंचगव्यकर्केयुक्त व्रत करे एह व्रतका विशेषणहै ३ ॥ ऐसे स्नानतें पीछे पंचगव्यको पीकर्के संध्याकालविषे नगरतें बाहर नक्षत्रांके दर्शनहोयां २ व्रत ग्रहणकरणे योग्यहै और पीछे आचमनकों करके मौनधारण करे अपने पापका अंतष्करण विषे ध्यानकरता होआ मनकों क्लेशदेणेवाला वडा जो शोकहै तिसकों संपूर्णता कर्के करे४ ॥

यथाहवसिष्ठः ॥ सर्वपापेषु सर्वेषांव्रतानांविधिपूर्वकम् ग्रहणंसंप्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तेचिकीर्षिते ॥ १ ॥ दिनांतेनखरोमादीन्प्रवाप्यस्नानमाचरेत् । भस्मगोमयमृद्वारिपंचगव्यादिकल्पितैः ॥ २ ॥ मलापकर्षणंकार्य्यंबाह्य शौचोपसिद्धये दंतधावनपूर्वेणपंचगव्येनसंयुतम् ॥ ३ ॥व्रतंनिशामुखे ग्राह्यंवहिस्तारकदर्शने आचम्यांतःपरंमौनंध्यायन्दुष्कृतमात्मनः मन स्संतापनंतीव्रमुद्वहेच्छोकमंततइति ॥ ४ ॥ वहिरितिग्रामाद्वहिर्निष्क्रम्य ॥ स्त्रियाअप्येवमेवपरिग्रहःकार्य्यः ॥ केशश्मश्रुलोमनखवपनंतुनास्ति चांद्रायणादिषु ॥ एतदेव स्त्रियाः ॥ श्मश्रुकेशवपनवर्जमिति बौधायनस्म रणात् ॥ एतदेवेति मलापकर्षणाद्येव नतु केशवपनादीत्यर्थः ॥ वपनादि ष्वत्रहारीतेनविशेषउक्तः॥ राजावाराजपुत्रोवाब्राह्मणोवावहुश्रुतः केशानां वपनंकृत्वाप्रायश्चित्तंसमाचरेत् १ ॥ केशानांरक्षणार्थंहिद्विगुणंव्रतमाचरेत्

अब स्त्रियोंके व्रत विषे कुछक विलक्षणता कहतेहां स्त्रियाइति स्त्रीनेंभी ऐसेहि व्रत ग्रहण करणे योग्यहै ॥ और चांद्रायणादि व्रत विषे केश और श्मश्रु और रोम और नख एनांका कटाणा नाहि कहा ॥ वचन कहतेहैं एतादिति एतदेव इस कहने कर्के एह जानणा क्या श्मश्रु केशादिके मुंडनतें बिना जो व्रतविधि पुरुषोंकों कहीहै सोई स्त्रीकों भी कराणी चाहिए एह बौधायनजीके कथनतें ॥ इसीका अर्थ स्पष्टकर्के दिखातेहैं एतदेवेति ॥ मुंडनादिकां विषे ईहां हारीतनें विशेष कहाहै ॥ राजेति राजा अथवा राजाका पुत्र राजपुत्र इस जगा और जातिकी स्त्री विषे राजासे उत्पन्न होआ जानणा अथवा ब्राह्मण विद्वान् एह सब केशांके मुंडनकों करवाके प्रायश्चित्तकों करें ॥ १ ॥ और केशांकी रक्षावास्ते दूणे व्रतकों करें ॥ एह विचार पिच्छे भी होचुका है प्रसंगतें फेर इस जगा किहा है

दूणे व्रतके कीतयां होयां दक्षिणाभी दूणी कहीहै ॥ २ ॥ राजा आदिक जेकर प्रायश्चित्त करणे कों उद्यतहोवे तां मुंडनकों करवा कर प्रायश्चित्तकों करे अन्यथा न करे ॥ एह मुंडनादि विधि महापातकआदि दोषके होयांहींयां राजा आदिको विषे कहीहै ॥ होरणां दोषां विषे पंडित और ब्राह्मण और राजा और स्त्री एनांकों केशांका मुंडन नहि कहा और जेकर एह विद्वान् विप्र आदिक महापापीहोवें और गोहत्यारा होवे और ब्रह्मचारीका वीर्य्य स्खलित होवे तिनकों प्रायश्चित्तके करण विषे मुंडन कहाहै ॥ १ ॥ ऐसे मनुजीके स्मरणतें ॥ (प्रश्न) नन्विति गौकीहत्या करणे वाला उत्तम जो प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत तिसकों करे और पहले सहित शिखाके मुंडनकों करे और त्रयकाल स्नान करे इत्यादिक पराशर आदिकों के बचनां विषे सहित शिखाके मुंडन कहाहै ॥ १ ॥ और दूसरे स्थान विषे कहाहै कि सदा

द्विगुणेतुव्रतेचीर्णेदक्षिणाद्विगुणाभवेदिति ॥ २ ॥ राजादिर्यदाप्रायश्चित्तंकर्तुमुद्यतोभवेत्तदा वपनंकृत्वैवसमाचरेत् नान्यथेत्यर्थः ॥ एतच्च महापातकादिदोषविशेषाभिप्रायेण द्रष्टव्यम् ॥ विद्वद्विप्रनृपस्त्रीणांनेष्यतेकेशवापनम् ॥ ऋतेमहापातकिनोगोहंतुश्चावकीर्णिनइतिमनुस्मरणात् ॥ ननु)प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंगोघातीव्रतमुत्तमम् सशिखंवपनंकुर्य्यात्त्रिसंध्यमवगाहनमित्यादिपराशरादिवचने सशिखवपनं विहितम्॥ सदापर्वातिनाभाव्यं सदावद्धशिखेनहीत्यादिना निषिद्धंतदिति चेदेवंनिर्णयः ॥ अस्यनैमित्तिकत्वेन वलवत्वान्नविरोधः संभाव्यः। अत्रविशेषोद्वितीयप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥ जावालिनाप्यत्रविशेषउक्तः ॥ आरंभेसर्वकृच्छ्राणांसमाप्तौच विशेषतः॥ आज्यंनैवहिशालाग्नौजुहुयाद्व्याहृतीःपृथक् ॥ श्राद्धंकुर्य्याद्व्रतांतेतुगोगोहिरण्यादिदक्षिणाइति ॥ श्राद्धमत्रवैष्णवंवोध्यम् ॥

हि यज्ञोपवीत धारे सदाहि शिखाकों वद्ध करके रहे इस जगा मुंडनका निषेध कहाहै कैसे करणा चाहिए (उत्तर) इस विषे ऐसे निर्णय है ॥ इसपूर्वोक्त पराशरादि वचनकों नैमित्तिक होणेकरके वल वाला होणेते विरोधकी संभावना नहि करणी अर्थात् जिसमे सदा शिखा धारणी कहीहै सो नित्यहै और नित्यसे नैमित्तिक वलवान है ॥ इसविषे विशेष दूसरे प्रकरण विषे देखणे योग्यहै ॥ जावालऋषिनेंभी इसविषे विशेष कहाहै ॥ संपूर्ण कृच्छ्रव्रतांके आरंभविषे और समाप्ति विषे शालाग्निविषें क्या जिस अग्निमे सदाहि हवनहोतारहताहै तिसमे अथवा शाल वृक्षकियां समिधांकरके जो अग्नि तिसविषे भिन्नभिन्नव्याहृतीनूं पठनकरके घृतकरके हवनकरे । श्राद्धमिति व्रत के अंतविषे श्राद्धकों करे और गौ सुवर्ण आदिक दक्षिणा देवे और श्राद्ध इहां वैष्णव जानणा

विधा येत ॥ विष्णु निमित्त श्राद्धकों विधान कर्के प्रायश्चित्त करे इस वाक्य कहणे करके वैष्णव श्राद्धको हि व्रत के अंग कर्के विधान हांणेंतं ॥ यमनेभी इसविषें विशेष कहाहै पश्चात्ताप कर्के पापांतें हटरहणा और स्नान करणा इह व्रतके अंग कहेहैं और निमित्तिक जो पाप हैं तिनां संपूर्णांकों कथन करदयां रहणाएभी अंगहै इति ॥ १ ॥ अब निषेधको कहतेहां अंगांविषें बुटनामलणा और शिरधोणा और तांबूल भक्षण करणा और सुगंधि वाले तिलक आदिक जो हैं चपुनःहारवल क्या पुष्टिके देणे वाली वस्तु और प्रीतिके दणेवालि वस्तु इस संपूर्णको व्रत विषें स्थित जो पुरुषहै सो त्यागे । १ । इसतें आदलेके जो कर्तव्यताक्या कर्म सो और हिस्मृतितेंदेखणे योग्यहै ॥ निमित्तिकानामिति इसका अर्थ प्रायश्चित्तके निमित्त जो पापतिनांको दूर करणे वास्ते उच्चारण करता रहे एहहै इति इसप्रकार इसविधि कर्के व्रतको ग्रहण करके अवश्य

विधायवैष्णवंश्राद्धमित्यादिना वैष्णवश्राद्धस्यैव व्रतांगत्वेन विधानात्। यमे नाप्यत्रविशेषउक्तः। पश्चात्तापान्निवृत्तिश्चस्नानंचांगतयोदितं निमित्तिकानां सर्वेषांतथाचैवानुकीर्त्तनमिति १ तथा गात्राभ्यंगंशिरोभ्यंगंतांबूलमनुलेपनम् व्रतस्थोवर्जयेत्सर्वंयच्चान्यद्बलरागकृदिति १ ॥ एवमादिकर्त्तव्यताजातंस्मृत्यंतराद्द्रष्टव्यम्। निमित्तिकानांप्रायश्चित्तनिमित्तानांपापानामित्यर्थः एवमनेनविधिनाव्रतंगृहीत्वावश्यंपरिसमापनीयम् ॥ अन्यथातु प्रत्यवायः पूर्वंव्रतंगृहीत्वातुनाचरेत्काममोहितः जीवन्भवतिचांडालोमृतः श्वाचैवजायते इति छागलेयस्मरणात् ॥ प्रारब्धेप्रायश्चित्तादिव्रतेऽसमाप्तेपिमृतेफलमाह यमः प्रायश्चित्तमयूखे ॥ प्रायश्चित्तेव्यवसितकर्त्तायदिविपद्यते शुद्धस्तदहरेवासाविहलोकेपरत्रचेति ॥ १ ॥ अंगिराअपि ॥ यदर्थमाचरेद्धर्ममप्राप्यम्रियेतयदि ॥ सतत्पुण्यफलंप्रेत्यप्राप्नुयान्मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ त्यक्तस्यपुनर्ग्रहणार्थंप्रायश्चित्तम् ॥

समाप्त करणे योग्यहै नकरे तांदोषहै ॥ पूर्वमिति ॥ पहले व्रतको ग्रहणकर्के फेर अपणी इच्छातें हि न ग्रहण करे क्या व्रतकों न करे तां जीवता हि चांडालहै और मृतहोकर्के कुत्तेके जन्मको प्राप्तहोता है ॥ १ ॥ एह छागलेय ऋषिके स्मरणतें कहाहै ॥ प्रारंभ जिसका कीता ऐसा जो प्रायश्चित्तादि व्रत तिसके असमाप्त होयां होयां मृत्युकों प्राप्तहोवे तिसके फलको धर्मराज प्रायश्चित्त मयूख विषे कहताहै ॥ प्रायश्चित्तके करदयां होयां करणे वाला जेकर मृत होवे तां तिस दिनविषेंहि शुद्धहोजाताहै इस लोकविषे और परलोक विषेभी १ ॥ अब अंगिरस ऋषिका वचनहै जिसवास्ते धर्मको कर्त्ता है तिस धर्मके पूर्ण करणेते पहलें मृत्युकों प्राप्त होवे सो पुरुष परलोक विषें तिस धर्मके संपूर्ण फलको प्राप्त होताहै एहमनु कहता भया ॥ १ ॥ और जेकर व्रतको ग्रहण कर्के त्यागया जो व्रत तिसके फेर ग्रहण वास्ते प्रायश्चित्त है ॥

सोई प्रायश्चित्त वायुपुराणविषे कहाहै लोभादिति लोभतें वा मोहतें वा प्रमादतें, व्रतका भंग होवे क्या व्रत जेकर पूर्ण न होवे तां त्रय उपवास करे अथवा केशांका मुंडन करे इस प्राय श्चित्तको करके फेर व्रतकों धारणकरे तां शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब कृच्छ्र व्रतां करकेंदूर होणे वाले और न दूर होणे वाले पापां कों देवल जी कहतेहैं ब्रह्मेति ब्राह्मणके मारणे वाला और मदिराके पीणे वाला और सुवर्णके चुराणेवाला और गुरांकी स्त्रीविषे गमन करणे वाला और इनां चारोंका संयोगी एह पंच महापापी कहेहैं इन पांचोका प्रायश्चित्त मरण है अंत जिसके ऐसा कहाहै और इनां के दूर करणे विषे कृच्छ्रादिव्रत नहिं कहे ॥ १ ॥ और

वायवीये लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोभवेद्यदि उपवासत्रयंकुर्यात्कुर्या द्वाकेशमुंडनम् प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् १ कृच्छ्राणांसाध्या साध्यानिपापान्याह देवलः ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वंगनागमः तत्सं योगीचपंचैते महापातकिनस्त्विमे १ एतेषांपंचानां मरणान्तं प्रायश्चित्तं न कृच्छ्रादिकम् ॥ गोवधोगुर्वधिक्षेपोभृतकाध्यापनादिकम् कृच्छ्रचांद्रायणा द्यैस्तुपरिशुद्धंप्रकीर्त्तितम् २ तिलानांधान्यराशीनांविक्रयस्त्वन्यवस्तुनः एतत्संकरीकरणं कृच्छ्रसाध्यंवदंतिहि ॥ ३ ॥ कन्यापहरणंचैवधेनुभूहरणा दिकम् मलिनीकरणंत्वेतत्कृच्छ्रसाध्यंप्रयत्नतः ॥ ४ ॥ चाडालीगमनादी नि अपात्रीकरणानिच ॥ कृच्छ्रैर्विशोधनीयानिविप्रैर्दोषपराङ्मुखैः ५ ॥

जो पुरुष गौका वध करणे वाला और गुरोंका निरादर करणे वाला और मजूरी लेके विद्या र्थियांको पढाणे वाला है इनकी शुद्धि कृच्छ्रचांद्रायणादिव्रतों करकें कहीहै ॥ २ ॥ और तिलांके वेचणे वाला और धान्यराशिके क्या मुंजीआदिके वेचणेवाला और रस आदिके वेचणे वाला है इनांके जो पापहै सो संकरीकरण नाम करके कहाहै तिसकी कृच्छ्र व्रत करके शुद्धि कहीहै ॥ ३ ॥ कन्याका हरणा और गौ और पृथ्वीआदि का हरणा एह मलिनी करण पाप हैं इनांकी भी कृच्छ्रव्रतकरके वडे यत्नसें शुद्धि कहीहै ॥ ४ ॥ चांडाली गमनआदिक जो अपात्री करण पाप हैं सो दोषतें रहित जो ब्राह्मण तिनांने कृच्छ्र व्रतांकरके शुद्ध करणे योग्यहैं ॥ ५ ॥

दुरिति और निंदित अन्न कथा मसर आदिका भक्षणकरणा और दुष्टपुरुषके अन्नका भक्षणकरणा
और जिस अन्नविषे ऐसी शंकाहोवे कि एह अन्न पातकी पुरुषकर्के छोंतादाहै तिसका भक्षण
करणा एह जाति से भ्रष्ट करणे वाला वडा पाप कहाहैं एह भी कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै
६ ॥ और पंचक आदि दोष कर्के जो मृत होवे तिसकी दुर्गतिके दूर करणे वास्ते एह प्रकी
र्ण पाप पुत्रोंने कृच्छ्र व्रत कर्के दूर करणे योग्यहै ॥ और गर्भाधानादिकके अभाव होयां होयां
व्रात्यतादि दोष होताहै तिसके दूरकरणे वास्ते कृच्छ्र व्रत करणे योग्यहै ॥ और तुला
आदिक प्रतिग्रहके लणे वाले जो पुरुष हैं तिनां को ब्रह्मराक्षस जो गति है तिसका कृच्छ्र
व्रतां कर्के किसे स्थान विषे निवारण कहा है ॥ पूर्वोक्तफलासें औरभी संपूर्ण कृच्छ्रोंके
फल हैं सोई व्यासजी कहतेहैं श्रीति जो पुरुष लक्ष्मीको इच्छा वाला और देहकी

दुरन्नभोजनंचैवदुष्टभक्षणमेवच दुष्टशंकादिकंचैवजातिभ्रंशकरंमहत् ६ ॥ एतदपिकृच्छ्रसाध्यम् ॥ दुर्मरणादिकंप्रकीर्णं कृच्छ्रसाध्यम् ॥ गर्भाधानादिकर्मणां तत्कालातिक्रमे व्रात्यतादिकं कृच्छ्रैः साध्यम् ॥ तुलादिप्रतिग्रहीतॄणां ब्रह्मराक्षसत्वस्य कृच्छ्रैः कुत्रचिन्निवारणम् ॥ सर्वेषां कृच्छ्राणां फलार्थत्वमप्याह । व्यासः । श्रीकामःपुष्टिकामश्चस्वर्गकामस्तथैवच देवताराधनपरस्तथाकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १ ॥ रसायनानिमंत्राश्चतथैवौषधानिच तस्यसर्वाणिसिध्यंतियोनरःकृच्छ्रकृद्भवेत् ॥ २ ॥ वैदिकानिचसर्वाणि यानिकाम्यानिकानिचित् सिद्ध्यंतिसर्वदानानिकृच्छ्रकर्तुर्नसंशयइति ३ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ कृच्छ्रकृद्धर्मकामस्तुमहतींश्रियमाप्नुयात् तथागुरुक्रतुफलमाप्नोतिसुसमाहितः ॥ १ ॥ अत्रमिताक्षरा ॥ यस्त्वभ्युदयकामःप्राजापत्यादिकृच्छ्राननुतिष्ठति स महतीं राज्यादिलक्षणांश्रियमनुभवति ॥

पुष्टिकी कामनावाला और स्वर्गकी कामनावाला और तैसे जो देवताके पूजन विषे युक्त
पुरुषहै सो कृच्छ्र व्रतको करे ॥ १ ॥ और रसायन सब और मंत्र और औषधीयां एह सब
तिसके सिद्धहोतेहैं जो कृच्छ्र व्रतको कर्ताहै ॥ २ ॥ और वेदकर्के कथनकीये जो संपूर्ण कर्म
और जो काम्य कर्म और संपूर्णदान एह सब कृच्छ्र व्रतके करणे वालेको सिद्धहोतेहैं इसविषे
संशय नाहि है ॥ ३ ॥ याज्ञवल्क्यजीकावचनहै कृच्छ्रेति धर्मकी इच्छा वाला जो पुरुष है सो
समाधानहुआ २ कृच्छ्र व्रतको करे तो वडीश्रीको प्राप्त होताहै तैसें वडे यज्ञके फलको प्राप्त
होताहै ॥ १ ॥ इस विषे मिताक्षराका वचन है जो पुरुष ऐश्वर्यकी इच्छाकर्के प्राजापत्य आ
दिकृच्छ्रांको कर्ताहै सो महाराज्य आदि लक्षण वाली लक्ष्मीको प्राप्त होताहै ॥

यथेति जैसेवहे जो यज्ञहैं राजसूय आदितिनांके करणेवाला तिनायज्ञांका जो फलहै स्वाराज्य आदि क्या स्वर्गराज्यादिलक्षण महाफल तिसको प्राप्तहोताहि तसे एह पुरुषभी इंद्रियांकों रोक के संपूर्ण अंगाके क्या विधिके साथ कृच्छ्र व्रतकों करताहोया राज्य आदि लक्षण महाफलकों प्राप्त होताहै ● अथेति इसते उपरंत प्राजापत्य कृच्छ्र व्रतके प्रत्याम्नाय कहतेहां प्रत्याम्नाय क्या बदलाजैसे प्राजापत्य व्रतकी सामर्थ्य न होवे तिस प्राजापत्य फलकी प्राप्ति वास्ते बदला धेनुदानादि कहाहै तिस विषे देवलजीकहतेहैं ॥ धेनुरिति एक धेनु क्या नवी प्रसूतहुई गौ और महानदी क्या जो समुद्रमे गमन करणें वाला है अथवा गंगाआदि तिस विषे स्नान और बारां ब्राह्मणांका पूजन और संहिताका सारा पाठ करणा और दो सउ २०० प्राणायाम

यथा गुरुक्रतूनां राजसूयादीनां कर्ता तत्फलं स्वाराज्यादिलक्षणं महत्फलं लभते तथायमपि समाहितः सकलांगकलापमविकलमनुतिष्ठन्निति ॥ अथ प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायाः ● तत्राह देवलः धेनुर्महानदीस्नानंद्वाद शब्राह्मणार्चनम् संहितामात्रपठनंद्विशतंवायुरोधनम् ॥ १ ॥ तिलहोमस हस्रंस्यादयुतंजपउच्यतेइति ॥ द्विशतंवायुरोधनंप्राणायामशतद्वयम् ॥ लिंगपुराणे ईश्वरः ॥ प्राजापत्येतुगौरेकाद्वादशब्राह्मणार्चनम् समुद्रगन दीस्नानंसंहितापाठउच्यते प्राणायामश्चद्विशतमयुतंजपउच्यते ॥ १ ॥ पराशरः ॥ अकामतःकृतंपापंवेदाभ्यासेनशुध्यति कामतस्तुकृतेपापेप्रा जापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥

गायत्री मंत्र करके करणा और हजार आहुति तिलांकी व्याहृति करके और दशहजार १०००० गायत्रीका जप करणा एह प्राजापत्यके फलदेणवालेहैं ॥ १ ॥ इसीकों प्रत्याम्नाय कहतेहैं । अब लिंगपुराणविषे शिवांका वचनहै प्रेति प्राजापत्य कृच्छ्रविषे एक गौ दान करणी और बारांब्राह्म णांकी पूजा करणी और समुद्र विषे प्राप्त होंणे वाली नदी विषे स्नान करणा और संहिताका सारा पाठ करणा और दो सउ २०० प्राणायाम करणा गायत्री मंत्र करके और दश हजार १०००० जप करणा गायत्रीका एह प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत विषे प्रत्याम्नायहै १ ॥ अब पराशरजी कहतेहैं अकामतइति इच्छातें विना कीया जो पाप सो संहिताके पाठ करणे करके दूरहोताहै और जो इच्छासें कीयाहै पाप सो प्राजापत्य व्रतकरके दूर होताहै ॥ १ ॥

अब इसके प्रत्याम्नायको क्या बदली करणेकी विधिकों देवलऋषि कहताहै विप्रइति ब्राह्मण मध्याह्नमें पहलेनदी विषे स्नानकरे वा होरी उत्तम जलाशयविषे करे अथवा और किसे जल विषे करे पीछे शुद्ध वस्त्रकों धारके त्रिपुंड्रक तिलककोंकरे फेर नित्यकर्म जो संध्या वंदनादि तिसकों समाप्तकरे ॥ १ ॥ फेर देवताकी उपासना आदि कर्म कों करे अर्थात् ध्यान करे और उपासनातें पीछे देवताका पूजन इच्छी तरहसें करे तिसतें उपरंत चार ब्राह्मणांकेसाथ स्वस्त्ययनको वाचे २ ॥ और संकल्प इसतरह करे कि जिसदेश और काल विषे प्रत्याम्नायको करताहै तिस देश कालका उच्चारण करके अपणे नामका भी उच्चारण करे कि जो पाप मैंने इच्छातें विना कीताहै तिसकी शुद्धि वास्ते ॥ ३ ॥ मैं प्राजापत्य कृच्छ्रके करणे विषे सामर्थ्यतें रहित हां

प्रत्याम्नायसमाचरणमाह देवलः ॥ विप्रःस्नात्वातुपूर्वाह्णेनद्यांवान्यत्रवाज ले वस्त्रादिपुंड्रकंकृत्वानित्यकर्मसमापयेत् ॥ १ ॥ औपासनादिकंकृत्वा ततोदेवार्चनंपरम् चतुर्भिर्ब्राह्मणैःसार्कं पुण्याहंवाचयेत्ततः ॥ २ ॥ देशका लौचसंकीर्त्यस्वनामाप्यनुसंवदेत् एतत्पापविशुद्ध्यर्थंमयाकृतमकामतः ॥ ३ ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यसाक्षात्कर्त्तुमशक्नुवन् प्रत्याम्नायमहंकुर्य्यां भ वंतः क्षंतुमर्हथ ॥ ४ ॥ इत्युक्त्वागांसवत्सांचसुशीलांचपयस्विनीं पूजयि त्वाविधानेनब्राह्मणांचयथार्थतः ॥ ५ ॥हेहेगोःसर्वलोकानांत्वंमातापरिकी र्त्तिता अतस्त्वांपूजयिष्यामि सर्वपापापनुत्तये ॥ ६ ॥ इतिसर्वप्रत्याम्नायकृ च्छ्रगोदानेषुपूजामंत्रः ॥ वेदाध्यायिन्सदापूज्योदानेष्वेतेषुपावन अत स्त्वांपूजयिष्यामिसर्वपापापनुत्तये । १ । इतिविप्रपूजामंत्रः।

इस कारणतें प्राजापत्यके बदलेकों कर्त्ताहां हे ऋषियांहो तुसीं क्षमा करो ॥ ४ ॥ ऐसे कहके सहित बच्छेके जो गौ है चंगे स्वभाव वाली और दुग्ध देणे वाली तिसकों विधि करके तैसे पूजे फेर ब्राह्मण के ताईं देवे ॥ ५ ॥ अब पूजनके मंत्र कहतेहां हेइति हे गौ तूं संपूर्ण लोकांकी माता कही हैं इस कारणतें संपूर्ण पापांके दूरकरणे वास्ते तेरेकों मैं पूजताहां ॥ ६ ॥ एह मंत्र संपूर्ण प्रत्याम्नाय और कृच्छ्र व्रत और गोदान विषे गौकी पूजा विषे पढनेयोग्यहै अब उपदेश करणे वाले ब्राह्मणकी प्रार्थनाकों कहतेहैं वेदेति हे वेदके पढने विषे युक्त हे पवित्र एनां दानां विषे तूं सदाहि पूजने योग्यहैं इसकारणतें संपूर्ण पापांके दूरकरणे वास्ते तेरेकों मैं पूजताहां एह ब्राह्मण की पूजा का मंत्र कहाहै ॥ १ ॥

गवामिति गौयांके अंगां विषे चौदां भुवन स्थित हैं जिसकारणतें तिस कारण तें मेरेकों कल्याण होवे और इसका ण तें मेरे ताईं शांतिकों देवो ॥ २ ॥ यज्ञेति और जो यज्ञका साधन रूप और जगत् के पाप दूर करणे वाली है तांते इस गौ करकें मेरे उपर विश्वरूपके धारणे वाला देवता प्रसन्नहोवे ॥ ३ ॥ एह मंत्र संपूर्ण गोदान विषे और प्रत्याम्नाय गोदानो विषे पढने योग्यहैं ॥ अब और कहतेहैं तत्रेति तिसविषेभी दाक्षिणादेणेयोग्यहै जेसें धनहोवे तिसके अनुसारतें करे इस प्रकार प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायकों भलो प्रकार करणे करके प्राजापत्यका जो संपूर्ण फल है तिसकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ और प्राजापत्यकृच्छ्रके प्रत्याम्नाय क्या बदलेकर्के कही जो गौहै तिसके अभाव विषे तिसके मुल्लकों देवल ऋषि कहता है गवामिति गौयांके

गवामंगेषुतिष्ठंतिभुवनानिचतुर्दश यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादतःशांतिंप्रयच्छमे ॥ २ ॥ यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्याघप्रणाशिनी विश्वरूपधरोदेवः प्रीयतामनयागवा ॥ ३ ॥ इतिसर्वगोदाने प्रत्याम्नायगोदानेषुचमंत्रो ॥ तत्रापिदक्षिणादेयायथावित्तानुसारतः एवंकृत्वानरःसम्यक् प्रत्याम्नायमनुत्तमम् । संपूर्णफलमाप्नोतिप्राजापत्यस्यकृच्छ्रतः । १ । प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायत्वेन गोरभावे तन्मूल्यमाह देवलः ॥ गवामभावेनिष्कंस्यात्तदर्द्धपादमेववा दरिद्रःकुरुतेपादंधनिकः पूर्णमाचरेत् अन्यथातत्फलंनास्तिप्राजापत्यंनसिध्यति ॥ १ ॥ निष्कशब्दोहिवराहस्तदर्द्धमेकवराहपक्षोमध्यः वराहार्द्धपक्षः कनीयान् तत्त्रयमप्यंगीकृतमस्माभिः ॥

अभाव विषे क्या गो न होवे तिस एक गौका मुल्ल एक निष्क देवे वा निष्कका अर्द्ध देवे वा तिसका अर्द्ध पाद अर्थात् चौथा हिस्सा देवे परंतु धनतें रहित जो पुरुषहै सो निष्कका चौथा हिस्सा देवे और धनवाला होवे तां संपूर्ण निष्कदेवे जेकर ऐसें न करे तिसको फल नहि होता और प्राजापत्यभी सिद्ध नहि होता ॥ १ ॥ और इस जगा निष्क नाम दां वराहका है और एक वराहका नाम जो निष्कहै सो मध्यम पक्ष कहाहै और वराहका अर्द्ध जो निष्क कहाहै सो कनीयान् पक्ष है क्या लघुपक्षहै असांनें त्रयहि पक्ष अंगीकार कीतेहैं इसमें शक्तिके अनुसार व्यवस्था जानणी और वराह शब्दका अर्थ मान परिभाषा सें जानणा ॥

सोई कहताहै मार्कंडेय ऋषि प्रेति प्रभुओंको अर्थात् जो धन करके युक्त हैं तिनोंको निष्क सुवर्णका दान करणा योग्यहै एह उत्तम पक्ष कहाहै निष्कका अर्द्ध जो एक वराह रूप है सो सामर्थ्य वालेकों नहि क्योंकि उत्तम पुरुषको मध्यम दानका फल नहि होता ॥ १ ॥ मध्यमेति ॥ मध्यम जो पुरुष हैं तिनोंको सर्वदा काल मध्यम पक्ष निष्कका अर्द्ध वराह परिमाण दान करणा श्रेष्ठहै तो मध्यम पुरुष मध्यम पक्षकों करे उत्तम पक्षकों त्यागके जेकर मध्यम पक्षकों करे तिसको भी फल नहि होता और इस करके उत्तम जो धनि पुरुष है सो मध्यम जो वराह परिमाण तिसका दान न करे ॥ २ ॥ और कनीयान् जो वराहका अर्द्धहै सो पक्ष निर्धन

तदाह मार्कंडेयः ॥ प्रभूणां पूर्वपक्षः स्यादुत्तमः परिकीर्त्तितः ॥ मध्यमाचरणंनास्तिप्रभूणांतत्फलंनवा ॥ १ ॥ मध्यमानांवराहःस्यात्पक्षः सर्वत्रशोभनः ॥ उत्तमंयःपरित्यज्यमध्यमंचेदुपाश्रितः ॥ नदानफलमस्यास्तिनोत्तमोमध्यमंचरेत् ॥ २ ॥ कनीयांस्तुवराहार्द्धमुत्तमंसंप्रकीर्त्तितं तदस्यमध्यमंनास्तिनतत्कृच्छ्रफलंलभेत् ॥ ३ ॥ अकिंचनानांसर्वेषांधरणंगौरुदाहृता अतोहीनंनकर्त्तव्यंगोमूल्येष्विहसर्वदा एवंकुर्युर्हितेदानंचोत्तमाधममध्यमाः ॥ ४ ॥ किंचिद्धनाढ्योपि कनीयांसंकुर्य्यात् ॥ आकिंचनस्य कनीयान्पक्षएवोत्तमः ॥

को उत्तम कहाहै निर्धनको मध्यम पक्ष नहि कहा जेकर करे तिसको कृच्छ्रका फल नहि होता अथवा जिसको उत्तम पक्ष किहा है तिसने मध्यम नहि करणा एह अर्थ है ॥ ३ ॥ आकिंचेति ॥ निर्धन जो सबहैं तिनोंको धरण परिमाण सुवर्णका दान गोदान कहा है इस कारणते गौयोंके मुल्यविषे थोड़ा दान न करे ॥ ४ ॥ इसप्रकार अपने २ अधिकारकके उत्तम और मध्यम और अधम पुरुष दानको करे एहि शास्त्रकी आज्ञा है एहि अर्थ स्पष्ट करके किहा है ॥ कुछक धनकर्के युक्त जो पुरुष है सोभी अल्पदानको करे और निर्धन पुरुष उत्तम दानको न करे तिसको कनीयान् पक्ष हि उत्तम है ॥

अतइति इस कारणतें अपणी सामर्थ्य करकें पुरुष प्राजापत्यके प्रत्याम्नायकों करे जेकर सामर्थ्य कों लंघ करकें करे तां तिसकों फल नहिं होता ॥ एवमिति असे महापापांविषे भी कयाहे कि महापापके करणे वाला पुरुष बारां वर्षके व्रतकों करे कि बारां दिनां करकें साध्य जो प्राजापत्य व्रत सो त्रय सौ सठ ३६० करणे योग्यहैं तदिति और जेकर तिनां व्रतांके करणेविषे सामर्थ्य न होवे तां त्रय सौ ३६० सहित वछयांके गोयां देवे ॥ और गोयांका भी अभावहोवे तां त्रय सौ सठ ३६० मोहर देणे योग्यहै ॥ तैसे हारीस्मृतिका वाक्यहै प्राजापत्यव्रतके करणे विषे सामर्थ्य न होवे तां बुद्धिमान् पुरुष प्रसूत होई जो गौ तिसका दान करे और गौ दानकी भी सामर्थ्य न होवे तां तिसके तुल्य मुल्लकोंदेवे इसमे संशयनहि है ॥ १ ॥ मुल्लकी व्यवस्था करतेहैं

अतः स्वशक्तिपुरःसरतया प्रत्याम्नायं कुर्यादन्यथा निष्फलत्वमवाप्नोती त्यर्थः ॥ एवंमहापातकेऽपि द्वादशवार्षिकव्रतस्य द्वादश दिनसाध्यतया प्राजापत्यानि ॥ ३६० ॥ पञ्चाधिकशतत्रयं कल्पयित्वा कार्याणि ॥ तद शक्तौच तावत्योवा धेनवोदातव्याः । तदसंभवेनिष्काणांषष्ठ्याधिकशतत्रयं दातव्यम् ॥ तथास्मृत्यंतरम् ॥ प्राजापत्यक्रियाऽशक्तौधेनुंदद्याद्विचक्षणः धेनोरभावेदातव्यंमूल्यंतुल्यमसंशयम् १ निष्कंवा तदर्द्धं पादं वा शक्त्यपेक्षयादातव्यम् ॥ गवामभावेनिष्कंस्यात्तदर्द्धं पादमेवचेतिस्मरणात् ॥ मूल्य दानस्याप्यशक्तौ तावंतोवोपवासाःकर्त्तव्याः ॥ कृच्छ्रउपवासोऽहोरात्र मितिमहार्णवे

निष्कमिति अपणी सामर्थ्यकरके निष्कदानकरे वा तिसका अर्द्धदान करे वा तिसका चौथा हिस्सादान करे ॥ गवामिति गोयांके दानकी सामर्थ्य न होवे तां निष्कका दान करे वा अद्धाकरे वा चोथा हिस्सा करे इसवाक्यतें ॥ और मुल्लदेणेकीभी सामर्थ्य न होवे तां तिसपापीकों जितने कृच्छ्र व्रत करणे योग्यहैं तिस संख्या करकें उपवास व्रतांकों करवावे परंतु इसमे असा अभिप्रायहै कि निरंतर उपवास नहि होसके एक उपवास करकें दूसरे दिन भोजन करे और फेर उपवास करे इस रीतिसे जो दिन रात्र उपवास व्रत करणाहै तिसका नाम कृच्छ्रहै एह महार्णव विषे कहाहै ।

सप्रेति तिस त्रय सो सठ ३६० उपवास व्रत विषे भी जो सामर्थ्यतें रहितहै तिस पुरुषनें छत्ती लक्ष ३६००००० गिणती करके गायत्रीका जप करणे योग्यहै एह प्रत्याम्नाय कहाहै इसमें बचन कहतेहैं कृच्छ्रइति कृच्छ्रव्रत और गायत्रीका दश हजार १०००० जप और उपवास व्रत और ब्राह्मणके तांई प्रसूत होईहोई गौका दान देणा एह, चारे सम हैं इनां उपायां विषे पापके दूर करणे वास्तेकिसे उपायकों करे इस पराशरजीके बचनतें १ ॥ फेर जो चतुर्विंशतिके मत विषे कहाहै जो पुरुष गायत्रीका एक क्रोड जप१००००००० कर्त्ताहै सो ब्रह्महत्या पापतें रहित हुया शुद्धिकों प्राप्तहोताहै और अस्सी लक्ष ८०००००० गायत्रीके जपकों कर्त्ताहै सो पुरुष मदिरा पीणका जो पापहै तिसतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और सत्तर लक्ष७००००००जो गायत्रीका जपहै सो सुवर्णके चुराणे वालेकों शुद्ध कर्त्ताहै और गुरांकी स्त्री साथ जो गम

तत्राप्यशक्तोगायत्रीजपः षट्त्रिंशल्लक्षसंख्याकःकार्य्यः ॥ कृच्छ्रोयुतंतुगायत्र्याउपवासस्तथैवच ॥ धेनुप्रदानंविप्रायसममेतच्चतुष्टयमिति पराशरस्मरणात् । यत्तुचतुर्विंशतिमतेभिहितम् ॥ गायत्र्यास्तुजपन्कोटिं ब्रह्महत्यांव्यपोहति लक्षाशीतिंजपेद्यस्तुसुरापानाद्विमुच्यते॥ १ ॥ पुनातिहेमहर्त्तारंगायत्र्यालक्षसप्ततिः गायत्र्याःषष्टिभिर्लक्षैर्मुच्यतेगुरुतल्पगइति २ ।तद्द्वादशवार्षिकतुल्यविधानतयोक्तं न पुनरुक्तविषयमिति न विरोधः।कृच्छ्रादेव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयम् ॥ तिलहोमसहस्रंतुवेदपारायणंतथेत्यादयः प्रत्याम्नायाश्चतुर्विंशति मन्वादिशास्त्रेऽभिहिताः षष्ठ्यधिकशतत्रयगुणितामहापातकेषु बोद्धव्याः ॥

न करणे वालाहै सो पुरुष गायत्रीके सठ लक्ष ६०००००० जपककें शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ एह बारा बारां वर्षका जो व्रतहै तिसके तुल्य फलकों प्रतिपादन कर्त्ताहै प्राजापत्यको प्रत्याम्नाय विधि विषे नहि जानणा तां कहा जो विषय प्रत्याम्नाय तिसतें भिन्न होणेते एह कोई विरोधी वाक्य नाहि है ॥ और वाक्य कहतेहैं कृच्छ्रइति कृच्छ्र व्रत और देवी गायत्रीका दश हजार १००००जप और दो सो २००प्राणायाम गायत्री करके और एक हजार १०००तिलांका हवन मृत्युंजय मंत्र करके वा व्याहृति करके और सारी संहिताका पाठ एह कृच्छ्र व्रतके प्रत्याम्नाय कथा एक एकके अभाव विषे दूसरा दूसरा करणा ॥ सो चतुर्विंशति और मनु आदि करके कथन कीते होए एक सौ सठ १६० संख्या करके महापातकपापां विषे जानने योग्यहैं ॥

तीति अतिपातक पापों विषे प्राजापत्य व्रतां की संख्या दो सौ सत्तर २७० कहीहै सो करणे योग्यहै वा तिसका प्रत्याम्नाय दोसौ सत्तर २७० धेनुदानवें लेकर होरभी जानणीं ॥ पातकेष्विति पातक जो पाप हैं तिनां विषे एकसौ अस्सी१८० प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिस विषे प्रत्याम्नाय भी होई गौयांते आदिलेके एक सौ अस्सी संख्याहि कही है ॥ तैसे चतुर्विंशतिके मतविषे कहाहै जन्मेति जन्मतें लेके ब्रह्महत्या तें विना जो बहुत अनेक तरांके पाप कीतेहैं तिनांके दूर करणे वास्ते छे ६ वर्ष के प्राजापत्य व्रत को करे और ब्रह्महत्या पापके दूर करणे विषे वारां वर्ष का व्रतहि कहाहै ॥ १ ॥ तिस छे वर्ष के प्रत्याम्नाय विषे धनवाले पुरुषकों एक सौ अस्सी गो

अतिपातकेषु सप्तत्यधिकशतद्वयं प्राजापत्यानांकर्तव्यंतावंतोवाधेन्वादयः प्रत्याम्नायाः ॥ पातकेषुसाशीतिशतंप्राजापत्याः प्रत्याम्नायाधेन्वादय स्तावंतएववा ॥ तथाचतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् । जन्मप्रभृतिपापानिबहूनि विविधानिच कृत्वार्वाग्ब्रह्महत्यायाः षडब्दंव्रतमाचरेत् ॥ १ ॥ प्रत्या म्नायेगवांदेयं साशीतिधनिनांशतम् ॥ तथाष्टादशलक्षाणिगायत्र्यावा जपेद्बुध इति ॥ २ ॥ इदमेवचद्वादशवार्षिकेव्रतेद्वादशद्वादशदिनैरेकै कप्राजापत्यकल्पनायां लिंगम् ॥ एवमुपपातकेषु त्रैवार्षिक प्रायश्चित्त विषयभूतेषु नवतिःप्राजापत्यास्तावंतएवप्रत्याम्नायाः ॥

यांकादान करणे योग्यहै तिसकी सामर्थ्य न होवे तां बुद्धिमान् पुरुष अठारांलक्ष १८००००० गायत्री का जप करे ॥ २ ॥ एहजो पूर्व कथन कीताहै प्रायश्चित्त सो बारां वर्ष केव्रत विषे वारां वारां दिनां करके एक एक प्राजापत्यकी कल्पना विषेचिन्ह जानणा ॥ जैसे पूर्व कहा है इसी प्रकार उपपातक जो पाप हैं त्रय ३ वर्षके प्रायश्चित्त व्रत करके दूर होणे वाले तिनां विषे नब्बे ९० प्राजापत्य व्रत कहेहैं वारां दिनांकरके एक प्राजापत्य व्रतहोताहै तांते त्रय ३ वर्षां विषे नब्बे ९० होतेहैं जेकर उपपातक पापांके दूर करणे वाले जो नब्बे ९० प्राजापत्य व्रत तिनांके करणे विषे सामर्थ्य न होवे तां तिसकों प्रत्याम्नाय नब्बे ९० कहनें ।

त्रैमासिकेति त्रय ३ महीने करकें हुंदा जो प्रायश्चित्त तिसविषे साडे सत्त ७॥ प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिसके प्रत्याम्नाय जप औंर गौ और उपवास व्रत आदि साडे सत्त ७॥हि कहेहैं परंतु इसजगा अर्द्धके स्थानमुल्ल देवे जो गौका कहाहै तिससे अर्द्ध व्रत हो जावेगा ॥ मासिकेति महीनेके व्रत विषे ढाई२॥ प्राजापत्य व्रत कहेहैं तिसकी असामर्थ्य विषे प्रत्याम्नाय भी ढाई २॥ कहेहैं चांद्रायणेति और एक चांद्रायण व्रत करकें दूर होंनेवाले जो उपपातक पाप तिनांकें दूर करणे वास्ते प्राजापत्यव्रत त्रय ३ कहेहैं ॥ तिस प्राजापत्य त्रय ३ के करणे विषे जो असमर्थ पुरुष है तिसकों प्रत्याम्नायभी तावान् कहाहै ॥ जो फेर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै कि चांद्रायण व्रतके प्रत्याम्नायके करण विषे अठ धेनु ८ का दान कहाहै सो एह धन वाले पुरुष विषे पिपीलिका मध्यादि नाम चांद्रायण व्रत के प्रत्याम्नाय क्या वदले विषे जानणा ॥

त्रैमासिकविषये पुनः सार्द्ध सप्त प्राजापत्याः प्रत्याम्नायाश्च धेनूपवासादयस्तावंतएव ॥ मासिकव्रतविषये तु सार्द्ध प्राजापत्यद्वयम् ॥ तावानेवप्रत्याम्नायः॥ चांद्रायणविषयभूतेषु पुनरुपपातकेषु प्राजापत्यत्रयम् ॥ तदशक्तस्यप्रत्याम्नायस्तावानेव ॥ यत्पुनश्चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् ॥ अष्टौचांद्रायणेदेयाः प्रत्याम्नायविधौसदेति अष्टौधेनवइत्यर्थः तदपि धनिनः पिपीलिकामध्यादिचांद्रायणप्रत्याम्नायविषयम् ॥ एतच्चैकैकंग्रासमश्नीयादित्यामलकपरिमितैकैकग्रासपक्षे वेदितव्यम् ॥ पाणिपूरान्नपक्षेतु पुनर्धेनुद्वयमेव । प्राजापत्यस्य षडुपवासतुल्यत्वात् । द्विगुणत्वाच्चातिकृच्छ्रस्य

एतदिति एह जो पूर्वोक्त विधि है सो (एकैकं) इत्यादि वचनकर्के कही जो प्रतिदिन एक एक ग्रास के भक्षण वाली चांद्रायण विधि तिस विषे जानणे योग्यहै और इस विधि विषे ग्रासभी आमलके तुल्यहै इसकर्के कठिन चांद्रायणहै और तिसका प्रात्यम्नायभी अधिकहै ॥ और जिसपक्ष विषे पाणि पूरान्न भोजन किहाहै क्या जितने अन्न कर्के एक हत्थ पूर्ण होवे तितना अन्न प्रतिदिन भक्षण करे इसपक्षविषे कष्ट थोढाहै इसकर्के दो२ धेनु प्रत्याम्नायहै ॥ अब फेर पूर्वोक्त मैं अभिप्राय कहतेहैं कि प्राजापत्यकों ६ छे उपवासकी तुल्यताहै ॥ और अति कृच्छ्र कों इससे द्विगुण होणेतें अर्थात् अति कृच्छ्र इससे दूणाहै

अब और विचार कर्त्ते हैं यद्यपीति जो पाणि पूरान्न भोजन किहाहै सो ९ नौ दिनमे हि हुंदाहै बारां १२ दिनमे नहि तथापि निरंतर जो १२ बारांदिनका व्रत करणा सो बहुत क्लेशदेणे वाला हैं इसकर्के ६ छे उपवासके तुल्य जो प्राजापत्य दो २ तिसकी तुल्यता पाणि पूरान्न वाले व्रतको है ॥ अब प्राजापत्यको जिस तर्हां ६ छे उपवासकी तुल्यताहै सो कहते हैं तथाहीति पहले त्रय दिनविषे सायं कालके भोजनकी निवृत्ति होयां एक १ उपवास होआ और दूसरे त्रय दिनविषे प्रातः काल भोजनकी निवृत्ति होयां एक १ उपवास होर होया ॥ और अगले दिन त्राय विषे अयाचित व्रत विषे भी सायं कालके भोजन की निवृत्ति करेणेतें एक उपवास हुंदाहै इसरीतिसें नो ९ दिनोंकर्के ३ त्रय उपवास होए ॥ और इसते

॥ यद्यपि नवसु दिवसेषु पाणिपूरान्नभोजनम् तथापि नैरंतर्य्येण द्वादशदिवसानुष्ठाने क्लेशातिशयेन षडहोपवाससमानप्राजापत्यद्वयतुल्यत्वमेव ॥ प्राजापत्यस्यषडुपवासतुल्यत्वंयुक्तमेव ॥ तथाहि प्रथमेत्र्यहेसायंतनभोजनत्रयनिवृत्तावेकोपवासस्यसंपत्तिः । द्वितीयेत्र्यहेप्रातः कालभोजन त्रयवर्जनेऽपरस्य तथाऽयाचित त्र्यहेपि सायंतनभोजनवर्जनेऽन्यस्यैवंनवभिर्दिनैरुपवासत्रयम् ॥ तत श्चांत्यत्र्यहोपवासत्रयमितियुक्तं षडुपवासतुल्यत्वम् ॥ ऋषभैकादशगोदानसहितत्रिरात्रोपवासात्मक गोव्रतेतु सार्द्धैकादशप्राजापत्यास्तावत्संख्याकाश्चोपवासादयः प्रत्याम्नायाः मासपयोव्रतेतु सार्द्ध प्राजापत्यद्वयम् ॥ पराकात्मकेतूपपातकव्रतेप्राजापत्यत्रयम् ।

आगे त्रय उपवास करणे ते ६ उपवासकी तुल्यता प्राजा पत्य कों उचितहै ऋषभेति बैलहै यारवां जिनां विषे ऐसीयां दशां १० गौयांके दानके साथ जो त्रय ३ उपवास व्रत हैं ऐसे गोव्रतविषें प्रत्याम्नाय कहतेहां॥ सार्द्धइति साढे यारां प्राजापत्य व्रत अथवा साढे यार ११ ॥ उपवास अर्थात् साढे यारां दिन ११॥ निराहार स्थित रहणा इत्यादिजानणे ॥ मासेति एक मास तक जो दुग्धका व्रत तिस विषें प्रत्याम्नाय दोई २॥ प्राजापत्य कहनें ॥ पराक व्रत कर्के दूर होता जो उपपातक पाप तिस व्रत विषें प्राजापत्य त्रय ३ करणे चाहिए एह प्रत्या म्नाय है ॥

ओर कहतेहैं पराकेति ओर पराकव्रत ओर तप्तकृच्छ्र ओर अतिकृच्छ्र इनां विषे एक एक की जगा त्रय ३ प्राजापत्य व्रत करे ओर ३ प्राजापत्य व्रतां विषे जो असमर्थ है सो सांतपन व्रत के अ द्वनूं करे ऐसे षड्विंशन् मत विषे कथन करणेतें ॥ चांद्रायणेति चांद्रायण ओर पराक कृच्छ्र ओर अतिकृच्छ्र एह व्रत एक एक त्रय ३ प्राजापत्य व्रतांके तुल्यहै तातें बारांवर्षके व्रत विषे एक सौ बीस १२० अनुष्ठान करणे योग्य हैं ॥ तदिति ओर तिनां चांद्रायणादि व्रतांके प्रत्याम्नाय धेनु आदिक अर्थात् धेनु उपवास ओर गायत्रीका १०००० जप एह सब त्रय गुणां अधिक जानणे तातें प्राजापत्य व्रत त्रय सौ सठ ३६० कहनें तिस विषे चांद्रायण एकसौ बीस १२० तिस एक सौ बीस विषें धेनु आदिक त्रय सौ सठ ३६० कहनें ॥ अवीति अतिपातक पापविषे नव्वे९० संख्याकर्के चांद्रायण आदि कहने ॥ ओर अति पातक पापांके तुल्य जो पातक संज्ञाकर्के पापहैं तिनां विषे सठ ६०चांद्रायणादि कहने ॥ ओर त्रय

पराकतप्तातिकृच्छ्रस्थाने कृच्छ्रत्रयंचरेत् सांतपनस्यतत्त्वार्द्धमशक्तौव्रतमा चरेदिति षड्विंशन्मतेऽभिधानात्॥ चांद्रायण पराककृच्छ्रातिकृच्छास्तुप्रा जापत्यत्रयात्मकाद्वादशवार्षिकव्रतस्थाने विंशत्युत्तरंशतसंख्याअनुष्ठेयाः तत्प्रत्याम्नायास्तुधेन्वादयस्त्रिगुणाः । अतिपातके नवतिसंख्याकाश्चांद्राय णादयः।तत्समेषुपुनःपातकपदाभिधेयेषु षष्टिसंख्याः । उपपातकेषु त्रैवा र्षिकविषयेषु त्रिंशत्संख्याः। त्रैमासिकेषुव्रतस्थानेषु गोमूत्रस्नानादीतिकर्त्त व्यतावाहुल्याच्चांद्रायणादित्रयम् मासिकव्रतेषु योगीश्वरोक्तमेकमेवचांद्रा यणम् धेनूपवासादिप्रत्याम्नायस्तु सर्वत्र त्रिगुणएव। प्रकीर्णकेषु पुनःप्रति पदोक्तप्रायश्चित्तानुसारेण प्राजापत्यं पादादिकं वा योजनीयम्। आवृत्तौ पुनश्चांद्रायणादिकमिति । एतद्दिगवलम्बनेनान्यत्रापि कल्पनाकार्य्या ॥

वर्षांके प्राजापत्यकर्के दूर होणें वाले जो उपपातक पाप तिनांविषे चांद्रायणादितीस ३० कहनें ॥ त्रैमासिकेष्विति त्रय३ महीनेंके व्रतांविषे गोमूत्र स्नान आदि कर्मकी बाहुल्यतासें करणा कठि नहै इसकर्के यथायोग्यताकों जाणकर्के चांद्रायण आदिव्रत त्रय ३ कहेहैं ॥ ओर एकमहीनेके व्रतां विषे योगीश्वरनें एकहि चांद्रायण कहाहै सो करणा ॥ ओर धेनु ओर उपवास ओर जप इत्यादि प्रत्याम्नाय संपूर्ण चांद्रायणादि स्थानविषे त्रय गुणां जानणा । प्रकीर्णेति प्रकीर्ण नामकर्के जो पाप तिनांविषे एकएक पापके दूरकरणे वास्ते प्रायश्चित्तके अनुसार कर्के प्राजा पत्यव्रत करणा वा पादादिक जानणा ॥ ओर प्राजापत्यकी आवृत्ति विषे अर्थात् जिसजगा बहुत प्राजापत्य करणे होण तिसजगा चांद्रायण आदि कहाहै इसरस्तेके अनुसार कर्के होर स्थानविषे भी व्यवस्था जानणी ॥

जो फेर बृहस्पतिनें कहाहै ॥ जन्मतें लेकर जो कुछक पातक वा उपपातक है तिनांके दूर करणे विषे संख्या कर्के एकतें लेके १ ॥ ६० ताईं प्राजापत्य करणा ॥ १ ॥ सो परस्त्रीके संभोगके पाप विषे दो वर्षतक व्रत करे एह गौतम जीके कहेहोए वचनतें दो वर्षके व्रतकी तुल्यताकों विषय करताहै ॥ तैसेंहि ३ त्रय महीनेके जो उपपातकके व्रत तिनकी आवृत्तिको क्या बहुत वार करणेकों विषय करताहै जो परस्त्रीका अभ्यास तिस विषे जानणा वा और फेर पातक नाम कर्के जो चांडालादि स्त्रीके विषे दो २ वार अभ्यास करणा तिसविषे जानणा वचन कहतेहैं तत्रेति इच्छा कर्के संभोग करे तां तिस पुरुषकों पापके दूर करणे वास्ते एक वर्षका प्राजापत्य व्रत कहाहै और इच्छातें विना परस्त्री विषे संभोगका अभ्यास होवे तिस पापके दूर करणे वास्ते दो चांद्रायण व्रत कहेहैं इति ॥ इसका तात्पर्य्य कहतेहैं सकृदिति एकवार इच्छा कर्के चांडालादि स्त्रीके संभोग विषे पापके दूर करणे वास्ते एक वर्षके प्राजापत्य कृच्छ्रके विधान होणेतें ॥ और बहुत वार अभ्यास विषे दो वर्षकें तुल्य सठां प्राजापत्य व्रतांका विधान युक्तहै ॥ जो फेर सुमंतुऋषिनें कहाहै कि जो वारंवार इच्छा कर्के बहुत पाप कीयाहै सो एक वर्षके प्राजापत्य व्रत कर्के दूर होताहै परंतु महापातकतें विना ॥ १ ॥ सोभी उपपातक आदिके अभ्यास विषे जानणा ॥

यत्पुनर्बृहस्पतिनोक्तम् जन्मप्रभृतियत्किंचित्पातकंचोपपातकम् तावदावर्त्तयेत्कृच्छ्रंयावत्षष्टिगुणंभवेत् ॥ १ ॥ तद्द्वेपरदारइति गौतमोक्तद्वैवार्षिकसमानविषयम् ॥ तथा त्रैमासिकादिविषयभूतोपपातकावृत्तिविषयं वा पातकपदाभिधेयेचांडालादिस्त्रीगमे द्विरभ्यासविषयंच ॥ तत्र ज्ञानात् कृच्छ्राब्दमुद्दिष्टमज्ञानादैन्दवद्वयमिति सकृद्बुद्धिपूर्वगमे कृच्छ्राब्दविधानात् ॥ तदभ्यासे द्विवर्षतुल्यषष्टिकृच्छ्रविधानंयुक्तमेव । यत्तु सुमंतुनोक्तम् ॥ यदप्यसकृदभ्यस्तंबुद्धिपूर्वमघंमहत् तच्छुध्यत्यब्दकृच्छ्रेणमहतः पातकादृतइति ॥ १ ॥ तदप्युपपातकाद्यावृत्तिविषयम् ॥

थेति तैसे अज्ञानतें चांडाली गमनरूप पापकों करे तां दो चांद्रायण व्रत करे एह धर्मराजने कहे जो चांद्रायण व्रत दो २ तिनां कर्के दूरकरी दे जो पातकतिनकी आवृत्ति विषे अथवा जानणा ॥ यइति जो पुरुष तप करणेविषे सामर्थ्यते रहित है और अन्नकर्के समृद्धहै सो कृच्छ्र आदि व्रतांनू उत्तम ब्राह्मणाँ तांई भोजनदानसें संपादन करे अर्थात् भोजनकों देवे ॥ तैसें होरी स्मृतिका वाक्य है इस भोजनके प्रकार विषे कृच्छ्रइति प्राजापत्य कृच्छ्र व्रत जो बारां दिनाका है तिसके एक एक दिनविषे पंच पंच विद्वन् ब्राह्मणोंके ताईं भोजनदेवे तिस पुरुषकों प्राजापत्य व्रतका फल होताहे तैसें अति कृच्छ्रके अर्थं एक एक दिन विषे पंद्रां १५ ब्राह्मणोंके ताईं भोजन देवे और तृतीय जो कृच्छ्रातिकृच्छ्रहै तिस विषे तीस ३० ब्राह्मण और तप्त

तथाऽज्ञानादैन्दवद्वयमिति यमोक्तैन्दवद्वयविषयभूतपातकावृत्तिविषयं वा यस्तु तपस्यसमर्थो धान्यसमृद्धश्च सकृच्छ्रादिव्रतानि द्विजाग्र्येभ्योभोजन दानेन संपादयेत्। तथास्मृत्यंतरम् । कृच्छ्रेपंचातिकृच्छ्रेत्रिगुणमहरहस्त्रिंश देवतृतीये चत्वारिंशत्तप्तेत्रिगुणितगुणिताविंशतिःस्यात्पराके कृच्छ्रेसांता पनाख्येभवतिषडधिकाविंशतिः सैवहीना द्वाभ्यांचांद्रायणेस्यात्तपसिकृश वलेभोजयेद्विप्रमुख्यानिति ॥ १ ॥ अहरहरिति सर्वत्र संबंधनीयम् ॥ तृतीयःकृच्छ्रातिकृच्छ्रः त्रिगुणितेनएकेनगुणिताविंशतिःषष्टिः ॥ अत्र प्राजापत्यदिवसकल्पनया षष्टिविद्वद्विप्राणांभोजनंभवति ॥ यत्तु चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् विप्राद्वादशवाभोज्यापावकेष्टिस्तथैवच अन्यावापावनीकाचित्समान्याहुर्मनीषिणइति ॥ १ ॥

कृच्छ्र विषे चाली ४० और पराक कृच्छ्र विषे सठ ६० ब्राह्मण और सांतपन कृच्छ्र व्रत विषे छब्बी २६ ब्राह्मण और चांद्रायण व्रत विषे बाईं २२ ब्राह्मण इस विधि कर्के तप करणे विषे जेकर असमर्थ होवे तां भोजन देवे इति ॥ १ ॥ दिन दिन इस पदका संपूर्ण स्थानविषे संबंध करलेणा ॥ इस विषे प्राजापत्य व्रतके दिनांकी कल्पना कर्के सठां बुद्धिमानां ब्राह्मणां तांईं भोजन कहाहै ॥ जो फेर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै कि बारां ब्राह्मणांके ताईं भोजन देणा तैसे पावकेष्टि यज्ञकरणा अथवा को इक पावनीइष्टि करणी इनांकों बुद्धिमान् सम कहतेहैं इति अर्थात् इन्हां सभनोंका तुल्यहि फलहै ॥ १ ॥

एह जो प्राजापत्य व्रतके स्थान प्रत्याम्नाय बारां ब्राह्मणांकों भोजन कहाहै सो निर्धन पुरुषके विषे जानणा ॥ और जो चांद्रायण व्रतके प्रत्याम्नाय करके कहाहै कि चांद्रायण और मृगारेष्टिः और पावनेष्टि और मित्रविंदा और पशुयाग और मास त्रय कृच्छ्र व्रत ॥ १ ॥ और नित्य कर्म और नैमित्तिक और काम्य कर्म और पशु बंध इष्टि इनांके अभाव विषे क्या करणे विषे असामर्थ्यके होयां होयां इनों विषे जिस प्रत्याम्नाय करणे विषे सामर्थ्य होवे सोहि अनुष्ठाने करणे योग्यहै ॥ २ ॥ एहि अर्थ स्पष्ट करके किहाहै एतदिति ॥ सोभी चांद्रायण व्रत करणे विषे जो असमर्थ है तिसपुरुषनें मृगारेष्टि आदि विचों एक करणा चाहिये ॥ अब चतुर्थ पादका अर्थ कहतेहैं कृच्छ्रमिति इसका एह अर्थ है कि त्रय १ प्राजापत्य

प्राजापत्यस्थाने द्वादश विप्राणां भोजनमुक्तं तन्निर्धनविषयम् ॥ यच्चां द्रायणस्यापि तत्रैव प्रत्याम्नायेनोक्तम् ॥ चांद्रायणंमृगारेष्टिः पावने ष्टिस्तथैवच ॥ मित्रविंदापशुश्चैवकृच्छ्रंमासत्रयंतथा १ ॥ नित्यनैमित्तिका नांचकाम्यानांचैवकर्मणां इष्टीनांपशुबंधानामभावेचवरः स्मृतइति ॥ २ ॥ एतदभावे कर्तुमशक्येवरोऽभीष्टः प्रत्याम्नायः कर्तुंशक्यएवानुष्ठेयइत्यर्थः तदपि चांद्रायणाशक्तस्य कृच्छ्रंमासत्रयं एकैकस्मिन्मासेएकैकंकृच्छ्रमित्य र्थः ॥ यत्तु कृच्छ्रंमासत्रयंतथेति कृच्छ्राष्टकंप्रत्याम्नातं तदतिजरठमूर्खवि षयम् ॥ चांद्रायणंत्रिभिःकृच्छ्रैरितिदर्शितत्वादलमतिप्रसंगेन । अपरार्के । अथातोऽनुग्रहान्वक्ष्येदुर्बलस्यात्मशालिनः ॥ यत्कृत्वामुच्यतेपापादुरगः कंचुकाद्यथा ॥ १ ॥

कृच्छ्र व्रत तीन महीनयां विषे एक एक महीने विषे एक एक व्रत करणा ॥ जो फेर किसेका मतहै कि कृच्छ्रंमासत्रयं इसका अर्थ प्राजापत्य व्रत त्रयमास तक जानणा तां तिनां तीन महीनयां विषे साडे सत्त ७॥ प्राजापत्यहै सो अतिशयकरके वृद्ध और मूर्ख पुरुषकों कहतेहैं अर्थात् ऐसा कहण वाला मूर्ख है अर्थको नाहि जानदा क्योंकि तीन प्राजापत्यव्रतांके करणे करके चांद्रायण व्रतका फलप्राप्त होताहै ऐसें दखाणेतें ॥ इसमें बहुत प्रसंग करणेकरके प्रयोजन नहि और मूलमें जो ८ कृच्छ्र कहेहैं सोइ महीनेतें ६ दिन अधिककी संभावनाते ॥ अब अपरार्क विषे कहतेहैं अथेति बलतें रहित जो पुरुष और अपनी शुद्धिकी इच्छा वाला तिसकों उपाय कहताहां जिनां उपायांके करणे करके पुरुष पापांते रहित होताहै जैसे सर्प सवकुंजते रहित होताहै ॥ १ ॥

तिस विषे पराशरजी कहतेहैं कृच्छ्र इति कृच्छ्र प्राजापत्य और दश हजार १०००० गायत्रीका जप और भोजन विना जलविषे दिन रात्र स्थित रहणा और ब्राह्मणके ताईं नवींनप्रसूत होई होई गौकादान देणा एहचारे सम हैं अर्थात् इनमेंसें कोईभी उपाय करे तौभी शुद्ध होजाताहै ॥ १ ॥ समिधा और घृत और हविःऔर धान्य और तिल इनांमेंसें किसे वस्तुकर्के गायत्रीमंत्रसें एक हजार वारां अधिक १०१२आहुतियांदेवे और उपवास व्रतकी करे तां प्राजापत्य कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै वारांते अधिक जो सहस्र सो कहिये द्वादश सहस्र ॥ २ ॥ पाराशर जी कहतेहैं ॥ कृच्छ्रइति प्राजापत्य और गायत्रीका दशहजार १०००० जप और दो सौ २००

पराशरः ॥ कृच्छ्रोयुतंतुगायत्र्याउपवासस्तथैवच ॥ धेनुप्रदानंविप्राय सममेतच्चतुष्टयम् ॥ १ ॥ समिद्घृतंहविर्धान्यंतिलान्वामरुताशनः हुत्वा द्वादशसाहस्रंगायत्र्याकृच्छ्रमाप्नुयात् २ ॥ द्वादशभिरधिकंसाहस्रंद्वादश साहस्रम् ॥ पाराशरः ॥ कृच्छ्रोदेव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयम् पुण्यतीर्थे नार्द्रशिरःस्नानंद्वादशसंख्यया ॥ १ ॥ यत्त्वपरार्के ॥ द्वादशैवसहस्राणिजपेद्देवीमुपोषितः जलांतेविधिवन्मौनीप्राजापत्योयमुच्यते इति ॥ १ ॥ जलांते जलसमीपे ॥ तथा तत्रैवचतुर्विंशतिमते अतिकृच्छ्रेपराकेचाशक्तः प्राजापत्यत्रयं कुर्य्यात् कृच्छ्रेगोमिथुनामिति ॥

प्राणायाम और पुण्य तीर्थ विषे वारां वार १२ सहित शिरके स्नान करणा अर्थात् जलमे निमग्न होकर स्नान करणा इह चारभी प्राजापत्य के सम हैं १ ॥ जो अपरार्क विषे कहाहै ॥ वारां हजार १२००० गायत्रीके जपकों उपवास व्रत कर्के जलके समीप विधि कर्के मौन व्रतकों धारके करे तां प्राजापत्य कहतेहैं ॥ १ ॥ तैसेंहि प्रसंग विषे चतुर्विंशति मत विषे कहाहै अति कृच्छ्र व्रत विषे और पराक विषे जेकर असमर्थ होवे तां तिसका बदला त्राय प्राजापत्यव्रत करे और कृच्छ्र व्रतविषे भी असमर्थ होवे तां तिसका बदला एक बलदके सहित एक गौका दान करे ॥

अत्रेति इस विषेहि बारांहजार १२००० गायत्रीके जप विषे वदला एक गौ और एक बलद दानकरें एह गौतम आदिक ऋषियांकर्के कहा जो प्राजापत्य व्रत तिसविषे जानणा ॥ अथवा समर्थ पुरुषविषे जानणा ॥ तिसी स्थानमे एह वाक्यहै अन्नेति सुवर्णके साथ अन्नदेकर्के शुद्ध जो वेदपाठी वारां ब्राह्मण तिनांको तृप्त करे और आप निराहारव्रत करे सो ऐसा व्रत प्राजापत्य कृच्छ्र कहा है॥ १ ॥ और भी कहाहै कि उपवासव्रत कर्के पीछे श्रद्धा कर्के युक्त होयाहोया धर्मतें वारां १२ वेदपाठी ब्राह्मणोंकेताईं तिलांके पात्रदेवे सो प्राजापत्यव्रतके सम फलकों प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरविषे विशेष कहाहै प्राजापत्यकृच्छ्रके स्थानविषे दश हजार१०००० गायत्रीकाजप प्रत्याम्नाय कहाहै अथवा समिदाघृत और हविः और धान्य एनांवि

अत्र द्वादशसहस्रगायत्रीजपे गोमिथुनंच गौतमाद्युक्तप्राजापत्यविषयं शक्तविषयंवा। तत्रैव। अन्नंदत्त्वाहिरण्येनद्वादशब्राह्मणान्शुचीन्। तर्पयेन्मारुताशीचश्रोत्रियान्कृच्छ्रउच्यते १ उपोष्यश्रद्धयायुक्तस्तिलपात्राणिधर्मतः द्वादशब्रह्मवादिभ्यःप्राजापत्येनतत्समम्॥ २ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरेविशेषः गायत्र्ययुतजपोवा प्राजापत्यकृच्छ्रस्थानेप्रत्याम्नायः॥ गायत्र्याद्वादशाधिकसहस्रसंख्याकः समिद्घृतहविर्धान्यानामन्यतमस्यहोमोवा। तिलहोमस्तुसाहस्रएवेतिकेचित्। घृताहुतिशतद्वयंवा वेदसंहितापारायणंवा प्राणायामशतद्वयंवा एकोपवासपूर्वकद्वादशतिलपात्रदानंवा तीर्थोद्देशेन योजनगमनंवा। शिरःशोपणपूर्वकंद्वादशसांगस्नानानिवा प्राजापत्यमेवकृच्छ्रम् ॥

चोंकिसे वस्तुका हवन करे गायत्रीके मंत्र कर्के एक हजार और वारां अधिक १०१२ गिणती कर्के। केक ऋषि कहते हैं एक हजार १००० तिलांका हवन करे व्याहृतियां कर्के ॥ अथवा घृतकीयां दो सौ २००आहुतियां देवें अथवा सारीवेदसंहिताका पारायणवाचे। अथवा दो सौ२००प्राणायाम करे गायत्रीमंत्रकर्के। अथवा एक उपवास व्रतकर्के वारां १२ तिलांके पात्रांका दान करे ॥ अथवा तीर्थयात्राके निमित्त चारकोश अपणे चरणांकर्के यात्राकरे॥ शिर के साथ स्नान करे और फेर शिरकों सुकाके फेर शिरके साथ स्नान करे ऐसे वारां स्नान करे सो प्राजापत्य व्रत होताहै ॥

अब तिलांके पात्रका परिमाण कूर्म पुराण विषे कहाहे तिलेति तिलांके पात्रका परि
माण त्रयतरांका हे एक कनिष्ठ दूसरा उत्तम तीसरा मध्यम तिसकों दिखाते हैं ताम्रेति
तांमेका पात्र दश १० छटांकका कनिष्ट कहाहै और २० छटांकका मध्यम कहाहै और
तीस ३० छटांकका उत्तम कहाहे इति ॥ १ ॥ कृच्छ्रका भेदें कहतेहैं गोमूत्रेणेति गोमूत्र करके
भिज्जे होये यवांको पीवे एह एकदिनका कृच्छ्र व्रत आप अंगिरस ऋषिने दखायाहै। १ ।तिसी
प्रकार उपवासव्रतकों रखके घासके बारां १२ भारांकों आप शिरकरके चुकलेआवे और गांयां
केतांई देवे परंतु सो गोवां बहुत होण तां कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्तहोताहे इसविषे संशय नहि है

तिलपात्रपरिमाणंतु कूर्मपुराणेउक्तम्। तिलपात्रंत्रिधाप्रोक्तंकनिष्ठोत्तममध्य
मम् ताम्रपात्रंदशपलंजघन्यंपरिकीर्त्तितम् ॥ १ ॥ द्विगुणंमध्यमंप्रोक्तंत्रिगु
णंचोत्तमंस्मृतमिति ॥ गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकंचोपयोजयेत् कृच्छ्रमैकाहि
कंप्रोक्तंदृष्टमंगिरसास्वयम् १ ॥ तथा ॥ स्वयमाहृत्ययोमूर्ध्ना तृणभारानुपो
षितः दद्याद्गोमंडलेकृच्छ्रंद्वादशैवनसंशयः २ ॥ प्राणायामशतंकृत्वाद्वात्रिं
शोत्तरमार्त्तिषु अहोरात्रोपितास्तिष्ठेत्प्राङ्मुखःकृच्छ्रउच्यते ॥ ३ ॥ नमस्का
रसहस्त्राणिद्वादशैवदृढव्रतः ॥ गोविप्रपितृदेवेषुकुर्यात्कृच्छ्रत्रयंभवेत् ४ ॥
वशिष्ठः ॥ अपिचेच्चरितंकर्त्तुंदिवसंमारुताशनः । रात्रौस्थित्वाजलेव्युष्टः
प्राजापत्येनतत्सममिति ॥ १ ॥

२ ॥ प्राणेति रोग आदि करके पीडाके होयां १ एक सो बत्ती १३२ प्राणायामकोंकरके दिनरात्र
उपवास व्रतकों करे और पूर्व मुख करके स्थित होवे तां प्राजापत्य कृच्छ्रका फल होताहे ॥ ३ ॥
नमस्कारेति ॥ व्रतविषे दृढ व्रत होकर जो पुरुष गौ और ब्राह्मण और पितर और देवता
इनांकों बारांहजार नमस्कार करे तां त्रय कृच्छ्र व्रतोंका फल तिसको होताहै ॥ ४ ॥ अब
वशिष्ठजी कहतेहैं ॥ निश्चय करके जेकर व्रत करणे मे स्थित होवे तां दिने वायु भक्षण करे
और रात्रिविषे जल विषे स्थितहोवे और व्युष्टः क्या प्रातः कालविषे बाहर होवे ऐसे एक
दिनका व्रत प्राजापत्य व्रतके तुल्य होताहे ॥ १ ॥

इसतें उपरंत प्राजापत्य कृच्छ्र का समुद्र विषे प्राप्त होणे वालीयां नदीयां विषे जो स्नान करणा है सो प्रत्याम्नायकहाहे ॥ इसविषे देवलऋषिका वचनहै एह समुद्र विषे जाणे वालीयां नदीयां हैं भागीरथी गंगा १ यमुना २ नर्मदा ३ सरस्वती ४ गोदावरी ५ कृष्णावेणी ६ तुंगभद्रा ७ पिनाकिनी ८ (१) वलापहारी ९ भीमरथी १० वंजुला ११ भवनाशिनी १२ अखंडा १३ कावेरी १४ ताम्रपर्णी १५ महानदी १६ (२) धनुःकोटी १७ प्रयाग १८ गंगासागरसंगम १९ एह पुण्य नदीयां हैं जिनांके दर्शन सें मनुष्योंके पाप नाशकों प्राप्त होतेहैं और स्पर्श करणेतें मोक्षकों देतीयां हैं और स्नान करणे तें मुक्ति कों देतीयांहैं ॥ ३ ॥ और जो सदाबीस २० योजनतक

अथ प्राजापत्य कृच्छ्रस्य समुद्रगनदीस्नानं प्रत्याम्नायः ॥ देवलः। समुद्रगनद्यः ॥ भागीरथीचयमुनानर्मदाचसरस्वती गोदावरी कृष्णवेणी तुंगभद्रापिनाकिनी ॥ १ ॥ वलापहारीभीमरथी वंजुलाभवनाशिनी अखंडाचैवकावेरीताम्रपर्णीमहानदी ॥ २ ॥ धनुःकोटिः प्रयागंचगंगासागरसंगमः ताएताः पुण्यनद्यस्तुदर्शनात्पापनाशनाः ॥ स्पर्शनान्मोक्षदान्दृणांस्नानान्मुक्तिप्रदायिकाः ॥ ३ ॥ सदाविंशद्योजनगा महानदी समुद्रगाच। एतासुस्नानमात्रेण मनुजः पूतोभवति प्राजापत्यकृच्छ्राचरणेऽसमर्थस्य तत्प्रत्याम्नायेगोदानाचरणेचाशक्तस्य नदीस्नानरूपमेव कलौयुगेसमीचीनम्। अतोनदीस्नानमेववयंब्रूमः ॥ गंगायांमौशलंस्नानंप्राजापत्यसमंविदुरितिभविष्योत्तरोक्तत्वात् गंगास्नानं विशुद्धिदमिति ॥

जगदी है अथवा समुद्र विषे प्राप्तहोती है सो महानदी कहीहै इनां विषे स्नान करणे कर्के मनुष्य पवित्र होताहै एही अर्थ विशद कर्के कहीदाहै ॥ प्राजापत्य कृच्छ्रके करणे विषे असमर्थ जो पुरुष है तिसकों गौका दान करणा एह प्रत्याम्नाय है तिसके करणे विषे भी जो असमर्थ है तिसकों कलि युगाविषे नदीका स्नान रूप हि प्रत्याम्नाय युक्तहै इस कारणतें नदी स्नानकों हि असी कहतेहां गंगाविषे मुसलकी न्यांई जो स्नानहै तिसका प्राजापत्यके तुल्य कहतेहैं ॥ एह भविष्योत्तर पुराण विषे कहणेतें ॥ और गंगा स्नान शुद्धिके देणे वाला है एभी वचन है ॥

पंच प्रकारकी गंगा स्कंदपुराण विषे कहीहै भागीति भागीरथी और गौतमी और कृष्णवेणी और पिनाकिनी और अखंडा कावेरी एह पंच गंगा कहीयांहैं होर जो समुद्र विषे प्राप्तहोण वालीयां नदीयां सो पुरुषांके पापांके दूर करणे वालीयां कहीयां हैं ॥ १ ॥ जो पुरुष इनांविषे स्नानवास्ते यात्रा करतेहैं तिनांके पाप निश्चयकर्के दूर होवेहैं ॥ और तिनां नदीयांकी जो यात्रा करतेहैं तिनां विषे भिन्न फलकों गौतम ऋषि कहताहै स्वग्रामेति अपणे ग्रामके समीप जो नदीहै जो होर योजनमात्र विषे क्या चौहकोंहां विषे नदी है तिस विषे स्नान करणे वास्ते अथवा दर्शन वास्ते जो प्राप्त होताहै तिस पुरुषकों इतना फल होताहै जितनयां योजनांकी यात्रा होवे अर्थात् दर्शनते स्नानका स्वल्प फल और स्नानतें जितने योजन दूर होंण तितनें

पंचविधागंगास्कंदपुराणे । भागीरथीगौतमीचकृष्णवेणीपिनाकिनी अखंडाचैवकावेरीपंचगंगाःप्रकीर्तिताः ॥ १ ॥ अन्याः समुद्रगानद्योनृणांपापहारिण्यः ॥ एतासु महानदीषुयात्रया मवश्यं पापनाशोभवति । एताः प्रतियात्रयाणांपृथक्फलमाहगौतमः ॥ स्वग्रामस्यचयासिंधुर्यान्यायोजनमात्रगा तामुद्दिश्ययदागंतुःस्नानार्थंदर्शनायवा ॥ यावंतियोजनानीह फलंतावल्लभेत्तुसः ॥ १ ॥ परार्थंयोऽनुगच्छेद्वास्नानमात्रंफलंलभेत् मूल्यं गृहीत्वायोगच्छेन्नतस्योभयमस्तिहि ॥ २ ॥ विष्णुपादोद्भवागंगादशकृच्छ्रफलप्रदा यमुनाचतथान्नृणामष्टकृच्छ्रफलप्रदा ॥ ३ ॥

कृच्छ्रोंका फल होताहै तांते एकयोजन पर जाणे वालेको एककृच्छ्रका फलहोंवेगा ॥ १ ॥ पर पुरुषके अर्थ वास्ते जो पुरुष स्नान करणे जाताहै तिसकों स्नान मात्रका फल प्राप्त होताहै अर्थात् यात्राका फल जो प्रतियोजन वृद्धिसे प्राजापत्यकी तुल्य ताकोदेणे वालाहै सो तिसीको हुंदाहै जिसने उसको भेजयाथा और अल्प फल जाणेवाले को भीहै और मुल्लकों ग्रहणकरके जाताहै तिसकों न जाणेका फल न स्नानका फल प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ विष्ण्विति विष्णुके चरणांतें उत्पन्न होई जो गंगा सो स्नानकरणेतें दश १० कृच्छ्रव्रतके फलकों देतीहै तिसी प्रकार यमुना स्नानतें पुरुषांकों अठ ८ कृच्छ्र व्रतके फल कों देतीहै ३ ॥

और गौतमी और कृष्णवेणी स्नान करणेते नौ ९ कृच्छ्र व्रतके फलकों देतीहै और दाक्षायणी और कावेरी अष्ठ ८ कृच्छ्र व्रतके फलकों देणे वालीहै ॥ ४ ॥ और तुंगभद्रा भीमरथी पुरु षांकों सप्त ७ कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं और वंजुला भवनाशी स्नानतें छे ६ जो कृच्छ्र व्रत तिनके फलकों देणे वालीयांहैं ॥ ५ ॥ और फाल्गुणी और ताम्रपर्णी पंचकृच्छ्र फलके देणेवालीहैं चापाग्र जो धनुःकोटीहै तिसविषे स्नानमात्र कर्के अठां ८ कृच्छ्रांका फल प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ श्रीशैलविषे और संगमविषे अर्थात् श्रीशैलमेजो पूर्वोक्त नदीयांका संगमहै तिस विषे और गंगासागरके संगमविषे स्नान करे बीस २० कृच्छ्र व्रतके फलकों प्राप्त होताहै इस कारणतें नदीयां बडीयां पवित्रहैं ॥ ७ ॥ प्राजापत्य कृच्छ्रका

गौतमीकृष्णवेणीचनवकृच्छ्रफलप्रदा दाक्षायणीचकावेरीह्यष्टकृच्छ्रफल प्रदा ॥ ४ ॥ तुंगभद्राभीमरथीसप्तकृच्छ्रफलप्रदा वंजुलाभवनाशीचषट् कृच्छ्रफलप्रदा ॥ ५ ॥ फाल्गुणीताम्रपर्णीचपंचकृच्छ्रफलप्रदा चापाग्रेस्नान मात्रेणह्यष्टकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ ६ ॥ श्रीशैलेसंगमेचैवगंगासागरसंगमे विंश कृच्छ्रफलंस्नानमतोनद्यश्चपावनाः ॥ ७ ॥ प्राजापत्याम्नायनदीस्नानप्रकार माह सएव पूर्ववत्पुण्याहवाचनसंकल्पादिकमृत्विजश्चकृत्वा नदीस्नाना भिमुखोभूयात् नदींगत्वा कर्त्ता पूर्ववत्स्नात्वागंधपुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य मयाप रिषत्संनिधौसंकल्पितस्यसर्वप्रायश्चित्तस्यसमग्रफलावाप्त्यर्थं परिषन्निर्णी तंप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतमब्दादिसंख्यया अहं ब्राह्मणैर्वा महानदी स्नानरूपमाचरिष्ये इतिसंकल्प्य ब्राह्मणान्प्रेषयेत् ॥

प्रत्याम्नाय जो नदीस्नान तिस का प्रकार गौतमही कहताहै पूर्वकीन्याईं पवित्र दिनविषे संकल्प कों करके ऋत्विजांकों साथ लेकर नदीविषे स्नानके वास्ते प्राप्तहोवे नदीकों प्राप्तहोकर पूर्वकी न्याईं स्नानकर्के गंध और पुष्प और अक्षतोंकर्के ऋत्विजांकों पूजके संकल्प करे कि मैंनें सभा के समीप विषे संकल्प कीयाजो पूर्ण प्रायश्चित्त तिसके संपूर्ण फलकी प्राप्तिवास्ते सभा विषे निश्चय कीयाजो प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नायरूप वर्षआदिकी संख्याकर्के तिसके अर्थमे महानदी विषे स्नानकों करताहूं अथवा ब्राह्मण द्वारा कर्वाहूं ऐसेसंकल्पकर्के ब्राह्मणांकोंभेजे।

और ऋत्विज जो हैं यजमानके गोत्र और नक्षत्र और राशि और शाखा और नामका उच्चारणकर्के इस यजमाननें अमुक गोत्रनें अमुक राशिविषे उत्पन्न होवे होयेनें अमुक शाखा ध्यायी नें अमुक नाम वालेने सभाके समीप विषे संकल्प कीया जो संपूर्ण प्रायश्चित्त तिसको सभा विषे निर्णीत जो कीयाहूया प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय जो महा नदीयां विषे स्नान तिनां नूं मुशलकीन्याईं सहित शिरके असीं करतेहां ऐसे ऋत्विज संकल्प कर के महा नदी विषे नदी वल मुख कर्के मंत्रांतें रहित मूसलेकी न्याईं सहित शिरकें स्नान को करके फेर तटकों प्राप्त होकें दो वार आचमन करे और शुद्ध वस्त्रको धार कर्कें शुद्ध वस्त्रके न होयां होयां बिसी वस्त्रको बारां वार छंडके धारे और दो वार आच

ऋत्विजस्तुयजमानगोत्रनक्षत्रराशिशाखानामधेयानि समुच्चार्य्य एतेनय जमानेनामुकगोत्रेणामुकराशौजातेनामुकशाखाध्यायिनामुकनामधेयेनप रिषत्संनिधौसंकल्पितस्यसर्वप्रायश्चित्तस्यपरिषन्निर्णीतस्यप्राजापत्यकृच्छ्र प्रत्याम्नायपरिकल्पितानि महानदीस्नानानि मौशल्यवदाचरिष्यामः ॥ इतिसंकल्प्य महानद्यां नदीमुखा स्तन्मंत्रवर्जमौशलमज्जनवत्स्नानं कृत्वा तटमागत्य पुनर्द्विराचम्यधौतवस्त्रं परिधाय तदभावेद्वादशसंख्य या वस्त्रावधूननंकृत्वा परिधायद्विराचम्य पूर्ववत् स्नायुः । एवंसंकल्पि ताब्दादिसंख्या भवति तदा यजमानः स्नातृभ्य ऋत्विग्भ्योनिष्कंवा तद र्धंवापादंस्नानफलस्वीकारार्थंदद्यात् निष्कशब्दोदेवमानेन वराहद्वयम् ऋषिमानेन तदर्द्धम् मानुषमानेनापितदेवग्राह्यम् प्रभूणामुत्तमप्रकारमेव समर्थस्य मध्यममार्किंचनस्य तदर्द्धं सुवर्णप्रमाणम् ।

मन करे फेर पूर्वकी न्याईं स्नानकरे ऐसें संकल्प कीयाजो व्रतके अर्थ वर्षादि काल तिसकी संख्या होतीहै अर्थात् जितने वर्षोंका व्रतहै तितने दिनांके स्नान पूरे करनेहैं तिसवास्ते एक एक दिनांविषे बहुत स्नान कीते चाहिए अपनी शक्तिकी अनुसार रोज रोज १० वा २० आदि कर्के संख्या पूरी होगी ॥ तद यजमान जो है स्नान करणे वाले जो ऋत्विज् तिनां तांईं स्नानके फलकी प्राप्ति वास्ते निष्क देवे निष्कका अर्द्ध देवे वा चौथाहिस्सा देवे निष्क शब्द देवमान कर्केंदो २ बराहका अर्थात् १८ मासे स्वर्णकाहै ॥ ऋषियांके मानकर्के अर्द्ध कहाहै मानुषके मानकर्के भीदोवराहग्रहण करणा व्यवस्था कहतेहैं प्रेतिराजालोकोंको उत्तम प्रकारहै और समर्थ क्या धनवालेकों मध्यम प्रमाण सुवर्णका निष्क कहाहै और इससे अर्द्धा निर्धनकों कहाहै

गौतम जी का वाक्य है ॥ गंगा विषें मूसलेकी न्यांई जो सहित शिरके स्नानहै तिसकों प्राजापत्य व्रत के सम कहतेहैं एह वाक्य पंजप्रकारकी गंगाके स्नानविषें जानणा इतरेति ॥ इतर जो समुद्रविषें प्राप्त होवे वालियां नदियां तिनांविषें स्नानका संकल्प भिन्न भिन्न करणा और कूआं विषें और तलाय विषें और पुष्करिणी क्या तलाईआं इनां विषें भिन्न संकल्प करणा ॥ और खंडानुवाक ऋचांका पठन करणा और सूर्यके सन्मुख स्थित होकर शुद्धि तें पीछें प्राप्तहोके शुद्ध वस्त्रको धारके और एक सौ अठ १०८ वार गायत्रीके जप करणे करके प्राजापत्य रूप व्रत होताहै ॥ अत्रेति ॥ इसी प्रसंग विषे स्मृति संग्रह और स्मृत्यर्थसार आदि शास्त्र विषे कहा जो प्रकार तिसके अनुसार प्रकार दखाईदाहै ब्रह्महत्याको प्रसंग

गौतमः ॥ गंगायांमैासलंस्नानंप्राजापत्यसमंविदुः एतत्पंचगंगास्नानविषयम् ॥ इतरासु समुद्रगनदीषु प्रतिस्नानं संकल्पः कुल्यायां तटाकपुष्करिण्यादिषुच पृथक्संकल्पःखंडानुवाकपठनंच। सूर्य्याभिमुखःसंमार्जनानंतरं गत्वा धौतवस्त्रादिकं धृत्वाष्टोत्तरशतंगायत्र्रीं जप्त्वा कृच्छ्रात्मकंभवति ॥ अत्र स्मृतिसंग्रहस्मृत्यर्थसाराद्युक्तप्रकारानुसारीप्रकारःप्रदर्श्यते ब्रह्महत्यामुपक्रम्यभविष्यत्पुराणे॥विंध्यादुत्तरतोयस्यनिवासःपरिकीर्त्तितः पराशरमतंतस्यसेतुबंधनिदर्शनमितिविंध्योत्तरवर्त्तिनमुक्त्वातत्रैव चतुर्विद्योपपन्नस्तुविधिवद्ब्रह्मघातके समुद्रसेतुगमनंप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ स्मृत्यर्थसारे तत्रसंकल्पपूर्वकं पद्भ्यां षष्टियोजनागतस्य भागीरथ्यां स्नानं षडब्दकृच्छ्रसमम् ॥

विषे ल्याके। भविष्यत्पुराणविषे कहाहै विंध्येति विंध्याचल पर्वततें उत्तर पासें निवास करणेवाला जो पुरुषहै तिसको पराशर जीके मतके अनुसार करकें ब्रह्महत्या पाप के दूर करणे निमित्त सेतुबंध रामेश्वरका दर्शन कहाहै ॥ १ ॥ ऐसे विंध्याचलके उत्तर वर्त्ति पुरुषके प्रायश्चित्तकों कथन करके तिसीविषे वाक्यहै चार विद्याविषे युक्त जो पुरुषहै सो ब्राह्मणके वधकरण वाले विषे वि. धि करके समुद्र सेतुके दर्शन वास्ते यात्राको कहे एहि पापके दूरकरणेके निमित्त प्रायश्चित्तहै ॥ १ ॥ और स्मृत्यर्थ सारविषे कहाहै कि पूर्वसंकल्प कों करके चरणां करके सठां ६० योजनां की यात्रा करकें गंगा विषें जो स्नानहै सो छे वर्षके ६ प्राजापत्य कृच्छ्र के तुल्य है

अवेति इहां यात्राविषेजैसे योजनोंकी वृद्धि है योजन चारकोशका नाम है तैसे हि कृच्छ्र व्रतकी वृद्धि कल्पना करणे योग्यहै॥ और एक योजनकी यात्राकों लेके नदीके स्नान वास्ते आयाजो पुरुष तिसकों रस्ते विषे पर्वतादिका व्यवधान होवे तां त्रय३ कृच्छ्र व्रतांका फल प्राप्त होताहै और तीसरा हिस्सा अधिक एक कोशकी यात्राको करके भागीरथी गंगा विषे विधि कर्के स्नानकरे तां एक कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै। और ६० योजनकी यात्राकों करके प्रयाग विषे क्या तीर्थ राज विषे विधि कर्के जो स्नान कर्ताहै सो पुरुष बारां वर्ष पर्यंत जो कृच्छ्र व्रत करणाहै तिसके तुल्य फलकों प्राप्त होताहै। ऐसे गंगाद्वार जो हरिद्वारहै तिस विषे और गंगासागर संगम विषे जानणा। और गंगाके स्नान वास्ते सठ योजनसें जो आयाहै तिसकों

अत्र यात्रायांयोजनवृद्धौ कृच्छ्रवृद्धिःपरिकल्पनीया॥ एकयोजनागतस्यमध्ये पर्वतादिव्यवधाने कृच्छ्रत्रयम्॥ तृतीयांशाधिकक्रोशादागतस्य भागीरथ्यां विध्युक्तस्नानमेककृच्छ्रः॥ षष्टियोजनादागतस्य प्रयागस्नानं द्वादशाब्दकृच्छ्रसमम्॥ गंगाद्वारे गंगासागरसंगमेचैवम्॥ गंगास्नानार्थंषष्टियोजनादागतस्य षडब्दत्वाद्दशयोजनागतस्याब्दप्रायश्चित्तं भवतीत्यादिकमूहनीयम्॥ वाराणस्यामगणितं फलं यतोवाराणस्यां पातकं न प्रविशति विंशतियोजनागतस्ययामुनंस्नानं द्व्यब्दकृच्छ्रतुल्यम्॥ तदेवमथुरायांद्विगुणम्॥ चत्वारिंशद्योजनागतस्य सरस्वतीमज्जनंचतुरब्दकृच्छ्रतुल्यम्॥ प्रभासेद्वारवत्यांचाद्विगुणम्। यमुनासरस्वत्योर्यात्रायोजनवृद्धौ पादकृच्छ्रवृद्धिःपरिकल्पनीया

छे६ वर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै इसीहिसावसे जो गंगाके स्नान वास्ते दश योजनते आया है तिसको एक वर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै इत्यादिक जानलेणा॥ और काशीविषे अगणित फल है क्योंकि तिसविषे पापका प्रवेश नहिहोता॥ और वीस२०योजनतें जो यमुनाकों प्राप्त होयाहै स्नानवास्ते तिसको दोवर्षके कृच्छ्रव्रतका फल होताहै। और यमुनातें मथुरा विषे दूणा फल जानणा। और सरस्वतीविषे स्नान वास्ते चाली ४०योजनतें जो आयाहै तिसकों चारवर्षके कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै॥ और प्रभासविषे और द्वारकाविषे सरस्वतीतें दूणा फल जानणा। और यमुनाते सरस्वतीके स्नान विषे जैसे जैसे यात्रा विषे योजन अधिक होवे तैसे तैसे पाद कृच्छ्र व्रतकी वृद्धि कल्पना करणी॥

दृषेति दृषद्वती और शतद्रु और विपाशा वितस्ता शरावती मरुद्वधा असिक्री मधुमती पयस्विनी घृतवती आदिक देवनदीयां विषे त्रिंशत् ३० योजनकी यात्रा कर्के जो स्नानहै सो वर्षके कृच्छ्र व्रतके तुल्यहै ॥ और पंदरां १५ योजनांकी यात्राकर्के जो स्नानहै सो पंदरां १५ प्राजापत्यके तुल्यहै। चंद्रभागेति चंद्रभागा वेत्रवती सरयू गोमती देविका कौशिकी नित्य जला मंदाकिनी सहस्रका पौनः पुन्या पूर्णपुण्या वाहुदा गंडकी वारुणी आदिक देवनदी यां विषे वारां १२ योजनांकी यात्राकर्के जो स्नानहै सो सोलां १६ कृच्छ्रके तुल्यहै और पंदरां योजनांकी यात्रा कर्के इनां महानदीयांके आपस विषे संगम विषे जो स्नानहै सो पूर्वतें त्रय गुणा अधिक फलहै और होर जो समुद्र विषे प्राप्त होणे वालीयां नदीयां हैं तिनां विषे वारां १२ योजनकी यात्रा कर्के जो स्नान कर्नाहै तिसकों छे ६ प्राजापत्यका फल होताहै ॥ और

दृषद्वतीशतद्रुविपाशावितस्ताशरावतीमरुद्वधाअसिक्रीमधुमतीपयस्विनी घृतवत्यादि देवनदीषु स्नानं त्रिंशद्योजनागतस्याब्दकृच्छ्रसमम् ॥ पंचद शयोजनागतस्य मज्जनं पंचदशकृच्छ्रसमम्॥चंद्रभागावेत्रवतीसरयू गोम ती देविका कौशिकी नित्यजला मंदाकिनी सहस्रका पौनःपुन्या पूर्ण पुण्या वाहुदा गंडकी वारुण्यादि देवनदीषु द्वादशयोजनागतस्य स्नानं षो डशकृच्छ्रसमम् ॥ पंचदशयोजनागतस्य एतासु महानदीष्वन्योन्यसंगमे त्रिगुणम् ॥ अन्यासु समुद्रगासु द्वादशयोजनागतस्य कृच्छ्रषट्कतुल्यम् अनुक्तस्थलेषुयात्रायोजनसंख्यया कृच्छ्रसंख्या ज्ञेया नदेषु नद्यर्द्धं महानदे षुमहानद्यर्द्धं फलं विज्ञेयम् शोणाख्यमहानदे गंगार्द्धफलम् पुष्करेप्रयागसमम्

अनुक्तेति नहि कहे जो तीर्थ और क्षेत्र आदिस्थान तिनांकी यात्रा विषे योजनांकी संख्या कर्के प्राजापत्यकृच्छ्र व्रतांकी संख्या जानणी और नदोंविषें स्नानका फल नदीसे अद्धा जानणा और महानदां विषे स्नानका फल महानदी के स्नानतें अद्धा जानणा ॥ और शोण नाम कर्के जो महानद तिस विषे स्नानका फल गंगाजीके स्नानतें अद्धाजानणा और पुष्कर विषे स्नानका जो फल है सो प्रयागके तुल्य जानणा

चतुरिति चव्वी २४ योजनकी यात्रा कर्के नर्मदा विषे जो स्नानहै तिसका फल चव्वी २४ कृच्छ्रके तुल्य जानणा और पूर्णा नदी विषें स्नानका फल अर्द्ध योजनकी यात्रा विषे एक कृच्छ्र होता है और कृष्णवेणी और तुंगभद्रा विषें एक योजनकी यात्रा विषे कृच्छ्र व्रतका फल जानणा और पंपासरो वर विषे स्नान करणेतें एकयोजनकी यात्रा विषे दो २ कृच्छ्रांका फलजानणा और हरिहर तीर्थ विषे स्नानका फल एक एकयोजनके प्रति तीन ३ कृच्छ्रांका फल जानणा और कुब्जिकासंगम विषे योजन प्रति दो २ कृच्छ्रजानणे और शुक्रतीर्थ विषे एकयोजन प्रति चार ४ कृच्छ्रांका फल जानणा और तापीविषे दश योजनयात्रासें स्नानका फल दश १० कृच्छ्रके तुल्य जानणा और पयोष्णीविषे स्नानका फल अठ ८ योजनकी यात्रा विषे अठ कृच्छ्र जानणे तिस तिस संगमविषे

चतुर्विंशतियोजनागतस्य नर्मदावगहनं चतुर्विंशतिकृच्छ्रतुल्यम् पूर्णायांयोजनार्द्धे कृच्छ्रः कृष्णवेणीतुंगभद्रयोः प्रतियोजनंकृच्छ्रसमम् पंपायांत्रिगुणम् हरिहरेत्रिगुणम् कुब्जिकासंगमेत्रिगुणम् शुक्रतीर्थे चतुर्गुणम् ताप्यां दशयोजनागतस्य दशकृच्छ्रसमम् पयोष्ण्यामष्टयोजनागतस्याष्टकृच्छ्रसमम् तत्रतत्रसंगमेत्रिगुणम् गोदावर्यां षष्टियोजनागतस्य त्र्यब्दसमम् त्रिंशद्योजनागतस्यैकाब्दम् ॥ सुतीर्थेषुप्रातिलोमानुलोमस्नानं षष्टिकृच्छ्रसमम् वंजरासंगमे प्रयागेद्विगुणम् सप्तगोदावरीभीमेश्वरेत्रिगुणम् कुशतर्पणेवंजरायां द्वादशयोजनागतस्य द्वादशकृच्छ्रसमम् गोदावर्यां विश्लेषे समुद्रांतंषड्गुणम् ॥ प्रणीतायांचतुः कृच्छ्रसमम्

त्रीणा फल जानणा और गोदावरीविषे सठ ६० योजनकी यात्रा विषे तीन ३ वर्षोके प्राजापत्यका फल होताहै और तीस ३० योजनकीयात्रा कर्के एक वर्षके कृच्छ्रका फल होताहै और सुतीर्थों विषे यात्रा कर्के और यात्राकी निवृत्तिकर्केअर्थात् जांदीवार और आउंदीवार मध्यतीर्थके स्नान विषे स्नानका फल सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य जानणा और वंजरासंगम प्रयाग विषे दूणा फल जानणा और सप्तगोदावरी भीमेश्वर विषे स्नानका त्रयगुणा फल अधिक जानणा और कुशतर्पण वंजराविषे बारां १२ योजनकी यात्रा कर्के स्नानका फल बारां १२ कृच्छ्रके तुल्य जानणा और गोदावरी विश्लेष विषे समुद्रपर्यंत स्नानविषे योजन प्रति छे ६ गुणा फल जानणा और प्रणीताविषें एक योजनकी यात्रा विषे चार ४ कृच्छ्रका फल जानणा

तुंगेति और तुंगभद्राविषे बीस २० योजनकी यात्रा करके स्नानका फल बीस २० कृच्छ्रके तुल्य होताहै और मलापहारिणी विषे अठ ८ योजनकी यात्राका फल अठ ८ प्राजापत्य कृच्छ्रके तुल्यहै और निवृत्ति विषे छे६ योजनकी यात्रा करके छे६ कृच्छ्रका फल होताहै और गोदावरी विषे एक एक योजनकी वृद्धि विषे पादकृच्छ्र जानणा और सिंहराशि विषे सूर्यके स्थित होयां होयां संपूर्ण तीर्थांविषे स्नानका फल गंगा स्नानके तुल्य जानणे योग्यहै कन्या राशिविषे बृहस्पतिके स्थित होयां होयां कृष्णवेणी और मलापहारिणीके संगमविषे जो स्नानका फल है सो सदा गंगा स्नानतें अर्द्ध जानणा ॥ और तुलराशिविषे सूर्यके स्थित होयांहोयां तुंगभद्रा विषे स्नानका फल गंगाके स्नानतें अर्द्ध जानणा ॥ और कर्क राशिविषे सूर्यके स्थितहोयां कृष्णवेणी और मलापहारिणीके संगम विषे ऐसे प्रयागविषे तीस ३० योजनकी यात्राकर्के

तुंगभद्रायांविंशतियोजनागतस्य विंशतिकृच्छ्रसमम् मलापहारिण्याम ष्टयोजनागतस्याष्टकृच्छ्रसमम् निवृत्त्यां षड् योजनागतस्य षट्कृच्छ्रसमम् गोदावर्य्यां यात्रायोजनवृद्धौयोजनेपादकृच्छ्रः सिंहस्थेरवौसर्वत्रजान्हवी समम् कन्यास्थेगुरौ कृष्णवेण्यांमलापहारिणीसंगमे सर्वत्र जाह्नव्यर्द्धम् ॥ तुंगभद्रायां तुलास्थेरवौजान्हव्यर्द्धम् ॥ कर्कटे कृष्णवेलायांमलापहारिण्या संगमेप्रयागे त्रिंशद्योजनागतस्य त्रिंशत्कृच्छ्रसमम् ब्रह्मेश्वरेपंचगुणम् भी मरथ्याःसंगमे प्रयागे द्विगुणम् ॥ निवृत्तिसंगमे चतुर्गुणम् ॥ पाताल गंगायां मल्लिकार्जुनेचषड्गुणम् ॥ ततः पूर्वे षष्टिकृच्छ्रसमम् ॥ लिंगालये द्विगुणम् ॥ समुद्रगमनेचैवम् ॥ अत्र सर्वत्र त्रिंशद्योजनागतस्येतिसंबं धः ॥ दशयोजनागतस्य कावेर्य्यां महानद्यां पंचदशकृच्छ्रसमम् ॥

प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों स्नानकाफल तीस ३० कृच्छ्रके तुल्य जानणा ॥ भीमेति और भीमरथीके संगम रूप प्रयागविषे एक एक योजनप्रति दूणा फल जानणा ॥ और निवृत्ति संगम विषे पूर्वोक्त चार ४ गुणां फल जानणा ॥ और ब्रह्मेश्वर विषे पंच ५ गुणां अधिकपूर्वोक्त फल एकएक योजनविषे जानणा । और पाताल गंगाविषे और मल्लिकार्जुनविषे योजनप्रति छे६ गुणां अधिक फल जानणा तिस पूर्वतीर्थ विषे सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य जानणा । और लिंगालय तीर्थ विषे दो २ गुणां अधिक कृच्छ्र जानणा । और समुद्रयात्राविषे भी दूणा फल जानणा इहां संपूर्ण स्थानांविषेतीस ३० योजनकी यात्राका संबंध कर लेणा ॥ और कावेरी महानदीविषे दश १० योजनकी यात्राकर्के प्राप्त होया जो पुरुष तिसको पंद्रां १५कृच्छ्रके तुल्य स्नानकाफल होताहै

ताम्रेति ताम्रपर्णी श्रोर कृतमाला श्रोर पयस्विनी इनांविषे वारां १२ योजनकी यात्रा कर्के प्राप्त होया जो पुरुष तिसकों स्नानकर्के वारां १२ प्राजापत्य कृच्छ्रके तुल्य फल होताहै ॥ श्रोर सह्यपर्वतके पादांतें उत्पन्न होइयां जो नदीयां श्रोर वेंकटपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सो श्रपणी श्रपणी दीर्घताके श्रनुसारकर्के यात्राविषे योजनांकी वृद्धि कर्के एक १ दो २ त्रय ३ कृच्छ्रव्रतांके फलकोंदेणे वालीयांहैं श्रोर विंध्यपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सोपूर्वोक्तसें दो गुणां श्रधिक फलकों देणेवालीहैं श्रोर हिमालयपर्वततें उत्पन्न होइयां जो नदीयां सो पूर्वोक्तसह्यपादजातनदीयांसें त्रयगुणांश्रधिक फलकों देणेवालीयांहैं श्रोर पिच्छे सह्यपाद वेंकटाद्रितें उत्पन्न हुइयां नदीयांके पुण्यका विवेककरतेहैं स्मृताविति स्मृतिविषे श्रोर पुराणविषे जैसे कैसे नहि कथन कीयां, जोकुल्या सो त्रयरात्र निवास कर्के कृच्छ्र श्रादि फलके देणेवालीयां हैं श्रोर श्रल्पनदीयां एक कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं ॥ श्रोर नदीयां दो २ कृच्छ्र फलकेदेणे वालीयां हैं श्रोर महानदीयां त्रय कृच्छ्र फलके देणेवालीयां हैं

ताम्रपर्णी कृतमाला पयस्विनीषु द्वादशयोजने द्वादशकृच्छ्रसमम् ॥ सह्यपादोद्भूतावेंकटाद्रिपादोद्भूताश्च नद्यः स्वस्वदैर्घ्यानुसारेणैकद्वित्रिकृच्छ्रफलप्रदाः ॥ विंध्यशैलोद्भवाद्विगुणाः ॥ हिमोद्भूतास्त्रिगुणाः ॥ स्मृतौ पुराणेच यथाकथंचिदनुक्ताःकुल्यास्त्रिरात्रिफलदाः॥ अल्पनद्यःकृच्छ्रशः ॥ नद्योद्विगुणकृच्छ्रशः महानद्यस्त्रिकृच्छ्रशः । सर्वत्र यात्रानुक्तौकृच्छ्रसंख्या योजनसंख्यया स्यात् ॥ एकयोजननादिषड्योजनान्ताः स्रवंत्यःकुल्याः ततोद्वादशयोजनगाश्रल्पनद्यः । चतुर्विंशतियोजनगानद्यः चतुर्विंशतियोजनाधिकानिवत्मानियासांताश्चमहानद्यः ॥उपवाससहितंनदीस्नानं । योजनादर्वागपि। कृच्छ्रसमम्

जिसजगा यात्रा नहि कही तिस संपूर्ण स्थान विषे कृच्छ्र व्रतांकी संख्या योजनकी संख्या कर्के जानणी ॥ अब कूलका लक्षण कहतेहैं एकेति एक योजनतें लेकें छे ६ योजन पर्यंत जो वगतीयांहैं तिनांका नाम कुल्याहै ॥ श्रोर बारां योजन पर्यंत जो पर्वाह वालीहैं सो अल्पनदीयांकहीयां हैं श्रोर चव्वी २४ योजन तक पर्वाह वालीयां हैं तिनकानाम नदी है श्रोर चव्वी २४ योजनतें अधिकहै मार्ग जिनांका सो महानदीयांकहीयां हैं और एक उपवास व्रतकों कर्के जो नदी विषे स्नानहै सो कृच्छ्र व्रतके तुल्यहै ॥ योजनतें न्यूनभी यात्रा होवे तदभीउपवासकर्के जो स्नानहैसो कृच्छ्र व्रतके तुल्यकहाहै ॥

शुनीति जिसनदीके प्रवाहते ऊपर और अधोभागके दोनों कनारयां विषे निवास करतेहैं श्वा क्या कुत्ते ऐसी नदीका नाम शुनीकहाहै तिसकी म्लेच्छ देशविषे संभावना करतेहैं कि कोई होवेगी ऐसे गर्दभी आदिकजानणी गधयांकर्के सेव्यमान नदी गर्दभी और चांडालांकर्के सेव्यमान नदी चांडाली और शूद्रांकर्के सेव्यमाननदी शूद्रीहै कष्टप्रवाहकर्के जो चलतीयांहैं अर्थात् अल्प है जल जिनांविषे ऐसीं जो नदीयांहैं और कर्मनाशा और करतोया और गंडकीतें आद लेके जो हैं एह सभ पापनदीयां हैं सो कहतेहां स्मृत्यंतर विषे कर्मेति कर्मनाशाके जल स्पर्श करणे कर्के धर्मका क्षय होताहै और करतोया नदीके लंघणे कर्के और गंडकी नदीविषे भुजाकर्के तरणेतें और जो शुभ कर्म आपकीताहै सो अन्य पुरुषके तांई कहणेतें नष्ट होताहै ॥ १ ॥ पपानद्यःएह कथन भी पूर्व संबंधी है ऐसा कैयोंका मत है सर्वत्र समुद्र विषे स्नान

शुनीगर्दभीचांडालीशूद्रीकष्टगानद्यःपापनद्यश्चवर्जनीयाः। शुनीश्वभिःसे व्या यस्याऊर्ध्वाधोभागीयोभयतटवासिनः श्वानःसाशुनीत्यर्थः। एवंभूता पियावनादिदेशे काचित्संभाव्यते। एवंगर्दभैश्चांडालैःशूद्रैस्सेव्यासासाभि धेया कष्टेनकार्श्यभावाद्गच्छतीतिकष्टगा अल्पजलेत्यर्थः पापनद्यःकर्मना शाकरतोयागंडकीप्रभृतयः ॥ कर्मनाशाजलस्पर्शात्करतोयाविलंघनात् गंडकीबाहुतरणाद्धर्मःक्षरतिकीर्तनादितिस्मृत्यंतरवचनात् इदमपिपूर्वसं बंधीतिकेचित् ॥ सर्वत्रसमुद्रस्नानंदर्शेकार्य्यम्। देवतासमीपेद्विगुणम् तत्र स्नात्वातद्देवतादर्शनेत्रिगुणंसेतौगमनंत्रिंशद्योजनागतस्यात्रिंशत्कृच्छ्रस मम् ॥ तत्रस्नात्वारामेश्वरदर्शनेषष्टिकृच्छ्रसमम् विंध्यदेशीयानांरामेश्व रसेतुदर्शनेजाह्नव्यांचत्रिगुणफलम्। जाह्नवीकेदारयोश्च तथैव।

अमावस्यामे कहाहै ॥ और समुद्रके समीप देवताका स्थान होवे तां तिसविषे तीस ३० योजनतें प्राप्तहोया जो पुरुष तिसकों स्नानकरणेतें दूणा क्या ६०कृच्छ्रका फलप्राप्त होताहै तिससमुद्रविषे स्नानकर्के देवताका क्या जगन्नाथआदिका दर्शन करे तां त्रय गुणां अधिक फल क्या नव्वे ९० कृच्छ्रकाफल प्राप्तहोताहै और तीस३०योजनकी यात्राकर्के सेतु बंधकों प्राप्त हो वणेतें तीस ३० कृच्छ्रके तुल्य फलप्राप्त होताहै ॥ तिस सेतुबंध विषे स्नान कर्के रामेश्वरके दर्शन विषे सठां६० कृच्छ्रांकाफल प्राप्त होताहै और विंध्य देशविषे निवासकरणवाले जो पुरु ष तिनांको रामेश्वर सेतुके दर्शन विषे और गंगाकेस्नान विषे पूर्वोक्तें त्रयगुणां अधिक कृच्छ्र का फलप्राप्त होताहै गंगा और केदारेश्वर विषे भी त्रयगुणां अधिक फल होताहै

वसीति दक्षिणदेश निवासीयांको गंगाविषे योजनयात्रातें छे६ गुणाअधिक फलहोताहै और गंगा देश निवासीयांको यात्रा योजनतें सेतुरामेश्वरके दर्शनतें छ ६ गुणाअधिकफल होताहै और तीस ३० योजनकी यात्रातें स्वामिकार्तिकके दर्शनविषे वीस २० कृच्छ्रके तुल्य फल होताहै ॥ जिस स्थान विषे गंगा संज्ञा है तिसी स्थान विषे श्रीरंग और पद्मनाभ और पुरुषोत्तम और चक्रकोट इनांका दर्शन होवे और लोणारस्थान विषे तीस ३० योजनकी यात्राकर्के दर्शनक निमित्त प्राप्त होया जो पुरुष तिसको तीस३० कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होताहै और केदार विषे तीस३० योजनकी यात्राकर्के नव्वे ९० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और संपूर्ण जो वैष्णव स्थान और माहेश्वर स्थान और सूर्यजीके स्थान और शक्तिआदिक जो स्थान इनांपीठांके दर्शन कर्के तीस ३० योजनकी यात्रा विषे पंदरां १५ कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और प्रख्यात

दक्षिणदेशीयानांचजाह्नव्यांषड्गुणम् गंगादेशीयानांचसेतुरामेश्वरेषड्गुणं स्कंददर्शनेत्रिंशद्योजनागतस्याविंशतिकृच्छ्रम् यत्रगंगासंज्ञास्ति तत्रैव श्रीरंगपद्मनाभपुरुषोत्तमचक्रकोटदर्शने लोणारस्थाने त्रिंशद्योजनागतस्य त्रिंशत्कृच्छ्रम् केदारेत्रिगुणम् । सर्ववैष्णवमाहेश्वरसौरशक्त्यादिपीठदर्शने पंचदशकृच्छ्रम् प्रख्यातेद्विगुणम् अहोबिलेपितथा श्रीशैलप्रदक्षिणेपष्टिकृच्छ्रम् श्रीशैलेप्येकैकशृंगदर्शने द्वादशकृच्छ्रसमम् ॥ अन्येषुप्रख्याततीर्थेष्वदर्शनेषु षट्कृच्छ्रसमम् सिद्धक्षेत्रेऽन्यक्षेत्रेचस्वयंविभुदर्शने त्रिंशत्कृच्छ्रसमम् । त्रिंशद्योजनागतस्य सर्वत्र कृच्छ्रसंख्या योजनसंख्यया ज्ञेया

पीठ विषे तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के सठ ६० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै और अहोबल पीठ विषेभी सठ ६० कृच्छ्रका फल प्राप्त होताहै तैसे श्रीशैल पर्वतकी प्रदक्षिणाका फल तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के सठां ६० कृच्छ्रांके तुल्य होताहै और श्रीशैलविषेभी एक एक शृंगके दर्शन करणेकर्के बारां १२ कृच्छ्रांके तुल्यफल प्राप्त होताहै होर जो प्रकट तीर्थहैं और देवता इनांके दर्शनविषे तीस३० योजनकी यात्राकर्के छे६ कृच्छ्रकेतुल्य फल प्राप्त होताहै और सिद्ध क्षेत्र विषे और अन्य क्षेत्र विषे और अपणे अपणे इष्ट देवताके दर्शनाविषे तीस ३० योजनकी यात्रा कर्के तीस ३० कृच्छ्रके तुल्यफल प्राप्त होताहै तीस योजनकी यात्रा कर्के इहां संपूर्ण स्थान विषे कृच्छ्रव्रतांकी संख्या योजन संख्या कर्के जानणे योग्यहै

अब देवलजी कहतेहैं अतीति तीर्थोंको प्राप्त होके और जो पवित्र स्थान तिनांकों प्राप्त होके और ब्राह्मण जो तपस्वी तिनांके स्थानकों प्राप्तहोके जो पुरुष कर्मोकों करताहै सो पापसें रहित होताहै ॥ १ ॥ समुद्रविषे प्राप्तहोणे वालियां सब नदियांपुण्यके देणेवालियांहैं और संपूर्ण जो उत्तम पर्वत हैं सोभी पुण्यके देणे वाले कहेहैं और संपूर्ण उत्तम स्थान पवित्रहै अर्थात् इन्हां सब जगा मुनियोंके निवासहै और जो बनकेआश्रय जो जलस्थानहैं सो संपूर्ण पवित्र कहेहैं २ अबजामदग्न्यका वचनहै ॥ तीर्थविषे स्नान करणेतें पादकृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै और नदी विषे स्नानसें अर्द्ध कृच्छ्रके फलको प्राप्त होताहै और महानदीविषे स्नानतें दूणे फलको प्राप्त हो

देवलः । अतिगम्यचतीर्थानिपुण्यान्यायतनानिच नरःपापात्प्रमुच्येतब्राह्मणानांतपस्विनाम् १ सर्वास्समुद्रगाः पुण्याः सर्वेपुण्यानगोत्तमाः सर्वमायतनंपुण्यंसर्वेपुण्यावनाश्रयाइति २ ॥ जामदग्न्यः॥तीर्थेतुपादकृच्छ्रःस्यान्नद्यांत्वर्द्धफलंभवेत् द्विगुणंतुमहानद्यांसंगमेत्रिगुणंभवेदिति ॥ १ ॥ अथपरार्थं तीर्थगमनेफलम् परार्थगंता तीर्थे षोडशांशफलं लभते प्रसंगेनगंतार्द्ध फलंलभते अन्योद्देशेनकृतकर्मणान्यस्यसिद्धिरूपोऽवांतरकार्यनिर्वाहः प्रसंगः ॥ अनुषंगेण तीर्थे प्राप्य स्नानेस्नानफलमेव॥ अन्योद्देशनप्रवृत्तौतत्क्रियानांतरीयकतयान्यस्यसिद्धिरनुषंगः ॥

ताहै और संगम विषे स्नानते त्रिगुणअधिक फलको प्राप्त होताहै इति ॥ १ ॥ इसते उपरंत होरी पुरुष वास्ते जो तीर्थकों जाताहै तिसके फलकों कहते हैं ॥ परपुरुषके वास्ते जो तीर्थकों जाता है सो पुरुष पुण्यके सोलवें हिस्सेकों प्राप्तहोताहै जो किसेके प्रसंग अर्थात् अन्य पुरुषके निमित्त कर्के यात्रा करणी और उसकी यात्रा विषे अपणी यात्राके निर्वाहकों कर्के जाताहै सो अर्द्ध फलको लभताहै और जो किसेके संग कर्के अर्थात् अन्य पुरुषके निमित्त कर्के जो स्नानकों जाताहै अंतरीय कर्के नहि आता तिसको तीर्थ विषे प्राप्त होके यात्रा फलतें विना स्नानका हि फल होताहै

मातेति मातामह क्या नाना और मतरेर भ्राताका मातामह क्या नाना और पितृका भ्राता और माताका भ्राता और श्वशुर क्या अपणी स्त्रीका पिता इनांके वास्ते जो स्नान करता है और गुरु और आचार्य जो कर्मांके करवाणे वाला और शास्त्रके पढाणे वाला इनांके वास्ते जो स्नानहै और इनां कियां स्त्रींयांवास्ते जो स्नान कर्ताहै और पिताकी भयण और माताकी भयण इनांवास्ते जो स्नानकर्ताहै सो आप अठवें ८ हिस्से फलकों प्राप्तहोताहै॥ और माता पिताके वास्ते पुत्र स्नानकरे तां चौथे हिस्से फलकों प्राप्तहोताहै स्त्री और भर्ता और सपत्नीक्या साकणां इहसब आपसविषे स्नान करें तां अर्द्ध फलकों प्राप्तहोतेहैं ॥ और धनको लेंके जो पुरुष तीर्थ कों जाताहै तिसको अल्प फलहै ॥ अब और विशेष कहते हैं कर्केति श्रावण और भाद्रो इनां

मातामहभ्रातृमातामहपितृव्यमातुलश्वशुरेशेषकार्थम् ॥ गुर्वाचार्य्योपाध्यायार्थं तत्पत्न्यर्थंपितृष्वसृमातृष्वस्त्रर्थंच स्नात्वा स्वयमष्टमांशंलभते पित्रोरर्थंकुर्वन्पुत्रश्चतुर्थांशम् । दम्पतीचसपत्न्यश्चलभंतेर्द्धमिथः फलम् अर्थिनांचतत्फलह्रासः ॥ कर्कादिमासद्वये रजस्वलानद्य स्तास्वपि गोमती चंद्रभागासिंधुर्नर्मदासरयूश्चात्रिरात्रं वापीकूपतडागादिषु स्थितपुराणोदकेषुत्रिरात्रम् ॥ सरस्वतीगंगायमुनागयादयोनकदापि रजस्वलाः ॥ इति प्राजापत्यकृच्छ्रस्यनदीस्नानप्रत्याम्नायः * । प्राजापत्यस्य ब्राह्मणभोजनरूपप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायमंशृणु यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरपिनारद ॥ १ ॥ पूर्ववत्संकल्पादिकं कृत्वा द्वादश ब्राह्मणान्निमंत्रयेत् ॥

दोनो महीनयां विषे नदियां रजस्वला होतीयांहैं तिनां संपूर्ण नदियां विषे गोमती नदी और चंद्रभागा और सिंधु और नर्मदा और सरयू एह त्रय रातीं अशुद्ध होतियांहैं और जिनांविषे चिर काल जल रहता है तिनां वाउलियां और कूप क्या खूह और तला विषे त्रय रात्र अशुद्धि कहीहै । सरस्वती और गंगा और यमुना और गयाते आद लेंके जो नदियां हैं सो कदीभी रजस्वला नहि होतियां एह प्राजापत्यकृच्छ्रके स्थान वदला नदियां विषे स्नानकहाहै * अब प्राजापत्य कृच्छ्रके विषे जो प्रत्याम्नायहै ब्राह्मणोंकेताईं भोजनदेणा तिसकों देवलऋषि कहताहै पेति प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नाय क्या वदलेकों हेनारद श्रवण कर जिसके करणेसें पापी महा पापांतें रहित होताहै ॥ १ ॥ पूर्वकी न्यांईं संकल्पकों करकेबारां ब्राह्मणाकों निमंत्रणकरे

अब पराशरजीकहतेहैं प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायविषे ब्राह्मणांका पूजनकहाहै जिसके करणे कर्के पापी पुरुष पापांतें शुद्धिकों प्राप्त होताहै और प्राजापत्यके फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ पूजनकीविधि कहतेहैं ब्राह्मणाकों निमंत्रण करे कैसे ब्राह्मणहैं जो मनकर्के शांत और सहित स्त्रीयाके और वेदके पढने विषे युक्त और शुभ कर्मांके करणे कर्के शुद्ध हैं असयां ब्राह्मणोंकों कृच्छ्र व्रतके फलकी प्राप्ति वास्ते पूजे ॥ २ ॥ अब आपस्तंबऋषिका वचनहै चीति ब्राह्मण मंत्रों कर्के युक्त और देशतें और कालतें और शौचतें और शुभ दान ग्रहणकरणेतें जो शुद्ध हैं तिनांकों संपूर्ण कृत्यविषे जोडे ॥ १ ॥ असे ब्राह्मणांकों निमंत्रण कर्के बहुत विस्तार वालेयां अन्नांकर्के भोजन खवाये और तिनांके तांई अपने धनके अनुसार दक्षिणा देणे योग्यहै २ ॥ इसतरह जो भलो प्रकार कर्ताहै सो प्राजापत्यके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥ अब प्राजापत्यके

पराशरः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायंद्विजार्चनं कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिप्राजापत्यफलंलभेत् १ विप्रान्शांतान्सपत्नीकान्वेदशीलपरिष्कृतान् सदाचारशुचीन्नित्यंकृच्छ्राथंतान्नियोजयेत् २ आपस्तंबोपि विप्रान्शुचीन्मंत्रवतःसर्वकृत्येषुयोजयेत् देशतः कालतः शौचात्सम्यक्प्रतिगृहीतृतः १ ॥ एवंविप्रान्निमंत्र्याथभोजयेद्बहुविस्तरैः तेभ्यश्चदक्षिणादेयायथावित्तानुसारतः २ ॥ एवंयःकुरुतेसम्यक्प्राजापत्यफलंलभेत् ३ ॥ अथप्राजापत्यस्य प्रत्याम्नायंवेदपारायणमाहदेवलः ॥ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यवेदपारायणं महत् प्रत्याम्नायंप्रशंसन्तिशाखामात्रंप्रहारणम् ॥ १ ॥ पारायणेनभगवान्कृतकृत्योभवेत्तदा फलंसंपूर्णंकृच्छ्रस्यप्रददातिनसंशयः ॥ २ ॥ प्रातःकालेशुचिर्भूत्वास्नात्वानित्यंसमाप्यच ॥ स्वगृहेदेवतागारेनद्यांवादेवतालये ॥ ३ ॥ प्राङ्मुखोदङ्मुखोवापिसंकल्पंपूर्ववच्चरेत् ॥

वदले विषे संहिताके पाठकों देवलऋषि कहताहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्रविषे संपूर्ण संहिताका उच्चारणकरणा तिसकों श्रेष्ट कहतेहैं ॥ शाखामात्र क्या अपनी अपनी एकशाखाकाहि पारायण करणा सारे वेदका नहि सो पारायण (प्रहारण) है क्या सर्व पाप नाशकहै १ ॥ इसपारायणकर्के भगवान् कृत कृत्य हुंदाहै अर्थात् प्रसन्न हुंदाहै और कृच्छ्रके संपूर्ण फलकों तिसताई देताहै इसविषे संशय नहि है ॥ २ ॥ और प्रातःकालविषे शुद्धहोके स्नान करे और संध्यावंदनादि नित्य कर्मको करके अपणे गृह विषे वा देवताके मंदिर विषे वा नदी विषे वा देवताके स्थान विषे जावें और इसमें एह अभिप्रायहै कि जिस जगा देवतापहलेथा सो देवतागार किहाहै और जिस जगा देवता विद्यमानहि है सो देवता लयजानणा ॥ ३ ॥ पूर्वपासे मुखकर्के वा उत्तर पासे मुखकर्के फेर संकल्पकों पूर्वकीन्याई करे

पारायण करणविषे एह विधिहै कि आदविषे ओंकारकोपडके पारायणकापाठकरे ॥ ४ ॥ और पूर्वादि दिशा पासे न देखे और पापियां पुरुषांके साथ संभाषण त्यागे और मौन व्रतक्या पाठते विनाहोर कुछ न कहे मौनको धारके होली होली वेदकोंपडे ॥ ५ ॥ अब पारायणविषे दोष कहतेहैं शीघ्रोंते जो शीघ्र पाठ करणेवाला और पाठ करदयां शिरको हलाणेवाला और आपही लिखके पडणेवाला गद्गद क्या जिसकीवाणी स्पष्ट न होवे ऐसा जो है और स्वरतेहीन पठने वाला ॥ एह पंज पाठ करणे वालयांविषे अधम कहेहैं ॥ ६ ॥ इस कारणते होली होली विद्याका अभ्यासकरे क्या पाठकरे आत्माकी शुद्धिवास्ते सो पारायणकी समाप्तिके होयां होयां

पारायणेतुप्रणवंकृत्वापारायणंपठेत् ॥ ४ ॥ दिशस्त्वनलोकयेवद्यसंभा षेयत्रपापिनः मौनव्रतंसमागम्यपठेद्वेदंशनैःशनैः ॥ ५ ॥ शीघ्रपाठीशिरः कंपीस्वयंलिखितपाठकः । गद्गदस्स्वरहीनश्चपंचैतेपाठकाधमाः ॥ ६ ॥ अतःशनैःशनैर्विद्यामभ्यसेदात्मशुद्धये यावत्समाप्तिर्भवतितावत्कृच्छ्रफलंल भेत् ॥ ७ ॥ स्वयमेवपठेद्वेदमुत्तमंपरिकीर्तितम् प्रमामापोमध्यमः स्याद्भूत केनिष्फलंभवेत् ॥ ८ ॥ प्रमयायथार्थज्ञानेन मापयतिअहंयथार्थपाठीति वोधयतीति प्रमामापअन्यार्थपाठकः । सतु प्रयोजकस्य फलंदातुं प्रवृत्त त्वात् मध्यमः यद्वा प्रमांप्रकृष्टलक्ष्मींमापयति तुभ्यं वहुधनंदास्यामी तिविश्वासयति प्रमामापःप्रयोजकः ॥ भूतकेअनध्यायेइति

कृच्छ्र के फलको प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ अब और रीतिसे पाठकको उत्तमादि व्यवस्था कहतेहैं स्वयमेवेति आप वेदको पडे तां उत्तम कहाहै प्रमामापजोहै ॥ यथार्थ ज्ञानकरके जो अन्य पुरुष नांई वांचन करवाए क्या मैं यथार्थ पाठ करताहां ऐसें अन्यपुरुषके ताईं फलकें देणेनू जो पाठ करताहै सो मध्यम पाठक कहाहै। यद्वा दूसरा अर्थहै वहुत धनको जो वोधन करवाताहै क्या मैं तेरेताई वहुत धन देवांगा ऐसें प्रेरणा कर्ताहै ऐसा पाठ वेदका करवाणे वाला मध्यम फल भागी कहाहै और अनध्याय विषे पाठ करे तां निष्फल होताहै ॥ ८ ॥

अथ क्या इस पुराण प्रत्याम्नायकों कहकर्के अब प्राजापत्य कृच्छ्रके प्रत्याम्नायविषें गायत्रीके जपकी विधि कहीहै अयुतमिति वेदकी माता जो गायत्री तिसके दश हजार १०००० जपके करणेंतें पुरुष संपूर्ण पापांते रहित होताहै अब जप करणेकी विधि कहतेहैं प्रातरिति जपकरता ऐसा करे कि पहले प्रातःकालविषें यथा चार क्या जिस २ वर्ण कों जो विधानहै जैसें ब्राह्मणकों १३ तेरां क्षत्रियकों १२ वैश्यकों ११ शूद्रकों १० स्त्री कों ४ अंगुलकीदातन कहीहै इत्यादि बिधि कर्के दातनकोकरे फेर स्नान करे ॥ १ ॥ और अग्नि होत्र वाले स्थान विर्षे स्थित होके अथवा देवताके मंदिर विषें वा नदीके कनारे विषें वागांवांके स्थान विषें वा वृंदावन देश बिषें इनां मेसें भांवें किसे स्थान विषें जपे १०००० ॥ २ ॥ अब जप माला कों दस्सते है पर्वभिरिति हत्थके पर्वांकर्के वा जपकी माला कर्के वा

अथ प्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायेगायत्रीजपाविधिः ॥ अयुतंवेदमातुश्चसर्वपापैःप्रमुच्यते प्रातःस्नात्वायथाचारंदंतधावनपूर्वकम् ॥ १ ॥ अग्निहोत्रालयेदेवगृहेवापिनदीतटे गोष्ठेवृंदावनेदेशेजपेदयुतसंख्यया ॥ २ ॥ पर्वभिर्जपमालाभिःकुशग्रंथिभिरेवच स्वयंमौनमुपस्थायदिशश्चानवलोकयन् ॥ ३ ॥जपेन्महापापजालहननार्थंदिनेदिने अव्यग्रचित्तःप्रजपेदन्यथादोषमश्नुते ॥ ४ ॥ मार्कंडेयः ॥ संदिग्धस्तुहतोमन्त्रोव्यग्रचित्तोहतोजपः अब्राह्मण्यंहतंक्षात्त्रमनाचारंहतंकुलम् ॥ १ ॥

कुशाकियां गंडां कर्के आप मौनकों धारके परंतु और किसे दिशा विषेंभी दृष्टि न करे क्या एकाग्र चित्त कर्के ॥ ३ ॥ महा पापके समूहके नाश वास्ते दिन दिनविषें सावधानहोकर जपे दश हजार संख्यातक और ऐसें न जपे तां दोषकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ अब जपविषे मार्कंडेय जी कहतेहैं संदिग्ध इति संशय वाला मंत्र हत है क्या नाहि सिद्धिके देणे वालाहै और एकाग्र चित्तें विना जपभी हतहै क्या नहिसिद्धिके देणे वाला और जो क्षत्री ब्राह्मणको नहि मानता सो क्षत्रीभी नष्ट है और आचार ते हीन कुलभी नष्टहै ॥ १ ॥ इसमें एह अभिप्रायहै कि किसे पुस्तकमें क्षात्रकी जगा (शास्त्र) एह पाठहै तिसका अर्थ एह है कि जिस शास्त्रमें ब्राह्मणकी निंदा हैसो शास्त्र हत है ॥

इस कारणतें मन विषे जप करणे योग्यहै मन कर्के जो जप कीताहै सो कोड १०००००० गुणां अधिक फलके देणे वालाहै और दश हजार जप करे तां पूर्ण प्राजापत्य कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहे ॥ २ ॥ कुछ और कहतेहैं अंगुलीति जो जप अंगुलीयांके अग्रकर्के जप याहै और जो मेरुके मणकेकों लंघकर्के जपयाहै और दो प्रकारके चित्तकर्के जपयाहैश्चथा एकाग्र चित्तकर्के नहि सो संपूर्ण निष्फल होताहे ३ पराशरजीकावचनहै हस्तकीयां पंजां अंगुलीयां विषे अंगुष्ठतें जो चौथी अंगुलिहै तिस कर्के विसकारले पर्वतें लेके दोपर्व हथवाले पासयों लेके ग्रहण करे और अंगुष्ठतें पंजवी अंगुलि जो कनिष्ठिकाहै तिसके त्रय पर्व हथवाले पासयों लेके अग्रतक क्रमसें लये ॥ १ ॥ फेर चौथी अंगुली और तीसरी बिना दोनोंके अगलयां

अतोमनसिजप्तव्यंमानसंकोटिरुच्यते अयुतंचजपेत्पूर्णप्राजापत्यफलंलभेत् ॥ २ ॥ अंगुल्यग्रेणयज्जप्तंयज्जप्तंमेरुलंघने द्विधाचित्तेनयज्जप्तंतत्सर्वं निष्फलंभवेत् ॥ ३ ॥ पराशरः ॥ हस्तस्यानामिकामध्यपर्वादारभ्ययत्नतः तद्द्वितीयंकनिष्ठायाःपर्वत्रयमनुक्रमात् ॥ १ ॥ अनामिकोर्ध्वपर्वादेर्मध्यमाद्यस्तुतर्जनी पर्वत्रयंतदाकृत्वातदेवाक्रम्यपूर्ववत् ॥ २ ॥ मेरोर्यावदंगुष्ठं तस्यनातिक्रमंचरेत् पर्वाभिर्गणयेत्सोपिगायत्त्रीमन्यमेववा ॥ ३ ॥ एकैकस्यशतंप्रोक्तंगणनंमुनिभिस्सदा अयुतेनजपेनाशुजप्तातत्फलंलभेत् ॥ ४ ॥ गौतमः ॥ कृषितोनास्तिदुर्भिक्षंजपतोनास्तिपातकं मौनेनकलहोनास्तिनास्तिजागरतोभयम् ॥ १ ॥

पर्वांकों ग्रहण करे फेर अंगुष्ठतें दूसरी अंगुली जो तर्जनी है तिसके तीन पर्व ग्रहण करे क्रमतें । २ । और मेरुके स्थान विषे जो अंगुष्ठहै तिसकों न उछंघे इसतें एक आवृत्तिकी दश १० संख्या होजाती है इसप्रकार पर्वां कर्के जप करे गायत्रीका अथवा होर किसे मंत्रका ॥ ३ ॥ एक एक आवृत्तिके अंगुलिके जपतें मुनियांने सौ गुणां अधिक फल कहाहै इसी कर्के दश हजार १०००० जप करणेतें तत्काल कृच्छ्रके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ इसमे गौतमजी कहतेहैं खेती कर्मके करणेतें काल नहि होता और जपकरणेतें पाप नाहि होता और मौनधारणेतें लडाई नहि होती और जागरण करणेतें भय नहि होता ॥ १ ॥

जपतें पाप नाशकों प्राप्त होताहै इस कहणेतें कृच्छ्र व्रतका प्रत्याम्नाय गायत्री कहीहै ॥ इससें उपरंत प्राजापत्य कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय तिलांका होम कहाहै होमइति कीडयांते रहित जो तिल घृत कर्के युक्त तिनांकर्के जो होमहै मृत्युंजय मंत्रकर्के अंगन्यास और ध्यानकों पूर्व कारके सो पापांके नाश करणे वाला कहाहै ॥ १ ॥ इसमे और विधि कहतेहें संत्रस्तइति भय कर्के संयुक्त होया होया अग्नि विषे हवन न करे अर्थात् सावधान होकरके करे और ॐ ह्रौं जूंसः ॐ भूर्भुवः स्वः इनावीजां कर्के तिलांका हवन करे संपूर्ण होम करणेकर्के तिसी क्षणमें पवित्र होताहै २ इसमें कुच्छ होरकहतेहैं किआप हवनकरे वा ब्राह्मणांपासो करवाये तिलांकी हजार

जपतोनास्तिपातकमितिस्मरणादयंप्रत्याम्नायः ॥ अथप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायेतिलहोमविधिः ॥ होमस्तिलैरकीटैश्चघृतैःपापप्रणाशकृत् मृत्युंजयेनमंत्रेणन्यासध्यानपुरःसरः ॥ १ ॥ संत्रस्तोनहुनेद्वह्नावाहुतीर्वीजपूरणैः सहोमंसकलंकृत्वापूतोभवतितत्क्षणात् ॥ २ ॥ संत्रस्तोनहुनेत्किंतुसमाहितएवजुहुयादित्यर्थः। तत्रापि वीजपूरणैः ॐह्रौंजूंसःॐभूर्भुवःस्वरितिवीजपूरणयुक्तैः। स्वयंवाऋत्विजोथोवातिलहोमसहस्रकम् कुर्यान्मासिनमेधावीप्राजापत्यफलंलभेत् ॥ ३ ॥ अथ प्राजापत्यकृच्छ्रस्यशतद्वयप्राणायामरूपप्रत्याम्नायमाहदेवलः प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायोमहत्तरः धर्मशास्त्रोक्तमार्गेणप्राणायामशतद्वयम् ॥ १ ॥ जपसंकल्पहोमेषुसंध्यावंदनकर्मसु
प्राणायामांश्चरेद्विप्रस्तदानंत्यायकल्प्यते ॥ २ ॥

ऐसे दिन दिनाविषे आहुतिएकमासके व्रतकर्के वृद्धि मान् प्राजापत्यके फलको प्राप्त होताहै ३ अब प्राजापत्य कृच्छ्रका और प्रत्याम्नायहै क्या दो सौ २०० प्राणायाम तिसकों देवलऋषि कहताहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्रका प्रत्याम्नाय एह वडा श्रेष्ठ कहाहै क्या धर्मशास्त्रकर्के कही जो विधिहै तिस विधिकर्के प्राणा यामदो सौ २०० वार करे गायत्रीके मंत्रकर्के ॥ १ ॥ जपेति जप और संकल्प और हवन इनांके प्रारंभविषे और संध्या वंदनादि कर्मांविषे जो ब्राह्मण प्राणायामांकों करताहै सो अनंतफलकों प्राप्तहोताहै इसका सो पुण्यअक्षय कलपना करिदाहै ॥ २ ॥

इस विषे मार्कंडेयजी कहतेहैं वामेति वाम कहा खब्बेपासेकी नासिकाकर्के वायुकों पूर्णकरे पूर्णकरणें तें तिसका नाम पूरक कहाहै और सज्जेपासेकी नासिकाकर्के वायुकों त्यागे वायुके त्यागणेतें तिसका नाम रेचककहाहै ॥ १ और वायुकों रोके दोनों नासिका कर्के तिसका नाम कुंभक है और गायत्रीके स्वरूपका मनकर्के ध्यान करे और पूरकविषे कुंभक विषे रेचक विषे त्रयवार जपे २ इसप्रकार त्रयवार जपीहोई संख्याके अभावमे होतीहै अर्थात् अनंत फलके देणे वालीहोतीहै १ अबपराशरजीकहतेहैं वामेति खब्बी नासिकाकर्के वायुकों ग्रहणकरे मन कर्के उच्चारण गायत्रीका कर्त्ताहोया जलकर्के पूर्णहोए कुंभकीन्याईं ब्रह्मविषे ध्यानलगाके स्थित होवे वायुकोंरोककर्केगायत्रीका मनकर्के उच्चारण कर्ता होआ ॥ १ ॥ ऐसे पूरक और कुंभककों

मार्कंडेयः ॥ वामेनपूरयेद्वायुंपूरणात्पूरकःस्मृतः सव्येनरेचयेद्वायुंरेचनाद्रेचकःस्मृतः ॥ १ ॥ वायुनापूरयेद्रंध्रान्गायत्रींमनसास्मरन् पूरणे कुंभकेचैवरेचनेतांजपेत्त्रिधा ॥ २ ॥ एवंत्रिवारंयाजप्तासंख्याभावेभवेदियम् ॥ ३ ॥ पराशरः । वामेन वायुनापूर्य्यगायत्रींमनसास्मरन् संपूर्णकुंभवत्तिष्ठेत्पुनस्तामनुवर्त्तयन् ॥ १ ॥ रेचयन्सप्तरंध्रेणपुनस्तामेवसंस्मरन् ॥ एवंपूरककुंभाभ्यांरेचकेनसहामुना योवर्त्तयेत्रिधाब्रह्मन्प्राणायामइतीरितः ॥ २ ॥ श्राद्धेजपेचहोमेचसंध्याकर्म्मसुसर्वदा योवर्त्ततेप्रतिदिनंपरंब्रह्मतदुच्यते ३ एवंशतद्वयंकृत्वापूर्वोक्तविधिनाद्विजः प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायोनिगद्यते सर्वपापविनिर्मुक्तः सयातिपरमंपदम् ॥ ४ ॥

कर्के रेचककोंकरे गायत्रीका स्मरणकर्ता होया वायुकों सप्तरंध्राके रस्ते त्यागे सप्तरंध्र नाम दक्षभागका है अथवा दक्षरंध्रेण ऐसाहि पाठ है ॥ २ ॥ ऐसे हे ब्रह्मन् पूरक और कुंभक और रेचक इसविधिकर्के जो त्रयवार गायत्रीका उच्चारण करणाहै तिसका नाम प्राणायाम कहाहै २ श्राद्धेति श्राद्धविषे और जपविषे और हवन विषे और संध्या वंदनादि कर्म विषे जो प्राणायाम कर्ताहै सो परंब्रह्म स्वरूप कहाहै ॥ ३ ॥ ऐसे पूर्व विधि कर्के जो ब्राह्मण दोसौ २०० प्राणायामकर्ताहै तिसकों प्राजापत्यके तुल्यफल देणे वाला बदला कहाहै तिसकेकरणेते संपूर्ण पापातें रहित होके परम पद वैकुंठकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

अब सांतपन कृच्छ्र व्रतकों मनुजी कहतेहैं गविति गौका मूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशाके पत्रां करके मिलया होयाजल एह मिला करके एक दिनपीवे और दूसरे दिन उप वास व्रत करे तिस व्रतका नाम कृच्छ्र सांतपन कहाहै ॥ १ ॥ अब याज्ञवल्क्य जी का बचनहै गौकामूत्र और गुवा और दुग्ध और दधि और गौकाघृत और कुशाकाजल इनां कों एक दिन खाकर दूसरे दिन उपवास व्रत करे एह कृच्छ्र सांतपनकहतेहैं एह दो दिनका व्रत है कृच्छ्रसांतपन १ अब सांतपनके लक्षणकों देवलऋषि कहताहै कृच्छ्र सांतपनकालक्षण जोहै सोसं

अथसांतपनकृच्छ्रमाह मनुः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकं एक रात्रोपवासश्चकृच्छ्रं सांतपनंस्मृतम् ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् जग्ध्वापरेद्युरुपवसेत्कृच्छ्रंसांतपनंस्मृतमिति ॥ द्वैरात्रःसांतपनकृच्छ्रः । तल्लक्षणमाह देवलः कृच्छ्रसांतपनस्यास्यलक्षणं सर्वपापहम् श्रीशैलं १ काशिकाक्षेत्रं २ गयाक्षेत्रंमहत्तरं ३ प्रयागं ४ यमुनां ५ सिंधुं ६ गंगासागरसंगमम् ७ कृष्णवेणीं ८ तुंगभद्रां ९ हेमकूपं १० त्रिलोचनम् ११ मार्कंडेयं १२ सिंहगिरिं १३ ततोधर्म्मपुरीश्वरं १४ द्राक्षारामं १५ जपावाटीं १६ मल्लिकार्जुनमेवच १७ अहोवलं १८ नृसिंहंच १९ तथैवभवनाशिनीम् २०

पूर्णपापांके नाश करणे वालाहै श्रीशैलमिति श्रीशैल १ और काशिका क्षेत्र २ और गयाक्षेत्र बहुत श्रेष्टहै ३ और प्रयाग ४ और यमुना ५ और सिंधु ६ और गंगासागरकासंगम ७ और कृष्णावेणी ८ तुंगभद्रा ९ और हेमकूप १० और त्रिलोचन ११ और मार्कंडेय १२ और सिंहगिरि १३ और धर्मपुरीश्वर १४ और द्राक्षाराम १५ और जपावाटी १६ और मल्लिकार्जुन १७ और अहोवल ॥ १८ ॥ और नृसिंह ॥ १९ ॥ और तैसे भवनाशिनी २०

और पिनाकिनी नदीके तीरविषे वैद्यनाथहरि नामकर्के प्रसिद्ध जो स्थान है २१ तैसे और वेंकटाद्रि २२ और स्वर्णमुखी २३ और कालहस्तीश्वर २४ और तैसे साक्षात् वरद राजहैं जोस्वयंभू ब्रह्माकावरस्वरूपहैं २५ और तैसे एकाम्रनामकर्के लिंग संपूर्णतीर्थो विषे श्रेष्ठ २६ और मध्यार्जुनेश पापोंके नाश करणे वाला २७ और कुंभकोण वडाआश्चर्य २८ और श्रीरंग महाक्षेत्र २९ और इससें परे जंबू नाममहाक्षेत्र ३० और कावेरी पापोंके नाश करणे वाली ३१ अब मथुरा विषयविषे जो तीर्थहैं तिनकों श्रवणकर ॥ सुंदरेश १ और सुंदरेशकी पत्नीका स्थान २ और तैसे उग्रवती नदी ३ और तिसीस्थान आग्निकोण विषे गंधमादनपर्वत ४ और रामलिंग ५ और धनुःकोटी संपूर्ण तीर्थोकर्के युक्त ६ और तैसे दर्भशमन ७ और तिसीस्थान पंपामहासर ८ और ताम्रपर्णी महाक्षेत्र ९ और तिसी स्थान विषे विष्णुमूर्त्ति १० और अनंतहै नाम जिसका ऐसा रामक्षेत्र ११ जिसस्थान विषे कौडन्यऋषि भाग्यकों प्राप्त होता भया और जनार्दन महाक्षेत्र १२ और गोकर्णतीर्थहै पापोंके नाशकरणे वाला १३ और तैसे हरिहरक्षेत्र जो अतिशय कर्के ब्रह्मण्यहै बहुत श्रेष्ठ १४ यह जो पुण्यक्षेत्रहैं सो दृष्टि विषये प्राप्त होणेंसेंहि पापोंके नाश करणे वाले हैं जो ब्राह्मण रोगसें रहितहै और इनां तीर्थो और क्षेत्रोंके मध्य विषे एक तीर्थ विषे भीस्नान नहि कर्ता और दर्शन नहि कर्ता तिससें परे कोण अचेतनहै अर्थात् सोई ब्राह्मण पत्थरके तुल्य है

पिनाकिनीनदी तीरेवैद्यनाथंहरिंतथा २१ वेंकटाद्रिं २२ स्वर्णमुखीं २३ कालहस्तीश्वरं तथा २४ साक्षाद्वरदराजंचवरभूतंस्वयंभुवः २५ एकाम्रंचतथालिंगं सर्वतीर्थमहत्तरम् २६ मध्यार्जुनेशंपापघ्नं २७ कुंभकोणंतदद्भुतम् २८ श्रीरंग वामहाक्षेत्रं २९ जंबूनामह्यतःपरम् ३०कावेरींपापजालघ्नीं ३१ मथुराविषये शृणु । सुंदरेशंच १ तत्पत्नीं २ तथैवोग्रवतींनदीम् ३ तत्राग्नेयदिग्भागेपर्वतोगंधमादनः ४ रामलिंगं ५ धनुःकोटीं सर्वतीर्थैःपरिष्कृतां ६ तथैवदर्भशमनं ७ तत्रपंपामहत्सरः ८ ताम्रपर्णीमहाक्षेत्रं ९ तत्रत्याविष्णुदेवता १० अनंताख्यंरामक्षेत्रं ११ कौडिन्योयत्रभाग्यवान् जनार्दनंमहाक्षेत्रं १२ गोकर्णंपापनाशनम् १३ तथाहरिहरक्षेत्रं सुब्रह्मण्यंमहत्तरम् १४ एतानिपुन्यक्षेत्राणिदृष्ट्वापापहराणिच नीरोगीमुख्यजोयस्तु एतेषामेकमेववा नस्नायाद्वानपश्येद्वाकोन्यस्तस्मादचेतनः ॥

धर्मेति धर्मतें रहित जो पुरुषहै और कर्मातें हीन जो पापीपुरुषहै तिसका जन्म अजा क्या बकरीके गलविषे जो स्तन तिसकी न्यांई व्यर्थहै ॥ १ ॥ जो पुरुष जन्म दिनतें लेके सठ ६० वर्षकी आयुपर्यंत वर्तताहै और तिनां वर्षाके मध्य विषे श्रीशैल कहणे कर्के श्री शैल और चापाग्र और वेंकटाचल और वदरी और श्रीरंगनाथ तें आद लेके जो हैं इनांका ग्रहण करणा इनांका जो नास्तिकता कर्के दर्शन नहि कर्ता सो पुरुष संपूर्ण पापांको भोगके पीछे गर्दभ योनिकों प्राप्त होताहि एह वाक्य वामन पुराण विषे कहा है ॥ २ ॥ तिसीको मरीचिऋषि कहताहै ॥ श्रीति श्रीशैल और वेंकटाद्रि और कांची और

स्मृत्यंतरे। धर्महीनस्यमर्त्यस्यकर्महीनस्यपापिनः अजागलस्तनमिवतस्य जन्मनिरर्थकम्॥ १ ॥ योमर्त्योजन्मदिवसात्षष्टिवर्षाणिवर्त्तते नपश्येद्यदि श्रीशैलंतन्मध्येसतुगर्दभः॥ २ जन्मेति स्वजन्मदिवसादारभ्यषष्टिवर्षमध्ये श्रीशैलचापाग्रवेंकटाचलवरदराजश्रीरंगनाथादिकं नास्तिकतया न पश्येत् नदर्शनार्थीतिष्ठेःससर्वपापभोगानन्तरंगर्दभोभवेदिति वामनपुराणेश्रवणात् तदाहमरीचिः ॥ श्रीशैलवेंकटाद्रिंचकांचींश्रीरंगनायकम् रामेशंचधनुःकोटिंस्वभावात्षष्टिवर्षगः ॥ १ ॥ नपश्येन्नास्तिकतयागर्दभोभुविजायते तस्यैवनिष्कृतिर्नास्तिकृच्छ्रात्सांतपनादृते ॥ २ ॥ बृहस्पतिः ॥ पुण्यालयान्पुण्यनदीर्नपश्येत्षष्टिवर्षगः महांतंनरकंगत्वापश्चाद्रासभतांव्रजेत्॥ १॥

श्रीरंगनायक रामेश और धनुःकोटि इनांका जो पुरुष अपनेजन्मतें लेके सठ ६० वर्ष की आयुतकनहि दर्शन कर्ता नास्तिक स्वभाव कर्के सो भोगतें अनंतर पृथ्वी विषे गर्दभ जन्मकों प्राप्तहोताहै तिसके पापकी निवृत्ति कृच्छ्र सांतपन व्रततें विना नाहि होती क्या कृच्छ्रसांतपन व्रतकर्के पापतें शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ अब बृहस्पतिजीका वचनहै ॥ पुण्येति दर्शन करणे कर्के पापांके दूर करणे वाले जो पुण्य देवतांके स्थान और पवित्र जो नदीयां तिनांकों जन्मतें लेकर सठां ६० वर्षांकी आयुतक न देखे सो पुरुष वडे नरककों भोगकर पीछे गधेके जन्मकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

तस्येति तिसदोषके दूरकरणे वास्ते कृच्छ्र सांतपन व्रतकों करे पीछे पंचगव्यकों पीवे तो इस दोषतें रहित होताहै ॥ २ ॥ तिसके विधानकों देवल ऋषि कहताहै ॥ दिन दिन प्रति मांहकादाणा जिसविषे छपजावे इतने दुग्धकों बारां १२ दिनतक पीवे तां योगियांकोंभी दुर्लभ जो सिद्धि है तिसकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ प्रजापतिका वचनहै ॥ पूर्वेति पूर्वकी न्यांई प्रातःकाल तें लेके स्नानकों करके और संकल्पकों करके नित्यकर्म जाणकर पूर्व कहा जो विभूत्यादिहै तिसका मनकर्के स्मरण करे ॥ १ ॥ और जिसकाल सूर्यका तेज मंदहोवे तिस समयविषे आदर रूपा भक्ति करके विष्णुके तांई नैवेद्यदे करके मांहकादाणा जिस विषे डूबे एतने मात्र दूधकोंव्रती

तस्यदोषोपशांत्यर्थंकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् पंचगव्यंपिबेत्पश्चाद्दोषादस्मात्प्रमुच्यते॥ २ ॥ तद्विधानमाहदेवलः ॥ प्रत्यहंमाषमग्नंचद्वादशाहंपयःपिबेत् शुद्धिमाप्नोतिराजेन्द्रयोगिनामपिदुर्लभाम्॥ १ ॥ प्रजापतिः ॥ पूर्ववत्प्रातरारभ्यस्नानंसंकल्पमेवच नित्यंकर्मतयाकृत्वापूर्वोक्तंमनसास्मरन् ॥ १ ॥ विभूत्यादिकमित्यर्थः ॥ यावन्मंदायतेभानुस्तावद्योदुग्धमादरात् विष्णवेतन्निवेद्याथमाषमग्नंपिबेद्व्रती २ स्वपेद्देवसमीपेतुगंधतांबूलवर्जितः ततःप्रभातवेलायामेकंकृत्वामहद्व्रतम् ॥ ३ ॥ द्वादशाहोभिरेतैश्चशुद्धोभवतिपूर्वजः पंचगव्यंपिबेत्पश्चात्सांतपनंमुनिसंमतम् ॥ ४ ॥ अथसांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह देवलः ॥ प्रत्याम्नायंप्रवक्ष्यामिकृच्छ्रस्यैतस्यपापहम् सर्वपापोपशमनं सर्वकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ १ ॥

पुरुष पीवे ॥ २ ॥ और देवताके समीप विषे शयन करे और सुगंधी और तांबूलका ग्रहण न करे तिस कारणतें प्रभात समय विषे बारां दिनां करके होणेवाला जो वडा पवित्रव्रत तिस एकहि व्रतके करणे करके ब्राह्मण शुद्ध होताहै और पीछे पंचगव्यकों पीवे एह सांतपन व्रत मुनियां विषे संमतहै ॥ ४ ॥ इसतें अनंतर सांतपन कृच्छ्र व्रतके स्थान जो बदला तिसकों देवल ऋषि कहताहै ॥ इस कृच्छ्र व्रतके वदलेको कहताहां कैसा बदला है पापके दूरकरणे वाला और सब पापांके नाश करणे वाला और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांके फल देणेवाला ॥ १ ॥

श्रीर फेर कैसाहै महापापांके नाश करणे वाला श्रौर धर्म कामअर्थकी सिद्धि देणे वाला और एह कृच्छ्र सांतपनका प्रत्याम्नाय वडाहै तेजजिनांका ऐसे जो व्यास तिनांने पूर्व कृष्ण देवकेताईं, कहाहै ॥ ॥ २ ॥ ॥ जो पुरुष पर धनके चुराणे वाले श्रौर परस्त्रीयां विषे प्रीति करणे वाले श्रौर जो मदिराके पीणे वाले श्रौर जो नहि भोगणे योग्य भगिनी आदि स्त्री तिनां विषे गमन करणे वाले ॥ ३ ॥ श्रौर जो पुरुष नास्तिक शास्त्र विषे प्रीति वाले श्रौर दुष्ट दानके ग्रहण करणे वाले श्रौर असत्यवाणी कहणे वाले श्रौर मित्रांका आपस विषे विरोध पाणेवाले ॥ ४ ॥ श्रौर दीपके बुझाणे वाले श्रौर शीशेके तोडन वाले अथवा व्यत्यय कारण वाले क्या एकको उठायके दूसरे को वहांण वाले जो

महापापप्रशमनंधर्मकामार्थसिद्धिदं व्यासेनकथितंपूर्वंकृष्णायामिततेजसा २ परस्वहारिणोयेचपरदाररताश्चये मद्यपानरतायेच अगम्यागमनाश्चये ३ असच्छास्त्ररतायेचयेचदुष्टप्रतिग्रहाःमिथ्याभिभाषिणोयेचयेचमित्रविभेदिनः॥ ४ ॥ दीपानिर्वापिनोयेचयेचमंडलभेदकाः मंडलेतिआदर्शभंजकाः स्थानव्यत्ययकारकाश्चेत्यर्थः ॥ दिवाकपित्थछायासुरात्रौचलदलेषुच ॥ ५ ॥ तमालवृक्षछायासुरात्रौवायदिवादिवा गच्छतांपापनाशायप्रत्याम्नायोमहत्तरः ॥ ६ ॥ सदानिष्ठुरवक्तारःसदायाञ्चापरायणाः परान्ननिरतायेच नित्यकर्मविरोधिनः ७ एषांचैवंविशुद्धिःस्यात्प्रत्याम्नायःपरात्परः ॥ गौतमः ॥ सांतपनस्यैवकृच्छस्यप्रत्याम्नायोमहत्तरः सर्वालंकारसंयुक्तोगवांदशमहोन्नतइति॥ १ महोन्नतअतिपुष्टोगोदशकगणः

पुरुष दिनविषे कपित्थ वृक्षकी छाया विषे श्रौर रात्रि विषे पिप्पलकी छाया विषे जाणेवाले ॥ ५ ॥ श्रौर रात्रि विषे अथवा दिन विषे तमाल वृक्षकी छाया विषे प्राप्त होणेवाले जो पुरुष तिनांके पाप दूर करणे वास्ते वहुतश्रेष्ट प्रत्याम्नाय कहाहै ॥ ६ ॥ श्रौर जो पुरुष सदा कठोर वाणीके कहण वालेहैं श्रौर सदा याचना विषे युक्तहैं श्रौर जो सदा पराये अन्नके भक्षण करणे विषे युक्तहैं श्रौर जो नित्य कर्म जो संध्या वंदनादि तिसके त्यागको कर्तेहैं इनांको इस प्रकार प्रत्याम्नाय कर्के शुद्धि होतीहै एह प्रत्याम्नाय श्रेष्ठतेंभी श्रेष्ट कहाहै ॥ ७ ॥ गौतम जीका वाक्यहै सांतपन कृच्छ्र व्रतका प्रत्याम्नाय श्रेष्ट कहाहै और अतिशय कर्के पुष्ट श्रौर संपूर्ण भूषणों कर्के युक्त संख्या कर्के दश १० गौवां ब्राह्मणांके तांईं देवे इति ।१।

अथेति इसतें अनंतर महासांतपनव्रतकों याज्ञवल्क्यऋषि कहताहै पृथगिति पंचगव्य और कुशा
काजल एह जो छे ६ द्रव्यहैं गोमूत्र और गोमय और दधि और दुग्ध और घृत और कुशोदक इनां
कों क्रमकर्के छे ६ दिनभक्षणकरे और अंतविषे उपवासव्रतकरे तां सतां ७ दिनांकर्के महासांतपन
कृच्छ्रव्रतकहाहै १ और यमजीने पंदरां १५ दिनांकर्के करणेयोग्य महासांतपनकहाहै सो दखाई
दाहै त्र्यहमिति त्रय दिन गोमूत्र पीवे और त्रय दिन गोमयपीवे और त्रय दिनदधि पीवे और त्रय
दिन दुग्ध पीवे और त्रय दिन घृत पीवे ईहां कुशोदक नही कहा इस करणे कर्के शुद्ध होताहै

● अथमहासांतपनाख्यंव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः पृथक्सांतपनंद्रव्यैःषडहःसोप
वासकः सप्ताहेनतुकृच्छ्रोयंमहासांतपनःस्मृतः॥ १ ॥ द्रव्यैःपंचगव्यकुशो
दकैःपृथक्प्रतिदिनंसेवितैः महासांतपनं भवति अस्यदिवसमर्यादांदर्शय
तिसोपवासकःषडहइतिसप्ताहसाध्यइत्यर्थः ॥ १ ॥ यमेनतुपंचदशाहसा
ध्योमहासांतपनोऽभिहितः ॥ त्र्यहंपिवेत्तुगोमूत्रंत्र्यहंवैगोमयंपिबेत् त्र्यहंद
धित्र्यहंक्षीरंत्र्यहंसर्पिस्ततःशुचिः महासांतपनंह्येतत्सर्वपापप्रणाशनमिति
जावालेनतु एकविंशतिरात्रनिर्वर्त्त्यो महासांतपनउक्तः षण्णामेकैकमेतेषां
त्रिरात्रमुपयोजयेत् त्र्यहंचोपवसेदंत्यंमहासांतपनंविदुरिति ॥ १ ॥ यदातु
षण्णांसांतपनद्रव्याणामेकैकस्यद्व्यहमुपयोगस्तदाऽतिसांतपनम् ॥

एह महासांतपन संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै इति १ जावालऋषिनें इकीस २१ दिनकर्के
महा सांतपन कहाहै छे ६ जो द्रव्यहैं गोमूत्रतें आदलेके तिनां विचों एक एक द्रव्यकों त्रय त्रय
दिन भक्षण करे और अंत विषे त्रय दिन उपवास व्रत करे इसकों महासांतपन कहतेहैं इति
॥ १ ॥ जद फेर छे ६ जो महासांतपन विषे द्रव्य कहेहैं गोमूत्रते आदलेके कुशोदकतक
तिनां विषे एक एक द्रव्यको दो दो दिन भक्षण करे तां अतिसांतपन व्रत होताहै ॥

जैसे यमराजजी कहते हैं एह जो गोमूत्रथीं आदलेके पंचगव्यके द्रव्यहैं तिनां विषे एक एककों दो दो दिन पीवे तिस व्रतका नाम अतिसांतपन कहाहे पाप करके चांडालके तुल्य भी जो पुरुषहे तिसको भी शुद्ध करताहे ॥ १ ॥ अब देवलजीका वचनहे महासांतपन नाम करके जो कृच्छ्र व्रत है सो संपूर्ण फलके देणे वालाहे इस विषे प्रसंगहै पूर्व आप इंद्र गौतमजीकी स्त्रीकों प्राप्त होता भया ॥ १ ॥ तिस महापापकरके सो दोषकों प्राप्त होया होया वृक्षके मूल क्या मुंडपास वडी भावना करके स्थित होया अर्थात् वडी चिंता करके युक्त हूआ अथवा वृद्धभाव नाम वृद्धावस्थाका है पाप करके वुड्ढाहोगया एह अर्थ है ॥ २ ॥ तद वरके देणे वाले गरुडके ऊपर असवार होए होए भक्तांके प्यारे विष्णु इंद्रकों देखकर दया

यथाहयमः। एतान्येवयथापेयादेकैकंतुद्व्यहंद्व्यहं अतिसांतपनंनामश्वपाकमपिशोधयेदिति ॥ १ ॥ देवलः । महासांतपनंनामकृच्छ्रंसर्वफलप्रदं पुरापुरंदरःसाक्षाद्गौतमस्यसतींव्रजन् ॥ १ ॥ तेनपापेनमहतासपापफलदूषितः वृक्षमूलमुपागम्यवृद्धभावमुपाश्रितः ॥ २ ॥ तदाप्रसन्नोवरदश्चक्रपाणिःसवाहनः दृष्ट्वापुरंदरंप्राहदययाभक्तवत्सलः ॥ ३ ॥ एतत्पापविशुद्ध्यर्थंमहासांतपनंचर गुरुदाराभिगामीचचंडालीगमनंचरन् ॥ ४ ॥ स्वसारंतुसमागम्यभगिनींयःप्रधर्षयन् ॥ ४ ॥ स्वसृभगिन्योस्स्वोदरभिन्नोदरत्वेनभेदइत्यर्थःप्रधर्षयन्निति कामुकत्वेनवलादभिगच्छन्नित्यर्थः। चरेद्वारजकीगामीग्रामचंडालदारगः ॥ विप्रश्चांडालदारेषुचरेत्तास्मिन्द्विजाधमः ॥ ५ ॥

करके कहते भये ॥ ३ ॥ हे इंद्र इस पापकी शुद्धि वास्ते महा सांतपन व्रतकों तूंकर जो पुरुष गुरांकी स्त्रीके साथ गमन कर्ताहे और चांडाली साथ गमन कर्ताहे ॥ ४ ॥ और भगिनीके साथ गमन कर्ताहे और अपणी दूसरी माताकी कन्याके साथ गमन कर्ताहे (प्रधर्षयन्) इसका अर्थ एह है कि कामनातें वलकरके जो भोगताहे ॥ वा छींवेकी स्त्रीके साथ गमन करे और ग्राम विषे रहणे वाला जो चंडाल तिसकी स्त्रीके साथ जो गमन करताहै और ब्राह्मण होकर चंडालकी स्त्री विषे जो गमन कर्ताहे ऐसा पापी भी तिस महा सांतपन व्रत करके शुद्ध होताहे ॥ ५ ॥

और इनां पापांकी शुद्धि करणे वाला महासांतपन व्रतहि है हेराम एह देवलजी का वचन है और असत्यवाणी कहणे विषे जो पाप है और पापी पुरुषके साथ बोलणे विषे जो पाप है ॥ ६ ॥ और किसे पुरुष कर्के दिती होई कोई वस्तु तिसके खोलवणे विषे जो पाप और आप ही देणी आपही लय लेणी तिस विषे और जो रुधिरके पीणे वाला है रुधिरपान इसजगा मंत्रसाधनादि विषे जानणा और जो सदा औषधोंके करणे वाला है अर्थात् द्रव्यके लोभकर्के नीरोगकोंभी औषधिकर्के रोग वाला कर देताहै ॥ ७ ॥ और सदाहि प्रातःकालविषे और संध्याकालविषे और तैसे देवताके पूजने विषे जो पाखंडहि कर्ताहै ऐसेहि जो व्रात्यहै और तुलादानकों लेके जिसने प्रायश्चित्त नहि कीता ॥ ८ ॥ ऐसे कों कर्म काल विषे स्मरण न करे और नादेखे पतितजाण कर्के अथवा और

तस्मिन्सांतपनेचरेत्प्रवर्त्ततइत्यर्थः एतेषांनिष्कृतीराममहासांतपनंपरम् असत्यभाषणेपापमसत्यानांचभाषणे ॥ ६ ॥ परदत्तापहारेचस्वदत्तापहरेतथा ॥ असृक्पानरतेचैवसदाभैषज्यवर्त्तिनि ॥ ७ ॥ प्रातःकाले सांध्यकालेतथादेवार्चनेयदि पाखंडयतितंव्रात्यंतुलास्वकृतनिष्कृतिम् ॥ ८ ॥ नस्मरेत्कर्मकालेषुनपश्येद्वैकदाचन एतेषांपापराशीनांमहासातपनंपरम् ॥ ९ ॥ तुलास्वकृतनिष्कृतिम् तुलादानंगृहीत्वाऽकृतप्रायश्चित्तमित्यर्थः। गालवः॥ द्विदिनंसमुपोष्यैवद्विदिनंपूर्ववत्पयः पूर्ववन्नियमंकृत्वा द्वादशाहेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ पराशरः। माषमग्नंपिबेत्क्षीरंद्विदिनंसमुपोषयेत् एवंकुर्याद्द्वादशाहंपूर्ववन्नियमाश्रितः ॥ १ ॥

शुभ कर्मके करणे योग्यकाल विषे विष्णुकों जो नाहि स्मरण करदा और कदीभी देव मूर्त्तिकों नाहि देखता ऐसे जो महापापी हैं तिनां पापांके समूहकों दूरकरणे वाला महासांतपन व्रतहि कहाहै। १ ॥ अब गालवऋषिका वचनहै द्वीति दो २ दिन उपवास व्रत करे और दो २ दिन दुग्धपीवे पूर्ववत् क्या गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत इनांकों दोदोदिन पीवे पीछेकी न्याई नियमकरे इस प्रकार बारां १२ दिनांके व्रत कर्के शुद्ध होवाहै ॥ १ ॥ अब पराशर जीका वचनहै माषेति मांहका दाणा जिस विषे छपे ऐसे दुग्धको दो २ दिन पीवे पूर्वकी न्याई गोमूत्र आदिक पीकर दोदिनउपवासव्रत करे सो पूर्वकी न्याई नियमकों आश्रयकर्त्ता होया बारां १२ दिनांके व्रतकों करे ॥ १ ॥

अब मनुजीका वचनहै पूर्वेति पूर्वकी न्यांई प्रातः कालतें लेकेस्नान आदि नियमकों करे और सो द्विज जद सूर्य्यकीयां किरणां मंदतेजवालीयां होण तिसकाल विषे नियमकों त्यागता हुआ ॥ १ ॥ औ २ दो दिनकें क्रमकर्के गोमूत्र आदिकों पींदा होया माषमंत्र दुग्धकों विष्णुके तांई नैवेद्य लाकर्के दोदिन पीवे और दों दिन उपवास व्रत करे ॥ २ ॥ और देवताके समीप विषे शयन करे इस प्रकार बारां १२ दिनांके व्रत कर्के शुद्धिकों प्राप्त होताहै दो दिन है उपवास जिस विषे और दो दिन है दुग्ध पान जिस विषे ऐसा महासांतपन व्रत है ॥ ३ ॥ इसतें उपरंत महासांतपन कृच्छ्रव्रतके प्रत्याम्नायकों देवलऋषि कहताहै महासांतपन कृच्छ्रके प्र

मनुः ॥ पूर्ववत्प्रातरारभ्यद्विजोनियमपूर्वकम् यदामंदायतेभानुस्तदानियममुत्सृजन् ॥ १ ॥ माषमंत्रंपिबेत्क्षीरंविष्णवेतुनिवादितम् दिनद्वयंपयः पीत्वाद्विदिनंसमुपोषयेत् ॥ २ ॥ स्वपेच्चपूर्ववद्देवसमीपेव्रतमाचरन् एवंद्वादशरात्रंचकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥ दिनद्वयमुपोषणंदिनद्वयंपयोभक्षः एवंक्रमेण द्वादशाहसाध्यंमहासांतपनम् ॥ अथ महासांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः । महासांतपनकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायंशृणुष्वमे यदाचरणमात्रेणविप्रःपापात्प्रमुच्यते ॥ १ ॥ महाराजविजये । महासांतपनस्यास्यप्रत्याम्नायोमहानयम् कृच्छ्रस्यैतस्यविहितंकर्त्तुंसर्वमशक्तिमान् ॥ १ ॥ मानवोऽयंप्रकुर्वीत सर्वकृच्छ्रफलाप्तये गावोदेयाःप्रयत्नेन विप्रेभ्यःषोडशामलाः ॥ २ ॥ अलंकृताःसुपुष्पाद्यैर्वस्त्राभरणभूषिताः सुशीलाश्चपयस्विन्यःसवत्साःपापहारिणीः ॥ ३ ॥

त्याम्नायकों मेरेथीं श्रवणकर जिसके करणेनेंहि ब्राह्मणपापतें रहित होताहै ॥ १ ॥ महाराज विजय ग्रंथ विषे कहाहै महासांतपनका प्रत्याम्नाय एह महाफलके देणे वालाहै इस कृच्छ्रके करणे विषे सामर्थ्यतें रहित जो पुरुष है सो संपूर्ण कृच्छ्र व्रतके फलकी प्राप्ति वासते सोलां १६ गौवां यत्नकर्के ब्राह्मणांकेतांई देवे ॥ २ ॥ कैसीयां गौयां जो पुष्पांकर्के और वस्त्रांकर्के और भूषणां कर्के युक्त हैं और सुशीलाहैं और सहित बच्छयांके हैं और दुग्ध देणे वालीयां हैं और पापांके नाश करणे वालीयांहैं ॥ ३ ॥

पराशरजीका वचन है मह्हेति बुद्धिमान् जो ऋषि हैं सो महासांतपन व्रतके स्थान तुल्य फलके देणे वाले प्रत्याम्नायकों कहतेहैं सोलां १६ गौयां वस्त्रां करके और भूषणां करके युक्त दुग्धदेणे वालीयां सहित वछयांके साधु स्वभाववालीयां उत्कृष्ट सुखकी प्राप्ति वास्ते ब्राह्मणांके तांई देवे एह प्रत्याम्नाय तुल्य फलके देणे वाला कहाहै ॥ २ ॥ इसते उपरांत अतिकृच्छ्रव्रतकों मनुजी कहतेहैं एकैकमिति एक एक ग्रासकों पूर्वकीन्याई ऽयहानि बीणि क्या नो १ दिन खावे और अंत्य विषे त्रय दिन उपवास करे ऐसे द्विज अतिकृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ अब देवलजीका वचनहै अतीति अतिकृच्छ्रव्रतकों कहताहां कैसा व्रतहै संपूर्णपापांके दूरकरणे

पराशरः । महासांतपनस्यास्यप्रत्याम्नायंविदुर्बुधाः गावःषोडशविप्रेभ्यो देयाः सम्यक् सुखाप्तये ॥ १ ॥ अलंकृताश्चवस्त्राद्यैः पयस्विन्यः पृथक्पृथक् ॥ सवत्साःसाधुशीलिन्यः प्रत्याम्नायउदीरितः ॥ २ ॥ अथातिकृच्छ्रमाह मनुः ॥ एकैकंग्रासमश्नीयात्त्र्यहाणित्रीणिपूर्ववत् ॥ त्र्यहंचोपवसेदंत्यमतिकृच्छ्रंचरन्द्विजः ॥ १ ॥ देवलः ॥ अतिकृच्छ्रंप्रवक्ष्यामि सर्वपापोपशांतिदम् सर्वकृच्छ्रप्रदंन्हणांशृणुराजन्प्रयत्नतः ॥ १ ॥ अति कृच्छ्रस्यमाहात्म्यंवर्णितुंकेनशक्यते पुराहिकौशिकोनामऋषिर्धर्मपरायणः २ ॥ वसिष्ठात्मजघातीस्यात्तस्मात्कारणतःप्रभो तेषांहत्याविनाशार्थंकृच्छ्र माहप्रजापतिः ॥ ३ ब्रह्महत्यागुरोर्हत्याभ्रूणहत्यामहत्तरा कन्याहत्याशि शोर्हत्यातथातेषांमहत्यपि ॥ ४ ॥ वीरहत्याधेनुहत्यागजाश्वमहिषीवधः ॥

वाला और पुरुषांकों संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै हेराजन् इसकों यत्नतें श्रवणकर ॥ १ ॥ अतिकृच्छ्रमाहात्म्यके कहणेकों कौण समर्थ होताहै इस विषे प्रसंगहै पूर्व धर्मात्मा विश्वामित्र नाम ऋषि वशिष्ठके पुत्रांकों मारताभया तिस कारणतें हेप्रभो तिनां बालकांकी हत्याके दूरकरणे वास्ते तिसकों प्रजापति ब्रह्मा अतिकृच्छ्र व्रत कहता भया ३॥ ब्रह्महत्याका पाप और गुरांकी हत्या और गर्भकी हत्या जो बडीहै और कन्याकी हत्या और बालककी हत्या तिनांकी जो बडी हत्या ॥ ४ ॥ और वीरकी हत्या तथा धेनुकी हत्या और प्रसूत होई होई गौकी हत्या और हाथी और घोडा और महिषी इनांका मारणा ॥

घास और काष्ठ और वृक्षांकाकटणा और खेती और बाग इनांकाकटणा ५ और तला कूआ और जलके स्थान तिनांका और वेदशालाका नाशकरणा और गृहकादाहकरणा और ब्राह्मणके क्षेत्रविषे किसे शूकरादिको मारणा ऐसा जो पाप तिसको बधाणा ६ और अन्नकेस्थानांका दाहकरणा और महिषी और गौ इनांका दाहकरणा और शृंगकाभजणा और पुच्छका कटणा तैसे तिनांको विमर्द्दन क्या खस्सीकरणा ७ और तोता और विर्वीया और सर्प और मच्छ और हंस और कुत्ता और कुकुड और काक तिनांका मारणा और वनके मृगांका मारणा ८ और गृहके दरवाजेको भजणा और पात्थरांका भजणा और वनके पत्रांका साडना जो गिल्ले पत्रहैं हेराजन्

तृणकाष्ठद्रुमच्छेदःसस्यारामादिछेदनम् ॥ ५ ॥ तटाककूपकासारभेद नंवेदवेश्मनाम् गृहदाहोद्विजक्षेत्रेमारणंपापवर्द्धनम् ॥ ६ ॥ धान्यारामा दिदहनंदाहनंमहिषीगवाम् शृंगलांगूलविच्छेदस्तथातेषांविमर्दनम् ॥ ७ शुकचाषभुजंगानांमीनहंसशुनामपि कुक्कुटानांचकाकानांहिंसनंमृगमार णम् ८॥ दारुच्छेदः कपाटस्यपाषाणानांविभेदनम् दाहनंवनपर्णानामार्द्रा णामिहभूमिप ॥ ९ ॥ सर्वासामेवहिंसानामतिकृच्छ्रंविशोधनं सर्वकृच्छ्रप्र दंचैवसर्वोपद्रवनाशनम् ॥ १० ॥ गालवः ॥ अतिकृच्छ्रस्यमहतःप्रकार मिहचोच्यते व्रतमात्रेयवान् शुभ्रान्श्यामाकांस्तंडुलानपि १ एकद्रव्यंस मादायव्रतादौपूर्ववच्चरेत् भागत्रयंतदाकृत्वातंडुलाःपूर्वमानतः ॥ २ ॥

॥ ९ ॥ संपूर्ण हिंसाके जो पापहैं तिनांके शुद्धिके देणे वाला अतिकृच्छ्र व्रत कहाहै और एही संपूर्णकृच्छ्र व्रतांके फलको देणेवाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाश करणे वाला है ॥ १० ॥ अब गालव ऋषिका वचनहै ॥ व्रतेति अतिकृच्छ्र जो बडाव्रत तिसका प्रकार इहां कहाहै व्रत मात्राविषे कहे जो यव सो श्वेत जानणे अथवा श्यामाक क्या सांक अन्नविशेषहै तंडुलसो प्रसिद्ध हैं १ इनांविषेएकद्रव्यको ग्रहण करे व्रतके आद विषे पूर्व की न्याई स्नान संध्यादि और मधु पर्क करे और पीछे कथन कीया जो प्रमाण तिसी प्रमाण करके तंडुलादिकों ग्रहण करे और तिसकेतीन ३ भाग करे ॥ २ ॥

एक भागकों व्रतके आद विषे और दूसरे भागकों व्रतके मध्य दिनां विषे और तीसरे भागको व्रतके अंत विषे ग्रहण करे आद मध्य अंत विषे त्रय त्रय दिन जानणे तां प्रथम भाग के तीन ग्रास करेतां आदके तीन३ दिन एक एक ग्रास भक्षण करे पूर्वरीतिसे और स्नान आदि व्रतके नियमपूर्वकीन्याई करे ॥ ३ ॥ और संपूर्ण दिनांके चतुर्थ कालविषे हस्तपादोंको शुद्धकर्के अंगांकों जलसे स्पर्शकरे और नारायण विषे मनको लगाकर देवताके समीप शयन करे ॥ ४ ॥ और प्रातः कालविषे पूर्वकी न्याई निर्मलहोकर संध्यादिकर्म करे इसीतरां तीन ३ दिनांकेपीछे त्रय दिन निराहार रहे ॥ ५ ॥ जेसे छे ६ दिन व्रतका आद कहाहै इसीतरां छे६ दिन मध्यके और छे दिन व्रतके अंतके तां अठारां १८ दिन व्रतके सिद्ध होये ६ और व्रतके अंतविषे एक गौब्राह्म

व्रतादौमध्यदिवसेव्रतान्तेचादिनत्रयम् व्रतादौभक्षयेद्ग्रासंपूर्ववद्व्रतमाचरे त्३ ॥ चतुर्थकालआयातिप्रक्षाल्यांगानिपूर्ववत् स्वपेद्देवसमीपेतुनारायणप रायणः ४ ॥ ततःप्रभातेविमलःसंध्यादीन्पूर्ववच्चरेत् निराहारस्तथाभूत्वा यावत्प्राप्तंदिनत्रयम् ॥ ५ ॥ तत्रैवभक्षयेद्ग्रासंद्वितीयार्द्धेविचक्षणः तत्रा पिपूर्ववत्कृत्वाद्वादशेदिवसेशुभम् ॥ ६ ॥ तृतीयेत्र्यंतथाभुक्त्वागौरेकाविप्र सात्कृत्वा ब्रह्मकूर्चंततःपश्चात्शुद्धिमाप्नोतिपूर्वजः ॥ ७ ॥ अतिकृच्छ्रमि दंसर्वमुक्तंमुनिभिरादरात् एतस्याचरणेनैवसर्वदोषात्प्रमुच्यते ॥ ८ ॥ अत्रा यमभिप्रायः ॥ पूर्वमानत एकैकंग्रासमश्नीयादित्युक्तमानतोभागत्रयम् षट्कत्रयंकुर्वीत ततश्चाष्टादशदिनसाध्यताजाता

णके तांई देवे इसको मूलकार फेर प्रकट कर कहतेहैं टीकाकारने इहांई स्पष्टकह दियाहै और पीछे ब्रह्म कूर्च करे तां ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ एह अतिकृच्छ्र संपूर्ण मुनियांनें आदरतें कहाहै इसके करणेतें पुरुष संपूर्ण दोषांतें रहित होताहै ॥ ८ ॥ इस विषे एह अभि प्राय है पूर्वप्रमाणों (एक एक ग्रासकों भक्षण करे त्रय दिन तक और चौथे दिन उपवास करे इस रीतिसे तीन आवृत्ति करणे कर्के १२ दिन साध्यता व्रतकोंहोईथी और इस विषे ग्रासका मानआमलेके बराबरहै एह पीछे किहाहै ॥ इस उक्त मानतें जो भागत्रयहै चार दिनां कर्के सो छे दिनके करे तां इसका नियम अठारां दिनांकर्के सिद्ध होया ॥

तिसका प्रकार बतादो इत्यादि करके कहाहै पूर्व त्रय२ दिनां विषे त्रय ग्रास भक्षण करे। और त्रय दिन उपवास करे फेर। ऐसेहि त्रय दिनां विषे त्रय ग्रास भक्षण करे और त्रय दिन उपवास करे ऐसे समाप्ति तक करे इस विषे अतिकष्ट होणेते महा अतिकृच्छ्र नाम इसका है और अगले श्लोकसे जाणीदाहै कि सर्वाति कृच्छ्र भी इसकानाम होवेगा द्वितीया है दूसरे छकेविषे तृतीये वचा तीसरेछके विषे तृतीयेत्थं इस विषे संधि आर्षहै क्या ऋषिके मुखसे इस वचाका उद्गम है सो सर्वज्ञ थे इसकर्के एह निर्दोषहै जो याज्ञवल्क्यजीका वचनहै एहहि प्राजापत्य कृच्छ्र एक भक्त क्या दूसरे पहर विषे २२ ग्रास भक्षण करणे और दूसरे दिन नक्त व्रत विषे १२ बारां ग्रास भक्षण करणे और तीसरे दिन अयाचित दिनके २४ ग्रास

तत्प्रकारोब्रतादावित्यादिना पूर्वं त्रिदिनं ग्रासत्रयंभुक्त्वा त्रिदिनमुपवासः पुनरेवंयावत्समाप्तिरत्यतिकष्टदायित्वान्महातिकृच्छ्रसंज्ञा । द्वितीयाद्वितीयषट्के तृतीयेतृतीयषट्केइत्यर्थः ॥ तृतीयेत्थमित्यत्रसंधिरार्षः ॥ यत्तु याज्ञवल्क्यः अयमेवातिकृच्छ्रः स्यात्पाणिपूरान्नभोजनइति अयमेवप्राजापत्यकृच्छ्रएकभक्तनक्तायाचितादिवसेषु पाणिपूरान्नभोजनयुक्तोऽतिकृच्छ्रइत्यर्थः तदेतदशक्तविषयम् पाणिपूरान्नस्यग्रासान्नापेक्षयाधिकत्वात् ॥ ● अथातिकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः अतिकृच्छ्रस्यसर्वस्यप्रत्याम्नायोमनीषिभिः प्रोक्तःसर्वहितार्थायसर्वपापप्रणाशनः ॥ १ ॥ संकलीकरणानांचकन्याधेन्वादिविक्रये तिलतंडुलधान्यानांफलानांरसविक्रये महापातकभीतानांशोधनंपापनाशनम् ॥ २ ॥

भक्षण करणे इनांकी जगा एक हत्थका प्रसृति परिमाण अन्न जो भक्षण करणाहै अतिकृच्छ्र का कहाहै एह असमर्थ विषे जानणा क्योंके पाणिपूरान्न भोजनकों ग्रासतें अधिकहोणेतें ● इसतें अनंतर अतिकृच्छ्रके प्रत्याम्नायकों देवलऋषि कहताहै अतिकृच्छ्र संपूर्ण व्रतका प्रत्याम्नाय बुद्धि मानानें कहाहै संपूर्ण पुरुषांकेहितवास्ते जो बदला संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ संकली करणपाप और कन्या धेनुआदिके वेचणेविषे जो पाप और तिल और चावल और अन्न और फल और रस इनांके वेचणे विषे जो पाप है तिनां पापांके नाशकरणे वालाहै और महापापतें जो भयकर्के युक्त हैं तिनांके भयकों दूर करणे वालाहै ॥ २ ॥

अब मार्कंडेयजीकावचनहै हेराजन् तूं श्रवणकर इस प्रत्याम्नायकों मैं कहवाहां जिसप्रत्याम्नायके करणे करके अतिकृच्छ्र व्रतके फलकों पुरुष प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ वस्त्रांकरके अलंकृत दश १० गौयां ब्राह्मणांकेताई भिन्न भिन्नकरके देणेयोग्यहैं कैसी गौयांहैं जो सुशील स्वभाव वालीयां और दुग्ध देणेवालीयां ॥ २ ॥ अब इसीविषे मनुजीका वचनहै अतिकृच्छ्र जो वडाव्रतहै तिसके बदलेकों मेरेतें श्रवणकर ब्राह्मणांकेताई दश १० गौयां देणेयोग्यहैं सहित वछयांके पूर्वकी न्यांई पूजाकों प्राप्त होयीं होयीं ॥ १ ॥ सुवर्ण शृंगां करके युक्त और भली प्रकार शोभाकरके युक्त तिसविषे भी आपशुद्ध होकरके भिन्न भिन्न देणे योग्यहैं वेदांके जानणे वालयांने ऐसे कही जो विधिहै तिस करके अतिकृच्छ्र व्रतके फल नूं प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ ● अब इसतें उपरंत कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत

मार्कंडेयः॥ प्रत्याम्नायमिमंराजन्वक्ष्यामिशृणुपार्थिव यदाचरणमात्रेण अतिकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ १ ॥ दशगावःप्रदातव्यावस्त्राद्यैःसमलंकृताः ॥ साधुवृत्ताःपयस्विन्योविप्रेभ्यश्च पृथक्पृथक् ॥ २ ॥ मनुः। अतिकृच्छ्रस्यमहतः प्रत्याम्नायंशृणुष्वमे विप्रेभ्योदशगावत्साः पूर्ववत्पूजिताअमूःवत्सावत्सवत्यइत्यर्थः । १ । स्वर्णशृंगादिभिःसम्यग्भूषयित्वापृथक्पृथक् शुचिभिस्तुप्रदातव्याविप्रेभ्योवेदवित्तमैः इत्थमुक्तेनमार्गेणकृत्वाकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ २ ॥ ● अथकृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रःपयसा दिवसानेकविंशतिम् गौतमेनतु द्वादशाहमुदकेनवर्तनं कृच्छ्रातिकृच्छ्र इत्युक्तम्अतश्चशक्त्यपेक्षया तयोर्व्यवस्था ।तयोरेकविंशत्यहद्वादशाहयोः ● ॥ अथ तप्तकृच्छ्रमाह मनुः ॥ तप्तकृच्छ्रंचरन्विप्रोजलक्षीरघृतानिलान् प्रतित्र्यहंपिबेदुष्णान्सकृत्स्नायीसमाहितः ॥ १ ॥ अयमपिद्वादशदिनसाध्यः

नूं याज्ञवल्क्य ऋषि कहताहै कृच्छ्रेति दुग्ध करके इकी २१ दिनका जो व्रत है तिसकों कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहतेहैं गौतम ऋषिने कहाहै कि जल करके बारां दिन वर्त्तन करणा अर्थात् जल पान विना होर कुछ नाहिं भक्षण करणा सो कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहाहै इसकारणतें समर्थ और असमर्थ पुरुषकों देखकर तिनां इकीस दिन २१ और बारां दिन २१ के व्रतांकी व्यवस्था जानणी ॥ ● इसतें अनंतर तप्तकृच्छ्र व्रतनूं मनुजी कहतेहैं तप्तेति त्रयदिन गरम जल पान करे त्रयदिन गरम दुग्ध पान करे और त्रय दिन गरम घृतपान करे और त्रय दिन गरम वायु कथा हवा लेवे ऐसे एक काल स्नान करके और निश्चलमन करके तप्तकृच्छ्र व्रतके करणेतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एभी १२ दिनका दिसाध्यहै

अब याज्ञवल्क्य जी का बचन है तप्तेति तप्तदुग्ध और तप्तघृत और तप्तजल इनांकों क्रम करकें एक एक दिन पानकरे और एक दिन उपवास व्रत करे तां तप्त कृच्छ्र व्रत कहाहैं १ एइहि व्रत चार दिनका चार गुणां होवे क्या दुग्ध और घृत और लज और उपवास इनांकों क्र म करके चार चार दिन पानकरे तां महातप्त कृच्छ्र व्रत सोलां १६ दिनोंका होताहै ॥ एभिरिति इनां तप्तक्षीर आदि संपूर्णांका एक दिन पान करे और एक दिन उप वास करें ऐसे दो २ रात्रां करकें सांतपनकी न्यांई तप्तकृच्छ्र भी द्विरात्रनाम व्रत होताहै ॥ मनु जीने तप्तकृच्छ्रं चरन्नित्यादि करकें पूर्व कहा जो श्लोक तिसकरकें बारां दिनांका व्रत हुंदाहै

याज्ञवल्क्यः तप्तक्षीरघृतांबूनामेकैकंप्रत्यहंपिबेत् एकरात्रोपवासश्चतप्तकृच्छ्रउदाहृतः ॥ १ ॥ एषएवप्रत्येकंदिवसचतुष्टयसंपाद्योमहातप्तकृच्छ्रः तथाचायंषोडशादिनसाध्य एभिरेवसमस्तैः सोपवासैर्द्विरात्रसंपाद्यःसांतपनवत्तप्तकृच्छ्रः मनुनातु पूर्वोक्तश्लोकेनद्वादशाहनिर्वर्त्योभिहितः।क्षीरादिपरिमाणंतु पराशरेणोक्तम्। अपांपिबेत्तुत्रिपलंद्विपलंतुपयःपिबेत् पलमेकंपिबेत्सर्पिस्त्रिरात्रंचोष्णमारुतमिति ॥ १ ॥ त्रिरात्रंचोष्णमारुतमिति त्रिरात्रस्यपूर्णउष्णोदकवाष्पंपिबेदित्यर्थः ॥ प्रकारांतरेण तप्तकृच्छ्रस्वरूपं पुनरेवाह पराशरः ॥ षट्पलंतुपिबेदंभस्त्रिपलंतुपयःपिबेत् पलमेकंपिबेत्सर्पिस्तप्तकृच्छ्रोविधीयतइति। १। अत्र जलादिकमुष्णमेवग्राह्यम्। यदातु शीतंक्षीरादिकंपीयते तदा शीतकृच्छ्रः

तितविषें दुग्धादिकांका परिमाण पराशरनें कहाहै त्रय ३ छटांक जलपीवे और दो छटांक दुग्ध पीवें और एक छटांक घृत पीवे और त्रय रात्रीके अंत विषें गरम जलकी हवाडको भक्षण करे ॥ १ ॥ अब होरी प्रकार करकें तप्त कृच्छ्र व्रतके स्वरूपकों फेर पराशरजी कहतेहैं छे ६ पल परिमाण गरम जल पीवे और त्रय पलकं परिमाण गरम दुग्ध पीवे और एक पल परिमाण गरम घृत पीवे तिसका नाम तप्त कृच्छ्र कहाहै इहां पल करकें छटांक लैणी इसमें जलादिक सभगर्महि ग्रहण करणे ॥ १ ॥ पूर्वोक्त और जद जल आदिक शीत वस्तु शीत क्या ठंडीयां होण और तिनांकों पीवे तां तिसका नाम शीत कृच्छ्र कहाहै

सो दिखाई दाहै त्र्यह मिति त्रय ३ दिन शीत जल पीवे और त्रय दिन शीतल दुग्ध पीवे और त्रयदिन शीतलघृतपीवे और त्रयदिन वायु भक्षण करे इस कहणेतें २ अब देवलऋषिका वचनहै त्रय दिन तक गर्म कीताजो जल तिस विषे वायुकी हवाड लये और त्रयदिन तक गरम जल और त्रयदिन गरम घृत इनांकों पीणेकर्के ब्राह्मण शुद्धिकोंप्राप्त होताहै इसके मतमे नौ दिनका एह व्रतहै १ अब इसीविषे मार्कंडेयजीका वचनहै त्र्यदिन वायुगरम और त्र्यदिन दुग्ध गरम और त्र्यदिन घृत गरम तिनांके पीणे कर्केहि ब्रह्महत्याराभी शुद्धि कों प्राप्त होताहै द्विजर्षभ क्या ब्राह्मणां विषे श्रेष्ठ होताहै ॥ १ ॥ अब इसी विषे गौतमजीका व

त्र्यहंशीतंपिवेत्तोयंत्र्यहंशीतंपयःपिबेत् ॥ त्र्यहंशीतंघृतंपीत्वावायुभक्ष्यः परंत्र्यहमितिस्मरणात् ॥ २ ॥ देवलः ॥वायूष्णंत्रिदिनंविप्रःपयउष्णंदिनत्रयम् त्रिदिनंघृतमुष्णंचपीत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ वायुमुष्णंपयस्तद्वद्घृतमुष्णंदिनत्रयम् पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिब्रह्महापिद्विजर्षभः १ गौतमः । उष्णंपयःपयस्तप्तमुष्णंघृतमनंतरम् चतुर्णामपिपापानांपावनंमुनिभिःस्मृतम् । १। अत्रचतुःसंख्यास्थापनार्थमनंतरंत्र्यहमुष्णवायुपानं बोध्यम् ॥ आपस्तम्बः ॥ त्र्यहमुष्णंपिवेद्वारित्र्यहमुष्णंपिवेत्पयः त्र्यहमुष्णंपिवेत्सर्पिर्वायुभक्ष्योदिनत्रयम् ॥ १ ॥ ग्रंथांतरे त्र्यहमुष्णंपिवेद्वारि त्र्यहमुष्णंपिवेत्पयः त्र्यहमुष्णंपिवेत्सर्पिर्वायुभक्ष्योदिनत्रयम् ॥ १ ॥

चनहै गरम जल और गरम दुग्ध और गरम घृत और अनंतर कर्के गरम वायु जानणा इसप्रकार चारोंको ४ त्रयत्रय दिन पीवे तां संपूर्ण पापांके दूरकरणेवाला मुनियांने एहव्रत कहाहै १ ॥ अब इसी विषे आपस्तंब ऋषिका वचनहै त्रयदिन गरम जल पीवे और त्रय दिन गरम दुग्ध पीवे और त्रय दिन गर्मघृत पीवे और त्रयदिनगर्म पवनका आहारकरे तां तप्तकृच्छ्रव्रत कहाहै एहबारांदिनकर्केसाध्यजाणणा । १ । होरी ग्रंथविषे ऐसा कहाहै त्रय दिन गरम जल और त्रय दिन गरम दुग्ध और त्रय दिन गरम घृतपीवे और त्रयदिन गरम वायु पान करे ॥ १ ॥

श्रौर वायुका भक्षण गरम रात्रि विषे करे श्रौर जेकर शीतल वायु पान करे तां दिन विषे करे श्रौर एह त्राय दिन वायुभक्षणभी बारांदिनांके पूर्णकरणे वास्ते कहाहै इसमे श्रभिप्राय कहतेहैं यत्रेति ॥ जिस जिस स्थान विषे मुनियांनें कृच्छ्र व्रत कहाहै तिस तिस श्लोक विषे बारां दि नांका जानणे योग्यहै ॥ सो बृहस्पतिजी कहतेहैं हेद्विजर्षभ मुनियांने जो शास्त्रां विषे कृच्छ्रव्रत कहाहै सो बारां दिनांकर्केहि साध्य है श्रौर देहकोशुद्धिके देंणे वालाहै ॥ १ ॥ श्रौर जिस विषे श्रब्द क्या वर्षदिनका कृच्छ्रव्रतांविषे कहाहै सो वर्षविषे बारां बारां दिनांके हिसाबसें तीस३०' व्रत जानणे सोबृहस्पतिजी कहतेहैं प्रेति प्राजापत्य जोकृच्छ्रव्रत कहेहें तिनांविषें बुद्धिमानोनें जोवर्ष दिनकहाहै तिसकी गिणती करके तीस ३० व्रत जानणे १ एह प्राजापत्य कृच्छ्रकाहि लक्षणहै होरां

वायुभक्षणंतुउष्णमनक्तंवा द्वादशदिनपरिपूर्त्यर्थंकर्त्तव्यम् ॥ यत्रयत्रकृच्छ्रं मुनिभिरुपदिष्टंतत्रतत्रद्वादशदिनकंवेदितव्यम् तदाह बृहस्पतिः मुनि भिःकृच्छ्रमित्युक्तंशास्त्रेषुचाद्विजर्षभ तत्कृच्छ्रं द्वादशाहोभिः साध्यं देहवि शुद्धिदम् १ यत्राब्दमित्युक्तंकृच्छ्रेषुतत्रत्रिंशत्संख्याकंतदेवाह प्राजापत्ये षुकृच्छ्रेषुश्रब्दमित्युच्यतेबुधैः त्रिंशत्संख्यांविजानीयात्प्राजापत्यस्यल क्षणम् १ प्राजापत्यस्यकृच्छ्रस्यैव नान्यस्य । विष्णुः । सर्वेषामेवपापानां तप्तकृच्छ्रंविशोधनम् ततःपरममित्युक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः १ तप्तकृच्छ्र माधिकृत्याहहारीतः एषकृच्छ्रोद्विरभ्यस्तः पातकेभ्यःप्रमोचयेत् त्रिर भ्यस्तोयथान्यायंशूद्रहत्यांव्यपोहति ॥ १ ॥ कृच्छ्रसामान्यविधिमाह विष्णुः ॥ कृच्छ्राण्येतानिसर्वाणिकुर्वीतकृतवापनः नित्यंत्रिषवणस्नायी चाधःशायीजितेंद्रियः ॥ १ ॥

ग्रनका नाहि ॥ श्रव विष्णुजीकावचनहै संपूर्ण पापाके दूरकरणेवास्ते यथार्थदेखणवाले मुनियांने परम हितजाणकर्के तप्तकृच्छ्र व्रत शुद्धिकरणवाला कहाहै १ श्रव तप्तकृच्छ्रकों श्रंगीकारकर्के हारीतऋपिका वचनहै एह तप्त कृच्छ्र व्रत दो वार कीता होया पापांनें शुद्धिकों करताहै श्रौर त्रायवार कीता होया यथा योग्य शूद्र हत्याके पापको दूरकरताहै॥ १॥ श्रव कृच्छ्र व्रतको सा मान्य विधिको विष्णुजी कहतेहैं इनां संपूर्णा कृच्छ्र व्रतांको पुरुष करे तिनां विषे एह विधिहै मुंडन करवाये श्रौर नित्य त्रयकाल स्नान करे श्रौर पृथ्वी पर शयन करे श्रौर इंद्रियांको विष यांते रोककर राखे ॥ १ ॥

और स्त्रीयां और शूद्र और पापीएनांके साथ संभाषणत्यागे और पवित्र जो मंत्र तिनांकोनित्य जपे और अपनी समर्थातें हवन करे ॥ २ ॥ इसतें उपरंत तप्त कृच्छ्र व्रतके स्थान प्रत्याम्नाय जो बदलाहै जिस बदलेके कीतयां होयां तप्त कृच्छ्र व्रतका फल प्राप्त होताहै तिसको देवल ऋषिजी कहतेहैं तप्तेति तप्त कृच्छ्र संपूर्ण व्रतका प्रत्याम्नाय मनुने कहाहै जो पुरुष तप्त कृच्छ्र व्रतके करण विषे समर्था वाले नहि हैं तिनां उपर कृपा करकें पुरा कया पिच्छे हे अनघ हे पापांतें रहित तप्त कृच्छ्रका बदला कहाहै तिसको अब मैं कहताहां श्रवणकरो हे ब्राह्मणां विषे श्रेष्ठांहो ॥ १ ॥ कालि युग विषे विशेष करकें अन्नके त्यागतें पुरुष मृत्युकों प्राप्त होताहै तिसविषे पराशर जीका वचनहै कृतइति सत्ययुग विषे प्राणांकी स्थिति देहके चर्म विषे रहतीहै और त्रेतायुग विषे प्रा

स्त्रीशूद्रपतितानांचवर्जयेदभिभाषणम् पवित्राणिजपेन्नित्यंजुहुयाच्चापिशक्तितः ॥ २ ॥ अथतप्तकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह ॥ देवलः ॥ तप्तकृच्छ्रस्यसर्वस्यप्रत्याम्नायोमनोःकृतः अशक्तानांचकृपयाकर्त्तुमुक्तःपुरानघ ॥ तमेवाहंब्रवीम्यद्यशृण्वंतुद्विजसत्तमाः ॥ १ ॥ कलौयुगेविशेषेणह्यन्नत्यागान्मृत्युंगच्छति ॥ पराशरः ॥ कृतेचर्माश्रितः प्राणः त्रेतायांकीकसाश्रयः द्वापरेरक्तमाश्रित्यकलावन्नंसमाश्रितइति ॥ १ ॥ कलौयुगेद्वादशरात्रसाध्यकृच्छ्राणां कर्त्तुमशक्तान् निरीक्ष्य ऋषयः प्रत्याम्नायमुक्तवंतस्तमेवाहात्रैव गौतमः महतस्तप्तकृच्छ्रस्यब्रह्महत्यानिवारिणः तुलाप्रतिग्रहीतॄणांशोधकः स्यान्महामुने ॥ १ ॥ प्रत्याम्नायस्तदाप्रोक्तोयदाचसुसमागमः ॥ स्वयंभूःकृपयान्दृणांगवांविंशतिमादरात् सवत्सावहुदुग्धाश्चसाधुशीलाद्विजातये २ ॥ द्विजातिभ्यइतिवक्तव्ये जातावेकवचनम्

णांकी स्थिति अस्थीयांविषे रहतीहै और द्वापरयुगविषे रुधिरके आश्रय प्राणस्थितिहै और कालियुगविषे अन्नकेआश्रय प्राणांकी स्थितिहै १ इसकारणतें कालियुगविषे बारां १२ दिनांकर्के व्रत करणे विषे पुरुषसामर्थां वाले नहि ऐसेविचार कर ऋषि प्रत्याम्नायकों कहते भये तां तिस तप्तकृच्छ्रकों गौतम ऋषि कहताहै हेमहामुने तुला दानके प्रति ग्रहकों लयणे वाले जो पुरुष हैं तिनांके पापांकों दूर करणे वाला वड्डा जो तप्तकृच्छ् व्रत सो कहाहै कैसा व्रत है जो ब्रह्महत्याके भी दूर करणे वालाहै १ प्रत्याम्नाय तद कहाहै जद महात्माका संगमहोवे तो ब्रह्मा पुरुषां उपर कृपाकरके कहताहूया गौयांसहितबछयांके दुग्ध देणे वालीयां और भले स्वभाववालीयां वीस २० आदर करकें ब्राह्मणांकेतांई देणे योग्यहैं द्विजातये एह जाति विषे एक वचनहै । २ ।

अब इसीविषे मरीचिऋषिका वचनहैं पापांके नाश करणे वाला जो तप्तकृच्छ्रहै बडा ब्रह्मरूप तिसका बदला एहहै बीस २० गौवां आदर कर्के ब्रह्मणांके तांई देवे ॥ १ ॥ अब पराशरजी काबचनहै वडा जो तप्तकृच्छ्र तिसका बदला वस्त्र और भूषणांके साथ सहित बछयांके ॥ २० गौवां आत्मज्ञानके विचार कर्के युक्त जो ब्राह्मण तिनांके तांई देता हुवा ॥ १ ॥ शुद्धिकों प्राप्त होताहै हेराजेंद्र ऊौर तप्त कृच्छ्रके फलकों प्राप्तहोताहै तिस कारणतें तिनांवर्णां विषों जो तप्तकृच्छ्र व्रतके करणे विषे नहि समर्थावाले तिनांनें प्रत्याम्नाय करणे योग्यहैं ऊौर पीछे पंचगव्यका पान करणा ऐसा किहाहै ॥ २ ॥ ऊौर तुला आदिक दानके ग्रहण करणे वाले जो पुरुष हैं तिनांकों तिस प्रतिग्रहदोषके दूरकरणे वाले प्रायश्चित्त करण विषे एहि

मरीचिः पापनाशककृच्छ्रस्यतप्तस्यब्रह्मरूपिणः दद्याद्द्विजातयेसम्यग्गवांविंशतिमादरात् १ पराशरः॥ महतस्तप्तकृच्छ्रस्याविप्रायाध्यात्मवेदिने सालंकारांसवत्सांचधेनुर्विंशतिकांददन् ॥ १ ॥ शुद्धिमाप्नोतिराजेंद्रतप्तकृच्छ्रफलंलभेत् ततोद्विजातिभिःकार्य्यास्त्वशक्तैस्तप्तरूपिणः पंचगव्यंपिबेत्पश्चात्प्रत्याम्नायइतीरितः ॥ २ ॥ तुलादिप्रतिग्रहीतॄणामपीयमेवगतिस्तत्प्रायश्चित्तकरणविषये ॥ अपरार्के ॥ अतिकृच्छ्रेपराकेचतप्तकृच्छ्रेतथैवच प्राजापत्यत्रयंकुर्यात् कृच्छ्रेगोमिथुनंभवेत् ॥ १ ॥ स्मृत्यर्थसारे। मासोपवासस्थाने पंचदशप्राजापत्याइति चतुर्विंशतिमते धर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठाः कदाचित्पापमागताः जपहोमादिकंतेभ्योविशेषेणाभिधीयते ॥ १ ॥

तप्तकृच्छ्रव्रत कहाहै ॥ अब अपरार्क विषे कहाहै यथा अतिकृच्छ्रव्रत विषे ऊौर पराक व्रत विषे और तप्त कृच्छ्र व्रत विषे तिस प्रकार प्राजापत्यत्रय करे ऊौर कृच्छ्रव्रतविषे एक गौ ऊौर बलद दानकरे ॥ १॥ अब स्मृत्यर्थसारविषे कहाहै जो एक मासका उपवास व्रत कहाहै तिसका बदला पंदरां १५ प्राजापत्यव्रत कहने इसमे एह अभिप्रायहै कि प्राजापत्य ६ उपवासके तुल्य हैं ऐसा अगेस्थापनहोणाहै तिसकेहिसावसें ५ पंच प्राजापत्यमासोपवासकी जगा आउतेहैं परंतु इसकों अति कष्टदायी जाणकर इसकी जगा १५ पंदराकहेहैं ॥ ऊौर चतुर्विंशति मत विषे कहाहै धर्मेति जो पुरुषधर्म विषे युक्त हैं ऊौर तप विषे युक्तहैं कदाचित् पापकों प्राप्तहोवें अर्थात् पापकरें तो तिनां तांई विशेषकर्के जप ऊौर हवन आदिक कहाहै ॥ १ ॥

और जो पुरुष केवल नाम करकेहि ब्राह्मणहैं संस्कारतें रहित और मूर्ख और धर्मतेंरहितहैं तिनां ताईं विशेष कर्के कृच्छ्र चांद्रायणादि व्रत देणे योग्य हैं ॥ २ ॥ और धन कर्के युक्त जो पुरुष तिसनें पूर्वोक्त धेनु विंशतिकादिरूप दक्षिणा देणे योग्यहै जो दक्षिणा यत्न कर्के विधान कीतीहै इस प्रकार नर विशेषकर्के क्या जिसकों जैसा उचितहोवे तैसा मनुष्यकों विशेष कर्के प्रायश्चित्तकों पापके दूर करणेवास्ते देवे ॥ ३ ॥ ● इसते अनंतर पर्ण कृच्छ्र कों याज्ञवल्क्य कहताहै पर्णोविति ॥ १ ॥ इसकाअर्थ अपरार्क विषे कहाहै पर्णादीति पलाह और गूलर और कमल औरबिल्व और कुशा इनांके भिन्न भिन्न पत्रांकोंलेकर

नामधारकविप्रायेमूर्खाधर्मविवर्जिताः कृच्छ्रचांद्रायणादीनितेभ्योदद्याद्विशेषतः ॥ २ ॥ धनिनादक्षिणादेयाप्रयत्नविहितातुया एवंनरविशेषेणप्रायश्चित्तानिदापयेदिति ॥ ३ ॥ ※ अथपर्णकृच्छ्रमाह याज्ञवल्क्यः ॥ पर्णोदुम्बरराजीवबिल्वपत्रकुशोदकैः प्रत्येकंप्रत्यहंपीतैःपर्णकृच्छ्रउदाहृतः ॥ १ ॥ अत्रापरार्कः ॥ पर्णादिपत्रान्तानांकुशानां चैकैकस्यक्काथोदकमेकैकस्मिन्नहनिपीयते इत्येषपंचरात्रसाध्यःपर्णकृच्छ्रः । अत्रापि प्राशनमाहारांतरनिवर्त्तकम् ॥ पर्णः पलाशःराजीवंपद्मंप्रसिद्धमन्यत् विष्णुस्तुपर्णकृच्छ्रमन्यथाह कुशपलाशोदुम्बरपद्मशंखपुष्पीवटब्रह्मसुवर्चलापत्रैः ७ क्वथितस्यांभसःप्रत्यहंपानेपर्णकृच्छ्र इति

काथकरें और तिसकाथके जलकों दिन दिन विषे क्रम कर्के पानकरे तांते एहपर्ण कृच्छ्र व्रत पंजां दिनां कर्के सिद्धहोताहै १ इसविषे प्राशन कहणे कर्के अन्य वस्तुके भक्षण कानिषेधहै ॥ विष्णुजी पर्ण कृच्छ्रकों और ही प्रकार कर्के कहतेहैं कुशा और पलाह और उदुंबर क्या गूलर और पद्म और शंखपुष्पी बूटी और बोड और ब्रह्मसुवर्चला बूटी इनांसत्तां ७ के पत्रांकर्के जलको भिन्न भिन्न काहडे और तिनांके काथके जलको दिन दिन विषे क्रमकर्के पानकरे तां पर्ण कृच्छ्र होताहै इति

जाबालऋषि औरही प्रकार कर्के कहताहै ॥ पलाह और विल्व और पद्म इनांके पत्र और गूलरके पत्र और पिप्पलके पत्र इनांपत्रांकों दिन दिन विषे क्रम कर्के पीवे ॥ १ और पीछे दिन रात्र उपवास करे एह उपवास सहित छे ६ दिनका व्रतहै पूर्वजन्मके पापकों और इस जन्मके पापोंको दूरकरणे वालाहै इति २ ॥ शंख और लिखितजीभी इसमें कहतेहैं पद्म और विल्व और पलाह और गूलर और कुशोदक इनांकों भिन्न भिन्न क्रमकर्के भक्षण करे तां पर्णकृच्छ्र होताहै ॥ और इनां संपूर्णांकों त्रयदिन भक्षणकरे तांभी पर्णकृच्छ्रहोताहै ॥ पहला पांच दिनका दूसरा तीन दिनका ॥ अथयमजीकावचनहै पलेति पलाह और विल्वके पत्र और कुशाऔर पद्म इनांके पृथक पृथक पत्रांकोंग्रहण करे और एक एक वृक्षके पत्रांकों त्रय त्रय

॥ जावालस्त्वन्यथाह ॥ पलाशबिल्वपद्मानांपत्राण्यौदुम्बराणिच अश्वत्थस्यचपत्राणिअशेत्रैकैकशस्तथा ॥ १ ॥ अहोरात्रोपवासश्चपर्णकृच्छ्रःप्रकीर्तितः अन्यजन्मकृतंचैवपापंनाशयतेतुस इति ॥ २ ॥ शंखलिखितौ पद्मविल्वपलाशोदुम्बरकुशोदकान्येकैकमभ्यस्तानि पर्णकृच्छ्रः ॥ समस्तान्येतानित्रिरात्रेणोपभुक्तानि वापर्णकृच्छ्रः । यमः । पलाशविल्वपर्णानिकुशान्पद्मानिवान्यतःएकैकंत्र्यहमश्नीयात्पर्णकृच्छ्रोविधीयतइति १ अन्यतइति पृथगित्यर्थः । अत्र द्विजानांमध्यमानिपत्राणि शूद्रस्येतराणीतिवोध्यमिति यदातु पर्णादीनामेकीकृतानांक्काथ स्त्रिरात्रोपवासांते पीयतेतदापर्णकूर्चः ॥ यथाहयमः ॥ एतान्येवसमस्तानित्रिरात्रोपोषितःशुचिः क्काथयित्वापिवेदद्भिःपर्णकूर्चोऽभिधीयतइति ॥ १ ॥

दिन भक्षण करे एह वारां १२ दिनांकर्के पर्णकृच्छ्र कहाहै ॥ १ ॥ इसविषे ब्राह्मण आदि तीनवर्णोंकों पलाहके मध्यम पत्रे कहेहे अर्थात् ब्राह्मणपलाशके विचले पत्र ग्रहणकरे और शूद्र इतर कया आसपासके पत्रकों ग्रहकरणे ऐसे जानणा इति यदेति जद फेर पलाह और गूलर और कमल और विल्व इनांके पत्रांकों एकत्र कर्के कुशाके जलकर्के काढ़डे और त्रय दिन उपवासकों कर्के पीछे पीवे तां पर्णकूर्च कहाहै जैसे यमजी कहतेहैं त्रय रात्रके उपवास व्रत कर्के शुद्ध होया होया इनां ाह और गूलर और कमल और विल्वके पत्रांकों जलके साथ काथकर्के पीवे तां पर्णकूर्च कहीदाहै इति १

यदेतिजद फेर विल्व आदि फल जलकर्के काहडे होये दिनादिनीवेष कसकर्के पीवे एक मास पर्यंत तां फल कृच्छ्रते आदलेके नामकों प्राप्त होतेहैं ॥ जैसे मार्कंडेयजी कहते हैं फलांके काथकों एकमास पर्यंत पीवे तां बुद्धिमानोनें फलकृच्छ्र कहाहे ॥ और श्रीफल क्या विल्वफल इनांके काथकों एक मास पर्यंतपीवे तां तिसका नाम श्रीकृच्छ्र कहाहै ॥ तैसे पद्मांकेकाथकों एक मास पर्यंत पीवे तिसका नाम पद्मकृच्छ्र कहा है ॥ १ ॥ ऐसे एक मास पर्यंत आमलेके काथ कों पीवे तां एह दूसरा श्रीकृच्छ्र कहाहै ॥ और विशेष कहतेहैं पत्रेरिति पत्रांके काथ क्यां काढ़ेकों पीवे तां पत्रकृच्छ्र हुंदाहे ॥ और पुष्पां कर्के पुष्पकृच्छ्र होताहे ॥ २ ॥ और मूल कर्के मूलकृच्छ्र और केवल जलके काथकों पीवे तां तोय कृच्छ्र कहा है ॥ २ ॥ इसमें एह विचारहे कि

यदातुविल्वादिफलानि प्रत्येकं कथितानि मासंपीयंते तदा फलकृच्छ्रादि व्यपदेशंलभंते । यथाहमार्कंडेयः ॥ फलैर्मासेनकथितःफलकृच्छ्रोमनीषिभिः श्रीकृच्छ्रःश्रीफलैःप्रोक्तःपद्माक्षैरपरस्तथा ॥ १ ॥ मासेनामलकैरेवंश्रीकृच्छ्रमपरंस्मृतम् पत्रैर्मतःपत्रकृच्छ्रःपुष्पैस्तत्कृच्छ्रउच्यते ॥ २ ॥ मूलकृच्छ्रःस्मृतोमूलैस्तोयकृच्छ्रोजलेनत्विति ॥ पत्रकृच्छ्रोत्रउदुम्बरपद्मविल्वपत्रभेदात्त्रिधा। तोयकृच्छ्रोपिकेवलजलकुशोदकभेदाद्विधा ॥ इत्येवमेकादशधापर्णकृच्छ्रइतिमिताक्षराशयः पुष्पकृच्छ्रस्तुपद्मपुष्पजोबोध्यः । मासशब्देनात्रसावनोमासोग्राह्यः तदुक्तंकालनिर्णये ॥ आयुर्दायविभागश्चप्रायश्चित्तक्रियातथा सावनेनैवकर्तव्याशत्रूणांवाप्युपासनेति १

अष्टप्रकारके कृच्छ्र जों दिखाएहैं तिनांविचों पत्रकृच्छ्र त्रय तरहांकाहे ॥ और जल कृच्छ्र दो प्रकारकाहे इसतें ११ प्रकार कृच्छ्रके होए एह मिताक्षरा ग्रंथका आशयहे और मूलमे अर्थ स्पष्टहे ॥ और विशेषकतेहैं मासेति मासशब्दके कथन करणे कर्के तीस ३० दिनांका महीना इसजगा ग्रहण करणे योग्यहे और चांद्रमास नहि जानणा इसका निर्णय कहा है कालनिर्णय ज्योतिश्शास्त्र विषें ग्रहांके अनुसार कहा जो आयुर्दाय विभाग सो तीस ३० दिनर्के मासते जानणा तैसे प्रायश्चित्तका करणा और शत्रुयांकी उपासना केदी आदिक अथवा विनांकी हानि वास्ते अनुष्ठानादि भी तीस दिनके मास कर्के जानणे योग्यहे ॥ १ ॥

अब देवलऋषिका वचनहै हेब्राह्मणा विषे श्रेष्ठो पर्णकृच्छ्र नाम करकेंजो व्रतहै तिसकोंश्रवण करो जो अतिशय करकें श्रेष्ठ है और संपूर्ण पापोंके दूर करणे वाला और संपूर्ण दोषांके नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ अब दोषां करकें युक्त जो पाप हैं अर्थात् जिनां पापां देभोगते पीच्छे क्षयादि रोग हुंदेहै तिनको कहतेहां तिनांकों हि पर्णकृच्छ्र व्रत दूर कर्त्ताहै ब्रह्महेति ब्राह्मणके मारणे वाला पुरुष क्षय जो श्वासकास रोग तिस करकें युक्त होताहै और मदिरा के पीणे बाला जो है तिसके काले दांत होतेहैं और जो सुवर्णकी चोरी कर्त्ताहै तिसके कुनख क्या निंदितनख होतेहैं और गुरुकी स्त्री साथ जो विषय भोगताहै सो कुष्टी होताहै ॥ २ ॥ अन्नेति और अन्नकों चुराणे बाला उदर विषे रोग युक्त होताहै ॥ और शाकके चुराणे वाला दर्दुर क्या डड्डू होताहै और धान्य क्या धाइयां चुराणे वालयांकों हे ब्राह्मणां खरक रोग होताहै ॥ ३ ॥ ताम्रेति तांबेके

देवलः ॥ पर्णकृच्छ्रंद्विजश्रेष्ठाःशृण्वन्तुपरमंशुभम् ॥ सर्वपापप्रशमनं सर्वदोषोपशान्तिदम् ॥ १ ॥ ब्रह्महाक्षयरोगीस्यात्सुरापःश्यावदंतकः स्वर्णस्तेयीचकुनखीदुश्चर्मागुरुतल्पगः ॥ २ ॥ अन्नहर्त्ताभवेद्गुल्मी शाकस्तेयीतुदर्दुरः स्तेयिनांधान्यहारीणांकंडूतिःसंततांद्विजाः ॥ ३ ॥ ताम्रस्तेयीदीर्घवृषणःप्रमेहीपर्वमैथुनी शिरोव्रणीस्नानहीनःपित्तवांस्त्रपुसीसहा ॥ ४ ॥ गजचर्मानागहन्ताश्वहन्तामहाव्रणी कंठभूषणहारी स्याद्गंडमालीभवेद्भुवि ॥ ५ ॥ रक्तप्रमेहीमनुजोपुष्पवत्यंगनागमः भगिनीगमनोभूमौमधुमेहीभवेन्नरः ॥ ६ ॥ मातुःसपत्नींभगिनींजभत्कामातुरोनरः सपापमनुभूयाशुरोगीभूयाद्भगंदरी ॥ ७ ॥

चुराणे वालेके षतालू लंबे होतेहैं और संक्रांति आदिक पर्व विषे जो मैथुन कर्त्ताहै सो प्रमेहरोग करकें युक्त होताहै ॥ और स्नानतें रहित जो है सो शिर विषे व्रणवाला होताहै और लाख और सिक्केके चुराणे वाला पित्त रोग युक्त होताहै ॥ ४ ॥ गजेति हाथी के वध करणे करकें हाथीकी न्याईं चर्म वाला होताहै ॥ और घोडेके वध करणे वाला देह विषे बहुत व्रण युक्त होताहै ॥ और कंठके भूषण हरण वालेकों हजीरांरोग होताहै ॥ ५ ॥ रक्तेति ऋतुमती स्त्री के साथ जो गमन कर्त्ताहै सो रक्तप्रमेहरोग करकें युक्त होताहै ॥ और जो भगिनी विषे गमन कर्त्ताहै सो मधुप्रमेहरोग करकें युक्त होताहै ॥ ६ ॥ मातुरिति दूसरी माताके साथ और माताकी भैणके साथ जो गमन कर्त्ता है सो तात्काल भगंदररोगकरकें युक्त होताहै ॥ ७ ॥

स्वसारमिति जो पुरुष भैणविषे गमन कर्ताहै सो मूत्र कृच्छ्र रोगकर्के युक होताहै । और गौके मारणेवाला महापापी पुरुष सदा पृथ्वीविषे रोगी होताहै ॥ ८ ॥ गवितिं गौकेबच्छेके मारणेतें गुदाविषे मंमसी रोगकर्के युक होताहै । और शिवजीके निर्माल्यकों जो भक्षण कर्ताहै सो कफ रोगकर्के युक होताहै ॥ ९ ॥ अजीति जो पुरुषों विषे कठोरताकों अथवा छलको कर्ताहै सो उदर विषे अजीर्ण रोगी होताहै शठ कृत् इस जगा (छलकृत्) ऐसा भी पाठ है और गृहकों दाहकरणे वाला शूलरोग युक्तहोताहै और बंदि ग्रहणजदोषसें अर्थात् जो बिना अपराध किसीकों कैदकर्ताहै सो श्वासकासरोगवाला होताहै १० ॥ जो स्त्री विषांकर्के बालककों मारतीहै तिसका गर्भ सदाहि स्रव जाताहै ॥ और जो स्त्री अन्यपुरुषके साथगमन कर्तीहै सो स्तनांविषे फोडेवालीहोतीहै ११ क्षीरमिति जस्त्री दुग्धकों चुरावैहि सो दूसरेंजन्मविषे स्तनां

स्वसारंयःपुमान्गच्छेज्जायतेमूत्रकृच्छ्रवान् धेनुहन्तामहापापीसदारोगी भवेद्भुवि ८ गोवत्सहननान्मर्त्यःसभूयादर्शवान्भुवि शिवनिर्माल्यभुक्पापी जायतेकफवान्नरः ॥ ९ ॥ अजीर्णरोगीशठकृद्गृहदाहीचशूलवान् वंदिग्रहणजाद्दोषाज्जायतेश्वासकासवान् ॥ १० ॥ स्रवद्गर्भाभवेत्सातुवालकंहन्ति याविषैः अन्यमालिंगतेनारीसावैस्फोटस्तनीभवेत् ॥ ११ ॥ क्षीरंमुष्णातियानारीस्तन्यहीनान्यजन्मनि पतिव्रतापहारीचवृषणव्रणरोगवान् १२ विधवासंगजाद्दोषाच्छिश्नदेशव्रणीभवेत् पुष्पस्तेयीविकनासःकोशस्तेयीतुपेटवान् ॥ १३ ॥ गन्धस्तेयीचदुर्गन्धःक्रमुकेसततंज्वरी विवाहविघ्नकृन्मर्त्योजायतेहीनदारवान् ॥ १४ मयूरहननान्मर्त्योजायतेकृष्णविंदुकःतडागारामविच्छेदीसदादुःखीभवेन्नरः ॥ १५ ॥ इत्येवमादयोदोषामहानरकदान्नृणाम् एतेषांशोधनार्थायपर्णकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १६ ॥

में दुग्ध रहितहोतीहै और जो पुरुष पतिव्रतास्त्रीकों हरताहै सो पताल्यांविषे छिद्रवाला होताहै १२ ॥ विधवेति विधवास्त्रीविषे संग करणेतें लिंगविषे छिद्रकर्केयुक होताहै । और पुष्पांके चुराणे वाला फीना होताहै और खजाने चुराणेवाला जलोदर रोग वाला होताहै १३ गंधेति सुगंधिवाली वस्तुके चुराणे वाला वगड गंधवाला होताहै और सुपारीके हरणेवाला सदाज्वर रोगयुक होताहै और किसेके विवाह विषे जो विघ्न कर्ताहै सो स्त्रीतें रहित होताहै १४ मयूरेति मोरके मारणे वाला जोहै तिसके देह विषे कालीयां बिंदु होतीयांहैं और तला और बाग इनांके नाश करणेतें सदादुःखी होताहै १५ इसतें आदलेके जो दोष हैं सो पुरुषांकों महानरककेदेणे वाले कहेहैं इनांदोषांके दूर करणे वास्ते पर्ण कृच्छ्र व्रत कों करे ॥ १६ ॥

अवमार्कंडेयजीका वचनहै ॥ महेति महांपापांके जो समूहहैं और लघु जो पापहैं पृथ्वीविषे आर्द्र क्या इच्छा करके जो पापकीतेहैं और इच्छातें विनाकीतेहैं अथवा आर्द्रक्या अरकालके कितेहोए पाप और शुष्क क्या चिरकालके कीते होय पाप एह अर्थहै तिनां संपूर्णांकों शुद्ध करणे वाला पर्ण कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ १ ॥ अव पराशरजीका वचनहै ॥ पर्णेति ब्राह्मण पर्ण कृच्छ्रके करण विषे मध्यम पत्र ग्रहण करे वारां दिन पर्य्यंत नित्यशुद्धहोकर तिलककों धारणकर्के ॥ १ ॥ पूर्वकी न्यांई गंध पुष्प आदिकां कर्के विष्णुकों पूजे जद सूर्य अस्त होवे तां पलाहके तीन पत्रांकर्के तीन डूनेवनावे ॥ २ ॥ और वेदके पठनकरणेविषे युक्त जो ब्राह्मण तिनांके तीन गृहांविषे जाकर तीनडूनयांविषे भिक्षात्रयकों ग्रहणकरे ॥ ३ ॥ एक भिक्षाका डूना विष्णुकेतांई अर्पणकरे और एक

॥ मार्कण्डेयः ॥ महापातकजालानांल्घूनांभुविजन्मनाम् आर्द्राणांचैवशुष्काणांपर्णकृच्छ्रंविशोधनम् ॥ १ ॥ पराशरः ॥ पर्णकृच्छ्रस्यपर्णानिमध्यमानिद्विजोत्तमः द्वादशाहानिपर्यन्तंनित्यंशुचिरलंकृतः ॥ १ ॥ पूर्ववद्विष्णुमभ्यर्च्यरविरस्तंगतोयदा त्रिभिःपत्रैर्ब्रह्मभूतैःकृत्वाचैवपुटत्रयम् ॥ २ त्रीणिवेश्मानिविप्राणांवेदाध्ययनशीलिनाम् भिक्षात्रयंसमानीयत्रिषुपत्रपुटेष्विह ॥ ३ ॥ एकंपुटंतुदेवायविप्रायैकंसमर्पयेत् अवशिष्टंतदाश्नीयाद्धरिनामपरायणः ॥ ४ ॥ स्वपेद्देवसमीपेतुसंचितंमनसास्मरन् ततःप्रभातवेलायांपूर्ववत्सकलंचरेत् ॥ संचितंपापमित्यर्थः ॥ ५ ॥ विप्रायदेयागोरेकापंचगव्यंपिवेत्ततः पर्णकृच्छ्रमिदंभूपशोधनंपापकर्मणाम् आचरणमात्रेणचान्द्रायणफलंलभेत् ॥ ६ ॥

तिसका डूनाब्राह्मण तांई अर्पणकरे और तीसरे डूनेंको आप भक्षण करे और विष्णुके नामका युक्तहै करे ॥ ४ ॥ और विष्णुकीमूर्त्तिके समीपशयनकरे संचित जो पापहै तिसका मनकर्के स्मर महांत ने एह पापकीताहै ॥ ५ ॥ ऐसे वारां दिनके व्रततें अनंतर प्रातःसमयविषे पूर्वकी न्यांई ये होयेंमकों कर्के ब्राह्मणके तांई एक गौ देवे और तिसतें अनंतर पंचगव्यका पानकरे एऔर कृच्छ्र हेराजन् पापकर्मोंके शुद्ध करणे वालाहै जिसके करणे कर्के पुरुष चांद्रायणके इसफलों प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥

इसतें उपरंत पर्णकृच्छ्र व्रतका वदला देवलऋषि कहताहै पर्णेति हेराजर्षे तेरे ताई पर्ण कृच्छ्र व्रतके वदले नूं कहताहां केसा बदलाहै संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ और मनुष्योंकों संपूर्ण कामना फलकों देणेवाला और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांकेफल देणे वाला सो कहतेहां पांच ५ गौयां पंजां ब्राह्मणांके ताईं भिन्न भिन्नदेवे कैसीयां गौयांहैं वस्त्र आदि शोभाकर्के युक्त और वछयांके सहित हैं ॥ २ ॥ और सुवर्णके हैं शृंगजिनां के और रुप्येकेखुरां कर्के युक्त और दोहनकरणेके लिये कांसपात्रकर्के युक्त और सुशीला और जुवाण ऐसीयांविप्रांकोंदेणेयोग्यहैं एह प्रत्याम्नाय पर्णकृच्छ्रका बहुतश्रेष्ठ कहाहै ३ ● इसतें उपरंत

अथपर्णकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥ पर्णकृच्छ्रस्यराजर्षेप्रत्याम्नायंवदामि ते सर्वपापस्यशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् । १ । सर्वकामप्रदंन्हणांसर्वकृच्छ्र फलप्रदम् पंचगावः प्रदातव्याः सालंकाराः सवत्सकाः ॥ २ ॥ हेमशृं ग्योरौप्यखुराः कांस्यदोहनसंयुताः ॥ साधुशीलायुवत्यश्च विप्रेभ्यश्च पृथक्पृथक् ॥ पर्णकृच्छ्रस्यविप्रर्षेप्रत्याम्नायोमहत्तरः ॥ ३ ॥ ● अथफल कृच्छ्रलक्षणम् । तत्रदेवलः ॥ फलकृच्छ्रस्यदेवर्षे लक्षणंकथितंमया शृणु ब्रह्ममुनेचित्रंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ येमातृघातिनोलोकेतथैवपितृ घातकाः येवास्युर्भ्रातृहंतारस्तेषामेषाविनिष्कृतिः ॥ २ ॥ येवागर्भविभे त्तारोयेवास्युर्गरदायिनः येवाग्रामविभेत्तारोयेवाकुलजभेदिनः ॥ ३ ॥ येपीहपिशुनालोकेयेवास्युःस्तेयिनः सदा येवाबालविभेत्तारस्तेषां [illegible] ॥ निष्कृतिः ॥ ४ ॥

फलकृच्छ्रके लक्षणनूं कहतेहां तिसविषे देवलजीका वचनहै फलेति हेदेवर्षे फलकृच्छ्रका लक्षण मैंनेकथनकरीदाहै हेब्रह्ममुने तूं श्रवणकर वडाआश्चर्यहै उौर संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाहै १ ॥ इसकर्के दूर होणेवाले पापोंकों कहतेहां यइति जो पुरुषमाताका और पिताका और भ्राताका वधकर्तेहैं तिनोंकी शुद्धिकर्ताहै ॥ २ ॥ और जो गर्भपात करतेहैं और विषदेतेहैं और नगरांकों लूटतेहैं और कुलविषे संवधीयांका नाशकरतेहैं ॥ ३ ॥ और जो लोकविषे चुगली करतेहैं उौर सदा चोरीकरतेहैं औरबालकांकों मारतेहैं तिनांसंपूर्णांकी शुद्धि देणेवाला एह व्रत है ॥ ४ ॥

याइति जो स्त्रीयां भर्त्तांकों त्यागके अन्य पुरुषां विषे गमन करतीयां हैं तिनां स्त्रीयांकी शुद्धि वास्ते पूर्व ब्रह्माजीने फलकृच्छ्र व्रत रचीदाहोया ॥ ५ ॥ ब्रह्मस्वेति ब्राह्मणांके धनकों जो नाशक रतेहैं अथवा होरीपासों नाशकरवातेहैं और जोलोकविषे खेतीयांकोंचुरातेहैं तिनांकी फल कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्धि कहीहै ॥ ६ ॥ उच्छिष्टेति जो पुरुष किसेके जूठे अन्नकोंभक्षणकरतेहैं और झूठा वाद करतेहैं और मुरदेकों उठाकर हरतेहैं इसमें शवका हरणा मंत्रसिद्धि वास्ते अथवा चिकित्साके जानणे वास्तेहै तिनांकी कृच्छ्रव्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ ७ ॥ मद्येति जो मदिराके पीनेविषे नित्ययुक्तहैं और नित्यकर्म जो संध्यावंदनादि तिनांका नाशकरतेहैं और पितरांके निमित्त जो श्राद्ध

याश्चनार्य्यः पतिंत्यक्त्वारमंतेऽन्यान्नरान्यदि तासामपिविशुद्ध्यर्थंपुरासृष्टं स्वयंभुवा ॥ ५ ॥ ब्रह्मस्वघातिनोनित्यंब्रह्मस्वानांचघातकाः क्षेत्राणांहारिणोलोकेतेषामेतद्धिनिष्कृतिः॥ ६॥ उच्छिष्टभोजनायेचयेचमिथ्यापवादिनः येवैकुणपहर्त्तारस्तेषामेतद्धिनिष्कृतिः ॥ ७ ॥ मद्यपानरतानित्यंनित्यकर्मविभेदिनः पितृश्राद्धविभेत्तारस्तेषामेतद्धिनिष्कृतिः ॥ ८ ॥ महापातकयुक्तोवायुक्तोवासर्वपातकैः कृच्छ्रेणैतेनमहतासर्वपापैःप्रमुच्यते॥९॥ महांतः पापकर्म्माणोमहापापहताःसदा एतेनकृच्छ्रराजेनपुनंतिसततंद्विजाः फलकृच्छ्रंमहापापहारिसंपत्प्रवर्धनम् ॥ १० ॥ दिनादिनेमुनींद्राश्चकृत्वैतच्छुद्धिमाप्नुयुः ॥ ११ ॥

तिसका खंडनकरतेहैं तिनापुरुषांकी फलकृच्छ्रव्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ ८ ॥ महेति जो महापापकर्के युक्तहै वा संपूर्ण होरना पापांकर्के युक्तहै इस वडे फल कृच्छ्र व्रतके करणेकर्के शुद्धहोंताहैं ॥ ९ ॥ महांतइति जो ब्राह्मण आदि वर्ण हैं महापापांके करण वाले हैं और महापापां कर्के हत होये होये इसकृच्छ्र राज कर्के पवित्र होतेहैं एह फल कृच्छ्र व्रत महापापांके नाशकरणे वालाहै और संपदाके वधाणे वालाहै ॥ १० ॥ इसमे संप्रदाय कहतेहैं दिन इति दिन दिनविषे मुनींद्र इसफल कृच्छ्रके करणे करके शुद्धहोंते होये । ११ ।

कायेति एह फलकृच्छ्र देहको शुद्धकर्त्ताहै और संपूर्ण कृच्छ्र फलांकोदेताहै और संपूर्णपापांका नाशकर्त्ताहै एहफलकृच्छ्रवडा श्रेष्टहै १२ प्रातरिति प्रातःकालविषे स्नानकर्के देहकी शुद्धिवास्ते पूर्वकीन्याई मृत्तिकादिसें स्नानकर्के शुद्धहोया गायत्रीका जप सूर्यके अस्ततांई सारादिन करे ॥ १३ ॥ तावदिति तां व्रती पुरुष मनको स्थिरकर्के नित्यकर्मको समाप्तकरे विधि कहतेहैं कि केलेका एक फल विष्णुकेतांई अर्पण करे ॥ १४ ॥ और तिस फलको पूर्व भक्षणकरे मौनको धारके व्रत विषे स्थित होया होया वीर्यसंपूर्ण अर्थात् पकेहोवे फल भक्षण करे जो शुष्क न होण और कच्चे और चिरकालके त्रुटित न होण ऐसे त्रय फल भक्षणकरे ॥ १५ ॥ और

कायशुद्धिप्रदंकृच्छ्रंसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् सर्वपापहरंचेदंफलकृच्छ्रमहत्तरम् ॥ १२ ॥ प्रातःस्नात्वाशुचिर्भूत्वापूर्ववच्छुद्धिहेतवे तावज्जपन्सदातिष्ठे द्यावदस्तंगतोरविः ॥ १३ ॥ तावद्व्रतीस्थिरमनानित्यकर्मसमापयेत् कदलीफलमेकंचविष्णवेतन्निवेदयेत् ॥ १४॥ तदेवभक्षयेत्पूर्वंव्रतस्थो मौनपूर्वकम् एकैकवीर्यसंपूर्णंभक्षयित्वाफलत्रयम् ॥ १५ ॥ एतद्वनफलैर्विना ॥ एवंद्वादशरात्राणिस्वपेन्नारायणाग्रतः गोंदेयाविप्रवर्य्याय ब्रह्मकूर्चंपिवेत्ततः ॥ १६ ॥ फलकृच्छ्रमिदंसर्वंकथितंब्रह्मणोदितम् ॥ कृच्छ्रस्यैतस्यमाहात्म्यान्नश्यत्येवमहद्भयम् ॥ १७ ॥ अथफलकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ देवलः कृच्छ्रस्यैतस्यमुनयःप्रत्याम्नायंमहोन्नतम् शृण्वंतुसर्वपापघ्नंसर्वश्रेयःप्रदंनृणाम् ॥ १ ॥

वनकेफलांको न ग्रहणकरे इसप्रकार बारांदिन १२ व्रतकरे और नारायणके समीप शयनकरे और श्रेष्ट ब्राह्मणके तांई एक गौ देणयोग्यहै तिसतें पीछेब्रह्मकूर्च पीवे ॥ १६ ॥ एह फलकृच्छ्र व्रत ब्रह्माजी कर्के कथित क्या किहाहोयाथा सो मैंने तुमको कहाहै इस कृच्छ्रके माहात्म्यतें महाभय नष्टहोताहै ॥ १७ ॥ इसतें उपरंत फल कृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिसके वदले विषे देवलजीकावाक्यहै कृच्छ्रेति हेमुनीश्वरहो इस कृच्छ्रके उत्तम वदलेको श्रवण करो जो पुरुषांके संपूर्ण पापांके दूरकरणे वाला और संपूर्ण कल्याणांके देणेवालाहै ॥ १ ॥

पुरेति पूर्व गालवनामें ऋषि ब्रह्महत्याके भय कर्के युक्त होया होया संपूर्ण लोकांके हितकी इच्छावाले जो विष्णु तिनांकी शरणकों प्राप्तहोताभया ॥ २ ॥ हे भगवन् लोकांके हित की इच्छावाला जो तूंहैं तेरेकर्के मै अनुग्रह करणे योग्यहां हे देवतयांके देव हे इंद्रआदिकांके स्वामी तुसांके चरणांकी शरणकों प्राप्त होयां जो मैं मेरी रक्षाकरो ॥ ३ ॥ कैसे हौंतुसी जो पुरुष तुसांके नामकों स्मरण कर्ताहै तिसके जो ब्रह्महत्या आदि पापहैं तिनांके नाशकरणेवाले हो इसकारणतें हेपुरुषोत्तम मैंनें तुमांके चरण देखेहैं ॥ ४ ॥ ब्राह्मणकी हत्या जो बडी मेरेदेह विषे हे प्रभो स्थितहै सो तूं दूरकर मेरे देहको जलातीहै जैसे शुष्क लकडीकों अग्नि शीघ्रता

पुराहिगालवोनामब्रह्महत्याभयातुरः विष्णुंशरणमापेदेसर्वलोकहितैषिणम् ॥ २ ॥ अनुग्राह्योस्मिभगवंस्त्वयालोकहितैषिणा रक्षमांदेवदेवेशत्वदंघ्रिशरणागतम्॥ ३ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानांस्मरणान्नाशहेतुकम् अतस्त्वत्पादयुगलंदृष्टंमेपुरुषोत्तम ॥ ४ ॥ विप्रहत्यामहत्यासीन्मयितांनुदहेप्रभो ज्वरयत्याशुसादेहंवह्निःशुष्केंधनंयथा ॥ ५ ॥ नास्तिनिंदासमंपापं नास्तिक्रोधसमोरिपुः नास्तिमोहसमःपाशोनदेवंकेशवात्परम् ॥ ६ ॥ विष्णुः ॥ नास्तिक्रोधसमोमृत्युर्नास्त्यकीर्तिसमाक्षतिः नास्तिकीर्त्तिसमोधर्म्मस्तपोनाऽनशनात्परम् ॥ १ ॥ प्रत्यहंत्रिषवणंस्नानंकृत्वामांमनसिस्मरन् फलकृच्छ्रंपुराकृत्वाह्यशक्तोयदिगालव ॥ २ ॥

से जला देतीहै ५ सभ देवतां सें अधिकता विष्णुजीको है एह कहतेहैं नास्तीति निंदाके तुल्य होरकोई पूर्णफलदाता पाप नहिहै और क्रोधके समशत्रु नहि और मोहके तुल्य फाहे नहि और विष्णुतें परे देवता नहि ६ विष्णुजीकावचनहै नेति क्रोधके तुल्य होरकोई मृत्यु नहि किसे जगा (क्रोधके तुल्य होर कोई शत्रु नहि ऐसापाठहै) और अयशतें और कोई हानि नहि कही क्या अपयशहि हानि है और यशके तुल्य होर धर्म नहि और निराहारतें परे तप नहि १ अब फेरप्रसंगकोकहतेहैं प्रेति दिन दिन विषे त्रय कालस्नान करें मेरे को स्मरणकर्त्ताहोया ऐसे फल कृच्छ्रको करके पुरुष शुद्धहोताहै एहअगेसाथ संबंधहै और हेगालव जोपुरुष फलकृच्छ्रके करणे विषें सामर्थ्यतें रहितहै सोजिसको अगे करणाहै तिसको करे एहअर्थहै

लोपुरुष इसप्रत्याम्नायनूं करणेकर्के पापतें शुद्धहोताहै उोर गोकीपूजा भली प्रकारकरे धूप दीप कनैवेद्यकर्के युक्त ॥ ३ ॥ और पूजनतें पीछे प्रदक्षिणाकर्के और नमस्कारकोंकर्के श्रेष्ठ ब्राह्मण तांई गोदेवे कैसीगी है जो सहित बछेके है और दुग्धदेणे वाली और फलकृच्छ्रके वदलेकर्के फलके देणेवालीहै ॥ ४ ॥ ऐसे दानकर्के फलकृच्छ्रके संपूर्णफलकों प्राप्तहोताहै तां हे ब्राह्मणां विषे श्रेष्ठ ऐसे व्रतनूं कर तिसीक्षणमें तूं पवित्रहोवेंगा ५ ऐसेविष्णुकर्के आज्ञाकों प्राप्तहोयाहो या और प्रत्याम्नायनूं करताहोया योगीयांकोंभी दुर्लभ जो सिद्धि है तिसनूं प्राप्तहोया ॥ ६ ॥ ० अबपराक कृच्छ्रकहीदाहै तिसविषे मनुजीका वाक्यहै यतेति मनकों रोकके और प्रमादतें रहित

प्रत्याम्नायमिमंकृत्वाशुद्धोभवतिपातकात् गोपूजासाधुसंयुक्ताधूपदीपनिवे दनैः । ३ ॥ परिक्रम्यनमस्कृत्यसवत्सांपयसावृताम् योदद्याद्विप्रवर्य्यायप्र त्याम्नायफलप्रदाम् ॥ ४ ॥ सम्पूर्णफलकृच्छ्रस्यह्यखंडंलभतेनरः एवंकुरु ष्वविप्रर्षेपूतोभवसितत्क्षणात् ॥ ५ ॥ इत्याज्ञप्तस्तदातेनप्रत्याम्नायंतदा चरन् सिद्धिमाप्नोतिमहतींयोगिनामपिदुर्लभाम् ॥ ६ ॥० अथपराककृच्छ्रम् तत्रमनुः ॥ यतात्मनोऽप्रमत्तस्यद्वादशाहमभोजनम् पराकोनामकृच्छ्रोयं सर्वपापप्रणोदनः ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ द्वादशाहोपवासेनपराकःपरिकी र्तितः । देवलः । अथवक्ष्यामिकृच्छ्रस्यपराकस्यमहात्मनः सर्वदोषनिवृ त्तिःस्यात्सर्वशास्त्रानुवर्तिनः ॥ १ ॥ पराकःकृच्छ्रइत्युक्तोविष्णुनाप्रभवि ष्णुना यदाचरणमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ २ ॥

हाके जोवारां १२ दिन भोजनका त्याग करणा एह संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला पराकनाम कर्केकृच्छ्रकहाहै ॥ १ ॥ तिसविषे याज्ञवल्क्य जीकावचनहै इतिबारां १२ दिनांके उपवास व्रतकर्के पराक कृच्छ्रकहाहै ॥ अब देवलजीकावाक्यहै इसतें उपरंत पराक कृच्छ्रकों कहताहां संपूर्ण शास्त्रोंकर्के वर्तनवाला जो पुरुष है तिसके संपूर्ण पापांकी निवृत्ति होतीहै पराक व्रतकर्के १ ॥ ऐसेविष्णु जो प्रभविष्णु हैं तिनांनें पराक कृच्छ्र कहाहै जिसके करणेकरके संपूर्ण पापांतें रहितहोवाहै ॥ २ ॥

जेडेपाप इसककें दूर हुंदेहैं तिनको कहतेहैं ब्रह्मेति ब्रह्महत्यापाप और मदिराके पीणे का पाप और सुवर्णके चुराणेका पाप और गुरोंकी स्त्री विषे गमन करणेका पाप और तिनांका संसर्ग और तिनाके तुल्यपाप ॥ ३ ॥ और संकलीकरणपाप और मलिनी करण और उपपातक एह नौ ९ प्रकारकापाप कहाहै ॥ ४ ॥ तुलेति तुलादान और हिरण्यगर्भ और ब्रह्मांड और घटदान और पंचलांगलक और पृथ्वीदान ॥ ५ ॥ और विश्वचक्र और कल्पलता और सप्तसागर और चर्म धेनु महती और महाभूतघट तैसे हि एह दान ॥ ६ ॥ और कालचक्र और राशिचक्र और इसतें अनंतर विश्वचक्र और लक्षकोड तिलांकर्के हवन करणा

ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वङ्गनागमः तत्संसर्गोपिपंचैतेह्यनुपातकनामकम्
३ संकलीकरणंचैवमालिनीकरणंतथा उपपातकमित्येतन्नवधापरिकीर्त्तितम्
४ तुलाहिरण्यगर्भश्चब्रह्माण्डोपिघटस्तथा पंचलांगलकंचैवधरादानमतःपरम्
५ विश्वचक्रंकल्पलतासप्तसागरमेवच चर्मधेनुश्चमहतीमहाभूतघटस्तथा
६ कालचक्रंराशिचक्रंविश्वचक्रमनन्तरम् कोटिलक्षतिलैर्होमोद्विमुखीसुर
भिस्तथा ७ आर्द्रकृष्णाजिनंचैववेंकटेपर्वसंगमे छागादिपंचकंचवतथैवदश
धेनवः ८। तथादशमहादानान्यचलाःसप्तनामकाः रहस्यकृतपापानिब्रह्म
हत्यादिकानिच ९॥ पापानांनवविधानामितरेषांमुनीश्वराः तुलादिसंग्रहा
त्हणांपराकःकृच्छ्रनामकः ॥ १० ॥ सर्वपापहरोन्हणांदेवानांचप्रियंकरः
सर्वेष्वेतेषुकृच्छ्रेषुमहान्प्रोक्तःस्वयंभुवा ॥ ११ ॥

और प्रसूत समयविषे गौका दान ॥ ७ ॥ और कृष्णहरिणका आर्द्र चर्म और वेंकट तीर्थविषे पर्वके होयां २ बकरेतें आदिलेकरके पंच अर्थात् बकरा १ भेडा २ गौ ३ महिषी ४ घोडा ५ इनका दान और दश धेनु दान॥ ८ ॥ और सत्त ७ पर्वतदान और गुप्तपाप और ब्रह्महत्यादि पाप॥ ९ ॥ तुलाआदि दानांको जो ग्रहण कर्तेहैं तिनांके पापनूं और नौ प्रकारके जो पापहै इसतें इतर जो पापहैं तिनां संपूर्णांकों शुद्ध करणेवाला पराक कृच्छ्र नामकर्के व्रतहै ॥ १० ॥ और पुरुषांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और देवतयांकी प्रीति करणे वाला ब्रह्माजीनें संपूर्ण कृच्छ्र व्रतोंविषे एह पराककृच्छ्र व्रत श्रेष्ठ कहाहै ॥ ११ ॥

अब गौतमजीका वाक्य है प्रत्यहमिति वारां १२ दिनपर्यंत दिन दिनविषे एक छटांकपरिमाण गौके घृतमात्रकों पीकेकर्के ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै एह पराक नामक व्रतसंपूर्ण पापांके नाश करणे वाला प्रसिद्ध है ॥ १ ॥ और संपूर्ण पापांके और उपद्रवांके नाश करणे वाला और संपूर्ण स्वर्गादि लोकगतिके देणे वालाहै एह निश्चयकर्के विश्वके धारणे वाले हरि जी भगवान् सो आप कहते भये ॥ २ ॥ और स्मृतिविषेभी कहाहै दिन दिनविषे वारां १२ दिन पर्यंत एक १ छटांकी परिमाण गोघृतके पीणेकर्के ब्राह्मण संपूर्ण पापांतें शुद्धिकों प्राप्तहोताहै हे द्विज इसतें विना शुद्धि नहि ॥ ३ ॥ लौगाक्षिऋषिनेंभी कहाहै देति वारां १२ दिन एक छटांको गौकेघृतकों अग्निमे तपाकर पीवे तां पुरुषसंपूर्ण पापांतें रहितहोताहै और शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ अबप

गौत्तमः। प्रत्यहंघृतमात्रंचद्वादशाहंगवोद्भवम् पीत्वापलंद्विजःशुध्येत्पराक इतिविश्रुतः १ ॥ सर्वपापप्रशमनः सर्वोपद्रवनाशनः सर्वलोकप्रदोह्यो ह्भगवान्हरिर्विश्वधृक् ॥ २ ॥ स्मृत्यंतरे ॥ प्रत्यहंगोघृतंविप्रोद्वादशाहं पलंमुदा पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिपापेभ्योनान्यथाद्विजइति ॥ ३ ॥ लौगाक्षिणाप्युक्तम् । द्वादशाहंघृतंतप्तंपलमात्रंगवामिव पीत्वाशुद्धिमवाप्नोतिसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १ ॥ अत्रेवशब्दएवकारार्थः अयमेवपराकः ॥ अथ पराककृच्छ्प्रत्याम्नायः ॥ देवलः ॥ प्रत्याम्नायंपराकस्यवक्ष्याम्यहमनुत्तमम् सर्वपापोपशमनंसर्वपापनिकृंतनम् ॥ १ ॥ व्यासः ॥ पराकंनामयत्कृच्छ्रंतत्कर्तुंमनुजोत्तमः अशक्तस्तस्यकृच्छ्रस्य प्रत्याम्नायंसमाचरेत् ॥ १ ॥ यस्याचरणमात्रेणपराकस्यफलंलभेत् प्रत्याम्नायंगवांदद्या द्दशपंचसवत्सकम् सर्वपापविनिर्मुक्तःप्रयातिपरमंपदम् ॥ २ ॥

राककृच्छ्रका वदलाहै तिसविषे देवलऋषिका वाक्यहै प्रेति पराककृच्छ्रके उत्तमप्रत्याम्नायकों कहताहां कैसा प्रत्याम्नाय जो संपूर्णपापांके नाश करणे वाला और संपूर्ण पापांके छेदन करणे वालाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि लघुपापोंका नाश और महापापोंका एक कर्के घाटा होताहै और बहुतयोंकर्के सभकानाश होजावेगा ॥ १ ॥ अब व्यासजीकावचनहै पराकमिति पराक नाम कर्के जो कृच्छ्र है तिसके करणेविषे पुरुष असमर्थ होवे तां तिसके प्रत्याम्नायनूं करे जिसके करणे कर्के पराक कृच्छ्रके फलनूं प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ सो कहतेहां ॥ प्रत्याम्नायमिति पंदरां १५ गौयां सहित बछयांके दान करे इस बदले कर्के संपूर्ण पापांतें रहित होताहै और परम पदकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

क्या करके महापापांके समूहांको तैसें उपपातकांको शीघ्रहि नाशकरके शुद्धिको देता है जैसें अग्नि रूईकेसमूहको दाह करताहै ॥ ३ ॥ अब मरीचिजीका वाक्यहै प्रेति पराकव्रतका जो बदलाहै पंदरां १५ गौयां तिनांका ब्राह्मण आदि वर्ण दान करे संपूर्ण पापांकी शुद्धि वास्ते और संपूर्ण कल्याणकी प्राप्तिवास्ते ॥ १ ॥ हेराजन् महापापांकरके युक्तभी जो पुरुष है सो पराकके बदलें करके पापांतें रहित होताहै ॥ २ ॥ और संपूर्ण कृच्छ्र व्रतांके फलको प्राप्त होके परम पद जो विष्णुका लोक तिसनूं प्राप्तहोताहै एह तेरेतांई मैने पराक व्रतकी विधि कहीहै ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तहि अर्थको स्पष्टकरतेहैं पराकेति पराककृच्छ्रव्रतके करणे विषे जो असमर्थ है तिस पुरुषके पाप दूरकरणे वास्ते प्रत्याम्नाय कहाहै ब्राह्मणांके तांई भिन्न २ पंदरां १५ गौयांके देणेकरके शुद्धि को प्राप्तहोताहै एहि अर्थहै ॥ अपरार्कविषे चतुर्विंशति मतविषे कहाहै प्रेति पराककृच्छ्रव्रत और

महापातकजालानिह्युपपातकमेवच तत्सर्वंनाशयित्वाशुतूलराशिमिवानलः ३ मरीचिः प्रत्याम्नायंपराकस्यदशपंचगवांद्विजः दद्यात्पापविशुद्ध्यर्थंसर्वश्रेयोभिवृद्धये १ महापातकयुक्तोपिसर्वपापैःप्रमुच्यते प्रत्याम्नायेनकृच्छ्रस्यपराकस्यजनाधिप २ सर्वकृच्छ्रफलंलब्ध्वाप्रयातिपरमंपदम् इतितेहिसमाख्यातःपाराकोविधिरुत्तमः ३ पराककृच्छ्राचरणासमर्थस्य प्रत्याम्नायंपंचदशगवांविप्रेभ्यःपृथग्दत्त्वाशुद्ध्यतीतिवाक्यार्थः ॥ अपरार्के चतुर्विंशतिमते ॥ पराकतप्तातिकृच्छ्रस्थानेकृच्छ्रत्रयंचरेत् सांतपनस्यवाप्यर्द्धमशक्तौव्रतमाचरेत् १ स्मृत्यर्थसारेतु तप्तकृच्छ्रेषट्पराकेपंचेति। असौप्रत्याम्नायोमहत्तप्तकृच्छ्रे।तप्तकृच्छ्रेतु अपरार्के मार्कंडेयः प्राजापत्यसमाधेनुस्तद्द्वयंहिपराकके। विशेषमाहसएव पराकेतुसुवर्णंस्याद्धेमशृंगीतथैवचेति॥हेमशृंगीग्रहणेन कांस्यदोहाद्युपस्करवतींधेनुं लक्षयति ॥

तप्तकृच्छ्र और अतिकृच्छ्र इनांविषे एक एक व्रतका त्रयत्रय प्राजापत्य व्रत बदला कहाहै जेकर इनांतीनां विषे भी असमर्थहोवे तां सांतपन व्रतका जो आदकाअर्द्धहै तिसको करे ॥ १ जो स्मृत्यर्थसारविषे फेर कहाहै कि तप्तकृच्छ्र व्रतविषे छे६ प्राजापत्यव्रतबदलाकरे और पराकव्रतविषे पंच५ प्राजापत्यबदला करे सो एहप्रत्याम्नायमहातप्तकृच्छ्र विषे जानणा ॥ तप्तकृच्छ्रविषे अपरार्कविषे मार्कंडेयजीका वचनहै प्राजापत्यके तुल्य फलदेणवाली प्रसूता गौ १ कहीहै सो धेनु पराक व्रत विषे दोकहीयांहैं ॥ इस विषे मार्कंडेयहि विशेष कहताहै पराकव्रत विषे सुवर्ण दानकरे तैसे सुवर्णके शृंग और रूप्पेके खुर और कांस्यपात्रतें आदलेके समग्रीकरके युक्त धेनु का दान करे ॥

इसतें अनंतर मासोपवास कृच्छ्रकों जावाल ऋषि कहताहै अनेति एकमासपर्यंत उपवास व्रत महापापांके नाशकरणेवाला कहाहै ॥ अब इसकाप्रत्याम्नायकहतेहां बारां १२ दिनके उपवासकर्के युक्त पराक व्रतहै अथवा दिन दिन प्रति सठ ६० ब्राह्मणकहणे तिसकारणतें मासकेउपवास व्रत विषे भी फलकी प्राप्तिवास्ते बदला सठ ६० ब्राह्मणहि कहने एह बस ऐश्वर्य युक्तपुरुष विषे जानणा ॥ और निर्धनपुरुष तीस ३० ब्रह्मणांके तांई भोजन देवे दिनविषें ॥ इसतें उपरंत यावककृच्छ्र व्रतकहाहै तिसविषें शंखजीकावाक्यहै गवित्ति गौकेंगोयेतें यवांकों युगके एक मासपर्यं जो भक्षणहै सो संपूर्णपापांके दूरकरणेवास्ते यावककृच्छ्र किहाहै १ देवलजीका वाक्यहै

अथ मासोपवासकृच्छ्रम् ॥ जावालः । अनशनंमासमेकंतुमहापातकनाशन मिति अस्यप्रत्याम्नायोद्वादशाहोपवासरूपपराकः षष्टिमितब्राह्मणभोजनं प्रतिदिनंवाविहितम् ॥ तथात्रापि षष्टि ६० मिताब्राह्मणामासंयावत् प्रतिदिनंमासोपवासफलकामनयाभोज्याः इदंचधान्यसमृद्धिपरमितरस्यार्द्धादि व्यवस्थयायोज्यम् ॥ अथयावककृच्छ्रम् तत्रशंखः । गोपुरीषाद्यवानश्नन्मासमेकंसमाहितःव्रतंतुयावकंकुर्य्यात्सर्वपापापनुत्तये १ देवलः । अथातः संप्रवक्ष्यामिकृच्छ्रंयावकसंज्ञकम् यस्याचरणमात्रेणमुच्यतेब्रह्महत्यया १ ॥ शृणुध्वंमुनयःसर्वेयावकंकृच्छ्रमीरितम् विषदानेचयत्पापंयत्पापंगृहदाहके २ शस्त्रधारेणयत्पापंयत्पापंविप्रनाशनात् विधवाव्रतलोपेचयतिसंन्यासिनोरपि ३ गृहस्थस्यसदाचारत्यागेयत्पापमुच्यते प्रकृतेनापियत्पापंतेषां विस्मयतस्तथा ॥ ४ ॥

अर्थेनि यावकनामकर्के जो कृच्छ्रव्रतहै तिसनूं कहतेहां । जिसके करणेकर्के पुरुष ब्रह्महत्यापापतें रहितहोनाहै ॥ १ ॥ अवमरीचिका वचनहै श्रिति हेसंपूर्णमुनीश्वरो श्रवणकरो मैंनें यावककृच्छ्र नामव्रतकहीदाहै विषकेदेणेकर्के जोपापहै और गृहविषें अग्निलाणेकर्के जोपापहै ॥ २ ॥ और शस्त्रके धारणेनें जो पापहै और ब्राह्मणके मारणेंतें जो पापहै और विधवा स्त्री विषे गमन करणेका जो पापहै और ब्रह्मचारीके और संन्यासीके व्रतके दूरकरणेविषें जोपापहै ॥ ३ ॥ और गृहस्थीकों कर्मांके त्यागविषें जो पापहै और स्वभावकर्के जो पापहै और तिनां विधवा स्त्री आदिकांकों भय देणेका जो पापहै ॥ ४ ॥

और अपणेमानवास्ते ब्राह्मणतांईं दानदेकर जो कहणाहै मैंनेंदानकीया तिसकहणेतें ओर ब्राह्मण के अवमानतें जोपाप और ब्राह्मणकी निंदाकरणे विषे और माताका निरादरकरणेतें जो पाप ॥ ५ ॥ और धेनुकी निंदाविषे औरशिवांकी निंदाविषें और विष्णुकी निंदाविषे और यज्ञांकी निंदाविषे जो पाप ॥ ६ ॥ और विना बुलाय परगृहभोजनविषे और अनध्याय दिनांविषें पढ नेका जो पाप है और दुष्टपुरुषके साथ संगविकरणेतें जो पाप है और धनके मदतें जो पाप है ७ ॥ और दुग्धकर्के स्नानकरणेतें जो पापहै और स्त्रीके निरपराध त्यागणें कर्के जो पापहै यज्ञके त्यागविषे और भांडयांके वेचणेविषे जो पापहै ॥ ८ ॥ और विधवानें जो केशातें रहितस्नानक

दानस्यकीर्त्तनात्पापंयथाविप्रावमानतः यत्पापंविप्रानिंदायांयत्पापंमातृभ र्त्सनात् ॥ ५ ॥ यत्पापंधेनुनिंदायांयत्पापंशिवभर्त्सने यत्पापंविष्णुनिंदा यांयत्पापंक्रतुकुत्सने॥६ ॥ अमानभोजनेपापमनध्यायेपुपाठने दुःसंगते श्चयत्पापंयत्पापंधनगर्वतः ॥ ७ ॥ यत्पापंपयसास्नानेयत्पापंदारमोचने यत्पापंक्रतुसंत्यागेयत्पापंभांडविक्रये ॥ ८ ॥ सकेशस्नानरहिता विधवा कांस्यभोजना पुनर्भुक्तासताम्बूलासदानिन्दापरायणा ॥ ९॥ सदाभ्रमति यःनारीपतिद्वेषपरायणा पुत्रःपितॄणांविद्वेषीसदाविप्रापराधकृत् ॥ १० ॥ कुचैलः सर्वदातिष्ठन्यथातत्क्षालनादिसः वहुत्राशीनिष्ठुरंवक्ताविप्रदाने षुविघ्नकृत् ॥ ११ ॥

रणाहै और तिसकों जो कांस्यपात्रविषे भोजन करणेका पापहै और विधवाकों दूसरी वार भो जन करणे विषे और तांबूलके भक्षण करणे विषे जो पापहै और जो स्त्री सदानिंदाविषे युक्तहै तिसकों जो पापहै॥९॥और जो सदाघरघरविषे भ्रमतीहै और पतिविषे द्वेषकर्के युक्तहै तिसकों जो पाप और पुत्रकों पिताके साथविरोध करणेका जो पापहै और ब्राह्मणविषे अपराधकरणे काजोपापहै ॥ १० ॥ और सर्वदामलिन वस्त्रधारणका जो पाप और हस्छोतरहृवस्त्रके अप्रक्षाल णेका जो पाप और वहुत जगा भोजन खाणेविषे जो पाप और जो कठोरवचनकों कहताहै तिसका जो पाप और ब्राह्मणांके तांईं दान देणे विषे विघ्न करणे वालेकों जो पापहै ११ ॥

इनां संपूर्णपापांके दूरकरणे वास्ते यावक कृच्छ्रव्रतकों करे ॥ पराशरजीका वचनहै सर्वेति संपूर्ण पापांके दूर करणे वास्ते यावक कृच्छ्र व्रतकहाहै जिसके करणे करके ब्राह्मण शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इसकी विधि कहतेहैं अव्रेति जिनांके भक्षण करणेतें व्रत न दूर होवे असयां यवांकों अर्थात् गोमयतें निकालके यवांकों आप ग्रहण करताहोई जो अग्नि तिस विषे छे गुणा अधिक जल करके पकाके व्रती जो पुरुषहै शुद्धिकों स्नान पूर्वक करे तिस पके होये यवागूकों पलाशपत्रांके दूने विषे रखकर ॥ २ ॥ और यव न होण तां व्रीहि ग्रहण करे वा श्यामाक क्या सवांक ग्रहणकरे इसके मानतें दिन दिनविषे प्रथम ब्राह्मणके ताईं देकर विष्णुनांईं सो अन्नअर्पण करे ॥ ३ ॥ और नित्यकर्मकों करकेसूर्यके अस्त

एतेषांपावनार्थायवावकंकृच्छ्रमाचरेत् ॥ पराशरः ॥ सर्वपापविशुद्ध्यर्थं यावकंकृच्छ्रमीरितम् तदाचरणमात्रेण विप्रोभवतिशुद्धिमान् ॥ १ ॥ अव्रतघ्नयवान्पक्कास्वगृह्याग्नौव्रतीशुचिः तद्यवागूंसमाधायब्रह्मपत्रपुटं वशी ॥ २ ॥ यवाभावेव्रीहयोवाश्यामाकाह्यस्यमानतः ॥ तदन्नंप्रत्यहं दत्त्वायवागूंविष्णवेऽर्पयेत् ॥ नित्यकर्मादिकंकृत्वायावदस्तंदायते रविः ॥ ३ ॥ तावत्पर्यंतंपूर्वंविभूतिं विश्वरूपादिकं पठन्। स्थित्वा नारायणमनुस्मरन् यवागूं पिबेत् ॥ तदाहगौतमः ॥ ब्रह्मपत्रपुटेराजन्धृत्वासायमतंद्रितः तावतामनसाविष्णुंस्मरन्नंदायतेरविः। १। यवागूं विष्णवेदत्त्वापश्चात्पीत्वास्वयंमुदा पूर्ववत्क्षालनंकृत्वापादपाण्योर्यथाक्रमम् ॥ २ द्विराचम्यशुचिर्भूत्वास्वपेन्नारायणाग्रतः अजस्रंधारयेदग्निंयावत्कृच्छ्रंसमाप्यते ॥ ३ ॥ परेद्युरेवंकुर्वीतद्वादशाहोभिरीरितम् तदंतेगौःप्रदातव्यापंचगव्यंपिबेत्तदा ४ ॥ एवंकृत्वाद्विजोयस्तुसद्यः पापात्प्रमुच्यते

पर्यंत विभूति विश्वरूपादिका पाठकरे और नारायणका स्मरणकरपीछे तिसयवागूका पानकरे ॥ तिसी नूं गौतम ऋषि कहताहै हेराजन् आलसतें रहित होके सायं काल विषे भक्षण करणे योग्य जो यवागू तिसकों पलाशपत्रांके दूनेविषे रखके मनकरके विष्णुकास्मरणकरे सूर्यके अस्ततक १ ॥ फेर विष्णुनांईदेके आप पानकरे हर्षकरके पीछेपूर्वकी न्यांईहस्थ और पैरोंकोंक्रमसें शुद्धकरके २ ॥ दो वार आचमन करे और नारायणके आगे शयन करे और निरंतर अग्निका धारण करे जितनापर्यंत कृच्छ्रव्रत नहि समाप्त होवे ॥ ३ ॥ तितना कालकरताहै ऐसे संपूर्ण विधि दूसरे दिनसें लेके बारांदिवतककरके अंतविषे पंचगव्यकों पीवे और गौ दानकरे ऐसे करणे तें तात्काल द्विजपापतें रहितहोताहै ॥ ४ ॥

इसतें उपरंत यावक कृच्छ्रका वदलाहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै कृच्छ्रस्यति इसयावककृच्छ्रके प्रत्याम्नायनूं श्रवणकर जिसके एकवार करणेकर्के ब्राह्मणादि तात्कालंहिपापतें रहितहोंताहै । १ । योगीश्वरका वाक्यहै प्रेति यावककृच्छ्रके वदलेनूं कहतेहां जो वदला संपूर्णपापांके नाश करणे वाला श्रौर पुरुषांकों संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै ॥ १ ॥ यावक कृच्छ्रकावदलेमें दश १० गौंयांसहित वछयांके दुग्धदेणे वालीयां श्रौर इछे स्वभाववालीयां वस्त्रभूषणांकर्के संयुक्त ॥ २ ॥ भिन्न भिन्न ब्राह्मणांके तांइं देणे योग्यहैं जो ब्राह्मण जीविकासें रहितहैं ॥ पीछे देहकी शुद्धि वास्ते पंचगव्यकों पीवे एह वदला यावक कृच्छ्रके फलदेणे वाला सेवणे योग्यहै

श्रथयावककृच्छ्रप्रत्याम्नायः॥ तत्रदेवलः ॥ कृच्छ्रस्ययावकस्यास्यप्रत्याम्नायमिमंशृणु सकृत्कृत्वाद्विजोयस्तुसद्यः पापात्प्रमुच्यते १ योगीश्वरः प्रत्याम्नायंप्रवक्ष्यामियावकस्यमहात्मनः सर्वपापप्रशमनं सर्वकृच्छ्रफलंनृणाम् १ ॥ गावोदशप्रदातव्याः प्रत्याम्नायेप्रकल्पिताः सवत्सादुग्धसंयुक्ताः सुशीलास्समलंकृताः २ विप्रेभ्यःप्रतिदातव्या श्रवृत्तिभ्यःपृथक्पृथक् पंचगव्यंततःपश्चात्पिवेद्देहविशुद्धये ३ एतत्कृच्छ्रस्यफलदंयावकस्यसुखाप्तये ॥ गौतमः ॥ यावकस्यमहापापहारिणःफलदायकम् सर्वपापोपशमनंमहत्पुण्यप्रदायकम् ॥ १ ॥ सम्पूर्णवस्त्राभरणखुरशृंगोपशोभिताः सवत्सायुवतीःसाध्वीर्गवांसंख्यादशस्मृताः ॥ २ ॥ पयस्विनीर्द्विजाग्र्येभ्यः प्रदातव्याःफलाप्तये पंचगव्यंपिवेत्पश्चाच्छुद्धोभवतिमानवः ॥ ३ ॥

सुखकी प्राप्तिवास्ते ॥ १ ॥ गौतमजी कावाक्य है येति यावककृच्छ्र जो व्रतमहापापांके नाश करणे वाला तिसका वदला फलके देणे वाला श्रौर संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला श्रौर महत्पुण्यकेदेणे वालाहै ॥ १ ॥ तिसमें संपूर्ण वस्त्र श्रौर भूषण श्रौर रुप्येके खुर श्रौर सुवर्णके शृंगतिनां कर्के शोभायमान सहित वछयांके श्रौर जुवाण सुशीला दश गौयां १० देणे वास्ते कथनकीतयांहै ॥ २ ॥ दुग्धदेणेवालीयां फलकी प्राप्ति वास्ते श्रेष्ट ब्राह्मणांकेतांइं देवे श्रौर पीछे पंचगव्यका पानकरे तां मनुष्य शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥

जो पुरुष इस प्रकार करताहै सोयावकव्रतके फलकों प्राप्त होके शुद्धहोताहै ॥ ४ ॥ अवसौम्यकृच्छ्र कहतेहैं तिसविषे याज्ञवल्क्यकावचनहै पिण्येति प्रथम दिनाविषे तिलांकों कुटकरभक्षण करे और दूसरे दिन चावलांकी पिछका पान करे और तीसरे दिन तक्र क्या छाहका पानकरे और चौथे दिन केवलजलका पानकरे और पांचमे ५ दिन यवांकेसतुयांकापानकरे और एक रात्रका उपवास करे एह छे दिनका सौम्यकृच्छ्रव्रत कहाहै । १ । इहां द्रव्यका परिमाण प्राणांके निर्वाह मात्रजानणा ॥ जावालऋषिनें तो चार दिनांका सौम्यकृच्छ्र कहाहै एक दिन विषे तिलांकों कुटकर भक्षण करे और दूसरे दिन सक्तु पान करे और तीसरे दिन छाहका पानकरे

एवंकृतेनरोयस्तुयावकस्यस्वरूपिणीम् गवांसंख्यांद्विजाग्र्यायदत्त्वाफलमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ अथसौम्यकृच्छ्रम् ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥ पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तूनांप्रतिवासरम् एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्रःसौम्योयमुच्यते १ ॥ द्रव्यपरिमाणंतुप्राणयात्रामात्रनिबन्धनमधिगंतव्यम् ॥ जावालेनतुचतुरहव्यापीसौम्यकृच्छ्रउक्तः । पिण्याकंसक्तवस्तक्रंचतुर्थेहन्यभोजनम् वासोवैदक्षिणांदद्यात्सौम्योयंकृच्छ्रउच्यते ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे ॥ वारुणकृच्छ्रउक्तः ॥ मासंपरिमितसक्तूदकपाने वारुणकृच्छ्रः ॥ श्रीकृच्छ्रस्तु ॥ त्र्यहंपिवेत्तुगोमूत्रंत्र्यहंवैगोमयंपिबेत् त्र्यहंयावकमेषश्रीकृच्छ्रःपरमपावनः ॥ १ ॥ अथ यावकृच्छ्रः ॥ यवानांपयःसाधितानां सप्तरात्रं पक्षंमासंवा प्राशने यावकृच्छ्रः ॥

और चौथे दिन विषे उपवासकरे और वस्त्र दक्षिणा देवे एह सौम्यकृच्छ्र कहाहै ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरविषे वारुण कृच्छ्रव्रत कहाहि एकमासपर्यंत जलकर्के युक्त जो सत्तु तिनांके पान करणेविषे वारुण कृच्छ्रव्रतहोताहै । अब श्रीकृच्छ्रकहीदाहै त्र्यहमिति त्रय दिन गोमूत्रपीवे और त्रय दिन गौका गोयापानकरे और त्रय दिन जवांका काडा पीवे एह श्रीकृच्छ्रव्रत कहाहै ॥ १ ॥ अबयावकृच्छ्र कहीदाहै जलकर्के सिद्धकीते जो यव तिनांका सत दिन पानकरे वा पंदरांदिन वा एक मास भक्षण करण विषे यावकृच्छ्र कहाहै ॥ एह पूर्वोक्त यावक कृच्छ्रतें विलक्षण होणे कर्के उसते भिन्नहै

अब जलकृच्छ्रहै ॥ भोजनकों त्यागके जल विषे स्थितहोवे दिन रात्रा तां जलकृच्छ्र होताहै ॥ अब वज्रकृच्छ्र है ॥ गोमूत्र कर्के युक्त जो यव तिनांकों एक दिन भक्षण करे तां वज्रकृच्छ्र होताहै इसजगाभी कालकानियम अहोरात्रहि जानणा और पापपुरुषको वज्रकी न्याईहै इस कर्के वज्रकृच्छ्रनामहै ❀ अब तुला पुरुष नाम कर्के कृच्छ्रकहीदाहै तिस विषे याज्ञवल्क्यजी का वचन है एषामिति तिल कुटे होये और चावलांकी पिछ और छाह और जल और सत्तुयांकों क्रमकर्के एक एककों त्रय त्रय दिन भक्षण करे तां पंदरां १५दिनांकर्के तुलापुरुषनाम कृच्छ्रव्रत होताहै ॥ १ ॥ इसतुलापुरुषका पंदरा दिनांकर्के विधान होणेतें उपवास नहि कहा ॥ यमजीनें इकीयां दिनांका तुलापुरुष व्रत कहाहै अचाममिति चावलांकी पिछ और तिलकुटेहोये

अनाशनो जलस्थो होरात्रं क्षिपेदिति जलकृच्छ्रः ॥ वज्रकृच्छ्रस्तु गोमूत्रयावकपानेएकोवज्राख्यः कृच्छ्रः ❀ अथतुलापुरुषाख्यकृच्छ्रः ॥ तत्रयाज्ञवल्क्यः ॥ एषांत्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्य यथाक्रमम् तुलापुरुषइत्येषज्ञेयः पंचदशाहकः १ ॥ एषांपिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तूनामित्यर्थः ॥ १ ॥ अत्रपंचदशाहकत्वविधानादुपवासस्यनिवृत्तिः । यमेनत्वेकविंशतिरात्रिकस्तुलापुरुषउक्तः ॥ आचाममथपिण्याकंतक्रंचोदकसक्तुकान् त्र्यहंत्र्यहंप्रयुंजानोवायुभक्ष्यस्त्र्यहंद्वयम् एकविंशतिरात्रस्तुतुलापुरुषउच्यते ॥ १ ॥ ❀ अथकायकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ प्राजापत्यंतप्तकृच्छ्रंपराकंयावकंतथा ततःसांतपनंकृच्छ्रं महासांतपनंतथा ॥ १ ॥ कायकृच्छ्रंतथाप्रोक्तमतिकृच्छ्रंविशुद्धिदम् ॥ औदुम्बरंचपर्णंचफलकृच्छ्रमतःपरम् ॥ २ ॥

और छाह और जल और सतु इनांकों क्रम कर्के त्रय त्रय दिन भक्षण करे और छे ६ दिन वायु भक्षण करे ऐसे इकीस २१ दिनांका तुलापुरुष कहा है इसका नामभी तुलापुरुषदानके तुल्यफल देणे कर्के है तिसके तुल्यहै ॥ १ ॥ ❀ इसतें उपरंत कायकृच्छ्रहै तिस विषे देवल जीका वाक्यहै प्रेति प्राजापत्यकृच्छ्र १ और तप्त कृच्छ्र २ पराककृच्छ्र ३ यावककृच्छ्र ४ सांतपनकृच्छ्र ५ महासांतपन ६ कायकृच्छ्र ७ अतिकृच्छ्र विशेष कर्के शुद्धिके देणे वालाहै और ८ औदुम्बरकृच्छ्र ९ पर्णकृच्छ्र १० और इसके अगे फलकृच्छ्र ॥ ११ ॥ २

माहेश्वरकृच्छ्र १२ ब्रह्मकृच्छ्र १३ धान्यकृच्छ्र १४ स्वर्णमयकृच्छ्र १५ पिच्छे कृच्छ्र ब्रत तेरां १३ कथन कीतेहैं अब लिंगपुराण विषे कथन कीते जो अतिकृच्छ्र और काय कृच्छ्र मिला करके पंदरां कृच्छ्र होतेहैं संपूर्णलोकांके उपकारवास्ते लिखेहैं ॥ कायकृच्छ्र और अतिकृच्छ्रका लक्षण जो लिंगपुराण विषे कहाहै तिसनूं कहतेहां कायेति कायकृच्छ्रनूं कहतेहां जो महापापांकों शुद्धकरणे वास्ते और उपपातकांकी शुद्धिकरणे वास्ते मुनियानें कथन कीताहै १ ॥अब जो पाप कायकृच्छ्र करकें दूर होतेहैं तिनको लिखतेहैं भविष्यत्पुराण विषे ॥ कायकृच्छ्रकरकें दूरहोणवाले पाप कहेहैं तुलेति एक हजारका जो दान कर्ताहै और हजार

एवंमाहेश्वरंचैवब्रह्मकृच्छ्रंतथैवच धान्यंस्वर्णमयंचैवदशपंचैवकीर्त्तितम् ३
पूर्वंत्रयोदशकृच्छ्राणीत्युक्तम् ।इदानींलिंगपुराणोक्तत्वादतिकृच्छ्रकायकृच्छ्राभ्यांसहपंचदशभवंतिसर्वेषामुपकारकत्वाल्लिखितम् ॥ कायकृच्छ्रातिकृच्छ्रलक्षणंलिंगपुराणोक्तंविशिनष्टि ॥ कायकृच्छ्रंप्रवक्ष्यामिमहापातकशुद्धये उपपातकशुद्ध्यर्थंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥ १ ॥ भविष्यत्पुराणे ॥ तुलाधेनुसहस्राणिअष्टाब्दानिद्विजोत्तम दाताप्रतिग्रहीताचअन्योन्यंनावलोकयेत् ॥ १ । तुलाधेनुसहस्रदानानंतरमष्टवर्षपर्य्यन्तं दातृप्रतिग्रहीत्रोरवलोकनादिनिषिद्धमित्यर्थः ॥ यदिदैवाद्यत्प्राप्तंतीर्थेषुचमहोत्सवे तदातद्दोषशांत्यर्थंकायकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ २ ॥ द्वितीयोजपकृत्सूत्तःसहस्रंविधिपूर्वकम् द्वितीयःप्रतिग्रहीता उभयोर्दानयोराजातथाब्रह्मसदस्ययोः ॥ ३ ॥
चत्वार्य्येववहिवर्षाणितन्मुखंनावलोकयेत् ।

धेनुका जो दान कर्ताहै और तिनांदानांकों जो ग्रहण कर्ताहै इसमे दाता और प्रति ग्रहीताकों अठ वर्ष ८ पर्यंत आपसमें देखणका निषेध है क्या आपस विषे दर्शन न करें ॥ १ ॥ जेकर तीर्थां विषे फेर महोत्सव विषे दैवकरकें इनां दूवोंकाका मिलाप होवे तां तिसदोषकी शांतिवास्ते काय कृच्छ्र व्रतकों करे दाताकों एह प्रायश्चित्तहै ॥ २ ॥ और दानके ग्रहण करणे वाला विधि पूर्वक एक हजार १००० गायत्रीके जप करकें शुद्ध होवाहै तुलादान हजार और धेनुदान हजार इन दोनों दानों विषे राजा ब्रह्मा और सदस्यके मुखकों चारवर्ष पर्यंत न देखे ॥ ३ ॥

ब्रह्म और सदस्यका अर्थ शब्द कल्प द्रुम विषे कहाहै एकइति एक कर्मविषे नियुक्त होताहै और दूसरा कर्मका धारक होताहै और तीसरा अर्पणको कर्त्ताहै और चौथापुरुष कर्मको कर्त्ताहै ॥ १ ॥ जोकर्मविषे निरंतर युक्तहै तिसका नाम आचार्य और सोहि पुरुष ब्रह्मांग जो होम कर्महै तिस विषे युक्त होवे सो ब्रह्मा कहीदाहै और सोहि ब्रह्माआप हवन करे तिसका नाम होताहै और जो (विधिके दखाणे वालाहै तिसका नाम सदस्य कहाहै इसअमरकोशके वाक्यतें) कदाचित् राजा ब्रह्मसदस्यके मुखको देखे तां तिसको पापदूरकरणवास्ते कायकृच्छ्रव्रतहै ब्रह्मा और सदस्य को एक हजार१०००गायत्रीका जप शुद्धिवास्ते कहाहै ॥ ऐसे न करे तां दोषनूं बृहस्पति जी

ब्रह्मसदस्ययोःसंज्ञा शब्दकल्पद्रुमे एकःकर्मनियुक्तःस्याद् द्वितीयस्तत्र धारकः तृतीयःप्रणएकंकुर्य्यात्ततःकर्मसमाचरेत् १ कर्मनियुक्तआचार्यः सच ब्रह्मांगके होमकर्मणिब्रह्मा स्वयंहोमकरोहोतापीत्यादि सदस्याविधि दर्शिनइत्यमरात्सदस्योविधिदर्शीवोध्यस्तत्परिहाराय दातुः कायकृच्छ्रमि तरयोर्ब्रह्मसदस्ययोश्चसहस्त्रगायत्रीजपः। अन्यथादोषमाहबृहस्पतिः। दातुःप्रतिग्रहीतुश्चकायकृच्छ्रोजपोमहान् अन्योन्यालोकनेनोचेत्तद्दानंनि ष्फलंभवेत् १ महान्सचसहस्त्रावच्छिन्नोनोचेत् तन्निष्क्रियमकृत्वाचेदित्य र्थः॥ सर्वमहादानप्रतिग्रहेषुदातृप्रतिग्रहीत्रोःब्रह्मसदस्ययोश्चैवमुक्तं प्राय श्चित्तंसर्वत्र वेदितव्यम् लांगलेपंचसंज्ञेचविश्वचक्रेमहत्तरे सप्ताब्दंचत थाराजातन्मुखंनावलोकयेत् ॥ २ ॥

कहतेहैं॥ दातुरिति दाता और प्रतिग्रहीता आपसविषे देखण तो दाता कायकृच्छ्रव्रत न करे और प्रतिग्रहीतामहान् क्या एकहजार गायत्रीका जप न करे तां सोदान निष्फल होताहै १ तिसको शुद्धिको जेकर नकरे संपूर्ण महादान प्रतिग्रहों विषे दाता और प्रतिग्रहीताको और ब्रह्मा और सदस्यको प्रायश्चित्त जैसे कहाहै सो संपूर्ण स्थानांविषे जानणेयोग्यहै ॥ और पंच लांगल दान विषे और विश्वचक्र महा दानविषे राजा तिनांदानांके ग्रहण करण वालयां पुरुषांके मुखनूं सत्त ७ वर्ष न देखे २ ॥

सप्तेति सप्तसागर दानों विषें और चर्मधेनुके प्रतिग्रह विषें और महाभूत घट दान विषें और तु
ला दानविषें कहे जो सप्त प्रतिग्रह तिनां दानां विषें आचार्य और ब्रह्मा क्याहोना और विधि
के दस्खाणे वाला इनांके मुखकों राजा नदेखे कदाचित् देखेता पूर्वकी न्याईं कायकृच्छ्र आ,
दिकों करे तांशुद्धहोंताहे ॥ ३ ॥ और हिरण्य गर्भ दानविषें और ब्रह्मांड दानविषे दाता जेकर
आपसविषें मुखदेखे तां दानके फलको नहि प्राप्तहोता इसजगाभी प्रायश्चित्त आचार्य और
ब्रह्मासदस्यको पूर्वकी न्याईंहे ॥ ४ ॥ और सम्यक् कल्पवृक्षके दानविषे और तैसे कल्पलतादान
विषे राजा छे६वर्षतक ब्राह्मणके मुखको नदेखे और ब्राह्मण राजाकों नदेखे १ कदाचित् आप
सविषे देखें तां कायकृच्छ्र और गायत्रीका जपकरें तिसविषे संख्या क्रमकर्के जानणे योग्यहै

सप्तसागरदानेषुचर्मधेनोःप्रतिग्रहे महाभूतघटेचैवतुलायांनावलोकयेत्
३ ॥ उक्तेषुसप्तप्रतिग्रहेषु तदाचार्य्यब्रह्मसदस्यानां प्राग्वत्कायकृच्छ्रादिकं
वेदितव्यम् ॥ हिरण्यगर्भेब्रह्माण्डेदातायदिहिपूर्ववत् अन्योन्यालो
कनेराजन्नदानफलमश्नुते ॥ ४ ॥ आचार्य्यब्रह्मसदस्यानांपूर्ववत् ॥ सं
कल्पपादपादानेतथाकल्पलताग्रहे ॥ षडब्दंतन्मुखंराजाविप्रोवानावलो
कयेत् ॥ ५ ॥ कायकृच्छ्रंगायत्रीजपंच तत्रसंख्याक्रमेणवेदितव्यम् ॥ हि
रण्यधेनुदानेचहिरण्याश्वप्रतिग्रहे ॥ पूर्ववत्सप्तसंख्याब्दमन्योन्यंनावलो
कयेत् ॥ ६ ॥ कृच्छ्रादिकंपूर्ववत् ॥ हिरण्याश्वरथेचैवहेमहस्तिरथेतथा
धरादानेकालपुरुषेकालचक्रेतथैवच ॥ ७ ॥ तिलधेनौराशिचक्रेपंचाब्दंना
वलोकयेत् यदिदैवात्समालोकोह्यतिकृच्छ्रंचरेद्व्रती ॥ ८ ॥

॥ ५ ॥ अर्थात् राजाकायकृच्छ्रकरे और ब्राह्मणजप करे और सुवर्ण धेनुके दान विषे और
सुवर्णके अश्व दानविषे पूर्वकी न्याईं सत्त ७ वर्षतक आपस विषे न देखें इसमेभी जेकर
देखे तो कृच्छ्रादि व्रतपूर्वकी न्याईं जानणा ॥ ६ ॥ सुवर्णके अश्व कर्के युक्त जो रथ है
तिस विषें और सुवर्णके हस्ति कर्के युक्त जो रथ है तिस दान विषें और पृथ्वी दान विषें
और काल पुरुष दान विषे और कालचक्र दान विषे ॥ ७ ॥ तैसें और तिल धेनु दानविषें
और राशि चक्र दानाविषे दाता और प्रतिग्रहीता आपस विषे पंच वर्ष पर्यंत नदेखें जेकर
देवकर्के आपस विषें देखणतां दाता अतिकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ ८ ॥

पुनरिति ब्राह्मणपटगर्भ विधानते फेर संस्कारके करणेतें शुद्धिको प्राप्तहोताहै ऐसे न करे तां दो षकों प्राप्तहोताहै और दाताका दान निष्फलहोताहै ९ और कहतेहैं कोटीति कोटि होमविषे और लक्ष होमविषे और पाप पुरुषके प्रतिग्रहविषे दाता आचार्यके मुखको न देखें १० जेकर दैवतें दर्शनकरे तिसविषेभी दाताकों अतिकृच्छ्रव्रतकहाहै और इतर क्या आचार्यआदिकांकों फेर संस्कार शुद्धिके निमित्त कहाहै इसमें वाशब्दसें पूर्वोक्त ५ वर्ष तक निषेध जानना ॥ श्वेत अश्व दानकों जो ग्रहण कर्त्ताहै और मृतपुरुषके निमित्त जो शय्या दान तिसको जो ग्रहण कर्त्ताहै और हाथि दानको जो ग्रहण कर्त्ताहै तिसके मुखकों त्रय ३ वर्ष पर्यंत दाता न देखे ॥ ११ ॥ और जेकर दैवतें तीर्थआदिविषे देखे तां दाता अति कृच्छ्र व्रतकरे और ब्राह्मण पटगर्भ विधितें संस्कार करणेते शुद्धिको प्राप्तहोताहै ॥ १२ ॥ और

पुनस्संस्कारभृद्विप्रःपटगर्भविधानतः अन्यथादोषमाप्नोतिदाताविफलम श्नुते ॥ ९ ॥ कोटिहोमेलक्षहोमेपापपुरुषप्रतिग्रहे आचार्य्यस्यमुखंदातादै वाद्वानावलोकयेत् ॥ १० ॥ तत्राप्यतिकृच्छ्रंदातुरितरेषांपुनःसंस्कारः श्वेताश्वमृतशय्यायांगजदानप्रतिग्रहे त्र्यब्दंहितन्मुखंदातादैवाद्वानावलो कयेत् ॥ ११ ॥ अतिकृच्छ्रंचदातास्याद्ब्राह्मणःपटगर्भतः १२ आर्द्र कृष्णाजिनेचैवसप्तशैलप्रतिग्रहे द्वित्र्यब्दंतन्मुखंदातापूर्ववन्नावलोकयेत् ॥ १३ ॥ ब्रह्मकृच्छ्रंचरेद्दाताइतरेपटगर्भतः शुध्यंतिसततंविप्राःशातातपवचो यथा ॥ १४ ॥ ब्रह्मकृच्छ्रंप्राजापत्यमित्यर्थः ॥ कपिलाद्विमुखीदानेदा सीगृहपरिग्रहे अब्दमेकंद्विजदातापूर्ववन्नावलोकयेत् ॥ १५ द्विमुखीउभ यमुखीत्यर्थः ॥ पर्णकृच्छ्रंततःप्रोक्तमितरेषांहिपूर्ववत् तुलादिसप्तदानेषु ऋत्विजोहोतृकानपि द्वारस्थान्नावलोकेद्वाफलकृच्छ्रमुदाहृतम् १६ मासत्रयमित्यर्थः

कृष्ण मृगके आर्द्र क्या गिल्लेचर्मके दानविषे दोवर्ष और सप्त७पर्वत दानके ग्रहणविषे त्रयवर्ष पर्यंत दाता दानके ग्रहण करणवालेके मुखकों न देखे १३ जेकर दैवतें देखे तां दाता प्राजापत्यकृच्छ्र व्रतकों करे और इतर जो आचार्य्यआदि सो पटगर्भ विधिते शुद्धहोतेहैं एह शातातपका वचनसत्यहै १४ और कपिलागोके दानविषे और उभयमुखी गोके दानविषे और दासी और गृहदानविषे दाता एकवर्षपर्यंत दानग्रहीताके मुखको पूर्वकीन्यांई नदेखे १५ जेकर दैवतें देखे तां दाता पर्णकृच्छ्र व्रतकों करे और आचार्य्य आदिकांकी शुद्धि पूर्वकी न्यांई पटगर्भ विधानतें होतीहै और तुला आदिसप्त७दानां विषे दाता द्वारविषे स्थित जो ऋचांका पठनवाले तिनांकों न देखे त्रयमास ३ पर्यंत जेकर देखे तां फल कृच्छ्र करके शुद्ध होताहै ॥ १६ ॥

सर्वेषामिति संपूर्ण ऋत्विजजोहैं तिनांकेदर्शनविषे दाता आदरकर्के गायत्रीका एक हजारज पकरे और आज्य और भूषण और धेनुइनांके दानविषे और वळद आदिके दानविषे १७ ॥ और महिषी और बकरी और भेड इनांके दान विषे एकमासपर्यंत निरंतरदर्शन न करे जेकर करे तां ऋत्विजांको एकशत१००गायत्रीकाजपकहाहै और जोदानकरणे वालाहै सो तिसदोष केदूर करणे वास्ते धेनुदान करे १८अब इसमे विशेषकहतेहैं सात्विकेति सात्विक क्या चवी यां२४ अवतारांकीयांमूर्त्तियांके दान ग्रहण करणेवाला जो पुरुष है तिसके दर्शनकरणेमे दोष नहिजानणा ॥ अब इसीविषे गालवजीकावचनहै हेब्राह्मणांके प्यारे चवीयां अवतारांकीयांमूर्त्ती आदिकके दानविषे और दशां १०अवतारांके मूर्त्तिदानविषे और हेप्रभो लक्ष्मीनारायण प्रतिमा आदि दानविषे दाता और दानके ग्रहण करणवालेकों परस्परमुखके देखणेविषे दोषनहि १ ॥ और अर्द्धनारीश्वर शब्दका अर्थ कहतेहैं क्या पार्वती शिवांकी प्रतिमादिकके दान विषे और

सर्वेषामृत्विजांप्रोक्तंसहस्रजपमादरात् आज्यालंकारधेनूनामनड्वाहादिसंग्रहे ॥ १७ ॥ महिषीछागवस्तानांमासमेकंनिरंतरम् ऋत्विजां शतगायत्रींदाताधेनुंसमाचरेत् ॥ १८ ॥ सात्त्विकदानेषुचतुर्विंशति मूर्त्यादिदानावलोकने न दोषः ॥ गालवः चतुर्विंशतिमूर्त्यादिदानेषुद्विजवल्लभ दशावतारदानेषु अर्द्धनार्य्यादिषुप्रभो मुखावलोकनंदातृग्रहीत्रो र्नतुदोषभाक् ॥ १ ॥ अर्द्धनारीश्वरं लक्ष्मीनारायणप्रतिमा ॥ उमामहेश्वरप्रतिमादानेषु कृष्णाजिनतिलविरहितेषु दातृप्रतिग्रहीत्रोर्मुखावलोकनं न दोषहेतुः ॥

कृष्ण हारिणका चर्म और तिल इनांते रहित जो दानहैं तिनांविषे दाता और ग्रहीताकों परस्पर देखणेमे पूर्वोक्तदोष नहि ॥ जेडीयां २४ मूर्त्तियां दानवास्ते वनाईंजांदीयांहैं सो पांचतांत्रविषे लिखतेहैं सशक्तिकाय केशवायनमः १ नारायणायनमः २ माधवायनमः ३ गोविंदायनमः ४ विष्णवेनमः ५ मधुसूदनायनमः ६ त्रिविक्रमायनमः ७ वामनायनमः ८ श्रीधराय नमः ९ हृषीकेशायनमः १० पद्मनाभायनमः ११ दामोदरायनमः१२इत्यादिमंत्रोंकर्के जो वारां मूर्त्ति हैं सो शक्तिके साथ गिणनेतें २४ जाणनीयां और दशावतारोंके दानमे मत्स्य १ कूर्म्म २ वराह ३ नरसिंह ४ वामन ५ रामचंद्र ६ पर्शुराम ७ बलदेव ८ बुद्ध ९ कल्की १० इसनामकीयां स्वर्णादिमयमूर्त्तियां जाणनीयां ॥ और जो पिछे पटगर्भ विधि कहीहै सो वस्त्रका गर्भ वनाके तिसकीयोनिसे निकालना एह संस्कार विशेष गोमुखप्रसवकी न्याई जानणा

कृष्णेतिअौर काले हरिणका चर्म और तिल इनांतें रहित श्रेष्ठ प्रतिमाआदिदानके ग्रहणकरनें विषे विशेष जाबालिऋषिकहताहै दशेति इनांदस्सां १० अवतारांके दानके योगांविषें तिल चर्मादिदानांविषे चाहे पूर्वोक्तमूर्तिभी साथहोवे तांभी तिसजगाभोजनकरणें वाले ब्राह्मणकों दाता छे६महीने तक न देखें ॥ १ ॥ उत्क्रांतिरिति मरणसमयविषे आतुरदानकों और वैतरिणी दान कों और पुतलादाह विषे जो ब्राह्मण दानकों ग्रहण कर्त्ताहै और प्रेतके निमित्त जो दान है तिसकों जो ग्रहण कर्त्ताहै और प्राणिके मरणेतें यारमें ११ दिन विषे जो तिसके गृहविषे अन्नकों भक्षण कर्त्ताहै ॥ २ ॥ उग्रशांतियां क्या बालकांके जन्म विषे अभुक्तमूलादि

कृष्णाजिनतिलरहितेप्रधानप्रतिमाप्रतिग्रहे विशेषमाह जावालिः ॥ दश स्वेतेषुयोगेषुभुक्तवत्सुद्विजोत्तमान् तिलाजिनप्रधानेषुषण्मासंनाऽवलोकयेत् १ उत्क्रांतिवैतरण्योश्चतथाप्रतिकृतौनृप अन्नप्रतिग्रहेतातएकाहभोजनेतथा २। उग्रशान्तिषुसर्वत्रतथामाहिषसंग्रहे कर्त्तानालोकयेद्विप्रंकायकृच्छ्रमथाचरेत् ३ ॥ उत्क्रांतिर्मरणोपयोगिसमयः। प्रतिकृतिः पर्णशरदाहसमयः ॥ अन्नप्रतिग्रहः प्रेतान्नग्रहः ॥ एकाहभोजनं एकादशाहभोजनम् ॥ उग्रशान्तयः शिशूनांजनने अभुक्तमूलादयःस्पष्टमन्यत् । * कायकृच्छ्रंलक्षयतिमरीचिः ॥ चत्वार्य्यहानिग्रासाःस्युरेकैकंप्रत्यहंप्रति निराहारस्तथातेषुचतुर्ष्वासायभोजनम् ॥ १ ॥ तदंतेव्रतिभिर्देयागौरेकाचान्द्रभूषणा कायकृच्छ्रमिदंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ २ ॥ चतुर्षुदिवसेषु प्रत्यहमेकैकग्रासभोजनम् ततश्चतुर्षूपवासः ततश्चतुर्षुसायंभोजनमिति द्वादशाहनिर्वर्त्योयं कायकृच्छ्र इत्यर्थः ॥

तिनांविषे जो दानकों ग्रहण कर्त्ताहै और तैसे माहिषदानको जो ब्राह्मण ग्रहण कर्त्ताहै तिसकों विधिके करणें वाला न देखे जेकर देखे तां कायकृच्छ्रव्रतकों शुद्धिवास्ते करे ३ * अबकायकृच्छ्र व्रतकों मरीचि ऋषिजीदखातेंहैं चेति चारदिन पर्यंत दिन दिनविषे एक एक ग्रास भक्षणकरे और तिसतें पीछे चार दिन कुछ न भक्षणकरे और तिसतें पीछे चार दिन रात्रि विषे भोजनकरे ऐसे बारां दिनांकर्के कायकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ १ ॥ और व्रतकी समाप्तिविषे व्रतिपुरुषांनें रजत भूषण युक्त एक गौ देणेयोग्यहै एह काय कृच्छ्र व्रत यथार्थधर्मके देखणवालयां मुनियांनें कहाहै ॥ २ ॥

अथप्रजापतिका वचनहै चार ४ दिनां विषे चारहि ग्रास दिनविषें भक्षणकरे श्रौर चारदिन कुछ न भक्षण करे श्रौर चार ४ दिन रात्रिविषे भक्षणकरे एह बारांदिनांका परम श्रेष्ठ कायकच्छ्नाम व्रतहोताहै १ विधिवास्ते मरीचिऋषिकावाक्यहै प्रातःकालतेंलेके संध्याकालपर्यंत जैसेविधिहै तैसे ब्राह्मण स्नानकों करे गंधपुष्पश्रादिककें विष्णुका पूजनकरे जद सूर्यअस्तहोवे तांबुद्धिमान् १ विष्णुतांई निवेद्य देकर्के ग्रासका भक्षणकरे श्रौर पीछे हथपादशुद्धकर्के दोश्राचमनकरे श्रौर नारायणकों स्मरणकर्त्ता होया समीपहि शयनकरे फेर दूसरे दिन प्रातःसमय उठके पूर्वकीन्यांई नियमकरे ३ तिस दिनविषेभी ग्रासभक्षणकरे श्रैसे चारदिन ग्रास भक्षण कर्के तिसतें परे चार दिन

प्रजापतिः । चतुर्ष्वहस्सुग्रासाःस्युर्निराहारस्तथापुनः चतुर्ष्वासायभक्ष्यः स्यात्कायकृच्छ्रमिदंपरम् १ तद्विधिमाह मरीचिः। श्रासायंप्रातरारभ्यस्नात्वाविप्रोयथाविधि श्रभ्यर्च्यगन्धपुष्पाद्यैरविरस्तंगतेयदा १ तदाग्रासंसमश्नीयाद्विष्ण्वार्पितममुंसुधीःप्रक्षाल्यपूर्ववत्सर्वंद्विराचम्यशुचिस्तथा २ ॥ स्वपेद्देवसमीपेतुनारायणमनुस्मरन् पुनःप्रातःसमुत्थायकृत्वानियमपूर्वकम् ॥ ३ ॥ तत्रापिभक्षयेद्ग्रासमेवंचतुरहंप्रति ततःपरंनिराहारस्तथा चतुर्ष्वभोजनम् ॥ ४ ॥ श्रभोजनमेकाहारइत्यर्थः॥ गोदानंव्रतपूर्त्यर्थं पंचगव्यंपिबेत्ततः कायकृच्छ्रमिदंदेवाद्विजानांपावनंस्मृतम् ॥ ५ ॥ अथकायकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुरामप्रवक्ष्यामिकायकृच्छ्रस्यधीमतः प्रत्याम्नायंमहापुण्यंशृण्वतांपापनाशनम् ॥ १ ॥ दशगावःप्रदातव्याः सवत्साभूषिताश्रपि पयस्विन्यःसुशीलाश्चस्वर्णशृंग्योमहत्तराः ॥ २ ॥

उपवासकरे तैसे चार दिनां विषे रात्रिविषे एक श्राहारकरे ४ श्रौर व्रतकेपूर्णफलकी प्राप्तिवास्ते गौदानकरे श्रौर पंचगव्यका पानकरे एहकायकच्छ्र ब्राह्मण श्रादि वर्णांकों पवित्रकरणेवाला कहाहै ५ ॥ अथकायकच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै हेराम कायकच्छ्रकें बुद्धि के देणें वाले बदलेंनूं श्रवणकर कैसा बदलाहै महापुण्यहै क्या बहुतपवित्रहै श्रौर जो श्रवण कर्तेहैं तिनांके पापकों दूरकरणे वालाहै १ दश १० गौवां सहित बच्छयांके दुग्धकर्केयुक्त सुशीला स्वर्णके शृंगांकर्के युक्त श्रौर पूजित देणे योग्यहैं बदले विषे ॥ २ ॥

इसी विषयमे गालवजीका वचन है सर्वेति संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला जो कायकृच्छ्र व्रत है हेराजन् तिसका प्रत्याम्नाय एह है कि सहित बच्छयांके दश १० गौयां तिनांके दानकरणे करके साधुस्वभाववाला पुरुष कायकृच्छ्र व्रतके फल कों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ अब कण्वऋषिका वचन है कायेति संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला कायकृच्छ्र जो संपूर्ण व्रत है तिसका बदलाराजयांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला और महा दानके ग्रहणकरणे वाले जो पुरुषहै तिनांके संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला कहाहै अथवा राजयांते प्रति ग्रहउठाणें वालयांके पापको दूर करांहै ॥ १ ॥ स्नात्वेति पुण्यदिन विषे ब्राह्मण पूर्वकी न्याई संकल्पकों करके तिलक और पुष्प आदिकांकर्के दशां ब्राह्मणांकों

॥ गालवः ॥ सर्वपापहरस्यास्यकायकृच्छ्रस्यवैनृप प्रत्याम्नायोदशगवांसवत्साः साधुवृत्तिमान् एतदाचरणेनैवकायकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ १ ॥ कण्वः ॥ कायकृच्छ्रस्यसर्वस्यसर्वपापहरस्यच राज्ञांप्रतिग्रहीतॄणां सर्वपापहरंपरम् ॥ १ ॥ स्नात्वापुण्यदिनेविप्रः सुसंकल्प्यैवपूर्ववत् विप्रानभ्यर्च्यगन्धाद्यैर्दशधेनूःपृथक्पृथक् ॥ २ ॥ दद्यात्प्रत्याम्नायभूताः सर्वपापापनुतये एतस्याचरणेपूर्णेकायकृच्छ्रफलंलभेत् ॥ ३ ॥ * अथौदुम्बरकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ औदुम्बरस्यकृच्छ्रस्यलक्षणंवच्मितत्त्वतः कृच्छ्रं महत्तरंभूपसर्वपापहरंपरम् ॥ १ ॥ पितृमातृपरित्यागःस्वदाराणांह्यनागसाम् भगिनीभागिनेयार्थिगर्भिण्यातुरकन्यका ॥ २ ॥ बालश्चकुलवृद्धश्च अतिथिश्चागतःप्रभो सामर्थ्येसतिबन्धूनांत्यागेदोषोमहत्तरः ॥ ३ ॥ ब्रह्महत्यामवाप्नोतियदुपेक्षापरायणः ॥

१० पूजके भिन्न भिन्न एक एककों प्रसूतहोई गौदेवे ऐसें दश१०गौयां दानकरे ॥ २ ॥ एह प्रत्याम्नाय संपूर्णपापांके नाशकरणेवास्ते कहाहै इसके करणेकरके कायकृच्छ्रके फलनूं प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ * इसतें उपरंत औदुम्बरकृच्छ्रहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै आविति औदुम्बरकृच्छ्रके लक्षणनूं यथार्थकर्के कहतांहां एह कृच्छ्र बहुत श्रेष्ठहै हेराजन् संपूर्ण पापांकेनाशकरणे वालाहै ॥ १ ॥ अब इसकर्के दूरहोणेवाले पापोंका कहतेहां पीति पिता और माता और अपराधतें विना स्त्रीयां इनांका जो त्यागहै और भैण और भनेवां और अर्थी और गार्भिणी और रोगी और कन्या ॥ २ ॥ और बालक और कुलमें वृद्ध और अतिथि इनांसंबंधियांके कदाचित् त्याग विषे सामर्थ्यके होयां २ महा दोषहै ॥ ३ ॥ इनांकों सर्वदा त्यागणे वाला पुरुष ब्रह्महत्या पापकों प्राप्त होताहै ॥

भेति भैण और दूसरीमाताकीकन्या और सर्वपितेरहितजो स्त्रीहै और जिसकाभर्त्ता विदेशगियाहै और अनाथ जो कन्याहै और विधवास्त्री इनांकों जो पुरुषकारणतें विनात्यागताहै । १ । और पिताकी भैण और माताकी भैण और विदेश गियाभर्त्ता जिसका ऐसी पुत्रतें रहित जो स्त्री है और पूजने योग्य जो स्त्री अर्थात् गुरुआदिकोस्त्री तिनांकों त्यागणे करकें पुरुषनरककों प्राप्तहोताहै अथवा(अधनीयां)कयाधनतें रहितजो स्त्रीहै ॥ २ ॥ और महाभारतविषेंभी एहविषयकहाहै पितेति कौमार अवस्थाविषे पितारक्षाकरे और भर्त्ताजुवानी अवस्थाविषेरक्षाकरै और पुत्रवृद्ध अवस्थाविषें रक्षाकरे स्त्री अपने अधीन कदाचित् होणेकों योग्यनहिहै ॥ १ ॥ और उन्मत्त और पतित और नपुंसक और काण और बधिर ऐसें पिताकों पुत्र आदिअन्न वस्त्र आदिकांकरकें रक्षाकरै ॥ २ ॥ अवगोतमजीकावाक्यहै अरक्षेति रक्षणेयोग्यजोस्त्री नाहि तिसकीरक्षाकरताहै और जो रक्षणेयोग्यहै

भगिनींचस्वसारंह्यनाथांगतभर्तृकाम् पुत्रीमनाथांविधवांयस्त्यजेत्कारणं विना ॥ १ ॥ पितृभगिनींमातृभगिनीमपुत्रांगतभर्तृकाम् अर्चनीयांपरित्य ज्यसैवनरकमश्नुते यद्वाअधनीयामियमधनाइत्येवंज्ञाताम् २ महाभारते पितारक्षतिकौमारेभर्तारक्षतियौवने पुत्रस्तुस्थविरेभावेनस्त्रीस्वातंत्र्यमर्ह ति ॥ १ ॥ उन्मत्तपतितक्लीबकाणंबधिरमेवच पुत्रादिर्यत्नतोरक्षेदन्नवस्त्रा दिभिःशनैः ॥ २ ॥ गौतमः ॥ अरक्षणीयांयोरक्षेद्रक्षणीयांपरित्यजेत् सवै नरकमाप्नोतितिर्य्यग्योनिषुजन्यते ॥ १ ॥ किंचवेश्यादासीतन्मातरस्तत्पु त्राःकुण्डगोलकनटविटगायकचार्वाकास्त्वरक्षणीयाः ॥ अनाथगतभर्तृकानि ष्पुत्राःस्त्रियः पितृव्यज्येष्ठभ्रात्रादयोनिष्पुत्रानिर्धनिनः काणकुब्जादयो यत्नतोरक्ष्याः एतेषांपरित्यागेदोषः ॥

तिसकी रक्षा नहि करता सो पुरुषनरककों प्राप्तहोताहै और पशुआदिकजन्मकों प्राप्तहोताहै १ । और विशेषकहतेहै वैश्येति वेश्या और दासी और तिनांकीयांमाता और तिनांकेपुत्र और भर्त्तांके जीवतयांजो जारतें जन्मयाहै ऐसा कुंडपुत्र भर्त्तांके मृतहोयां होयां जो जारतेंजन्मयाहै गोलकपुत्र और नट और विट क्या व्यभिचारी पुरुषका नौकर और गायक और चार्वाक क्या नास्तिक एह रक्षाकरणे योग्यनहिहैं ॥ और विशेषकहतेहैं अनेति संबंधियांते रहित और जिसका भर्त्ता विदेश गियाहै और पुत्रतें रहित जो स्त्री है और पिताका भ्राता और पुत्रतें रहित अथवा वडा भ्राता धनतें रहित भी पूर्वोक्त और काणा अक्षि करकें और कुबतें आदलेके जो पुरुष वा स्त्रीहोवे सो एह यत्नतें रक्षाकरणे योग्यहैं इनांके त्यागविषें दोषहै ॥

तादेति तिस दोषके दूरकरणे वास्तें प्रायश्चित्तकों मार्कंडेयऋषि कहताहै सामर्थ्यके होयां २ जो पुरुष इनां अपणे संबंधियांकों त्यागताहै सोकाकजन्मकों प्राप्तहोकर वारंवारदुःखी होताहै १ ॥ एकमास पर्यंत जो त्यागताहै सो पंचगव्यके पीणेकर्के शुद्ध होताहै और जोर पुरुष छे६ मास पर्यंत संबंधीयांकों त्यागताहै सो स्वर्णकृच्छ्रव्रतकर्के शुद्ध होताहै और वर्ष पर्यंत संबंधियांके त्यागविषे औदुम्बर कृच्छ्र कहाहै और वर्षतें अधिक त्यागविषे चांद्रायण व्रतकहाहै ॥ २ ॥ अबप राशरजीकावचनहै औविति औंदुंबर व्रतविषे चावलांकों वासांकीकों जैसे विधिहै कि वारां१२

तत्प्रायश्चित्तमाहमार्कण्डेयः ॥ सतिसामर्थ्येत्यजेद्यस्तुएतान्वन्धुजनान्स्वकान् सकाकयोनिमासाद्यदुःखीभूयात्पुनःपुनः १ ॥ मासंत्यक्त्वापंचगव्यं षण्मासान्स्वर्णकृच्छ्रकृत् वत्सरऔदुम्बरंप्रोक्तमर्वाकूचान्द्रायणंपरम् २ ॥ पराशरः औदुम्बरेतंडुलानांश्यामाकान्वायथाविधि दशद्वेधाविभज्यैवप्रत्यहंपाचयेद्व्रती ॥ १ ॥ दशद्वेधाद्वादशधेत्यर्थः ॥ औदुम्वरैःशुष्कपर्णैःपाचयेन्नान्यदारुभिः औदुम्वरैश्चपर्णैश्चआर्द्रैःपात्रमुदाहृतम् ॥ २ ॥ तत्रनिक्षिप्यतंग्रासंविष्णवेपूर्वमादिशेत् चतुर्थकालआयातेपूर्ववन्नियमंचरेत् ॥ ३ ॥ ग्रासवचननियमादिकमित्यर्थः॥ एवंग्रासाद्वादशस्युर्द्वादशाहानिभक्षयेत् अत्रापिगौःप्रदातव्यापंचगव्यंपिवेत्ततः ॥ ४ ॥

विभागकर्के दिन दिनविषे वारां दिन पर्यंतव्रतीपकावे दशद्वेधा क्या वारां१२ हिस्सें करे ॥ १ ॥ गूलरवृक्षके शुष्कपत्रां कर्के पकावे होरी काष्ट कर्के न पकावे और गूलरपत्रां कर्के मिश्रिव जो गलाहके पत्ता तिनां कर्के पात्र बनावे ॥ २ ॥ तिस पात्रविषे तिसग्रासकों रखके विष्णु तांई पहले अर्पण करे और पीछे चौथे पहर विषे पूर्वकी न्यांई नियम करें क्या भक्षण करें नियम कर्के ग्रासादिके भक्षणका विधान आनणा ॥ ३ ॥ इस प्रकार वारां ग्रासहैं वारां १२ दिन वार्ने और इस विषे भी पंचगव्यका पान करे और एक गौदान करणे योग्यहै ॥ ४ ॥

एवमिति एह औदुम्वर नाम कृच्छ्र व्रतकहाहै सो विशेषकर्के करणे योग्यहै मौनव्रतविषेयुक्तहोके उत्तमग्रासका भक्षण करे ॥ ५ ॥ और हस्थां पादांकोंधोके दोबार आचमन करे विधिकर्के फेर सायंकालविषें कर्मकों करे तिसतैं पीछे नारायणके आगें शयन करे ॥ ६ ॥ फेर प्रातःकालविषें निर्मलहोकर दूसरे दिनकीकृत्यकों पूर्वकीन्याईंकरे ऐसें शास्त्रकर्के कहीजो विधि तिसकेकरणेकर्के शुद्धिकों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ इसतें उपरंत औदुम्वरकृच्छ्रका प्रत्याम्नायकहाहै तिसविषें देवलजी का वचनहै औदुम्वरेति औदुम्वर कृच्छ्रका प्रत्याम्नायपुरुषांकों श्रेष्ठकहाहै तिसके करणेकर्के संपूर्ण फलकोंप्राप्तहोताहै । १ । अव मार्कंडेयजीकावाक्यहै प्रत्येति हेरामपूर्वं औदुम्वरकृच्छ्रकाप्रत्याम्नाय

एवमौदुम्वरंकृच्छ्रंकर्तव्यंचविशेषतः भक्षयेदुत्तमंग्रासंमौनव्रतपरायणः ५॥ पादौप्रक्षाल्यपाणीचद्विराचम्यविधानतः सायाह्निकंततःकृत्वास्वपेन्नारायणाग्रतः ॥ ६ ॥ पुनःप्रभातेविमलोद्वितीयंपूर्ववच्चरेत् एवंशास्त्रोक्तविधिनाकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ७ ॥ अथौदुम्वरकृच्छ्रप्रत्याम्नायः॥ तत्रदेवलः ॥ औदुम्वरस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायःपरंनृणाम् तस्याचरणमात्रेणसंपूर्णफलमश्नुते ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायःपुरारामजामदग्न्येनभाषितः मातृहत्याविशुद्ध्यर्थंकिमुतान्यस्यपापिनः ॥ १ ॥ राजविजये ॥ कृच्छ्रस्यौदुम्वरस्यास्यप्रत्याम्नायोमहानयम् सर्वपापविशुद्ध्यर्थंसृष्टवान्पद्मभूः पुरा १ ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ औदुम्वरस्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायस्यलक्षणम् अष्टगावःप्रदातव्याःसालंकाराःसुलक्षणाः १ ॥ हेमशृंग्योरौप्यखुराःकांस्यदोहनसंयुताः सर्वपापविनिर्मुक्तःसंपूर्णफलमाप्नुयात् ॥ २ ॥

मातृहत्याकीशुद्धिवास्ते परशुरामनेंकथनकीताहै अन्यपापीकाक्या कहणाहै । १ । राजविजयग्रंथ विषें कहाहै कृच्छ्रेति इसऔदुम्वरकृच्छ्रकाएहप्रत्याम्नाय श्रेष्ठहै संपूर्णपापांकी शुद्धि वास्ते इसकों पूर्वब्रह्माउत्पन्न करताभया ॥ १ ॥ चतुर्विंशति मतविषें कहाहै औदुंवरकृच्छ्रके प्रत्याम्नायकेलक्षण कों कहतेहैं अठ ८ गौयां देणेयोग्यहैं कैसीयां गौयां जो शोभाकर्के युक्तहैं और श्रेष्ट लक्षणा वालियांहैं ॥ १ ॥ और सुवर्णके शृंगों कर्के युक्त और रजत खुरां कर्के युक्त कांस्यके दोहन पात्र कर्के युक्त तिनां गौयांके देणे कर्के संपूर्ण फलकों प्राप्त होता है ॥ २ ॥

इसतें उपरांत माहेश्वरकृच्छ्रका लक्षणकहाहै कृच्छ्रमिति माहेश्वरनामककें जो कृच्छ्रव्रतहै सो संपूर्ण पापांके नाशकरणेवालाहै इसमें गाथाकहतेहैं पूर्वशिवजीक्रोधकरके कामदेवकों यद दाहकरते भये तां शिवजीमें वडादोषहोताभया ॥ १ ॥ तिसदोषके दूरकरणेवास्तेंब्रह्माकों पुछताभयाहेदेव कामकें दाहकरणेतें मेरेविषें बहुतदोषस्थितहै तिसदोषकेदूरकरणेवास्तेउपायकहो। २। ब्रह्माजीकहतेभये सर्वोत्तें संपूर्ण दोषांके दूरकरणे वाला और संपूर्ण उपद्रवांके नाशकरणेवाला और पुरुषांकों संपूर्ण पुण्यके देणेवाला और संपूर्ण स्नानका फलदेणे वाला और बहुत श्रेष्ठहै ॥ ३ ॥ प्रातरिति प्रातः काल विषें दंतधावनकों करकें स्नानको करे और जैसें योग्यहै तैसें संध्या वंदनआदिक

* अथमाहेश्वरकृच्छ्रलक्षणम् ॥ कृच्छ्रंमाहेश्वरंनामसर्वपापप्रणाशनम् पुराकंदर्पदहनेमहान्दोषोभवेद्यदा ॥ १ ॥ तद्दोषपरिहारार्थंब्रह्माणंपर्य्यपृच्छत पंचवाणस्यदहनान्महान्दोषोमयिस्थितः ॥ २ ॥ तद्दोषपरिहारार्थंनिष्कृतिर्देवकथ्यताम् ॥ ब्रह्मा ॥ सर्वदोषप्रशमनंसर्वोपद्रवनाशनम् सर्वपुण्यप्रदंन्हणांसर्वस्नानफलंमहत् ॥ ३ ॥ प्रातःस्नात्वायथाचारंदंतधावनपूर्वकम् तावन्नारायणंस्मृत्वापूर्ववत्पापमोचनम् ॥ ४ ॥ यदामंदायतेभानुस्तदाकापालमुद्वहन् श्रोत्रियाणांचविप्राणांगृहेपुत्रिषुसंख्यया ॥ ५ ॥ शाकंभक्ष्यंफलंवापियथासंभवमादरात् आनयित्वाथदेवायसमर्प्यविधिपूर्वकम् ॥ ६ ॥ भक्षयेत्तानिसर्वाणिवाग्यतोन्नमकुत्सयन् हस्तौपादौतुप्रक्षाल्यद्विराचम्यशुचिःस्ततः ॥ ७ ॥ सायंकालेस्वपेन्नाथसमीपेनियतावसेत् ततःप्रातःसमुत्थायपूर्ववत्सर्वमाचरेत् ॥ ८ ॥

कर्मांकों करे तां फेर पापांके नाशकरणे वालेजो विष्णु तिनांको पूर्वकीन्याईं स्मरण करे ४ ॥ और यद सूर्यका तेज मंददोवे तद कापालको ग्रहणकरके वेदपाठी जो ब्राह्मणतिनांके तीनगृहां विषें संख्याकरकें ॥ ५ ॥ भक्षण करणेकेयोग्य जो शाकवायुआदिक और फलकदली आदिकहै जैसें प्राप्तहोवे भिक्षा तिसकों आदरतेंल्यावे और विधि पूर्वक विष्णुके तांईं अर्पणकरकें ॥ ६ ॥ भक्षणकरे संपूर्णानूं मौनधारके अन्न निंदा न करे हस्थ और पादांको शुद्धकरकें दोवार आचमन करे ऐसें शुद्ध होके ॥ ७ ॥ रात्रिविषे विष्णुके समीप शयन करे इंद्रियांकों रोकके तिसते उपरत दूसरे दिनविषे प्रातःकाल उठके पूर्वकी न्याईं संपूर्ण नियम करे ॥ ८ ॥

गौरीति एकगो श्रेष्ठब्राह्मण केताईं देवे कर्मांके फलकी प्राप्तिवास्ते पीछे पंचगव्यनूं पीवे एह माहेश्वर कृच्छ्रकहाहै । ९ । हेभगवन् इसव्रतकों कर संपूर्णदोषांकी शांतिवास्ते श्रौर संपूर्ण पापांके दूरकर णेवास्ते श्रौर संपूर्णकल्याणांकी प्राप्ति वास्ते । १० । श्रैसे श्रवणकर्के महादेव व्रतकों करता भया इसी कर्के इसका नाम माहेश्वर व्रत है महेश्वर जीने प्रकाशित कीताहै श्रौर इस माहेश्वर कृच्छ्रके करणेकर्के ब्राह्मण श्रादि वर्ण पापतें रहितहोताहै । ११ ॥ श्रव माहेश्वरकृच्छ्रकाप्रत्या म्नायहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै मेति माहेश्वर नामकर्के जो कृच्छ्रव्रत तिसके वदलेनूं श्रवण कर कैसा वदलाहै संपूर्ण पापांके दूर करणे वाला श्रौर संपूर्ण कृच्छ्र फलकेदेणे वालाहै १ ॥

गौरिकाद्विजवर्य्यायदेयाकर्म्मफलाप्तये पंचगव्यंपिवेत्पश्चात्कृच्छ्रंमाहेश्वरं विदम् ॥ ९ ॥ कुरुष्वचैनंभगवन्सर्वदोषोपशांतये सर्वपापविनिर्मुक्तैश्चस र्वश्रेयोभिवृद्धये ॥ १० ॥ एवंकृत्वातदादेवोमहेशानस्तथाकरोत् एतस्याचर णेनैवद्विजः पापात्प्रमुच्यते ॥ ११ ॥ ॥ अथमाहेश्वरकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ माहेश्वराख्यकृच्छ्रस्यप्रत्याम्नायमिमंशृणु सर्वपापोपशम नंसर्वकृच्छ्रफलप्रदम् ॥ १ ॥ ब्रह्महत्यादिशमनंसर्वग्रहनिवारणम् तुलाप्र तिग्रहीतॄणांपापनाशनहेतुकम् ॥ २ ॥ संध्यादिनित्यकर्म्माणिपरित्यक्ता निसूरिभिः तेषांविशोधनेदक्षंसर्वपापहरंनृणाम् ॥ ३ ॥ गावोदेयाद्विजा तिभ्योह्यर्चितावस्त्रभूषणैः हेमघंटादिभिःशुभ्रैरलंकारैरलंकृताः ॥ ४ ॥ स्वर्णशृंग्योरौप्यखुराःकांस्यदोहनसंयुताः रुद्रसंख्याःसवत्साश्चपयस्वि न्यःपृथक् पृथक् ॥ ५ ॥

श्रौर ब्रह्महत्यादि पापके दूर करणेवाला श्रौर संपूर्ण ग्रह वलके दूर करणेवाला श्रौर तुलादान केग्रहण करणे वाले जो पुरुष हैं तिनांके पापके नाशका हेतुहै ॥ २ ॥ श्रौर जिनों बुद्धिमानोंनें संध्यावंदनादि कर्मत्यागेहैं तिनांके शुद्धकरणेविषे दक्षहै श्रौर पुरुषांके संपूर्णपापांका नाशकहै सो प्रत्याम्नाय कहतेहां ॥ ३ ॥ गोलि गोयां याने ११ देणे योग्यहैं ब्राह्मणांकेताईं भिन्नभिन्न कैसीयां गोयां वस्त्र भूषणां कर्के युक्त श्रौर सुवर्णके घंठे श्रादि जो श्वेत श्रलंकार तिनां कर्के युक्त ४ ॥ श्रौर सुवर्णके शृंग श्रौर रुपेकेखुर श्रौर कांस्यका दोहनपात्र तिनांकर्के युक्तसहित वछुयां के श्रौर दुग्ध देण वालीयां ॥ ५ ॥

श्रोति प्रत्याम्नाय विधिविषे गोयां ११ बहुत श्रेष्ठहैं रुद्रसंज्ञाक्यारुद्रहैं देवता जिनांकाऐसयांहैं कि सवास्तेरुद्रकृच्छ्रके फलकी प्राप्तिवास्ते और संपूर्णपापांके दूरकरणेवास्तेहै ६ एवमिति ऐसे जो द्विज प्रत्याम्नायनूं यथाविधिकर्के कर्ताहै तिसकों संपूर्णकृच्छ्रका फलप्राप्तहोताहै जो फलमुनियांनें कहाहै ॥ ७ ॥ अब ब्रह्मकृच्छ्रका लक्षणहै तिसविषे देवलजीका वाक्यहै हेसंपूर्णमुनीश्वरो अब सु करो ब्रह्मकृच्छ्रके लक्षणनूं निंदित अन्नके भक्षण करणे विषे जो पापहै और दुष्ट दानके ग्रहण करणेविषे जो पापहै ॥ १ ॥ और नहिपीणेयोग्य जो विनावच्छेके गौकादूधआदिवस्तु तिसके पीणेविषे जो पापहै और पूर्वकहि जो उग्रशांति तिसविषे जो अन्न और शूद्रकाअन्न ॥ २ ॥ और मठका स्वामी जो संन्यासी तिसका अन्न और छींबेका अन्न और वृषलीक्याशुद्रीकाव नायहोया अन्न और ऋतुमतीस्त्रीकावनायाहोया अन्न । ३ । और विधवास्त्रीककर्के पकाअन्न और

प्रत्याम्नायविधौशस्तारुद्रसंज्ञामहत्तराः रुद्रकृच्छ्रफलप्राप्त्यैसर्वपापापनुत्तये ॥ ६ ॥ एवंकृत्वाद्विजोयस्तु प्रत्याम्नायंयथार्हतः तस्यसम्पूर्णकृच्छ्रस्यफलंमुनिभिरीरितम् ॥ ७ ॥ ॥ अथब्रह्मकृच्छ्रलक्षणम् ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुध्वंमुनयस्सर्वेब्रह्मकृच्छ्रस्यलक्षणम् दुरन्नेनैवयत्पापंपापंदुष्टप्रतिग्रहे ॥ १ ॥ अपेयपानेयत्पापंयत्पापंदुष्टभोजने शांत्यन्नेषुचयत्पापंयत्पापंशूद्रभोजने ॥ २ ॥ संन्यासिनोमठपतेर्भोजनेयद्भवेन्नृणाम् यत्पापंरजकस्यान्नेयत्पापंवृषलीकृते ॥ ३ ॥ यत्पापंपुष्पवत्यन्नेयत्पापंविधवाकृते अमंत्रकेपैतृकान्नेयदनारायणीकृते ॥ ४ ॥ चौलेचपैतृकेचैवदीक्षितस्यैवभोजने सूतकद्वितयेचैवतथादुःपंक्तिभोजने ॥ ५ ॥ तथैवदुष्टसंघान्नेतथा क्रीतान्नभोजने पापपर्युषितचान्नेतथातद्रसकस्यच ॥ ६ ॥ यत्पापमनृते प्रोक्तमौपासनविवर्जिते एवमादीनिपापानिलघूनिचमहांतिच सर्वेषांहिविनाशायब्रह्मकृच्छ्रंविकात्थितम् ॥ ७ ॥ शान्त्यन्नमत्रपूर्वोक्तोग्रशान्तिभवंबोध्यम् यदनाराणीकृते नारायणाग्रेऽनिवेदितइत्यर्थः

मंत्रतें रहितपितरांका अन्न और नारायणकेतांई जो नहिअर्पणकीता अन्न । ४ । और चौलकर्मका अन्न और पितरांके निमित्त जो पहलीक्रियातिसका अन्न और यज्ञकी दीक्षा विषे युक्तका अन्न और सूतक मृतसूतकका अन्न और दुष्टपुरुषांकी पंकि विषे भोजन कीताजो अन्न ५ ब्राह्मण और दुष्टांके समूहका अन्न और अन्नके वेचण वालेका अन्न और बासी अन्न और रसके वेचण वालेका अन्न ॥ ६ ॥ इनां संपूर्णके सिद्धहोये होये अन्नकों भक्षण करणे विषे जो पाप है और जो असत्यवाणी विषे पाप है और जो पाप देवताकी उपासनाते रहित पुरुष विषे कहाहै इसते आदिके जो पापहैं थोडे वा बहुत तिनां पापांके दूर करणे वास्ते ब्रह्मकृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ ७ ॥

अब मार्कंडेयजीका वचनहै गविति गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशा का जल इनांकों पूर्वमानकर्के एकत्र करे शुद्धि कों कर्के सो शुद्धि इस जगा पंचगव्यके मंत्रां कर्के जानणी इसीरीतिसें दिनदिनविषे पानकरे ॥ १ ॥ ऐसे पूर्वकीन्याई स्नानादिको कर्त्ताहुआ बारां दिनां १२ का कृच्छ्र व्रत करे तिसी विधिकी कहतेहैं प्रातरिति प्रातः काल विषे स्नानको कर्के जैसे समाहै तैसें नित्यकर्मकों समाप्तकर्के ॥ २ ॥ देवताके मंदिर विषे तैसे गोयांके स्थान विषे व्रती पंचगव्यका पान करे इसका परिमाण कहतेहैं गविति अठ ८ मासे गोमूत्र और सोलां १६ मासे गोमय ॥ ३ ॥ और अठ ८ मासे दुग्ध और त्रय ३ मासे दधि और त्रय ३ मासेघृत और कुशाका जल ॥ ४ ॥ तिस तिस मंत्र कर्के

मार्कण्डेयः। गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् संपाद्यपूर्वमानेनप्रत्यहंशुचिपूर्वकम् ॥ १ ॥ द्वादशाहंचरेत्कृच्छ्रंपूर्ववत्स्नानमादितः प्रातःस्नात्वा यथाकालंनित्यकर्मसमाप्यच ॥ २ ॥ देवागारेतथागोषेपंचगव्यंपिवेद्व्रती गोमूत्रंमाषकान्यष्टौगोमयस्यतुषोडश ३ ॥ क्षीरंमाषाष्टकंज्ञेयंदधिमाषत्रयं तथा घृतंमाषत्रयंप्रोक्तंतथैवचकुशोदकम् ४ तत्तन्मंत्रेणसंयोज्यंतत्तन्मंत्रेणहावयेत् होमशेषंपिवेत्पश्चाद्रवौमध्याह्नगेसति ५ आसायंमनसाविष्णुं स्मरन्सर्वेश्वरंप्रभुम् स्वपेद्देवसमीपेतुगन्धताम्बूलवर्जितः ६ ततःप्रातःसमुत्थायपूर्ववद्व्रतमाचरेत् एवंद्वादशरात्राणिचरेद्व्रतमनुत्तमम् ७ महापापंचोपपापंमद्यपानसमंतथा तत्सर्वंविलयंयातिहरिनाम्नोऽसुरायथा ॥ ८॥

तिनांकों इकठया करे और तिस तिस पंचगव्यके मंत्रांकर्के हवनकरे और हवनशेषकों पीवे सूर्य के मध्यान्हग होयां २ ॥ ५ ॥ और सायंकालपर्यंत सर्वेश्वर जो विष्णु तिनांकों स्मरणकरे और देवताके समीपविषे शयनकरे और सुगंधि वस्तु और तांबूल इनांकोंत्यागे ॥ ६ ॥ तिसतें उपरंत प्रातः काल विषे उठ कर्के पूर्वकी न्याई व्रत नूं करे ऐसे उत्तम व्रतकों बारां दिनकरे ॥ ७ ॥ और महापाप और उपपाप और मदिराके पीने के पापके तुल्य जो पाप एह संपूर्ण पाप ब्रह्मकृच्छ्र व्रत कर्केनष्ट होतेहैं जैसे हरिके नामतें दैत्य दूर होतेहैं ॥ ८ ॥

इसतें उपरांत ब्रह्म कृच्छ्रका प्रत्याम्नायहै तिस विषे देवल जीका वाक्य है हेब्रह्मनुने तूं ब्रह्मकृच्छ्रके आश्चर्य प्रत्याम्नायनूं श्रवणकर जिसके करणे करके महापापां तें और उपपातकांतें रहित होताहै ॥ १ ॥ ब्रह्म कृच्छ्र है नाम जिसका सो महा पापांके दूर करणे वाला है तिसकों करे तिस विषे असमर्थ होवे तां फलकी प्राप्ति वास्ते प्रत्याम्नायनूं करे ॥ २ ॥ प्रत्याम्नाय विषे भी पुरुष महाकृच्छ्रकेफलनूं प्राप्तहोताहै अठ ८ गौयां देणीयां य्यहैं पूर्वकी न्याई स्वर्णके शृंगादिककर्के अलंकृत ॥ ३ ॥ वेदके पठनकरणेविषे युक्त जो ब्राह्मण

॥ अथब्रह्मकृच्छ्रप्रत्याम्नायः ॥ तत्रदेवलः ॥ शृणुब्रह्मुनेचित्रंप्रत्याम्नायं प्रजापतेः यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरुपपातकैः १ । प्रजापतेर्ब्रह्मकृच्छ्रस्य आचरेद्ब्रह्मकृच्छ्राख्यंमहापातकशोधनम् असमर्थःप्रकुर्वीतप्रत्याम्नायंफलाप्तये ॥ २ ॥ प्रत्याम्नायेमहाकृच्छ्रफलंप्राप्नोतिमानवः अष्टौगावःप्रदातव्या.पूर्ववत्स्वर्णभूषिताः ॥ ३ ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चपृथक्पृथगलंकृताःपयस्विन्यःशीलवत्यःसर्वदोषविमुक्तये ॥ ४ ॥ मार्कंडेयः ॥ प्रत्याम्नायंतदाकुर्यादशक्तःप्रजापतेः अष्टौगावःप्रदातव्याःस्वर्णशृंग्यःपयोमुचः ॥ १ ॥ विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चसर्वकृच्छ्रफलाप्तये एवंकृत्वाद्विजःसम्यक्फलमाप्नोतिकृत्स्नशः ॥ २ ॥

तिनांके तांई भिन्न भिन्न शोभाकर्के युक्त और दुग्धदेणे वालियां और शीलस्वभाव वालियां संपूर्ण दोषांके दूर करणे वास्ते ॥ ४ ॥ अब मार्कंडेयजी का वचनहै प्रति प्रत्याम्नायनूं तां करे जेकर ब्रह्मकृच्छ्रके करणे विषे असामर्थ्य होवे स्वर्णके शृंगांकर्के युक्त दुग्ध देण वालियां अठ ८ गौयां देणे योग्यहैं ॥ १ ॥ वेदके जानणे वाले जो ब्राह्मण तिनांके तांई संपूर्ण कृच्छ्र व्रत के फलकी प्राप्ति वास्ते असे करणे करके ब्राह्मणआदि वर्ण संपूर्ण फलकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

अथेति इसते अनंतरधान्यकृच्छ्रका लक्षणहै तिसविषै देवलजीका वाक्यहै धान्येति तुसांताई धान्य कृच्छ्रका स्वरूप और लक्षण कहताहां संपूर्णकृच्छ्र व्रतांके करणाविषे जो असमर्थहे सो पुरुषधा न्यकृच्छ्रव्रतकों करे ॥ १ ॥ इसविषे मार्कंडेयकावचनहै तमिति तप्त कृच्छ्रव्रतते आदि लेके जो संपूर्ण कृच्छ्र व्रत हैं तिनांके करणेकी इच्छावाला जेकर कोई धनवाला होवे वा राजाहोवे तां धान्य कृच्छ्रव्रतकों करे जोजो मैंने कृच्छ्रव्रत कहाहै तिनां संपूर्णांके करणेकी इच्छावाला जेकर होवेतां ॥ १ ॥ खारीति खारी परिमित जो महाधान्यहै तिसके पांचमें ५ हिस्सेकों ग्रहण करे जो खारेका एक भी भाग है तिसका नाम कृच्छ्र धान्य कहाहै । २ । तिसधान्यकों हिस्सेकर्के देवे

अथ धान्यकृच्छ्रलक्षणम् ॥ तत्रदेवलः ॥ धान्यकृच्छ्रस्वरूपंचलक्षणंप्रवदा मिवः सर्वेषामेवकृच्छ्राणामशक्तोधान्यमाचरेत् ॥ १ ॥ मार्कंडेयः ॥ तप्तादिसर्वकृच्छ्राणांकर्तुंयदिमहान्प्रभुः धान्यकृच्छ्रंतदाकुर्याद्यद्यत्कृच्छ्रंम योदितम् ॥ १ ॥ यद्यद्यत्कृच्छ्रंमयाकथितंतेषांसर्वेषांस्थानेइदमेवकुर्य्यादि त्यर्थः ॥ कश्चिन्महाधनीवाप्रभूराजाकर्तुमिच्छेत्तदाधान्यकृच्छ्रंकुर्य्यादि त्यर्थः । खारीधान्यस्यमहतःपंचधाभागमाहरेत् कृच्छ्रस्यैकस्तुयोभागःस कृच्छ्रंधान्यमीरितम् ॥ २ ॥ तद्धान्यंभागशोदद्यात्तत्कृच्छ्रंमुनिभिःस्मृतम् तत्कृच्छ्रमाचरेद्विप्रःसंपूर्णफलमश्नुते धान्यवृद्धेर्महाराज्ञःकृच्छ्रंपापापनुत्त ये ॥ ३ ॥ मरीचिः ॥ खारीधान्यस्यपंचांशोधान्यकृच्छ्रमुदाहृतम् अतो न्यूनंनकर्तव्यमन्यथादानमीरितम् ॥ १ ॥

सो मुनियोंने कृच्छ्र व्रत कहाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि पंचभागकर्के कर्मते दान करणा जद समग्र दान हो जावेगा तद कृच्छ्रभी पूरा होवेगा अथवा एक खारीके पंच कृच्छ्र होतेहैं तिस कृच्छ्र धान्यनूं ब्राह्मण करे तां संपूर्ण फलकों प्राप्त होनाहै धान्यकी वृद्धि कर्के युक्त जो महारा जाहै तिसकों पापांके दूर करणे वास्ते एह धान्य कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ २ ॥ अब निर्धन पुरुष वास्ते मरीचिऋषिका वचनहै खारीति खारी परिमाण धान्यका पांचमां हिस्सा धान्य कृच्छ्र कहाहै इसतें न्यून क्या घट नहि करणे योग्य जेकर घट होवे तिसका नाम दान कहाहै ॥ १ ॥

अब इसीमें लोगाक्षिऋषिकावचनहै पंचेति खारी प्रमाण महाधान्यका पंचमां५हिस्साधान्य कृच्छ्रकहाहै इसप्रमाणतें घटहोवे तां धान्यदानकहाहै सो पुण्यके देणेवालाहै और कृच्छ्रधान्यकेफल वालामहिहोता ॥ १ ॥ और इसीकास्पष्टार्थहै संपूर्ण धान्य कृच्छ्रका पंचमां हिस्सा नहि करणा चाहिए जेकर तिस धान्यतें हीन होवे तां कृच्छ्रकाफल नहि होता ॥ २ ॥ इसमें ऐसा अर्थ है कि राजादिकों सारी खारीके देणेसे धान्यकृच्छ्र हुंदाहै और निर्धनको तिसके पांचमे हिस्सेके देणेसे एह होता अब कहतेहै कि राजा खारीसे न्यून न करे और दूसरा पांचमांसे थोडा न देवे हे ब्राह्मणांविषे श्रेष्ठ इस धान्य कृच्छ्रका वदला नहि कहा स्वर्णकृच्छ्र व्रत और धान्य कृच्छ्र व्रत एह

लौगाक्षिः ॥ पंचमांशोधान्यकृच्छ्रंखारीधान्यस्यभूयसः अन्यथाधान्यदानंस्यात्कृच्छ्रशब्देनपुण्यभाक् ॥ १ ॥ संपूर्णधान्यकृच्छ्रस्यपंचमांशोनविद्यते तेनहीनंधान्यदानंनकृच्छ्रफलमश्नुते ॥ २ ॥ कृच्छ्रस्यैतस्यविप्रर्षे प्रत्याम्नायोनविद्यते स्वर्णकृच्छ्रस्यधान्यस्यसमर्थस्यमहात्मनः ॥ ३ ॥ प्रत्याम्नायोनगदितोमुनिभिर्धर्मवत्सलैः धान्यशब्दोव्रीहाएवकृच्छ्राणां न धान्यांतरम् । केचिच्छ्यामाकधान्यमितिवदंति ॥ मनुः ॥ नीवाराव्रीहयो धान्यंश्यामाकाःकृच्छ्रसाधनम् नधान्यांतरमस्तीहप्रभूतकृच्छ्रसाधनमिति १ ॥ ● अथसुवर्णकृच्छ्रम् ॥ तत्रदेवलः ॥ ब्रह्महत्यादिपापानामितरेषांमुनीश्वराः तुलादिष्विहदानेषुग्रहीतॄणांविशोधनम् ॥ १ ।

दोंव्रत समर्थ पुरुषकों कहनें । ३ । इनांकाधर्म वत्सल जो मुनि तिनांने वदला नाहे कहा धान्य शब्द करके व्रीहि कहने कृच्छ्र विषे होर धान्य नाहि कहे कै एक ऋषि श्यामाक धान्यकों कहतेहैं कि धान्य कृच्छ्रमे सामर्थ्य न होवे तां श्यामाक उसकी जगादेणे इसी विषे मनुजीका वाक्यहै नीति सवांक और चावल और सांकी एह कृच्छ्र व्रत विषे कहेहैं होर धान्य कृच्छ्रके सिद्ध करणे विषे नहि कहे ॥ १ ॥ ※ इसतें अनंतर सुवर्ण कृच्छ्र कहाहै तिस विषे देवल जीका वाक्य है ब्रह्मेति ब्रह्महत्या आदिक जो पापहैं और इतर जो पापहैं और तुलाआदि दानांकों जो ग्रहण करण वालेहैं तिनां संपूर्णांकों शुद्ध करणे वाला एह स्वर्ण कृच्छ्र कहाहै १ ॥

महेति महाप्रभुकों वराहपरिमाणसुवर्णकहाहै और मध्यमपुरुषकों वराह परिमाणतेंअर्द्धा सुवर्ण देणाकहाहै और जोनिर्धनहैं तिनांकों वराहपरिमाणतें चौथाहिस्साकहाहै तिसतेंन्यून न करे २ ॥ क्योंकि तिसतें जो न्यूनहै सो सुवर्ण दानकहाहै तिसकेदेणवालेकों सुवर्णकृच्छ्रकाफलनाहिहोता १ । इसमे मरीचिऋषिकावचनहै वेभि राजाधनीनिर्धनकों इसव्यवस्थासे वराहपरिमाणसुवर्णहोवे तां सुवर्ण कृच्छ्रकहाहै और तिसतें अर्द्धभी सुवर्ण कृच्छ्रकहाहै वराहपरिमाणतें चौथाहिस्साभी कृच्छ्र है तिसते न्यून होवे तां सुवर्णदान कहाहै उसमे कृच्छ्रशब्दनाहि कहा इहां वराहशब्दका अर्थ मानपरिभाषा विषे देखलेना ॥ १ ॥ और धनी पुरुष वराह परिमाणतें अर्द्ध सुवर्ण का कृच्छ्र करे जो असमर्थ इसके प्रत्याम्नायकी इच्छा करे तिस वास्ते कहतेहैं प्रत्येति इसकाप्रत्या

महाप्रभोर्वराहः स्यात्तदर्धंमध्यमस्यहि तदर्धमितरेषाचततोन्यूनंनकारयेत् २ ॥ ततोन्यूनंसुवर्णदानमात्रं न कृच्छ्रशब्दः। मरीचिः। वराहस्यतदर्धंचतदर्द्धंकृच्छ्रमीरितम् ततोन्यूनंदानमात्रंकृच्छ्रशब्दोनगद्यते ॥ १ ॥ वराहशब्दार्थोमानपरिभाषायांद्रष्टव्यः ॥ प्रभुमात्रेतदर्धंस्यात्प्रत्याम्नायोनविद्यते मरणांतप्रायश्चित्तानां ब्रह्महंतॄणामकृतनिष्कृतीनामितरेषांरहस्यकृतपापानामकृतनिष्कृतीनां तुलादिसंग्रहीतॄणां यागादिकरहितानां चतुर्भागव्ययाद्यकृतानां कालपुरुषादिप्रतिग्रहीतॄणांतत्तदुक्तसुवर्णकृच्छ्राचरणेन तत्पापक्षयोभवति॥ राजविजये॥ प्रमाद ब्रह्महंतॄणामितरेषांप्रभूयसा प्रायश्चित्तेनहीनानां सुवर्णकृच्छ्रमीरितम् ॥ १ ॥

म्नाय नहि मरण पर्यंतहै प्रायश्चित्त जिनांका ऐसे जो ब्राह्मणके मारणवाले और इतर जो पापीहैं नहि कीती शुद्धि जिनानें ऐसे जो गुप्त पापके करण वाले और तुलाआदि दानके ग्रहण करण वाले और पंचयज्ञ आदि कर्मतें जो रहित हैं और दानकों ग्रहणकर्के जो चतुर्थांश ब्राह्मणके तांई नहि देते और काल पुरुष आदि दानांके जो ग्रहण करण वाले तिनां संपूर्णांका पाप दूर होताहै सुवर्ण कृच्छ्र व्रतके करणेकर्के ॥ अब राज विजय ग्रंथ विषे कहाहै प्रेति प्रमादतें जो पुरुष ब्राह्मणका बध कर्तेहैं और इतर जो पापी हैं और जो बडे प्रायश्चित्त कर्के रहित हैं तिनांकी स्वर्ण कृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धि कहीहै ॥ १ ॥

तुलेति तुलाआदिदानांके ग्रहणकरणवाले जों पुरुषहैं और दानके चतुर्थांश देणेकर्के जो शुद्धिहै तिससे रहितहैं तिनांकी शुद्धिवास्ते ब्रह्माने स्वर्णकृच्छ्र प्रायश्चित्त रचयाहै ॥ २ ॥ सुवर्णकी प्रशंसा करतेहैं स्वर्णमिति सुवर्ण ब्रह्मस्वरूपकर्के ब्रह्माजीने रचयाहोयाहै पुरुषोंके स्वर्णकृच्छ्र व्रतके करणेकर्के कौणपापहै जों नहि दूरहोता अर्थात् संपूर्णपाप दूरहोतेहैं ॥ ३ ॥ अब गौतमजीका वाक्यहै रहेति एकांतविषे ब्रह्महत्याके करणवाले जो पुरुष हैं हेराजन् श्रवणकर तिनांकी दशहजार१००००स्वर्णकृच्छ्र दानकर्के शुद्धिहोतीहै ॥ १ ॥ और प्रत्यक्ष जो ब्रह्महत्याके करण वालेहैं तिनकीशुद्धि मरणपर्यंत प्रायश्चित्तकर्के होतीहै परंतु इसजगा अयुतभी चार ४ गुणा जानणा अगले वचनते सो ४००००चालीहजार होवेगा एह स्वर्णकृच्छ्र राजाके योग्यहै होरकोई नाह

तुलादिसंग्रहीतॄणांरहितानांविशुद्धिभिः प्रायश्चित्तमिदंकृच्छ्रंब्रह्मणापरिकल्पितम् २ ॥ स्वर्णंब्रह्ममयंप्रोक्तंब्रह्मणानिर्मितंपुरासुवर्णकृच्छ्राचरणेकिमसाध्यंशरीरिणाम् ३ ॥ गौतमः। रहस्यकृतविप्रस्यहत्यायांशृणुपार्थिव अयुतस्वर्णकृच्छ्राणांदानेशुद्धिरवाप्यते ॥ १ ॥ रहस्यकृतपापस्यपापिभिःपरमार्थतः अयुतंपूर्ववज्ज्ञेयमन्यथामरणान्तिकम् २ ॥ प्रकाशकृतब्रह्महत्यानांमरणान्तिकंप्रायश्चित्तम् ॥ तद्रहितानांचतुर्भिरयुतकृच्छ्रैर्विशुद्धिरिति ॥ तदाहमनुः। प्रकाश्यविप्रहंतॄणांचतुष्कंपापनाशनम् निमित्ताकृतशुद्धीनांजपयागाभिषेचनैः ॥ १ ॥ निमित्तैः प्रायश्चित्तैरकृताशुद्धिर्येषांते तेषांचतुष्कंचतुर्गुणमयुतमित्यर्थः स्मृत्यन्तरम् ॥ तुल.प्रतिग्रहीतृविषये ॥ नदीस्नानादिनाराजंश्चतुर्भागव्ययेन वा ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थंचत्वार्य्ययुतमाचरेत् १ ॥ चत्वार्ययुतकृच्छ्राणीत्यर्थः ॥

करसक्ता इसके रुपेए पूर्वोक्त वराहपरिमाणवाले स्वर्णके मुल्ल ४८०००० के हुंदेहैं मरणांतक प्रायश्चित्तको जो नहि कर्ते सो राजादि चालीहजार४००००स्वर्णकृच्छ्र कर्के शुद्ध होतेहै २ । तैसे मनुजीकहतेहैं प्रेति प्रकाश्य क्या नहि प्रत्यक्ष जो ब्राह्मणके वधको कर्तेहैं और गायत्रीजपादि प्रायश्चित्तांकर्के नहि होई शुद्धिजिनांकी तिनांके पापनाश वास्ते चाली हजार पूर्वोक्तस्वर्णकृच्छ्र किहाहै ॥ १ ॥ औरहोस्मृति विषे तुला दानके ग्रहण करणे विषे एहवाक्यहै नदीति हेराजन् नदीविषे स्नानादिकर्के और दानके चौथे हिस्सेके देणेकर्के वा दोष दूर करे अथवा ब्रह्मराक्षसगतिके दूरकरणे वास्ते चाली हजार ४०००० कृच्छ्र व्रतकोंकरे परंतु एह अनेक तुलाग्रहणविषे जानणा प्रायश्चित्तको बहुत होणेते ॥ १ ॥

प्रेति प्रभुकों उत्तमप्रकारकहाहै और मध्यमकों मध्यम और कनीयसकोंक्या छोटेकों पादप्रमाण कहाहै और नहि कीताउक्तप्रायश्चित्त जिनांनेंतिनांकी शुद्धिस्वर्णकृच्छ्रव्रतांके करणेकर्के होतीहै और उपपातकांके मध्यविषे जिस जिसपातकके दूरकरणेवास्ते जो जो कृच्छ्रव्रत कहेहैं तिनांके करण विषे सामर्थ्य न होवे तां तितनेस्वर्णकृच्छ्रव्रतांकर्के शुद्धिहोतीहै। अवयाज्ञवल्क्यजीकावचनहै उपेति उपपातकांकेसमूहके दूरकरणेवास्तेमुनियांनें जो जो प्रायश्चित्तकहाहै तिसकेकरणविषे समर्थ नहि होवेतां तितनेहि स्वर्ण कृच्छ्रव्रतकरे ॥ १ ॥ अव मरीचिकावाक्यहै समिति संकली करण पाप

प्रभोरुत्तमप्रकारोमध्यमस्यमध्यमप्रकारःकनीयसःपादप्रमाणतः। कृच्छ्राणिकृत्वात्वकृतप्रायश्चित्तानांशुद्धिर्भवति। उपपातकानांयस्ययस्यचपातकस्य यानियानिकृच्छ्राणि प्रतिपदोक्तानि तेषामाचरणाशक्तया तावद्भिः सुवर्णकृच्छ्रैःकृतैःशुद्धोभवति। याज्ञवल्क्यः। उपपातकजालानांमुनिभिर्यदुदीरितम् तत्तदाचरणाशक्तःतावत्कृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ १ ॥ मरीचिः संकलीकरणेराजन्यस्ययस्ययथोदितम् तदाचरणशक्तस्तुफलमानंत्यमश्नुते ॥ १ ॥ अशक्तस्यद्विजस्यार्थंसुवर्णकृच्छ्रमीरितम् यद्यत्पापस्यय त्कृच्छ्रंमुनिभिःपरिभाषितम् ॥ २ ॥ तदाचरणाशक्तानां तावन्तिहिरण्यकृच्छ्राणि प्रभुत्वदारिद्र्यतारतम्येन कृत्वाशुद्धिर्भवतीत्यर्थः ॥ एवंचाण्डालादिगमनेषु कृच्छ्रसंख्यया हिरण्यकृच्छ्राचरणैस्तत्प्रतिपदोक्तैः पूर्वोक्तैः शुद्धोभवति ॥

विषे हेराजन जिस जिस पापका जो जो प्रायश्चित्त कहाहै तिसके करण विषे जो युक्तहै सो अनंत फलकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ और जो ब्राह्मणादि असमर्थ है तिसकों सुवर्ण कृच्छ्र व्रत कहाहै ॥ २ ॥ इसी अर्थकों स्पष्टकर्के कहतेहैं यदिति और धनी पुरुष और निर्धन पुरुष सुवर्ण कृच्छ्र विषे अधिक और न्यून परिमाण कर्के शुद्धिकों प्राप्त होवेहैं ॥ २ ॥ इसी प्रकार चांडाल आदिकोयां स्त्रीयांके गमनकरणे विषे शुद्धिके निमित्त कृच्छ्रव्रतांकी संख्याकर्के कहे जो व्रत तिनांके प्रत्याम्नाय वास्ते उतनेहि स्वर्ण कृच्छ्र व्रतांकर्के शुद्ध होवाहै ॥

एवमिति इसी प्रकार निंदित अन्नके भक्षण विषे और उद्बंधन और मरणादिककें होयां २ उपनयनादि कर्म्मोंके मुख्यकालके त्याग विषे जो प्रायश्चित्त निरूपण कीताहै तिसकें बदले विषे तावत्संख्या करकें स्वर्ण कृच्छ्र व्रतके करणे करकें शुद्ध होताहै ऐसें संपूर्ण स्थान विषे जानणे योग्यहै ॥ तुला आदिक दानांके ग्रहण करण वाल्यां पुरुषांकों विशेष पैठीनसि कहताहै तुलेति तुलादान विषे जो धनकों ग्रहण कर्त्ताहै और तिस दानके चौथेहि हसेकों जो ब्राह्मणकेताईं नहि देता और लोकविषें निंदाके भयककें अभिषेक और जपभी नाहि कर्त्ता तिसकों ब्रह्मराक्षसगतिहोणीहै ब्रह्मराक्षस उसकों कहतेहैं जो ब्राह्मणोके मारण वाला राक्षस होवे इसमें एह अर्थ है कि राक्षसभावमे भी ब्राह्मणको मारेगा तो तिसहत्या

एवं दुरन्नभक्षणोद्बन्धनमरणादिषूपनयनकर्मणां मुख्यकालातिक्रमे प्रायश्चित्तंयन्निरूपितम् तावन्ति हिरण्यकृच्छ्राणि कृत्वा शुद्धोभवतीति सर्वं प्रयोजनीयम् । तुलादिप्रतिग्रहीत्रूणांविशेषमाह पैठीनसिः । तुलायांधन संधातायागंभागचतुष्टयम् अभिषेकंजपंवापिह्यकृत्वालोकनिंदया ॥ १ ॥ ब्रह्मराक्षसमुक्त्यर्थंकृच्छ्राण्येतानिसर्वशः चतुरयुतंप्रकुर्वीतधर्मशास्त्रोक्तमार्गतः ॥ २ ॥ पिशाचत्वविमुक्तिःस्यादिहलोकेपरत्रच सुवर्णकृच्छ्ररूपेणसर्वैपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥ हिरण्यगर्भसंधानेयोधर्मनिष्कृतिंविना चत्वारि कृच्छ्रसाहस्रंकृत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

करकें बहुत काल राक्षस हिरहेगा ॥ १ ॥ तिसके दूर करणे वास्ते इतनेंहि कृच्छ्र व्रत कहने संपूर्णताककें और धर्मशास्त्रककें कथनतें चालीहजार४००००सुवर्ण कृच्छ्रव्रतकरे २ ॥ तां पिशाच गति दूर होतीहै इसलोंकविषें और परलोक विषें सुवर्ण कृच्छ्रकें करणेककें संपूर्ण पापांते रहितहोताहै ॥ ३ ॥ और हिरण्य गर्भके प्रतिग्रहविषे जिसने शुद्धिका उपाय नहि कीता सो चारहजार कृच्छ्र व्रत करकें शुद्ध होताहै । ४ । इसमें ऐसा अर्थहै कि जिसका लिया हुया तुलादान थोडे मुल्लकाहोवे तां ४०००० हजार स्वर्ण कृच्छ्र किसतरह करेगा तो ऐसा करणा चाहिए कि लक्षसे अधिक जिसने तुलादान लियाहोवे उसको इतना प्रायश्चित्तहै और थोडे दान वालेकों लयेहोए दानके चौथे हिस्सें अनुसार करणा चाहिए ऐसें आगेभी जानणा

ब्रेति, जो पुरुष ब्रह्मांड कुंभकों ग्रहणकर्त्ताहै और तिसकी शुद्धिनिमित्त प्रायश्चित्तनें रहितहै सो त्रय ३००० हजार कृच्छ्रव्रत करे तां पूर्वकीन्यांई शुद्धिकों प्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥ और कल्पवृक्षके दानकों ग्रहण करे तिस दोषकी शुद्धिकों न करे तां पंजा५०००० हजार स्वर्ण कृच्छ्र व्रतांकर्के शुद्धहोताहै ॥ ६ ॥ और सुवर्णकी धेनुके दानकों जो ग्रहणकर्त्ता है और शास्त्रकी विधिकर्के जिसनें अपणी शुद्धि नाहि कीती सोभी पंजा हजार कृच्छ्र व्रतां कर्के पूर्वकीन्यांई शुद्ध होताहै ७ ॥ और सुवर्णके अश्व दानकों जो ग्रहण कर्त्ताहै और पूर्व नहि कीती शुद्धिजिसनें सो पंज सउ५०० सुवर्णकृच्छ्रव्रतकर्के पूर्वकीन्यांई शुद्धहोताहै ॥ ८ ॥ और सुवर्णके घोडेकर्के युक्त जो रथतिसनूं ग्रहणकर्त्ताहै और रथके ग्रहणकरणेंसे अशुद्ध जो पुरुषहै सो छे सउ ६०० सुवर्ण

ब्रह्मांडकुंभसंधातातन्निष्कृतिपराङ्मुखः त्रिसहस्त्रंचरेत्कृच्छ्रंशुद्धिमाप्नोति पौर्विकीम् ॥ ५ ॥ कल्पवृक्षस्यसंधानेत्यजन्तंनिष्कृतिंपुरा पंचायुतै श्वकृच्छ्रैश्चसुवर्णाख्यैर्विशुध्यति ॥ ६ ॥ हिरण्यधेनुसंधाताशास्त्रैरकृतनि ष्कृतिः पंचायुतैश्चकृच्छ्रैश्चशुद्धिमाप्नोतिपौर्विकीम् ॥ ७ ॥ हिरण्याश्वस्य संग्राहीपुरात्वकृतशुद्धिमान् पंचशतैःस्वर्णकृच्छ्रैःशुद्धिमाप्नोतिपूर्ववत् ८ ॥ हिरण्याश्वरथीराजन्नशुचीरथसंग्रहात् षट्शतैःस्वर्णकृच्छ्रैश्च शुद्धोभवतिपू र्ववत् ॥ ९ ॥ हेमहस्तिरथंविप्रःप्रतिगृह्यधनातुरः अकृत्वानिष्कृतिंशा स्त्रमार्गेणाज्ञानपूरितः ॥ १० ॥ षट्शतैर्हेमकृच्छ्रैश्चशुद्धिमानुभयोर्द्विजः पंचलांगलसंग्राहीह्यकृत्वाधर्मनिष्कृतिम् ॥ ११ ॥ अयुतैस्स्वर्णकृच्छ्रैश्चशु द्धोभवतिपूर्वजः अन्यथानिष्कृतिर्नास्तिब्रह्मराक्षसशंकयेति ॥ १२ ॥

कृच्छ्र व्रतकर्के पूर्वकीन्यांई शुद्धहोताहै ॥ ९ ॥ और सुवर्णके हाथी और रथनूं ग्रहणकर्के और शास्त्रके द्वारा तिसकी शुद्धिकों न कर्के धनके ग्रहण करण विषे युक्तहै अज्ञान कर्के पूरित होया २ दोषकर्के युक्त सो ब्राह्मण ॥ १० ॥ छे सउ ६०० स्वर्ण कृच्छ्रव्रत कर्के दोनोंदोषोंसें रहित होताहै अथवा सुवर्ण के हाथिआं कर्के युक्त सुवर्णका जो रथ है तिसको ग्रहण कर्के ऐसा अर्थ करणा और (उभयोः) क्या इस लोक विषे और परलोक विषे शुद्ध होताहै ॥ और पंचलांगल दानकों जो ग्रहणकर्त्ताहै और तिसकी शुद्धिकों नाहि कर्त्ता ११ ॥ सो दश हजार १०००० स्वर्ण कृच्छ्र कर्के ब्राह्मण शुद्ध होताहै ब्राह्मणकी शुद्धि अन्यथा नाहि कही एह ब्रह्मराक्षसगतिकेदेणेवाले प्रति ग्रह हैं ॥ १२ ॥

● अथेति इसतें अनंतर अघमर्षण कृच्छ्रव्रतमाधवनें कहाहै तिसविषे विष्णुजीका वाक्यहै अघ कृच्छ्र व्रतहैं त्रय३दिन उपवास करे और दिन दिन विषे त्रय३काल स्नान करे और जल विषे डुब्बी लाके त्रयवार अघमर्षण मंत्रका उच्चारण करे ॥ और दिन विषे खलोवे रात्रि विषे स्थित होवे और कर्मके अंतविषे दुग्ध देण वाली गौका दान करे एह अघमर्षण कृच्छ्रहै ॥ अब श्री शंखऋषि औगहि प्रकारकर्के अघमर्षणकृच्छ्रनूं कहताहै त्र्यहमिति त्रयदिन त्रयकाल स्नानकों कर्के मुनि मनकर्के जलविषे त्रयवार अघमर्षणमंत्रकोंजपे और त्रयदिन कुछ न भक्षण करे एह अघ

※ अथाऽघमर्षणकृच्छ्रं माधवेनोक्तम् ॥ तत्रविष्णुः ॥ अघकृच्छ्राणिभवन्ति त्र्यहंनाश्नीयात् प्रत्यहंचत्रिषवणंस्नानमाचरेत् जलेमग्नस्त्रिरघमर्षणं जपेत् दिवातिष्ठेद्रात्रावासीत कर्मणोन्ते पयस्विनींगांदद्यादित्यघमर्षणम् शंखस्तु ॥ प्रकारान्तरेणाघमर्षणकृच्छ्रमाह ॥ त्र्यहंत्रिषवणस्नायीमुनिस्स्नात्वाघमर्षणम् मनसात्रिःपठेदप्सुनभुंजीतदिनत्रयम् अघमर्षणमित्येद्व्रतंसर्वाघसूदनमिति ॥ १ ※ अथयज्ञकृच्छ्रः । तत्रांगिराः ॥ युक्तस्त्रिषवणस्नायीसंयतोमौनमास्थितः प्रातःस्नानसमारंभंकुर्य्याज्जप्यंचनित्यशः ।१। सावित्रींव्याहृतिंचैवजपेदष्टसहस्रकम् ओंकारमादितःकृत्वारूपेरूपेतथांततः ।२। भूमौवीरासनेयुक्तःकुर्याज्जप्यंसुसंयतः आसीनश्चस्थितोवापि पिबेद्गव्यंपयःसकृत् ॥ ३ ॥

मर्षण कृच्छ्र संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला कहाहै ॥ १ ॥ ❀ इसतें अनंतर यज्ञकृच्छ्रहै तिसविषे अंगिराऋषिकावचनहै युक्तइति मौन विषे स्थित होके इंद्रियांकोंरोकके विषयांतें निवृत्त होवे त्रय दिन त्रय काल स्नान करे और प्रातःकाल विषे स्नानके समय प्रतिदिन जलविषे अघमर्षणकों जपे । १ । और ओंकारका आदविषे उच्चारण कर्के सहित व्याहृतियांके गायत्रीका अष्ठ ८००० हजार जप करे २ पृथ्वी विषे वीरासन विषे स्थित होके और इंद्रियांको रोककर जपकरे वैठकर्के वा उठ कर्के और गौके दुग्धका एकवार पान करे ॥ ३ ॥

गेति दुग्धप्राप्तनहोवे तो गौंका दधिपानकरे और दधिकेअभावविषे छाहपीवे और छाहकेअभाव विषे यवांकेकाडेकोंपीवे ४ ॥ इनांविषे जौ२ प्राप्तहोवे तिसकापानकरे यवांकापान गोमूत्रककें युक्तकरे ॥ ५ ॥ अंगिराजीनें एकदिनकेकृच्छ्रककें संपूर्णपापांके नाशकरणेवालायज्ञनामककें अत बहुतश्रेष्ठकहाहै ॥ ६ ॥ एह यज्ञकृच्छ्रव्रत जो पुरुष पातककर्के युक्तहैं और उपपातकांकर्के युक्त और महापापां कर्के युक्त हैं तिनांके शुद्धकरणे वालाहै ॥ ७ ● अब देवकृत कृच्छ्रव्रतनूं यमक हताहै यति छे ६ गुणा अधिक जल कर्के पके जो यव तिनांकों और शाककों और दुग्धको और दधिकों और घृतकों त्रय त्रय दिनभक्षणकरे और तिसतें परे त्रयदिन वायु भक्षणकरे १ ॥

गव्यस्यपयसोऽलाभेगव्यमेवभवेद्दधि दध्नोभावेभवेत्तक्रंतक्राभावेतुयाव कम् ॥ ४ ॥ एषामन्यतमंयद्यदुपपद्येतततत्पिबेत् गोमूत्रेणसमायुक्तंयावकं चोपयोजयेत् ५ ॥ एकाह्निनतुकृच्छ्रेणउक्तस्त्वांगिरसास्वयम् सर्वपापहरो दिव्योनाम्नायज्ञइतिस्मृतः॥ ६ ॥ एतत्पातकयुक्तानांतथाचाप्युपपातकैः महद्भिश्चापियुक्तानांप्रायश्चित्तमिदंशुभमिति ॥ ७● देवकृतकृच्छ्रंदर्शयति यमः॥ यवागूयावकंशाकंक्षीरंदधिघृतंतथा त्र्यहंत्र्यहंतुप्राश्नीयाद्वायुभक्ष्यः परंत्र्यहम् १ ॥ कृच्छ्रंदेवकृतंनामसर्वकल्मषनाशनम् मरुद्भिर्वसुभीरुद्रैरा दित्यैश्चरितंव्रतम् व्रतस्यास्यप्रभावेनविरजस्काहितेभवन्निति २ ●अथ प्रसृतयावकम् ॥ तत्रहारीतः ॥ अयमात्मकृतैःकर्मकृतैर्गुरुमात्मानंपश्ये त् आत्मार्थं प्रसृतयावकंश्रपयेत् ॥

एह देवकृत नामककें कृच्छ्र व्रत संपूर्ण पापांके नाशकरणे वालाकहाहै मरुत्देवता और वसुदे वता और रूद्र और आदित्य इनांनें पिच्छे एह व्रत करीदा भया सो इस व्रतके करणे कर्के शुद्धहोतेभये ॥ २ ● अथेति अब प्रसृतयावक व्रत अर्थात् एकहाथके परमाणके अन्न खा णका व्रत कहाहै तिसविषे हारीत ऋषिकावचन है अयमिति एह व्रत करणे वाला पुरुष ब्राह्मणां कर्के कहा जो कर्म तिनांकों आपकरे और तिनां आपकीते होये कर्मां कर्के अपणे आपकों गुरु क्या पूज्यदेखे अर्थात् शुद्धदेखे और अपणे व्रतवास्ते एकमुष्टिप्रमाणयव पकावै

श्रीर तिसतें अनंतर हवन करे श्रीर तिसीकर्के वैश्व देव बलिकरे श्रीर पके होये यवों कों अभिमंत्रण करे वक्ष्यमाण मंत्रों कर्के पूर्वोंकाहि अर्थ स्पष्टकर्के किहाहै अयमिति यवोसि इत्यादि हेयव तूंयवहैं क्या पापांके नाश करणें वालाहैं श्रीर अन्नांका राजा हैं वरुण तुजका देवताहै मधुकर्के युक्त होया २ संपूर्ण पापांके दूर करणें वालाहैं श्रीर संपूर्ण ऋषियांकर्कें तूं पवित्र कहाहे ॥१॥ घृतमिति हेयवातुसीं घृतहो श्रीर तुसींहि मधुहो श्रीर आपोहिष्ठा क्या परमशुद्धकरणे वाले हो श्रीर अमृत हो मेरेसंपूर्ण पापकों दूरकरो जो मेनें दुष्कृतकीयाहै ॥ २ ॥ श्रीर वाणी श्रीर कर्म श्रीर मनकर्के दुर्विचितन कीयाहै श्रीर अलक्ष्मीकों श्रीर काल

ततोऽग्नौजुहुयात् तदेववलिकर्मशृतंवाभिमंत्रयेत् (अयंपुरुषः आत्मकृतैःस्वयंसंपादितैः कर्मकृतैः कर्मणा प्रयोजकद्वारा कृतैः कर्मभिरितिशेषः आत्मानंगुरुंपूज्यंपश्येदित्यर्थः) यवोसिधान्यराजोवावारुणोमधुसंयुतः ॥ निर्नोदःसर्वपापानांपवित्रमृषिभिःस्मृतम् ॥ १ ॥ घृतंयवामधुयवाआपोहिष्ठामृतंयवाः सर्वपुनंतुमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ २ ॥ वाचाकृतंकर्म्मकृतंमनसादुर्विचिंतितम् अलक्ष्मींकालकर्णींच सर्वंपुनीतमेयवाः ॥ ३ ॥ मातापित्रोरशुश्रूषांयौवनेकारितंतथा श्वशूकरावलीढंच उच्छिष्टोपहतंचयत् ॥ ४ ॥ सुवर्णस्तेयंव्रात्यत्वंवालत्वादात्मजंतथा ब्राह्मणानांपरीवादंसर्वंपुनीतमेयवाः ॥ ५ ॥ वक्ष्यमाणां रक्षां कुर्यात् ॥

कर्णीकों जो मृत्युदाराक्षसीहै इससंपूर्णांको यवपवित्र करे ॥ ३ ॥ श्रीर मातापिताकी अशुश्रूषा रूपपाप श्रीर युवावस्थाकर्के जो व्यभिचारादिरूप पाप श्रीर कुत्ते कर्के श्रीर शूकर कर्के जो उच्छिष्ट भक्षण का पाप श्रीर उच्छिष्ट कर्के युक्त के भक्षण का जो पाप ४ ॥ श्रीर सुवर्णस्तेयकापाप श्रीर संस्काररहित होणेका जो पाप श्रीर बाल्यावस्थाकर्के श्रीर ब्राह्मणकी निंदा कर्के उत्पन्न जो पाप तिनां संपूर्णां कों दूरकरो ॥ ५ ॥ श्रीर आगे कथन करणी जो रक्षा तिसकों करे

नमोरुद्राय इत्यादि मंत्रांकर्के पात्रविषें स्थापनकरे ॥ और यदेवा इत्यादि मंत्रांकर्के अपणे विषें हवनकरे क्या पानकरे अन्य पुरुषांके अर्थवास्ते त्रय रात्रा पीवे और जिसने पाप कीता है सो छे६ रात्र पीवे तो शुद्ध होताहै और महापापी सतरात्रपर्यंतपीवे और बारा१२रात्रपर्यंत पीपेकर्के संपूर्ण पापसूं शुद्ध होताहै ॥ और गोमयसें क्या गोहेतें निकाले जो यव हैं तिन्हांको इकी दिन पर्यंत पीवे कर्के गणांको देखताहै और गणाधिपतिका दर्शन करताहै और विद्याकों देखताहै और विद्याके पतिकों देखताहै और स्मृति कहतेहैं पूर्णायामिति जो पुरुष गोमूत्र विषे पकेहोये यवांकों वा गोमूत्र और गोमय और दधि और दुग्ध और घृतइनांकों पान कर्ताहै सो

नमोरुद्रायभूताधिपतयेद्यौःसावित्रीमानस्तोकेति पात्रेनिषिच्ययद्देवानमो यातामनोजवाः सुदक्षोदहंपितरस्तेनःपांतुतेनोवंतुतेभ्योनमस्तेभ्यः स्वाहे त्यात्मनिजुहुयात् । त्रिरात्रमेवार्थीपापकृत् षड्रात्रंपीत्वापूतोभवतिसप्तरात्रं महापातकीद्वादशरात्रंपीत्वासर्वंम्पुरुषकृतंपापंनिर्दहति निःसृतानांयवाना मेकविंशतिरात्रंपीत्वागणान्पश्यति गणाधिपतिंपश्यति विद्यांपश्यतिवि द्याधिपतिंपश्यति । पूर्णायांयावकंपक्कंगोमूत्रंवासकृद्दधिक्षीरंसर्पिःप्रगेभु क्त्वामुच्यतेसोंहसःक्षणादित्याह भगवान् मैत्रावरुणिरिति । अर्थीलौकि ककार्य्यसाधकःत्रिरात्रमेवपिवेत् ॥ पापकृत्षड्रात्रमितिसंवन्धः ॥ ॥ अथब्रह्मकूर्चव्रतमाहजावालः ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापौर्णमास्यांविशेष तः ॥ पंचगव्यंपिवेत्प्रातर्ब्रह्मकूर्चविधिःस्मृतः ॥ १ ॥ यथाह पराशरः ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् ॥ निर्दिष्टंपंचगव्यंतुप्रत्येकंकाय शोधनम् । १

क्षणसें हिपापतें रहित होताहे ऐसें भगवान् मैत्रावरुणि कहते भये एह अर्थ स्पष्ट कर्के किहाहे अर्थीति लौकिककार्य्य करणे वालेकानाम अर्थीहै ॥ ० ॥ इसतें अनंतर ब्रह्मकूर्च व्रतकों जाबालऋषि कहताहै एक दिन रात्र उपवास करे चाहे किसे दिनहोवे परंतु पूर्णमासी विषें विशेष कर्के कहाहै प्रातःकाल विषें पंचगव्य पानकरे एहब्रह्म कूर्चकी विधि कहीहै १ ॥ जैसें पराशर कहता भया गोविति गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत कुशोदक एह पंच गव्य कहाहै एक एकगोमूत्र आदि देहके शुद्धकरणे वाले कहेहैं ॥ १ ॥

इसमें विशेष कहतेहैं गविति तांबे की न्याईं है वर्ण जिसका ऐसी गौका गोमूत्र ग्रहण करे और श्वेत वर्ण वाली गौका गोमय ग्रहण करे और सुवर्ण की न्याईं वर्णवाली गौका दुग्ध और नीलवर्ण गौका दधि ॥ २ ॥ और कृष्णवर्ण गौका घृत जेकर पूर्वोक्त रंगा वालियां गौयां न प्राप्तहोवें तां कपिलागौका हि संपूर्ण ग्रहण करे पंचगव्यविषे एहविधिहै ॥ ३ ॥ अब पंचगव्यका परिमाणहै गविति गोहेतें दूणा गोमूत्र और चारगुणा घृत और अठगुणा दुग्ध और तैसे अठगुणा दधि पंचगव्यविषे एहपरिमाणहै ॥ ४ ॥ इत्यं जगा एह प्राचीनोंका मत किहाहै ॥ अब नवीनोंका मत दिखाईदा है गविति गोमूत्र

गोमूत्रंताम्रवर्णायाः श्वेतायाश्चापिगोमयम् पयःकांचनवर्णायानीला याश्चतथादधि ॥ २ ॥ घृतंचकृष्णवर्णायाःसर्वंकापिलमेववा अला भेसर्ववर्णानांपंचगव्येष्वयंविधिः ॥ ३ ॥ पंचगव्यपरिमाणंतु ॥ गो शकृद्द्विगुणंमूत्रंघृतंविद्याच्चतुर्गुणम् क्षीरमष्टगुणंप्रोक्तंपंचगव्येतथादधि ॥ ४ ॥ तथाष्टगुणमितिप्रांचः ॥ गोमूत्रमाषकास्त्वष्टौगोमयस्यतुषोडश क्षीरस्यद्वादशप्रोक्तादध्नस्तुदशकीर्तिताः ॥ ५ ॥ गोमूत्रवद्घृतस्याष्टौतद र्द्धंतुकुशोदकम् अर्वाचीनैश्चऋषिभिःपरिमाणमुदाहृतम् ॥ ६ ॥ गायत्र्यादायगोमूत्रंगन्धद्वारेतिगोमयम् आप्यायस्वेतिचक्षीरंदधिक्रा व्णेतिवैदधि ॥ ७ ॥

विषे अठ ८ मासे परिमाण और गोहा सोलां मापपरिमाण और दुग्धबारां १२ मासे परिमाण और दधिदश १० मासेपरिमाण ॥ ५ ॥ और गोमूत्रकी न्याईं घृतका भी अठ ८ मासे परि माण और तिसतें अद्धकथा चार४मासे कुशाका जल इहां मापकहणं करके मासयांका ग्रहणहै ॥ ६ ॥ अब इनके मंत्रोंको कहते हैं गायेति गायत्री मंत्र करके गोमूत्रको ग्रहणकरे और गंध द्वारा इस मंत्र करके गोमयको ग्रहणकरे और आप्यायस्व इस मंत्र करके दुग्धको ग्रहण करे और दधि क्राव्णा इस मंत्रकरके दधिको ग्रहण करे ७ ॥

तदेषो और तेजोसिशुक्र इस मंत्र करके घृतको ग्रहण करे और देवस्यत्वा इस मंत्र करके कुशाके जलकू ग्रहण करे इस रीतिसें ऋचा करके पवित्र जो पंचगव्य है तिसको अग्नि विषे हवन करे ॥ ८ ॥ सातहैं पत्र जिनांके और नहि छेदया है अग्र जिनां का और तोतेकी न्याईहैं वर्ण जिनांका ऐसीयां कुशा करके जैसे विधिहै तैसे पंचगव्यका हवन करे ॥ ९ ॥ और इरावती इदं विष्णु मानस्तोकेतिशंवती एनां चार ऋचा करके हवनकरणे योग्यहै और हवनकेशेषकू पिच्छों ब्राह्मण पीवे ॥ १० ॥ और ॐकारकरके पंचगव्यविषे अंगुष्ट और अनामिकाकों फेरे और ॐकारकों पढकर्के शुद्धकरे और ॐकार मंत्र के उच्चारण करके

तेजोसिशुक्रमित्याज्यंदेवस्यत्वाकुशोदकम् पंचगव्यमृचापूतंहोमयेदग्नि सन्निधौ ॥ ८ ॥ सप्तपत्राश्चयेदर्भाअच्छिन्नाग्राःशुकत्विषः एतैरुद्धृत्यहोतव्यंपंचगव्यंयथाविधि ॥ ९ ॥ इरावतीइदंविष्णुर्मानस्तोकेतिशंवती एताभिश्चैवहोतव्यंहुतशेषंपिबेद्द्विजः ॥ १० ॥ प्रणवेनसमालोड्यप्रणवेनाभिमंत्र्यच प्रणवेनसमुद्धृत्यपिबेत्तत्प्रणवेनतु ॥ ११ ॥ मध्यमेनपलाशस्यपद्मपत्रेणवापिबेत् स्वर्णपात्रेणताम्रेणब्रह्मतीर्थेनवापुनः ॥ १२ ॥ यत्त्वगस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिमामकम् ब्रह्मकूर्चोपवासस्तुदहत्यग्निरिवेन्धनमिति ॥ १३ ॥ इदंपंचगव्यपरिमाणाविहितायतृतीयप्रकरणयोरुक्तमपिप्रसंगादत्राप्युक्तमिति न पौनरुक्त्यम्

अंगुष्ट और तर्जनीके साथ त्रयवार उद्धरणागे क्या उपरले पासे सुद्ध और ॐकार करके पीवे ११ ॥ पलाशके मध्यम पत्रकर्के वा कमलपत्रकर्के वा सुवर्णके पात्रकर्के अथवा तांबके पात्र कर्के वा ब्रह्मतीर्थ कर्के पंचगव्यकों पीवे ॥ १२ ॥ अब प्रार्थनाकरतेहैं यदिति जो पाप मेरेत्वा अस्थियांविषे स्थितहै और देहविषे स्थितहै तिसको यह ब्रह्म कूर्च उपवास व्रत दाह करे जैसे अग्नि काष्टकों दाहकर्ताहै १३ ॥ एह पंचगव्य परिमाणदूसरे तीसरे प्रकरणविषे कहाहोयाभीथा तथापि इस स्थान प्रसंगतें कहाहै पुनरुक्ति दोष नहि जानणा ॥

यदेति जद फेर एह पंचगव्य मिल्या होया त्रय रात्रां विषे पींवें तां तिस ऋषिनें व्रत का नाम यतिसांतपन कहाहै इस शंख जीके स्मरणतेंहे ॥ जाबालनेतो फेर सप्त ७ दिनांका सांतपन व्रत कहा है गवितिं गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशोदक इनांमेसें दिन दिन विषे क्रम कर्कें एक एकका पान कर्कें दिन रात्रउपवास करे तां इसका नाम कृच्छ्र सांतपन कहाहै एह संपूर्ण पापांके नाश करणे वालाहै ॥ १ ॥ इनां गुरु लघुकृच्छ्र व्रतोंकी व्यवस्था सामर्थ्यकों देखके जानणे योग्यहै । ऐसे आगेभी व्यवस्था

यदा त्वेतदेवपंचगव्यमिश्रितंत्रिरात्रमभ्यस्यते तदा यतिसांतपनसंज्ञां ल भते एतदेवत्र्यहाभ्यस्तंयतिसांतपनंस्मृतमिति शंखस्मरणात् ॥ जावाले नतु सप्ताहसाध्यंसांतपनमुक्तम् गोमूत्रगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकैकंप्रत्यहंपीत्वात्वहोरात्रमभोजनम् कृच्छ्रंसांतपनंनामसर्वपापप्रणाश नमिति १ ॥ एषांच गुरुलघुकृच्छ्राणां शक्त्याद्यपेक्षया व्यवस्था विज्ञेया एवमुत्तरत्रापिव्यवस्थावोद्धव्येति ॥ ❀ अथचांद्रायणं वक्तुंतावत्तस्यकार्य्य विशेषोपयोगिता प्रदर्श्यते तत्र याज्ञवल्क्यः ॥ अनादिष्टेषुपापेषुशुद्धिश्चां द्रायणेनतु धर्मार्थंयश्चरेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकतामिति ॥ १ ॥ तथाचषट् त्रिंशन्मतेऽभिहितम् यानिकानिचपापानिगुरोर्गुरुतराणिच कृच्छ्राति कृच्छ्रचांद्रैस्तुशोध्यन्तेमनुरब्रवीदिति ॥ १ ॥

जानणे योग्यहै ❀ इसतें अनंतर चांद्रायणव्रतकथन करणे तां आदविषे तिस चांद्रायणके कार्य विषें उपयोगिता दखाईदीहै तिस विषे याज्ञवल्क्यजीका वचन हे अनेति अनादिष्ट पापांके होयां २ चांद्रायण व्रत कर्कें शुद्धि कहीहै जो धर्मके वास्ते चांद्रायणकों करताहै सो चंद्रमाके लोककों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ तिसें षट् त्रिंशन्मत विषे कहाहै येति जो कुछक पापहैं वडे तों वडे सों कृच्छ्र और चांद्रायण व्रत कर्कें शुद्ध होतेहैं एह मनुजी कहते भये ॥ १ ॥

अत्रैवि इहां कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण इन तीन व्रतोंकाहि करणा कहाहै और शुक्रजी नेंदोनोंका समुच्चयकहाहै तिसकोकहतेहैं दुरीति दुरित जो उपपातकहै और दुरिष्ट जो पातकहै इनके और महापापोंके और चपुनःसंपूर्ण पापोंके नाश करणेवाले कृच्छ्र चांद्रायणव्रत कहेहैं १ गौतमजीने कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र एह दोनोंव्रत चांद्रायणकेतुल्यहैं ऐसाकिहाहै संपूर्णप्रायश्चित्त के संक्षेपकर्के करणेविषे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतके करणेविषे चांद्रायण व्रतकी निरपेक्षताहै क्या कुछ इच्छानहि सूचनकीहै ॥ अथवा इतिशब्दकर्के तीनोंकाहि समुच्चय जानणा(वा समुच्चय इतिको षः द्वित्र्यादीनां राशो परस्पर निरपेक्षाणामेकास्मिन्क्रियादा वन्वयः यथा देवदत्तो यज्ञदत्तश्च

अत्र त्रयाणांसमुच्चयःप्रतिपादितः उशनसाच द्वयोःसमुच्चयउक्तः ॥ दुरितानांदुरिष्टानांपापानांमहतामपि कृच्छ्रंचान्द्रायणंचैवसर्वपापप्रणाशनमिति १ ॥ दुरितमुपपातकम् ॥ दुरिष्टंपातकम् ॥ गौतमेनतु ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौचान्द्रायणमिति सर्वप्रायश्चित्तसमासकरणेनैन्दवनिरपेक्षता कृच्छ्रातिकृच्छ्रयोःसूचिता ॥ चान्द्रायणस्य तन्निरपेक्षता ॥ इतिशब्देन त्रयाणांसमुच्चयोवाकेवलप्राजापत्यस्यतुनैरपेक्ष्यं चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम् ॥ लघुदोषेत्वनादिष्टेप्राजापत्यंसमाचरेदिति॥ गौतमेनापि प्राजापत्यनैरपेक्ष्यमुक्तम् प्रथमंचरित्वाशुचिःपूतः कर्मण्योभवति द्वितीयंचरित्वा यदन्यन्महापातकेभ्यः पापंकुरुते तस्मान्मुच्यते तृतीयंचरित्वा सर्वस्मादेनसोमुच्यत इतिमहापातकादपीत्यभिप्रेतम् ॥

गच्छतीति) जैसे देवदत्त और यज्ञदत्तका आपसविषे निरपेक्षता कर्के एक गमन विषे अन्वयहै तैसेंहि तीनोंकी आपसविषे निरपेक्षता कर्के पापके दूरकरणे विषे अन्वयहै ॥ केवल प्राजापत्यकों दूसरेकी नैरपेक्षता चतुर्विंशति मतविषे कहीहै सो कहतेहां लघ्विति जिसका थोडादोषहै ऐसा जो अनादिष्टपापहै तिसविषे प्राजापत्यकोंकरे ॥ गौतमजीनेभी प्राजापत्य नैरपेक्ष्यकहाहै ॥ एक प्राजापत्य करणेकर्के देह और अंतष्करणकी शुद्धि और कर्म करणेकी योग्यता वाला होताहै ॥ और दूसरी बार करणे कर्के महापापातें जो अन्यपापहैं तिनांते शुद्ध होताहै ॥ और तीसरेके करणे कर्के संपूर्ण पापतें रहित होताहै महापापतेभी एह अभिप्रायहै

मनुंभी कहाहै पेति पराकनाम कर्के जो एह कृच्छ्है सो संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला कहाहै ॥ हारीतऋषिनेंभी कहाहै चांद्रेति चांद्रायणव्रत और पराकव्रत और तुलापुरुष दान और गौयांको घास चुगाणा वनविषे पीछे जाणा एह चार संपूर्ण पापांके नाश करणे वाले कहेहैं १ ॥ तैसें गोमूत्र और गोमय और दुग्ध और दधि और घृत और कुशोदकइनांको भक्षणकर्के उपवास व्रतको करे एह व्रत पापकर्के चांडाल तुल्यको भी शुद्ध कर्ताहै २ ॥ ● इसतें अनंतर चांद्रायण व्रतका प्रकारहै ॥ तिसविषे मनुजीका वाक्यहै अयिति एक एक ग्रासनूं कृष्णपक्षविषे घटावे और शुक्लपक्ष विषे वधावे कृष्णपक्षकी एकमते लेके शुक्लपक्षकी पूर्णमासी तक व्रत करे और त्रयकालस्नान करे एह चांद्रायणव्रतकी विधिहै ॥ १ ॥ अव याज्ञवल्क्यजीकावचनहै

मनुनाप्युक्तम् ॥ पराकोनामकृच्छ्रोयंसर्वपापप्रणोदनइति ॥ हारीतेनाप्युक्तम् ॥ चान्द्रायणंपराकश्चतुलापुरुषएववा गवांचैवानुगमनंसर्वपापप्रणाशनम् १ ॥ तथा गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेत् २ ● अथचान्द्रायणव्रतप्रकारः ॥ तत्रमनुः ॥ एकैकंह्रासयेत्पिंडंकृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत् उपस्पृशंस्त्रिषवणमेतच्चान्द्रायणंस्मृतम् १ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ तिथिवृद्ध्याचरेत्पिंडान्शुक्लेशिख्यंडसंमितान् एकैकंह्रासयेत्कृष्णेपिंडंचान्द्रायणंचरन् ॥ १ ॥ वशिष्ठः ॥ एकैकंवर्द्धयेत्पिंडंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् इन्दुक्षयेनभुंजीतएषचान्द्रायणोविधिरिति ॥ १ ॥ चन्द्रस्यायनमिवायनंचरणंयस्मिन्कर्मणिह्रासवृद्धिभ्यां तच्चान्द्रायणम् संज्ञायांदीर्घः । यमः वर्द्धयेत्पिंडमेकैकंशुक्लेकृष्णेचह्रासयेत् एतच्चान्द्रायणं नामयवमध्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ १ ॥

तिथ्येति शुक्लपक्षविषे जैसे एकम और द्वितीयानें आदलेके तिथीयांकी वृद्धि होतीहै तैसे मोरके आंडे प्रमाण ग्रासांकी वृद्धि करे और कृष्णपक्ष विषे ग्रासांको घटावे और अमावस्याविषे उपवासकरे चांद्रायण व्रतको कर्ताहोया १ ॥ वसिष्ठजीके वाक्यकाभी एहि अर्थहै ॥ चांद्रायण शब्दका अर्थ कहतेहां कि चंद्रमा जैसें शुक्लपक्षविषे किरणां कर्के वृद्ध होताहै और कृष्ण पक्ष विषे किरणांके कम होणे कर्के कम होताहै असे ग्रासां कर्के वधाणा और घटाणा तिस विषे चांद्रायण कहाहै संज्ञा होणें कर्के चकारको दीर्घ होया यमनें ॥ १ ॥ इसीका नाम यवमध्यचांद्रायण कहाहै एहि कहतेहैं वर्द्धयेदिति ॥ १ ॥

अब पराशरजीकावाक्यहै यवेति यवमध्यकृच्छ्रके स्वरूपकों कहतेहां जिसके करणेकर्के पापोंपुरुष संपूर्णपापोंतें रहित होताहै इसविषे संशयनहिंहै ॥ १ ॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदातें लेके व्रतकरणे वा लापुरुष नियमकरेप्रातःकालउठकर दातनकोंकर्के जैसेआचारहै तैसें स्नानकरे ॥ २ ॥ और दो शुद्धवस्त्र धारणकरे और नित्यकर्मकोंसमाप्तकर्के सूर्यकेअस्ततकमौनधारके गायत्रीकाजपकरे। ३। और तिसी समय गंध पुष्प आदिकां कर्के विष्णुकी पूजा करे और मयूरके आंडे परिमाण ग्रासकों कर्के । ४ । विष्णुत्राई नैवेद्यदेकर्के भक्षणकरे एकवार भक्षण करणाविषे असमर्थहोवेतां दो भाग

पराशरः। यवमध्यस्यकृच्छ्रस्यस्वरूपंप्रवदाम्यहम् यत्कृत्वासर्वपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ १ ॥ शुक्लप्रतिपदारभ्यव्रतीनियमपूर्वकम् प्रातःस्नात्वा यथाचारंदंतधावनपूर्वकम् ॥ २ ॥ तथावस्त्रेपरीधायनित्यकर्मसमाप्यच जपेत्तावन्महामौनीयावन्मंद्रायतेरविः ॥ ३ ॥ तदाहरिंसमाराध्यगन्धपुष्पादिभिःशनैः मयूराण्डप्रमाणेनग्रासंकृत्वाकृतीतथा ॥ ४ ॥ विष्णवेतन्निवेद्याशुतंग्रासंभक्षयेत्ततः एकवारमशक्तत्वाद्द्विधाकृत्वैवभक्षयेत् ॥ ५ ॥ उत्तरापोशानंकृत्वाबहिर्जरण्धाथवाग्यतः प्रक्षाल्यपाणीतोयेनगंडूषैर्द्वादशात्मकैः ॥ ६ ॥ पादौप्रक्षाल्यचाचम्यपुनर्गत्वास्वमालयम् स्वयमेवपुनःकृत्वाशुद्धंगोमयवारिभिः ॥ ७ ॥ पुनःप्रक्षाल्यतंपाणिंदेवंनत्वाथसंविशेत् पापंडादीन्नपश्येतनसंभाषेत्कदाचन ॥ ८ ॥ सायंसन्ध्यामुपासीतत्वासायंहोममाचरेत् ॥

कर्के भक्षणकरे ॥ ५ ॥ देवस्थानतें बाहरजाकर अमृतोपस्तरणमसि इसकर्के आचमनकरके ग्रासको भक्षणकर्के अपृतापिधानमसि इसकर्के आचमनकरे और मौनधारकरहथांको शुद्धकर्के जलकर्के मुखकी शुद्धिवास्ते बारां १२ चुलीयांकरे ॥ ६ ॥ फेर पादांको जलकर्के शुद्धकर और आचमन करे पीछे अपणे स्थानको प्राप्तहोकर गोमय और जलकर्के स्थानको शुद्धकरे ॥ ७ ॥ फेर हथांकोधोके देवताको नमस्कार करे पाषंडियांको न देखे और तिनके साथ संभाषणकदाभी ॥ न करे ८ ॥ और सायंकाल संध्या उपासे और पीछे सायंकाल तक होम करे ॥

नियतकर्केहै व्रत जिसका सो पुरुष देवताके समीप स्थंडिलमे शयन करे ॥ ९ ॥ फेर प्रातः समय दूसरे दिन उठके स्नानकरे और पूर्वकी न्यांई नियमको करके ग्रासको भक्षण करे एक एक ग्रास वधायके ॥ १० ॥ बुद्धिमान् दिन दिन विषे एक एक ग्रासकी वृद्धिकरे पूर्णमासी तक दिव्य जो ग्रासहैं अर्थात् मंत्रकरके शुद्धहैं ॥ ११ ॥ और पूर्णमासीविषे पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे और क्रमसें कृष्ण पक्षविषे एक एक ग्रासको घटावे हर्षकरके ॥ १२ ॥ पूर्वकीन्यांई एक मास पर्यंत स्थित होवे तां मासके अंत विषे एक ग्रासको भक्षण करे परमेश्वरके ध्यान विषे युक्त

स्वपेच्चस्थंडिलेदेवसमीपेनियतव्रती ॥ ९ ॥ ततःप्रातःसमुत्थायपरेद्युःस्नानमादिशेत् पूर्ववन्नियमंकृत्वाभक्षयेदेकवृद्धितः ॥ १० ॥ एकोत्तरतयाराजन्वृद्ध्याप्रतिदिनंबुधः भक्षयेत्कवलान्दिव्यान्यावत्पौर्णिमादिनम् ॥ ११ ॥ दशपंचैवकवलान्भुक्त्वातत्रव्रतेक्रमात् एकैकंह्रासयेद्ग्रासं कृष्णपक्षेव्रतीमुदा ॥ १२ ॥ पूर्ववन्नियमंकृत्वामासंयावत्प्रवर्त्तते तत्रापि भक्षयेदेकंहरिध्यानपरायणः ॥ १३ ॥ व्रतांतेगौःप्रदातव्याव्रतस्यपरिपूर्त्तये पंचगव्यंपिबेत्पश्चाद्यवमध्यमुदाहृतम् ॥ १४ ॥ एतदाचरणेनैवब्रह्महत्यांव्यपोहति इतराणिचपापानिनश्यंतीतिकिमद्भुतम् १५ ॥ देवलः ॥ अन्नमात्रतृतीयांशैस्तण्डुलैःपाचयेद्धविः तावदन्नंमयूराण्डमितिसन्तोवदंतिहि ॥ १ ॥ अन्नमात्रंसार्द्धमुष्टिद्वयमितंततृतीयांशैरित्यर्थः

होवा होवा १३ और व्रतके अंत विषे पूर्ण फलकी प्राप्ति वास्ते एक गौका दान करे और पीछे पंचगव्यको पानकरे एह यव मध्य चांद्रायण व्रत कहाहै ॥ १४ ॥ इसके करणे करकेहि ब्रह्महत्यादिपापांको दूरकरताहै इतरपापांके दूरकरणेविषे क्या आश्चर्यहै ॥ १५ ॥ देवलजीकावाक्य है अन्नेति हाई २॥ मुठ चावलांका जो तीसरा भागहै तिस करके बुक दुग्धको पकावे तितने प्रमाण अन्नको मोरके आंडेके तुल्य बुद्धिमान् कहतेहैं १ ॥

इतीति ऐसे यवमध्य पवित्रचांद्रायण व्रतकों करके पुरुष तिसी क्षणतें ब्रह्महत्यादि पापतेंरहित होताहै ॥ २ ॥ इस यवमध्य चांद्रायणव्रतकरणेकों जो प्रारंभकर्त्ताहै तिसके पापनष्ट होतेहैं और जो कोई इसव्रतको करचुकाहै उसकी क्या बात कहणीहै । ३ । विष्णुकी प्रीतिके करणे वालाहै और स्त्रीयां और विधवा और यती और ब्रह्मचारी ॥ ४ ॥ और गृहस्थीहुनांके महापापांके नाशक रणेवाला विशेषकर्के एहकहाहै चंद्रमाकी वृद्धि और क्षय किरणाकर्के जैसे होताहै तिसकी न्याई वृद्धि और क्षय चांद्रायणव्रतका ग्रासोंकरके जानणा जदशुक्ल पक्षसें प्रारंभ होवे तां यवमध्यहै एहअर्थहै चंद्रमाकीन्याईं वृद्धिक्षयहोणेतें इस यवकृच्छ्रका नाम यवमध्य चांद्रायण कहाहै धर्मरा

इतिचांद्रायणंकृत्वायवमध्यंसुपावनम् ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुक्तोभवतितत्‌-
क्षणात् ॥ २ ॥ यवमध्यामिदंचान्द्रंकर्त्तुंयस्तदुपक्रमेत् ॥ तस्यपापा
निनश्यन्तिकिंपुनर्व्रतचारिणः ॥ ३ ॥ विष्णुप्रियकरंचैवसर्वपापप्रणाश
नम् नारीणांविधवानांचयतीनांब्रह्मचारिणाम् ४ गृहस्थानांविशेषे
णमहापातकनाशकम् वृद्धिःक्षयश्चचन्द्रस्यवर्त्ततेतद्वदिदमपि एतद्व्रतना
मधेयचांद्रस्य शुक्लपक्षेवृद्धिः कृष्णपक्षेक्षयस्तन्नामधेय एष यवकृच्छ्रःएत
श्चयववत्प्रांतयोरणीयः मध्येस्थवीयइतियवमध्यमितिकथ्यते एतदेवव्रतं
यदाकृष्णपक्षप्रतिपदिप्रक्रम्यपूर्वोक्तक्रमेणानुष्ठीयते तदापिपीलिकामध्य
मितिकथ्यते ॥ यमः ॥ एकैकंह्रासयेत्पिंडकृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत् एतत्पि
पीलिकामध्यंचान्द्रायणमुदाहृतम् ॥ १ ॥

जका वाक्यहै अर्थिति कृष्णपक्षविषें पूर्वग्रासांकों घटावे और पीछेशुक्लपक्षविषे वृद्धिकरे इसका नाम पिपीलिका मध्य चांद्रायंण कहाहै १ जैसे कीटीका मध्य सूक्ष्महोताहै तैसेहि इसव्रतकाभी मध्य सूक्ष्महै क्या अमावास्याके दिन कुछभोजन नहि सो व्रतकामध्य दिनहै और जैसे यवमध्य विषें स्थूलहै दोनोंपासयां विषे सूक्ष्महै इसप्रकार मध्यविषें स्थूलहोणेतें तिसका नाम यवमध्य चांद्रायणहै अर्थात् पूर्णिमाके दिन १५ पंदराग्रासका भोजन है सो व्रतका मध्य है एहि व्रत कृष्णपक्षकी १ एकमते ग्रहणकरिये तां तिसका नाम पिपीलिकामध्यहै १ ॥

तथाहि पूर्वोक्तकहा जो क्रम तिसकर्के कृष्णपक्षकी प्रतिपदाविषे चौदां १४ ग्रासांकों भक्षणकरे एकएक ग्रासघटावे चतुर्दशीतक तां चतुर्दशीविषे एक ग्रास रिहा तिसको भक्षणकरे और अमा वास्याविषे उपवास करे और शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे एकाहि ग्रास भक्षण करे तिसते पीछे एकएक ग्रासकों वधावे पक्षके अंतविषे जो दिनहै पूर्णमासी तिसविषे पंदरां १५ग्रास भक्षणकरे ऐसे पिपीलिकामध्य युक्तहै ॥ अब वसिष्ठजीकावचनहै मेति मासविषे कृष्णपक्षके आदविषे चौदां १४ ग्रासांकों भक्षणकरे आगे दिनदिनविषे घटावे और पक्षके अंतविषे उपवासकरे ॥ १ ॥

तथाहि पूर्वोक्तक्रमेण कृष्णपक्षप्रतिपदि चतुर्दश ग्रासान्भुक्त्वा एकैक ग्रासापचयेनचतुर्दशीयावद्भुंजीत ततश्चतुर्दश्यामेकंग्रासंग्रासित्वा अमा वास्यायामुपोष्य शुक्लप्रतिपदिएकमेवग्रासंप्राश्नीयात् ततएकोपचयभोज नेन पक्षशेषेनिर्वर्त्यमानेपौर्णमास्यांपंचदशग्रासाःसंपाद्यंतइति युक्तैव पि पीलिकामध्यता । वशिष्ठः मासस्यकृष्णपक्षादौग्रासानद्याच्चतुर्दश ग्रासा ऽपचयभोजीसन् पक्षशेषंसमापयेत्॥ १ ॥ तथैवशुक्लपक्षादौग्रासंभुंजी तचापरम् ग्रासोपचयभोजीसन्पक्षशेषंसमापयेत् ॥ २ ॥ यदात्वेकस्मिन्प क्षेतिथिवृद्धिह्रासवशाद्दिनानिषोडश भवन्ति चतुर्दश वा तदा ग्रासानाम पिवृद्धिह्रासौज्ञातव्यौ तिथिवृद्ध्यापिंडांश्चरेदितिनियमात् ॥ चान्द्रायणा न्तरमाह याज्ञवल्क्यः ॥ यथाकथंचित्पिंडानांचत्वारिंशच्छतद्वयम् मासेनै वोपभुंजीतचान्द्रायणमथापरम् ॥ १ ॥

ऐसे शुक्लपक्षके आदविषें एकग्रासकों भक्षणकरे आगे दिनदिन विषें ग्रासकों वधावे ऐसे समाप्त करे । २ । जदपक्षविषे सोलां १६ तिथियां होण वा चौदां १४ होण तां ग्रासांकोभी वधावै घटावे इसवे वचनकहाहै तिथिके वृद्धि क्रमकर्के ग्रासांकों भक्षणकरे इसानियमते जानणा ॥ और भीचांद्रायणका भेदहै तिसकों याज्ञवल्क्यकहताहै यथेति जिसकिसे तरह अर्थात् मध्यान्ह कालविषे नित्य आठ ८ ग्रास भक्षण करे अथवा चार ग्रास दिन विषे और चार रात्रिविषे भक्षणकरे ऐसे एक मासकर्के दोसउचाली २४० ग्रासभक्षणकरे एहचांद्रायणका भेद कहाहै १

अथैते एक दिनविषे चारग्रासांकों और दूसरे दिनचार्ह १२ ग्रासांकों भक्षणकरे तैसें एक रात्र उपवासकरे और दूसरे दिन सोळा ग्रास भक्षणकरे इत्यादि प्रकारांविषे किसे प्रकारकर्के अपनी सामर्थ्यतेंकरे एह पूर्व कथनकीते जो दो चांद्रायण तिसतें एह भिन्नचांद्रायणकहाहै॥इसकारणतें इनदोनों विषे ग्रासांकी संख्याका दोसउ चाळी २४०एहनियमनाहि क्यानियमहे दो सउ पंजी १२५ग्रासहैं सो कहतेहैं शुक्लेति शुक्ल प्रतिपदातें लेकर पूर्णिमा पर्य्यंत एक एक वृद्धि कर्के एक सो वीस १२० ग्रासहैं कृष्णपक्षकी प्रतिपदासें लेकर चतुर्दशीतक एक एक ग्रासकें ह्रासकर्के

पिंडानांचत्वारिंशदधिकंशतद्वयंमासेनभुंजीत ॥ यथाकथंचित्प्रतिदिनंम ध्याह्नेष्टौग्रासान्नयथानक्तंदिनयोश्चतुरश्चतुरोवा ॥ अथैकस्मिंश्चतुरोऽपर स्मिन्द्वादशतथैकरात्रमुपोष्यापरस्मिन्षोडशेत्यादिप्रकाराणामन्यतमेम शक्त्याद्यपेक्षयाभुंजीतेत्येतत्पूर्वोक्तचान्द्रायणद्वयादपरंचान्द्रायणम् अत स्तयोर्नेयंग्राससंख्यानियमःकिंतुपंचविंशत्याधिकशतद्वयसंख्यैव॥तद्यथा शुक्लप्रतिपदमारभ्यपूर्णिमापर्य्यन्तमेकैकवृद्ध्या १२० ग्रासाः॥कृष्ण प्रतिपदमारभ्यचतुर्दशी १४ प्रभृत्येकैकग्रासह्रासेन १०५ ग्रासाभवंती त्यनयारीत्या २२५ मनुरप्याह ॥ अष्टावष्टौसमश्नीयात्पिंडान्मध्य दिनेस्थिते नियतात्माहविष्याशीयतिचान्द्रायणंपरम्॥ १ ॥ यतिचान्द्रा यणमितिसंज्ञामात्रम् ॥ तेन न यतिमात्रस्यैवाधिकारःकिन्तुसर्वेषाम् ॥

एक सउपांचग्रास १०५ हुए इसरीति कर्के दो सौ पंचीस २२५ ग्रासहैं ॥ मनुजीभी कहतेहैं अष्टाविति मध्याह्नदिन विषे अठ अठ ग्रासभक्षणकरे मनकों एकाग्र करे परंतु हविष्यकों भक्षण करे एह यता श्रेष्ठ यति चांद्रायणहै ॥ १ ॥ परन्तु यति चांद्रायण केवल इसका नामहिहै ति सकों यातेचांद्रायणनाम होयाँ कर्के केवल यतिकों हि नहि अधिकर किंतु संपूर्णोंकोंहि अधिकारहै

तैसेंही कहतेहैं चेति चार ४ ग्रासां नूं प्रातः कहणे कर्के दिनविषे भक्षणकरे इंद्रियांकों विषयांतें रोकर्के स्थितरहे ब्राह्मण और चारग्रास रात्रिविषे भक्षणकरे एक मासतक ऐसे नियमकरे तिसका नाम शिशुचांद्रायणहै ॥ १ ॥ इस व्रत विषे भी संपूर्णांका अधिकारहै केवल बालकका नहि इसीको स्पष्ट कर्के कहतेहैं यथेति जिसाकिसे तरह हविष्य अन्न के चौसठवाली २४० ग्रास भक्षण करे एक मासपर्यंत तां चंद्रके लोककों प्राप्तहो

ताहै २ ॥ तैसे चौसठचाली २४० ग्रासतें घट ग्रासांकेभक्षण करणे विषें औरहि चांद्रायणकहाहै ॥ अथऋषिचांद्रायणको कहतेहैं तिसविषे यमजीका वाक्यहै त्रीनिति दृढ है व्रत जिसका

तथाच चतुरःप्रातरश्नीयात्पिंडान्विप्रःसमाहितः चतुरोस्तमयेसूर्य्येशिशु चान्द्रायणंचरन् ॥ १ ॥ अत्रापिचसर्वेषामधिकारोःन शिशुमात्रस्य ॥ यथाकथंचित्पिडानांतिस्रोशीतीःसमाहितः मासेनाश्नन्हविष्यान्नंचन्द्रस्ये तिसलोकताम् ॥ २ ॥ तथाच चत्वारिंशच्छतद्वयन्यूनसंख्याग्राससंपा दस्यापिसंग्रहार्थमपरग्रहणम् ● अथऋषिचान्द्रायणम् ॥ तत्रयमः ॥ त्रीं स्त्रीन्पिंडान्समश्नीयान्नियतात्मादृढव्रतः हविष्यान्नस्यवैमासमृषिचान्द्राय णंस्मृतमिति ॥ १ ॥ एषुच यतिचान्द्रायणप्रभृतिषु न चन्द्रगत्यनुसरणमपे क्षितम् ॥ अतास्त्रिंशद्दिनात्मकं साधारणेन मासेन नैरंतर्येण चान्द्रायणानु ष्ठाने यदि कथंचित्तिथिवृद्धिह्रासवशात् पंचम्यादिष्वारंभोभवति तथापि न दोषः ॥

और निश्चलहै मन जिसका सो पुरुष हविष्य अन्नके त्रय३ग्रासदिने और त्रयग्रास रात्रि विषे भक्षण करे एकमास पर्यंत तां तिसका नाम ऋषिचांद्रायणकहाहै ॥ १ ॥ एह जो यतिचांद्रायणतें आदि लेके व्रत हैं तिनां विषे चंद्रमाकी गति कर्के शुक्ल कृष्ण पक्षका नियम नहि इसकहणेतें तीहां ३० दिनांका ग्रहणहै साधारण एक मास निरंतर चांद्रायणविषे जानणा ॥ जेकर कदी एकम आदि तिथितें पीछें वा आगें पंचमी आदि तिथि डोहि हैं इस विषे प्रारंभ करे तद करणेका भी नहिदोष तीह दिन ३० का सावन नाम कर्के मास पूर्णकरे ॥

● इससे अनंतर चांद्रायण व्रतकी विधिहै कृच्छ्र व्रत विषे मुंडनको करवाके व्रतको करे दूसरे दिन पूर्णमासी विषे उपवास करे और आप्यायस्वसमेत पयांसि नमो मम इति इना मंत्रों करके तर्पण और आज्य होम और हविको अभिमंत्रण करणा और चंद्रमाका उपस्थान करणा इना मंत्रांको तर्पणआदि कर्मोंमें प्रत्येक विषे पढे सबको पढकर तर्पणकरे और सबको पढकर होम करे एह अर्थ आगे स्पष्ट होवाहै यद्देवा देव हेडनं मिति चारों मंत्रों करके आज्य होम करे (देवकृतस्य इस करके अंत विषे समिधाकर्के हवनकरे और ॐभूःइससे आदि लेकर

● अथ चान्द्रायणव्रतविधिः ॥ कृच्छ्रेवपनव्रतंचरेत् श्वोभूतांपौर्णमासीमुपवसेत् आप्यायस्वसंतेपयांसिनमोनमइति चैताभिस्तर्पणमाज्यहोमोहविषश्चानुमंत्रणम् ॥ उपस्थानंचन्द्रमसः ॥ यद्देवादेवहेडनमिति चतसृभिराज्यंजुहुयाद्देवकृतस्येतिचांतेसमिद्भिः ॥ ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐयशः ॐश्रीः ॐऊर्कः ॐइट् ॐओजः ॐतेजः ॐपुरुषः ॐधर्मः १५ शिव इत्येतैर्ग्रासानुमंत्रणम् ॥ प्रतिमंत्रंमनसानमःस्वाहेति वा सर्वानेतैरेवग्रासान्भुंजीत ॥ चरुभैक्ष्यसक्तुकणयावकशाकपयोदधिघृतमूलफलोदकानि हवींषि उत्तरोत्तरप्रशस्तानि पौर्णमास्यांपंचदशग्रासान्भुक्त्वा एकैकापचयेनअपरपक्षमश्नीयात् अमावस्यामुपोष्यैकैकोपचयेन पूर्वपक्षंविपरीतमेकेषामेषचान्द्रायणोमासइति

शिवःतकइनांकर्के ग्रासांको अभिमंत्रणकरे और मंत्र मंत्र प्रतिमनकर्के नमःस्वाहा उच्चारणकरे अथवा संपूर्णग्रासांनूं इनांकर्केहि भक्षणकरे । और कुछ कहतेहैं चर्विति चरुभैक्ष्य क्या भिक्षान्न सत्तु शिलअन्न और जवांका पाक और शाक दुग्ध दधि घृत और मूल शकरकंदी और फल आम्रादि और जल एह हवींषि जानणे एह सब उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं पूर्णमासीविषे पंदरां१५ ग्रासांनूं भक्षण कर्के एकैकह्रासकर्के दूसरे पक्षविषे भक्षणकरे । अमावस्या विषे उपवास कर्के एक एककी वृद्धि कर्के पूर्व पक्ष विषे करे और कोई इससे विपरीत चांद्रायण कहतेहैं १

अत्रेति इस विषे ग्रासका परिमाण ऐसे जानणा जो मुख विषे सुख करके प्रविष्ट होवे एह कहाहै सो बालकाविषे जानणा ॥ हेतु कहतेहैं शिखीति मयूरअंडके परिमाण पंचग्रास भोजन करणेविषे सामर्थ्य नांहि होवेतें ॥ इसमें एसी विचार जानणा कि दुग्धादिक ग्रास कैसे होणे तिसवास्ते ग्रासोंकी कल्पना करलेणी क्षीरादि द्रवद्रविके ग्रास जो मयूर अंडका प्रमाण सो दूनेकर्के बनाकरजानणा ॥ और विशेषकहतेहैं तथेति कुकुड अंडकेप्रमाण और गिल्लेआंवलेके प्रमाण ग्रास समर्थताको देखकर अन्य स्मृतियां कर्के कहे होये शक्ति विशेषको देखकर जानणे मयूर अंडप्रमाणतें तिनोंकी लघु होवेतें । अथ चांद्रायण व्रतके प्रसंगविषे पराशरजीका वचनहै

अत्रग्रासप्रमाणमास्याविकारेणेति यदुक्तंतद्बालाभिप्रायम् शिख्यण्डप रिमितपंचग्रासभोजनाशक्तेः क्षीरादिद्रवद्रविषां ग्रासाःकल्पनीयाः शि ख्यण्डपरिमितत्वंतु पर्णपुटकादिनासंपादनीयम् ॥ तथा कुक्कुटाण्डाद्रम लकादिपरिमितानिकवलानि स्मृत्यंतरोक्तानिशक्तिविशेषविषयाणि । शि ख्यण्डपरिमाणाल्लघुत्वात्तेषां ॥ चान्द्रायणप्रकरणे पराशरस्तु ॥ कुक्कु टाण्डप्रमाणंतुग्रासंवैपरिकल्पयेत् ॥ शंखस्तु ॥ आर्द्रामलकमात्रास्तुग्रा साइन्दुव्रतेस्मृताइति ॥ एतेषांपरिमाणानांविकल्पोवोध्यः ॥ अथव्रतांत रसंपातेनिर्णयः ॥ एकादश्यादौनित्यप्राप्तउपवासस्तावच्चान्द्रायणवि धिनावाध्यते एतस्यचचरेदेवचन्द्रस्येतिसलोकतामिति काम्यत्वात्

किति कुकुड अंडके प्रमाण ग्रासकी कल्पनाकरे । शंखजीकातो एह वचनहै जो गिल्लेआंवलेहै तिसप्रमाण ग्रासचांद्रायण व्रतविषेकहेहैं इनांपरिमाणांका यथाशक्तिसें विकल्पजानलेणा ● इसतें अनंतर व्रतांतर संपात विषे निर्णयहै अर्थात् चांद्रायणके वीच कोई और व्रत आजावे तिसका निर्णयहै एकादशी आदिक विषे नियम कर्के जो उपवासहै सो चांद्रायण विधि कर्के बाधया जावेगा क्योंकि जो चांद्रायणकोंकरताहै सो चंद्रलोकको प्राप्तहोताहै इसफलके सुणनेसे काम्य होवेतें ॥

होंति और लसुनके भक्षण आदिक निमित्तके होयां होयां विधान करणेकर्के चांद्रायणकों प्राप्तताहै और निमित्तविषेभी प्राप्तताहै इस कारणतें एह सिद्ध होया कि निमित्ततें नैमित्तिक बलवान् है काम्य इति और काम्य जो चांद्रायणहै और एकादशीव्रत जो काम्यहै सो अन्य पुरुष द्वारा करवाणा होरी कर्के कीतयां होयांभी फलकी प्राप्ति होतीहै ऐसे कात्यायनादि ऋषियां कर्के कथन करणेतें और एह एकादशी व्रतके बाधका अभाव अर्थात् एकादशीके व्रतका बाध कदेभी नहि होता किंतु और व्रत तिस विषे आवे तां एकादशी कर्के तिसकाहि बाधा हुंदाहै सो चांद्रायणतें भिन्न व्रतां विषे हि जानणा क्योंकि तिस विषे दिन दिन प्रति ग्रास ग्रहण विषे

लशुनभक्षणादिनिमित्ते विहितत्वेन नैमित्तिकत्वाच्च काम्यत्त्वेकादश्या द्युपवासोऽन्यद्वाराकरणीयः प्रतिनिधिना कृतेपि फलप्राप्तेः कात्यायनादिभिरुक्तत्वात् ॥ अयंचैकादश्युपवासबाधाभावः सामान्यश्चांद्रायणभिन्नेष्वेव तत्रप्रतिदिनंग्रासग्रहणेनियमाभावात् ॥ यत्पुनरुक्तंश्वोभूतां पौर्णमासीमुपवसेदित्यत्र चतुर्दश्यामुपवासमभिधाय पौर्णमास्यां पंचदश ग्रासान्भुक्त्वेत्यादिना द्वात्रिंशदहरात्मकं चान्द्रायणमुक्तंतत्पक्षान्तरप्रदर्शनार्थं नसार्वत्रिकम् योगीश्वरवचनानुरोधेनात्रिंशदहरात्मकस्यैवदर्शितत्वात् ॥ यद्येतत्सार्वत्रिकंस्यात्तदा नैरंतर्य्येण संवत्सरे चांद्रायणानुष्ठानानुपपत्तिश्चन्द्रगत्यनुवर्त्तनानुपपत्तिश्च स्यात् ॥

नियमका अभाव होताहै ॥ जो होर कहाहै कि अगलेदिनहै पूर्णमासी जिसके ऐसी चतुर्दशी कों उपवास करे और पूर्णमासी विषे पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे इस कर्के बत्ती ३२ दिनका चांद्रायण कहा सो अन्य पक्षके दखाणे वास्ते जानणा संपूर्ण स्थान विषे नहि योगीश्वरवचनके अनुसार कर्के ओहां ३० दिनांकोंहि दखाणेते । जेकर एह संपूर्ण स्थान विषे होवे तां निरंतर कर्के वर्षके चांद्रायणकी सिद्धि नहि होती और चंद्रमाकी गतिके अनुसार वर्त्तनेकी भी सिद्धि नहि होती

॥ अथेति इसतें अनंतर विशेषता करके चांद्रायण कल्पका व्याख्यान करतेहां शुक्ल पक्षकी चतुर्दशी विषे उपवास व्रत करे वा कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी विषे उपवासकरे केश और श्मश्रु और नख और लोम इनांकों मुंडन करवाके वा श्मश्रूकाही मुंडन करवाके व्रत करे अब यमजीकावचनहै आयेति लोहेका पात्र और तैजस क्या सुवर्ण पात्र और घट शराव क्या प्याला आदि पात्रांकों त्यागे एह पात्र असुरांके कहेहैं और देवपात्र अचक्रक है ॥ १ ॥ यमजीकहतेहैं अंगुलीयांके अग्र विषे स्थित जो ग्रास तिसका सावित्रीकर्के मंत्रण करे इस विषे ग्रासां कर्के प्राणरूप जो अग्नि तिस विषे हवन करे ॥ ऐसे बोधायन ऋषि कहता है प्रथम ग्रासकों

अथातोविशेषतयाचान्द्रायणकल्पंव्याख्यास्यामः ॥ शुक्लचतुर्दशीमुपवसेत्कृष्णचतुर्दशींवाकेशश्मश्रुनखलोमानि वापयित्वा श्मश्रूणिवेत्यादि यमः ॥ आयसंतैजसंपात्रंचक्रोत्पन्नंविवर्जयेत् असुराणांहितत्पात्रंदेवपात्रमचक्रकम् १ चक्रोत्पन्नंघटशरावादि सएव ॥ अंगुल्यग्रस्थितंग्रासंसावित्र्याचाभिमंत्रयेत् अत्रग्रासैरेवप्राणाग्निहोत्रमाह ॥ बौधायनः ॥ अश्नीयात्प्राणायेतिग्रासंप्रथमम् १ अपानायेतिद्वितीयम् २ व्यानायेतितृतीयम् ३ उदानायेतिचतुर्थम् ४ समानायेतिपंचमम् ५ यदाचत्वारस्तदाद्वाभ्यांग्रासंपूर्वम् यत्रत्रयस्तदाद्वाभ्यांद्वाभ्यांपूर्वौ यदाद्वौतदात्रिभिःपूर्वंद्वाभ्यामेवोत्तरम् एकंतुसर्वैरिति ग्रासद्वयपक्षे प्रथममाद्यैस्त्रिभिरंतंद्वाभ्याम् एकपक्षेसर्वैरेकामित्यर्थः

प्राणाय स्वाहा इस कर्के भक्षण करे१ और अपानाय स्वाहा इसकर्के दूसरे ग्रासनूं २ और व्यानाय स्वाहा इस कर्के तीसरेनूं ३ और उदानाय स्वाहा इस कर्के चोथेनूं ४ और समानाय स्वहा इस कर्के पंचम ५ ग्रासनूं भक्षणकरे जेकर चार ग्रास होणतां दोनों मंत्रां कर्के प्रथम ग्रासकों भक्षण करे और जां त्रय ग्रासहोण तां दुंह दुंह मंत्रांकर्के प्रथम दो २ ग्रास भक्षण करे। और जद दो २ ग्रास होण तांतीन मंत्रां कर्के प्रथम एक ग्रासकों भक्षण करे और अंतके ग्रासकों दोनो मंत्रां कर्के भक्षण करे और जां एक हिग्रास होवे तां पांचो मंत्रां कर्के एकग्रासका भक्षण करे दुंह मंत्रां कर्के दूसरेग्रास का भक्षण करे

अब स्पष्ट करके प्रयोग कहतेहां चतुर्दशीविषे कीताहै नित्यकर्म जिसने पूर्वाह्नकालविषे प्राणाया मकों करके ॐमथ मासपक्षआदिका उच्चारण करके अमुक पापके दूर करणे वास्ते श्रीकी कामना देवताकी प्रीतिकी इच्छाकरके वा रसा यनादिके सिद्धिकी कामना करके इस चांद्रायण व्रत कों करांहां ऐसे संकल्पकरे ॥ ॐ अग्ने व्रत पते व्रतं चरिष्यामि इत्यादि मंत्रां करके इसनूं सूर्यके तांई अर्पण करके ॥ केश और श्मश्रुकाहि मुंडन करवाके अथवा केवल श्मश्रुका हि मुंडन कर वाके तिस दिन विषे उपवासकरके और तिसी दिन विषे जेकर अमावस्या होवे तां तिस विषे भी उपवास करके और जेकर पूर्णमासी होवे

•अथ स्पष्टप्रयोगः ॥ चतुर्दश्यांकृतनित्यक्रियः पूर्वाह्णे प्राणानायम्य मास पक्षाद्युल्लिख्यामुकपापक्षयकामः श्रीकामोदेवताप्रीतिकामोरसायनादि सिद्धिकामोवा अमुकचान्द्रायणंकरिष्य इतिसंकल्पः ॥ ॐअग्नेव्रतपतेव्र तं चरिष्यामीत्यादिमंत्रैर्व्रतमादित्यायनिवेद्य केशश्मश्रुलोमनखानिश्म श्रूण्येव वा वापयित्वातद्दिनमुपोष्य तद्दिनेऽमाचेत्तत्राप्युपोष्य पौर्णिमाचे त्पंचदशग्रासान्भुंजीत ॥ तत अमोत्तरपक्षे उपचयः ॥ पौर्णिमोत्तरपक्षेऽ पचयोग्रासानाम् ॥ प्रतिदिनमुदितेचन्द्रे आप्यायस्वसोमंतर्पयामि संते पयांसि सोमंतर्पयामि नमोनमश्चन्द्रमसंतर्पयामीतितर्पयित्वा आज्येनै तैरेवमंत्रैर्लौकिकेग्नौहुत्वैतैरेवपात्रस्थंहविरनुमंत्र्यैतैरेवचन्द्रमुपस्थाय ॥ य द्देवादेवहेडनमितिचतसृभिश्चप्रत्यृचमाज्यंजुहुयात् ॥ सर्वत्राग्नये नममे तित्यागः

तां पंदरां १५ ग्रास भक्षण करे और अमावस्यातें उपर शुक्लपक्ष विषें ग्रहण करे तांक्रम करके ग्रासां कों वधायें और पूर्णमासीते पीछे कृष्ण पक्ष विषे ग्रासांको घटावे ॥ और दिन दिन विषे चंद्रमाके उदयहोयां होयां आप्यायस्व सोमंतर्पयामि ॥ संते-नमोनमश्चंद्रमसंतर्पयामि इनां मं त्रां करके तर्पणकरे और इनांमंत्राकरकेंहि लौकिक अग्निविषे घृतका हवन करे और एनांहि मंत्रां करके पात्र विषे हविका अनुमंत्रण करे और इनां मंत्रां करके चंद्रमाको पूजा करे ॥ और य द्देवादेवहेडन मितिचार ऋचां करके ऋचा ऋचा प्रतिघृतका हवन करे और सभजगा न मम ऐ सा कह करके अग्निमे त्याग करे

ब्रह्मपूर्ति तिसतें उपरंत देवकतस्य इनतीन ऋचांकर्के ग्यसमिधांका हवनकरे ॐभूः १ ॐभुवः २ ॐस्वः ३ ॐमहः ४ ॐजनः ५ ॐतपः ६ ॐसत्यं ७ ॐयशः ८ ॐश्रीः ९ ॐऊर्जं १० ॐइट् ११ ॐतेजः १२ ॐपुरुषः १३ ॐधर्मः १४ ॐशिवः इनांपंदरां १५ मंत्रां करके पात्रमें स्थितएकएक ग्रासका एकएक मंत्र करके अनुमंत्रण करे मनकर्के(नमःस्वाहा) असे मंत्रके अंत विषे कह करे संपूर्ण ग्रासांका अनुमंत्रण करके और अगुलीयांसाथ एकएक ग्रासनूं ग्रहण करके गायत्री मंत्रको पढ़कर भक्षण करे ॥ तां प्रथमदिन कें ग्रासके भक्षण विषे प्राणायस्वाहा इत्यादिक पूर्व क्रम करके पंचमंत्रां करके पंचग्रास भोजन करे पंजातें अधिक जेकर ग्रास होण तां तूष्णीं होके

ततोदेवकृतस्येतित्रिभिःसमित्त्रयंहुत्वा ॐभूः १ ॐभुवः २ ॐस्वः ३ ॐमहः ४ ॐजनः ५ ॐतपः ६ ॐसत्यम् ७ ॐयशः ८ ॐश्रीः ९ ॐऊर्क् १० ॐइट् ११ ॐतेजः १२ ॐपुरुषः १३ ॐधर्मः १४ ॐशिवः १५ इत्येतैः पंचदशभिरेकैकंक्रमेणपात्रस्थंग्रासमनुमंत्र्य मनसानमः स्वाहा इत्युक्त्वा सर्वाननुमंत्र्यैकैकमंगुल्यग्रैर्गृहीत्वा सावित्र्याऽनुमंत्र्यभक्षयेत् ॥ तत्रप्रथम दिन एकग्रासभक्षणे प्राणायस्वाहा इत्यादयः पूर्वोक्तप्रकारेण पंचापिमं त्रायोज्याः ॥ पंचभ्योऽधिकाग्रासास्तूष्णीमिवभक्षणीयाः ॥ समाप्तौत्र्यव रान्विप्रान्भोजयित्वागांदक्षिणांदद्यात् ॥ आसमाप्तिप्रत्यहं त्रिषवण स्नानम् सौरमंत्रैः कृतांजलेरादित्योपस्थानम् गायत्र्याव्याहृतिभिः कूष्मांडैर्वाज्यहोमः ॥ दिवास्थितिः ॥ रात्रावुपवेशनम् ॥ अशक्तौश यनंयथाशक्ति ॥ आपोहिष्ठेतिसूक्तम् ॥ यतोत्विन्द्रः ऋचंचेति

क्या मौनधार कर भक्षण करणे योग्यहैं ॥ और समाप्ति विषे तीनतें अधिक ब्राह्मणांके तांई भोजन देकर एक गौदक्षिणा देवे ॥ और व्रतकी समाप्तिपर्यंत त्रिकाल स्नान करे और सूर्यके मंत्रां करके हाथ जोडकर सूर्यके उपस्थानकों करे और गायत्री करके व्याहृतियांकर्के अथवा कूष्मांड मंत्रों करके घृत करके हवन करे ॥ और दिन विषे खलोतारहे और रात्रि विषे स्थित होवे और जेकरसामर्थ्य न होवे तां जैसे शक्तिहै तैसे शयन करे आपोहिष्ठा इति सूक्तं यतोत्विंद्रः ऋचंचेति इनकोजपे

अग्नेवंशा इन्द्राग्नीस्वस्तिनामिति इनकों जपे और पुनंतुमादेवजनाः इनको ॥ और ऋषभं विरजं रौरवयोधाजये सामोकों जपन क्या इनांऋचांकों जपे इनांके अभाव विषे गायत्रीकों जपे और व्याहृतियांकों जपे वा ओंकारकों ८ जपे ॥ एह किहाहै इसजगा परन्तु ब्राह्मण भी जन और दक्षिणादान आदि और जप एह संपूर्ण प्राजापत्यआदि व्रतांविषेभी जानणे ● इसके अनंतर सोमायन व्रतका वर्णन है तिसविषे मार्कंडेयजी का वचन है गविति सत्त रात्र ७ पर्यंत गौके चार ४ स्तनांते दुग्धपीवे और सतरात्र ७ तीन ३ स्तनांतें दुग्धपीवे और सतरात्र ७ दुंह २ स्तनांका दुग्धपीवे ॥ १ ॥ और छे६ रात्र गौके एक स्तनका दुग्ध पीवे और त्रय ३ रात्रां कुछ

अग्नेवंशा इन्द्राग्नी स्वस्तिनामिति ॥ पुनंतुमादेवजनाः ॥ ऋषभं विरजं रौरवयोधाजयेसामनीचजपन् एतेषामसंभवेगायत्रींव्याहृतिंप्रणवं वा जपेत् एतच्चविप्रभोजनदक्षिणादानादिजपांतं सर्वेष्वपि प्राजापत्यादिव्रतेषु कल्प्यम् ॥ ● अथसोमायन व्रतवर्णनम् ॥ तत्रमार्कण्डेयः ॥ गोक्षीरंसप्तरात्रंतुपिबेत्स्तनचतुष्टयात् स्तनत्रयात्सप्तरात्रंसप्तरात्रंस्तनद्वयात् ॥ १ स्तनेनैकेनषड्रात्रंत्रिरात्रंवायुभुग्भवेत् एतत्सोमायनंनाममहाकल्मषनाशनमिति २ ॥ अत्रेदंबोध्यम् ॥ यस्यागोःस्तनचतुष्टयेनव्रतानुष्ठातुस्तृप्तिःस्यात्साविड्भोजनादिदोषशून्याऽत्रार्थेप्रयोज्येति ॥ स्मृत्यंतरे सप्ताहंचेत्पिबेद्द्वौस्तनमखिलमथत्रीन्स्तनान्द्वौतथैकं कुर्यात्त्रींश्चोपवासान्यदि भवतितदामासिसोमायनंतत् ॥ १ ॥ एतदपिचान्द्रायणधर्मकमेव

नभक्षण करे एह वीह २० दिनका सोमायन नामकर्के व्रत कहाहै महापापांके नाशकरणेवाला है ॥ २ ॥ इस विषे एह जानणा कि जिस गौकें चार स्तनांके दुग्धकर्के व्रत करण वालेकी तृप्ति होंवे सो गौ विट भोजन आदि दोषतें रहित होवे तां तिसका दुग्ध ग्रहण करणा ॥ होरी स्मृति विषे भी कहाहै सप्तेति जेकर सत्त दिन गौके चारस्तनांतें संपूर्ण दुग्धपीवे और सत्त दिन दुंहस्तनांतें और सत्तदिन दुहस्तनांतें और छे६ दिन एक स्तनतें पीवे और त्रय दिन उपवासकरे तां महीने कर्के सोमायन व्रत होताहै ॥ १ ॥ एह सोमायन व्रतभी चांद्रायण रूपहि है

क्यों कि हारीत ऋषिनें इसतें आगें चांद्रायणकों कहतेहां इस करकें सहित कर्त्तव्यताके चांद्रायणव्रतकों कहके पीछे असे सोमायनभी जानणा इक करकें सोमायनको भी कहतेहैं ॥ जो फेर तिसनें कृष्ण चतुर्थीतें लेकेशुक्ल द्वादशी पर्य्यंत सोमायन व्रत कहाहे सो कहतेहां चतुर्थीतें लेके त्रयदिन चार स्तनांकेदुग्धकोंपीवे और तिसतें पीछे त्रयदिन तीन स्तनांके दुग्धकों पीवे और त्रयदिन दुंह स्तनांके दुग्धकों पीवे और त्रय दिन एक स्तनके दुग्धकों पीवे असे बारां १२ दिन करकें फेर त्रयदिन एक स्तनके दुग्धकों पीवे और त्रयदिन दुहस्तनां के और त्रयदिन त्रयस्तनां

हारीतेन अथातश्चान्द्रायणमनुक्रमिष्यामइत्यादिना सेतिकर्त्तव्यताकंचान्द्रायणमभिधायैवं सोमायनमित्यतिदेशाभिधानात् ॥ यत्पुनस्तेनकृष्णाचतुर्थीमारभ्यशुक्लद्वादशीपर्यंतंसोमायनमुक्तम् ॥ चतुर्थीप्रभृतिचतुःस्तनेनत्रिरात्रम् ॥ ततस्त्रिस्तनेनत्रिरात्रम् ।। द्विस्तनेनत्रिरात्रम् एकस्तनेनत्रिरात्रम् १२ एवमेकस्तनप्रभृतिपुनश्चतुःस्तनान्तम् ॥ १२ ॥ यातेसोमचतुर्थीतनूस्तयानः पाहितस्यैनमः स्वाहा ॥ यातेसोम पंचमी षष्ठीत्येवं यथार्थास्तिथिहोमाःएकमासं एनोभ्यःपूतश्चन्द्रमसःसमानतां सलोकतां सायुज्यंच गच्छतीति ॥ चतुर्विंशतिदिनात्मकसोमायनमुक्तम् ॥ तदशक्तविषयम् ॥ * अथयतिचान्द्रायणमाह गौतमः ॥ मासस्यादौयतिर्विप्रोव्रतंकुर्य्याद्यथाशृणु कृत्वामूत्रपुरीषेतुशौचंकुर्य्याद्यथाविधि ॥ १ ॥ दन्तान्संशोध्ययत्नेनह्यपामार्गस्यशाखया स्नानंकृत्वानदीतोयेतडागेवाहृदेपिवा ॥ २ ॥

के और त्रयदिन चौंहस्तनांके दुग्धकों पीवे असे चब्वी २४ दिनका सोमायन व्रत कहाहै इस विषे (याते सोमतुर्थी) इति(यातेसोम पंचमी)इति और एक मासं एनोभ्यः इत्यादि ऋचांका पाठ करे एह चोवी २४ दिनका व्रत असामर्थ्य विषे जानणा ॥ ● इसतें अनंतर यति चांद्रायणनूं गौतम ऋषि कहताहै मासेति मासके आदविषे यति ब्राह्मण जैसं व्रतनूं कर्ताहै तैसे श्रवण कर मूत्र पुरीषके त्यागकोंकरकें जैसे विधिहै तैसे शौचकों करे ॥ १ ॥ पांछेपुटकं हेकी डीडी करकें यत्न करकें दंतांकों शुद्धकरे फेर स्नानकरे नदी विषे वा तलाय विषे वा हृद विषे २ ॥

पुर्वीति शुद्धदुइ वस्त्रोंको धारके नित्यकर्मोंकोंसमाप्त करे २ पीछे उपासनाकों न्यान्यासादिकोकर्के [illegible] पूजनकरे और [illegible] संकल्प करे और फेर विष्णुका ध्यानकरे हस्त पादोंकों [illegible] ४ हस्तपाद शुद्ध करके दोवार आचमनकरे ऐसे शुद्ध होकर संध्या काल विषे संध्या [illegible] और [illegible] ५ तिसतें अनंतर प्रातःकालविषे उठकर पूर्वदिनकी न्याई संपूर्णकर्मकरे और उपवासव्रतकोकरे शुक्लपक्षकी अष्टमीतक ६ और तिस शुक्लाष्टमीविषे पूर्वकी न्याई [illegible] करे और तैसे पूर्णमासी और कृष्णाष्टमी और अमावस्या जैसे क्रमहै ७ पंच पंच ग्रास भक्षण करे और भक्ति युक्त होवै पृथ्वी विषे नित्य शयन करे और सुगंधि ताम्बू

धृत्वाचोद्गमनीयंतुनित्यकर्म्मसमापयेत् ॥ औपासनादिकंकृत्वादेवपूजामथाचरेत् ॥ ३ ॥ उद्गमनीयं धौतवस्त्रद्वयमित्यर्थः ॥ संकल्पमेवंकुर्वीतपूर्वमंत्रमनुस्मरन् तावद्ध्यायेन्महाविष्णुंयावत्क्षालयेत्करौ ४ ॥ पादौ प्रक्षालयेत्पश्चाद्द्विराचम्यशुचिर्भवेत् सायंसंध्यामुपासीतस्वपेन्नारायणाग्रतः ॥ ५ ॥ ततःप्रातःसमुत्थायसर्वंपूर्ववदाचरेत् तावदुपोषणंकृत्वायावच्छुक्लाष्टमीभवेत् ॥ ६ ॥तत्रैवपूर्ववत्पिंडान्भक्षयेत्पंचसंख्यया पूर्णायांवहुलाष्टम्यांतद्दर्शायांयथाक्रमम् ७ ॥ भक्षयेत्पंचपंचैवकवलान्भक्तिपूर्वतः अधः शायीभवेन्नित्यंगन्धताम्बूलवर्जितः ॥ ८ ॥ मासान्तेगोःप्रदानंव्याव्रतस्यपरिपूर्त्तये पंचगव्यंपिबेत्पश्चाद्यतिचान्द्रायणंचरेत् ॥ ९ ॥ अनेनविधिनायस्तुयतिचान्द्रायणंपरम् कृत्वापापविशुद्धात्माप्राप्नुयात्परमांगतिम् ॥ १० ॥ विधवावायतिर्वापिव्रतीवापापनाशनम् गृहेवाकुरुते [illegible]सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ११ ॥ ॥ ॐ अथशिशुचान्द्रायणलक्षणांतरमाह देवलः ॥ शृणुराममहाबाहोसर्वपापहरंपरम् शिशुचान्द्रायणंनाम सुरर्षिगणसेवितम् ॥ १ ॥

लकों त्यागे ॥ ८ ॥ मासके अंत विषे व्रतके पूर्णफलकी प्राप्ति वास्ते गौदान करे पीछेसें पंच गव्यका पान करे ऐसे यति चांद्रायण व्रतकों करे ९ इस विधिकर्के जो यतिचांद्रायणव्रत कों कर्ताहै सो संपूर्णपापोंतें शुद्धहोकर परमगतिकों प्राप्तहोताहै १० इसपापोंके नाशकरण वाले व्रतको विधवास्त्री वा यति वा व्रती वनविषे वागृहाविषे करे संपूर्ण पापोंतें रहित होताहै ११ ॐ अब शिशुचांद्रायणके लक्षणनूं देवलऋषि कहताहै ऐसिति हे परशुराम हे महाबाहो शिशु चांद्रायणनाम करके संपूर्ण पापके नाश करण वाले व्रतनूं श्रवणकर जो सुरर्षियोंके गणों करके सेवमानहै १

पूर्व कालमें उद्दालक नाम करके ऋषि जद माताके गर्भतें जन्मकों धारताहोया
जद अंजलि विषे नाभि नालनूं ग्रहण करके पृथ्वीमें भ्रमताभया नाभिनाल इसपदकरकेजणाया
कि जन्मकालतेंहि उठककेंचलागिया नालुछेद तक भीनहिरिहा एह ऋषि लोकोंका प्रभावहै
२ ॥ औार गर्भतें अष्टमवर्ष के होयां होयां उद्दालक ऋषि गोत्र नाम करके अर्थात् शिशु नाम
करके व्रतनूं कर्त्ता भया यद्वा गोत्रेण क्या कुलकी स्थिति वास्ते व्रत कर्त्ताभया ॥
इस कारणते शिश्वर्थक्रियमाण होणेतें अर्थात् बालकके अर्थ होणेतें शिशुचांद्रायण नाम
व्रत है अथवा गोत्र व्रतकर्के संततिव्रत जानणा अथवा गोत्रशब्द छत्रका वाचीहै अर्थात् छत्र

पुरातूद्दालकोनाममातृगर्भाद्विनिर्गतः नाभिनालमुपादायस्वांजलौपर्य्य
टन्महीम् ॥ २ ॥ गर्भाष्टमेसमायातेसगोत्रेणव्रतंचरेत् ॥ गर्भेति ॥ गर्भा
धानादष्टमेऽब्देसउद्दालकोगोत्रेण नाम्ना अर्थात् शिशुनाम्नाव्रतं चरेदचर
दित्यर्थः ॥ यद्वा गोत्रेण कुलेन हेतुनाकुलस्थित्यर्थं व्रतमकरोदित्यर्थः ॥
अतएवाशिश्वर्थक्रियमाणत्वाच्छिशुचान्द्रायणंनाम ॥ यद्वा गोत्रेणेति ना
मार्थेतृतीया गोत्रव्रतंसंततिव्रतामित्यर्थः ॥ अथवा गोत्रशब्दोऽत्रछत्रवा
ची ॥ छत्रव्रतंछत्राकारंव्रतम् सर्वोत्तममित्यर्थः ॥ तदाप्रभृत्यसौयो
गीसायान्हेभैक्ष्यमाचरन् ॥ ३ ॥ श्रोत्रियाणांद्विजातीनांत्रिषुवेश्मसुसंच
रन् कवलत्रयमानीयप्रक्षाल्यशुचिभिर्जलैः ॥ ४ ॥ भागत्रयंतदाकृत्वा
भागमेकंहरेर्ददौ द्वितीयमग्नौनिक्षिप्यतृतीयंचात्मानिन्यसेत् ॥ ५ ॥
रात्रौस्वपेत्स्थंडिलेषुगन्धपुष्पादिवर्जितः ॥ एवंवैप्रत्यहंकुर्व्वन् यावत्पुत्र
समागमः ६ ॥ नासिकेतोत्पत्तिपर्य्यन्तामित्यर्थः तदाप्रभृतिलोकेस्मिन्नाशि
शुचान्द्रायणंस्मृतम् कलौयुगेविशेषेणमहापातकनाशनम् ॥ ७ ॥

आकार व्रत संपूर्ण व्रतांविषें उत्तमहै एह अर्थहै तिसदिनतें लेके योगी सायंकालविषें भिक्षाकों
जाताभया ॥ ३ ॥ और वेदपाठियांब्राह्मणांके तीन घरांसे भिक्षाकोंलयके तीन ग्रासांकों शुद्धज
लसाथ धोकर ॥ ४ ॥ त्रयभागकर्के एकभागविष्णुकेतांई अर्पणकर्त्ताभया औरदूसराभागअग्निवि
षें हवनकर्के औरतीसरा आपभक्षणकर्त्ताभया ॥ ५ ॥ रात्रिविषें गंधपुष्पआदिकों त्यागकरस्थंडि
लविषें शयनकर फेर प्रातःकाल उठकर इसी विधि मैं प्रवृत्त हुंदा होया इसप्रकार उद्दालकऋषि
नासकेतुंपुत्रकी उत्पत्ति पर्यंत दिनदिनविषें विधिकर्त्ताभया ॥ ६ ॥ तिसदिन तेलें के लोक
विषे शिशुचांद्रायणनाम व्रत प्रसिद्ध होया कलियुगविषें विशेष करके महापापांके नाशकरणे
वाला कहाहै ७ ॥

इस उत्तम व्रतके करने कर्के महापापीभी शुद्ध होताभया ॥ अब गौतमजीका वचनहै शीति शिशुचांद्रायण जो व्रतहै तिसविषें प्रतिदिन एकहि ग्रास भक्षण करनेयोग्यहै तिसकोकर्के महापापियोंके मध्यविषे वर्त्तमानभीहोवे तथापि तिस महापापते शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ अब जाबालिका वचनहै शीति जो ब्राह्मणपापों के दूरकरणेवास्ते शिशुचांद्रायण व्रतकोकर्त्ताहै सो तत्काल पापतेशुद्धिको प्राप्तहोकर परमगतिको प्राप्तहोताहै १ तिसशिशुचांद्रायणके प्रकारको देवलऋषि कहताहै मेति मासके आद विषे प्रतिपदिनाविषें पूर्वकीन्याई स्नानकरे पूर्व दंतधावनकोकर्के धौतवस्त्र कों धारके और त्रयकाल संध्यावंदनादि कर्मको करके १ ॥ चौथे पहर पत्रोंके डूणेविषे

महापापीविशुद्धोभूत्कृत्वैतद्व्रतमुत्तममिति ॥ गौतमः ॥ शिशुचान्द्रायणं सम्यग्ग्रासमेकंनिरंतरम् कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिमहापातकिनामपि ॥ १ ॥ महापातकिनांमध्येवर्त्तमानोपियःकश्चिदेतत्कृत्वाशुद्धिमाप्नोतीत्यर्थः ॥ जाबालिः ॥ शिशुचान्द्रायणंकृत्वाद्विजोयःपापमुक्तयेससद्यः पापनिर्मुक्तःप्रपेदेपरमांगतिम् ॥ १ ॥ अवश्यंभाविनिभूतवन्निर्देशात्प्रपेदेप्रपत्स्यतइत्यर्थः ॥ तत्प्रकारमाहदेवलः॥ मासादौप्रतिपाद्दिवसेपूर्ववत्स्नानमाचरेत् दंतधावनधौतवस्त्रत्रिसन्ध्यावन्दनादिकम् ॥ १ ॥ चतुर्थयामेपर्णपुटेह्यपश्यन्पापिनःखलान् श्रोत्रियाणां द्विजातीनांत्रिषुवेश्मसुसंचरेत् २ कवलत्रयमानीयप्रक्षाल्यशुचिभिर्जलैः भागत्रयंतथाकृत्वाभागमेकंहरौक्षिपेत् ३ प्रक्षाल्यपूर्ववद्धस्तौद्विराचम्यशुचिर्भवेत् रात्रौस्वपेद्धरेरग्रेस्थंडिलेगन्धवर्जितः ॥ ४ ॥पुनःपरे पुरेवांहि कुर्यात्पापविशुद्धये

वेदपाठी ब्राह्मणोंके गृहोंविषें भ्रमे और नीच और जो पापी हैं तिनांको न देखे ॥ २ ॥ और ग्रास कों ल्यावे पवित्र जलकर्के शुद्ध करे और त्रयभागकर्के एकभाग विष्णुके तांई अर्पणकरे॥३ ॥ एकग्रासका अग्निविषें हवनकरे और एक ग्रास भक्षण करे और पूर्वकी न्याई हस्तपाद शुद्ध कर्के दोवार आचमन करे तांशुद्ध होताहै और रात्रिविषे विष्णुके आगे स्थंडिल विषे शयन करे गंधपुष्प आदिको त्यागे ॥ ४ ॥ फेर दूसरे दिन ऐसेहि विधिको करे पापकेदुरकरणे वास्ते

ऐसें एकमासके व्रतकोंकरके अंतविषें ब्राह्मणकेताई गौदेणेयोग्यहै ५ पीछे पंचगव्यकापानकरे ऐसें जो पुरुष करताहै सो संपूर्णपापांतेंरहितहोताहै ६ ● अथमहाचांद्रायणकहीदाहैतिसविषेंदेवलजीका वाक्यहै हेराम हेमहाभुजाकरके एकमहाचांद्रायणव्रतकों तूं श्रवणकरजो श्रेष्ठ औरहै ब्रह्महत्यादिपापो के दूरकरणेवाला और संपूर्ण मंगलरूपहै १ इसकरके दूरहोणवाले पापाकों कहतेहैं गुर्वेति गुरोंके द्रोहविषें जो पाप है और जो पाप पापीयांकी संगतिविषें और चांडालीकेगमनविषे और विधवा स्त्रीके संग विषे २ और श्रेष्ठ स्त्रीके संगम विषें और परअन्नके भक्षण विषें और नीचस्त्रीके संगमविषें और भर्त्ताके जीवतयां जो जारते उत्पन्न होयाहै और भर्त्ताके मृतहोयांहोयां जो जारते

एवंमासव्रतंकृत्वामासांतेगौर्यथार्थवत् ५ देयाविप्रायसहसापंचगव्यंपि बेत्ततः एवंकृत्वानरोयस्तुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ६ ॥ ● अथमहाचान्द्राय णम् ॥ तत्रदेवलः। शृणुराममहाबाहोमहाचान्द्रायणंपरम् ब्रह्महत्यादि पापानांशोधनंसर्वमंगलम् १ गुरुद्रोहेचयत्पापंयत्पापंपापिसंगमे चाण्डा लीगमनेपापंयत्पापंविधवागमे २ परस्त्रीषुचयत्पापंयत्पापंपरभोजने य त्पापंवृषलीसंगेयत्पापंकुण्डगोलयोः ३ शूद्रवृत्त्याश्रयत्पापंयत्पापंर सविक्रये पुरोहितस्ययत्पापंयत्पापंपरदारगे ४ यत्पापंसर्वसंगेचयत्पा पंधनुविक्रये यत्पापंरजकीसंगेयत्पापंपतिनिन्दया ५ यत्पापंविप्रनिंदायांक न्यासंदूषणेपिच एवमादीनिपापानिगुरूणिचलघूनिच ६ आर्द्राणि चाथशुष्कानियानिपापान्यनेकशः तेषांनाशकरंचेदंमहाचान्द्रायणंव्रतम् यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्गुरुभिर्लघुभिस्तथा ॥ ७ ॥

जन्मयाहै तिनांके संबंधविषे जो पापहै ३ और शूद्रकीजीविकाविषे जो पाप और रसांकेवेचनें विषें और पुरोहितकों और परस्त्रीके संगमकरणे वाले पुरुषके साथ संबंधविषें जो पापहै ४ और संपूर्णांकी संगतिविषें अर्थात्सर्वसंगीवणनविषें और धेनु कया सूईहोई गौकेवेचणेविषे और धो वणके संगम विषें और भर्त्ताकी निंदाविषें ५ और ब्राह्मणकी निंदाविषें और कन्याके दूषणविषे जो पापहै इसतें आदलेके जो वडे और छोटेपापहैं ॥ ६ ॥ और इच्छा करके और जो नहि इच्छा करके कीते होए अनेक पाप हैं तिनांसंपूर्ण पापांके नाशकरणे वाला महाचंद्रायण व्रत कहाहै जिसकेकरणेकरके वडयांछोटयांपापांते रहित होताहै ॥ ७ ॥

तिसके प्रकारको गौतम ऋषि कहताहै शुक्लेति शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे शुद्धजलकर्के स्नानको और पूर्वकी न्याई संध्या वंदन आदि नियमको कर्के चौथे पहर विषे ॥ १ ॥ विष्णुकी पूजाको करता होया पहले संकल्प करे और पूर्वकी न्याई मंत्रका उच्चारण करे और उपवास कर्के शयनको करे ॥ २ ॥ तिसतें उपरंत प्रातःकालविषे उठकर स्नान करे और जैसे विधि है तैसे आचमन करे और पूर्वकी न्याई नित्यकर्माकों समाप्तकरे ॥ ३ ॥ और चौथे पहरविषे देवताकी पूजाकरे तिसतें उपरंत सो पूर्वकीन्याईं इंद्रियांकों रोकके शयनकरे ४ ऐसें दिनदिन विषे करणें योग्यहै और जितना कालव्रतविषे स्थितहै और पक्षके अंत विषे पूर्णमासीके दिन पूर्वकी न्याई नित्यकर्माकों कर्के समाहित क्या निश्चल मत होयाहोया दशग्रा

तत्प्रकारमाह गौतमः । शुक्लप्रतिपदिस्नात्वापूर्ववच्छुद्धतोयतः पूर्ववन्निय मंकृत्वाचतुर्थेकालआगते ॥ १ विष्णुपूजापरोभूत्वापूर्वंसंकल्पमाचरेत् पूर्ववन्मंत्रमुच्चार्य्यनिराहारःस्वपेत्तदा ॥ २ ॥ ततःप्रभातउत्थायस्नात्वाच म्यययथाविधि पूर्ववन्नित्यकर्म्माणिसमाप्यविधिपूर्वकम् ॥ ३ ॥ चतुर्थे कालआयातेपूर्ववद्देवमर्चयेत् ततोप्येषयथापूर्वंपूर्ववन्नियतःस्वपेत् ॥ ४ एवंप्रतिदिनंकार्य्ययावत्तत्रप्रवर्त्तते तत्रापिपूर्ववत्कृत्वानित्यकर्म्माणिसर्वशः ५ तत्रैवभक्षयेत्पश्चाद्दशग्रासान्समाहितः तत्रापिहरिसांनिध्येस्वपेद्ग न्धादिवर्जितः ६ उपोषणंप्रकर्त्तव्यममायावत्प्रवर्त्तते तत्रापिभक्षयेत् पिंडान् पूर्ववत्पूर्वसंख्यया ७ शुद्धप्रतिपदिस्नात्वागौर्देयाव्रतपूर्त्तये ॥ शुद्धप्रतिपदिशुक्लप्रतिपदि ॥

स भक्षणकरे तिस दिनविषेंभी विष्णुके समीप शयनकरे पुष्पादि सुगंधिकों त्यागकर्के ५ और अमावास्या तक उपवासव्रतकरे तिसअमावास्याके दिन पूर्वकीन्याईं संख्याकर्के दशग्रासभक्षण करे ६ और व्रतके अंतविषें शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषें स्नान कर्के गोदानकरे पूर्ण फलकी प्राप्ति वास्ते ७ एहव्रत शुक्ल पक्षकी प्रतिपदातें लेके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा तक कहाहै इसमे एह अभिप्रायहै कि पहली अमावास्याके दिन दशग्रास खाकर्के शुक्ल प्रतिपदाके दिन व्रतका आरंभकरे

पीछे पंचगव्यका पान करे तां महा चांद्रायणव्रत होताहै ॥८॥ एह व्रत संपूर्ण लोकां करकें अशक्य करणा नहि होसकता क्योंकि अन्नके त्याग विषे बहुत क्लेशहै ॥ सो कहतेहां कृतइति सत्ययुग विषें प्राण चर्म विषे स्थितथे और त्रेतायुगविषे अस्थियां विषें स्थित और द्वापर विषे रक्त विषें स्थित रहे और कलियुग विषे अन्नविषे स्थित हैं ॥ ९ ॥ चांद्रायण व्रतकी महिमामैंनेहे अनघ क्या निष्पाप कहीहै जिसके करणें करकें महापातकतें और उपपातकांतें रहित होताहै १० ॥ इसतें अनंतर पंचप्रकारके चांद्रायणांके वदलेनूं देवल ऋषि कहताहै अथेति इसतें अनंतर हेराजेंद्र चांद्रायण व्रतका जो प्रत्याम्नाय महापापांके नाश करणे वाला और विष्णुलोक केदेणे

पंचगव्यंपिबेत्पश्चान्महाचान्द्रायणंभवेत् ॥८॥अशक्यंसर्वलोकानामन्नत्यागोमहत्तरः ॥ कृतेचर्माश्रिताःप्राणास्त्रेतायामस्थिसंश्रयाः द्वापरेरक्तमाश्रित्यकलावन्नगताः सदा॥९॥महाचान्द्रस्यमहिमा कथितोऽयंमयाऽनघ यत्कृत्वामुच्यतेपापैर्महद्भिरुपपातकैः १० ॥ अथ पंचविधानां चान्द्रायणानांप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥ अथवक्ष्यामिराजेन्द्रमहापातकनाशनम् ॥ प्रत्याम्नायंहिचान्द्रस्यविष्णुलोकप्रदायकम् ॥ १ ॥ अशक्तत्वा दुर्बलत्वादायुर्नाशस्यहेतुतः भक्तिश्रद्धाविहीनत्वादालस्यान्नास्तिकादपि ॥ २ ॥ चान्द्रायणेप्यशक्तश्चेत्प्रत्याम्नायंकुरुष्वतत् शुक्लप्रतिपदिस्नात्वा नित्यकर्मसमाप्यच ॥ ३ ॥

वाला है ॥ १ ॥ असामर्थ्यतें और वलते रहित होणेतें और जेकर हठकर्के करे तो आयु नाश होताहै इसहेतुतें और भक्तिश्रद्धाते रहित होणे तें और आलसते और नास्तिकतातें नास्तिक शब्द इसजगा अधर्मपर समझणा इसते और शक्ति कर्के मनकाउत्साह १ बल कर्के देहपुष्टि २ इनके ना होनेते आलस कर्के इन्द्रिय शैथिल्य ॥ २ ॥ चांद्रायण व्रतके करण विषे असमर्थ होवे तां तिसकेवदलेको कोसोकहतेहां ॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदा विषे स्नान कों कर्के और नित्यकर्मको समाप्त करे ॥ ३ ॥

सहितहि पूर्वलीक्याई संकल्पकरिकके कहे मैं इसम व्रतको करताहूँ ऐसेविधिपूर्वकपूर्वका न्याई से कृष्णवोर्ननकर्के करे ॥४॥ स्वर्णके शृंगो करके युक्त गौयां पंजाह ५० सहितवछयांके युक्तहे ऐसे यत्नसों ब्राह्मणांकेताई देणे योग्यहैं ऐसे शास्त्रकी विधि करके चांद्रायण व्रतका समर्थन कियाहै ॥ ५ ॥ अब गौतमजीका वाक्यहै चामिति एह ब्राह्मण चांद्रायणव्रतके प्रत्याम्नायकूं करेंगंध पुष्पादि करके पूजितहोइयां और सुवर्ण भूषणां करके भूषितकीतियांहोइयां ॥ १ ॥ गौवांयत्न करके पंजा ५० ब्राह्मणांके ताई देणी योग्यहैं इस प्रत्याम्नायकर्के हरि साक्षात् प्रसन्न होताहै इस

संकल्पंपूर्ववत्कृत्वा करिष्येव्रतमुत्तमम् इतिसंकल्प्यमनसापूर्ववाद्विधिपूर्वकम् ॥ ४ ॥ गावोदेयाःप्रयत्नेन पंचाशत्स्वर्णभूषिताः सवत्सावहुक्षीरिण्योविप्रेभ्योजलपूर्वकम् ॥ ५ ॥ अनेनकृतवांश्चान्द्रं शास्त्रमार्गेणदार्शीतम् ॥ गौतमः । चान्द्रायणस्यविप्रोसौप्रत्याम्नायंसमाचरेत् अर्चितागन्धपुष्पाद्यैर्भूषिताः स्वर्णभूषणैः १ पंचाशद्गाः प्रयत्नेन विप्रेभ्यश्च पृथक् पृथक् प्रत्याम्नायैर्हरिः साक्षात्सतुष्टोभून्नसंशयः ॥ २ ॥ अशक्तश्चान्द्रविषयेप्रत्याम्नायंतदाचरेत् एतेनशुद्धिमाप्नोतिचान्द्रायणफलंलभेत् ॥ ३ पिपीलिकायवमध्यचान्द्रायणविषयेऽतिधानिनः ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ अष्टौ चान्द्रायणेदेयाः प्रत्याम्नायविधौसदेति ॥ धेनवइतिशेषः ॥ अल्पधनविषयकमिदम् ॥ निर्धनविषयेतूक्तंप्राक् ॥

विषे संशय नाहि । २ । जेकर चांद्रायणव्रतकरणे विषे असमर्थ होवे तां प्रत्याम्नाय कों करेऐसे करणेकर्के शुद्धिको प्राप्तहोताहै और चांद्रायणके फलको प्राप्त होताहै ३ । और पिपीलिकामध्य और यवमध्य चांद्रायणके विषे अति धनवाले को हुए प्रत्याम्नाय कहाहै ॥ अब चतुर्विंशति मत विषे कहतेहां चांद्रायण के प्रत्याम्नाय विषेअठ ८ प्रसूत होइयां होयां गौयां देणेयोग्यहैं परंतु एहप्रत्याम्नाय जिसके पास धन थोडाहै तिसके योग्यहै और जिसके पास कुछभी धननहिं तिसके अर्थ प्रत्याम्नाय पछि प्राजापत्य व्रत त्र्यरूप कियाहै सो १ जानणा ॥

यतिचांद्रायण व्रत विषे बृहद्विष्णुका वाक्यहै चामिति जो पुरुष यतिचांद्रायणव्रतकों अशक्ति आदि हेतुतें नहिं करै तो तिसका बदला चार प्राजापत्यकृच्छ्रकरे १ ऋषि चांद्रायण विषयविषे भी बृहद्विष्णु कोहि वाक्यहै चामिति चांद्रायण और पराककर्के प्रायश्चित्तके करणाविषे असमर्थ होवे तो अपणी शुद्धि वास्ते पंच प्राजापत्य व्रत करे १ अब शिशु चांद्रायण के अर्थमदनरत्नग्रंथविषे संगृहीत स्मृतिविषे कहाहै प्रेति प्राजापत्य विषे एक गोदान करे और अतिकृच्छ्र विषे दोगौयां दान करे और चांद्रायण और पराक विषे त्रय गौयांदानकरे १ ॐ इसतें अनंतर व्रतके अंग भूतयम और नियम

यतिचान्द्रायणविषये वृहद्विष्णुः ॥ चान्द्रायणमकुर्वाणाःकुर्युःकृच्छ्रचतुष्टय मिति। ऋषिचान्द्रायणविषयेसएवाह चान्द्रायणपराकाभ्यांनिष्कर्तियोनश क्नुयात् सकरोत्यात्मशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यस्यपंचकमिति १ शिशुचान्द्रायणविष येमदनरत्नेस्मृतौ ॥प्राजापत्येतुगामेकामतिकृच्छ्रेद्वयंस्मृतम् चान्द्रायणेप राकेचतिस्रोगादक्षिणास्तथेति १ ॐ अथव्रतांगभूतव्रतायमानियमाश्चयाज्ञ वल्क्ये । ब्रह्मचर्य्यंदयाक्षान्तिर्दानंसत्यमकल्कता अहिंसास्तेयमाधुर्य्येदम श्चेतियमाःस्मृताः ॥ १ ॥ स्नानंमौनोपवासेज्यास्वाध्यायोपस्थनिग्रहाः वि धिवद्गुरुशुश्रूषाशौचक्रोधाप्रमादता ॥ २ ॥ इतिदशनियमाः ॥ १० ॥

याज्ञवल्क्यविषे कहेहैं ब्रेति ब्रह्मचर्य और दया और क्षांति क्या सहिष्णुता और अभयदान और वाणीकरकें सत्यकहना और क्रोधका त्यागणा और हिंसातें रहितहोणा और चौरीकात्याग और माधुर्य्य क्या सौम्यवाक्य और विषयातें इंद्रियांकों रोकणा एह १० यमकहेहैं १ अबनियमक तेहां स्नानमिति स्नान और मौनता क्या वृथावाक्यसेंनिवृत्ति और मानकर्के अन्नकों भक्षणकरणा और यज्ञ और वेद पाठ करणा और जितेंद्रियहोणा और गुरांकी सेवा और शौचता और क्रोधका त्याग और प्रमादतें रहित होणा क्या सत्कर्म्म विषे नाहि भुल्लणा एह दश १० नियम कहेहैं २

इसमें ब्रह्मचर्यहै संपूर्ण इंद्रियांकारोकणा उपस्थनिग्रह क्या लिंगमात्रका रोकणा इतनाभेदहै अब इसीमें मनुजीका वाक्यहै अहिंसेति किसेजीवको हिंसा न करे और सत्यकहे और क्रोधकों त्यागे और कुटिलताकों त्यागे त्रय वार दिनविषे और त्रय वार रात्रिविषे सहित वस्त्रांके स्नान करे ॥ १ ॥ कोविभी स्त्री और शूद्र और पतित इनांके साथसंभाषण कबीभी न करे और स्थान आसनकों ना त्यागें असमर्थ होवे तां और जेकर समर्थ होवे तां भिक्षाटनादिके लिये दूरभी जावे और पृथ्वी विषे शयन करे ॥ २ ॥ व्रती पुरुष ब्रह्मचर्यकों धारके गुरु और देवता और ब्राह्मणांका पूजन करे और गायत्रीका नित्य जप करे और पवित्र ऋचा जो सहस्रशीर्षादि आशुःशिशानइत्या

अत्र ब्रह्मचर्य्यंसर्वेन्द्रियनिग्रहः उपस्थनिग्रहोलिंगमात्रनिरोधइतिभेदः॥ मनुः ॥ अहिंसासत्यमक्रोधमार्जवंचसमाचरेत् त्रिरह्निस्त्रिर्निशायांचस वासाजलमावसेत् १ स्त्रीशूद्रपतितांश्चैवनाभिभाषेतकर्हिचित् स्थानास नाभ्यांविहरेदशक्तोधःशयीतवा २ ब्रह्मचारीव्रतीचस्याद्गुरुदेवद्विजार्चकः साविर्त्रींचजपेन्नित्यंपवित्राणिचशक्तितः ३ सर्वेष्वेवव्रतेष्वेवंप्रायश्चित्तार्थ माद्दतइति ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्र भुवररणवीरसिंहाज्ञप्तश्रीसारस्वतपण्डितोपनामदेवदित्तसुतपण्डितगंगा राम संगृहीते धर्म्मशास्त्रमहानिबन्धे प्रायश्चित्तभागे व्रतप्रकरणंपंचमम् ॥ ५ ॥ ●●●●●●●●●●

दि तिनांकों पढे जैसे सामर्थ्यहै ॥ ३ ॥ संपूर्ण व्रतां विषे ऐसे प्रायश्चित्तके वास्ते आदर करकें कहाहै ॥ इसप्रकार श्रीककेंयुक जो महाराजयांके अधिराज और जंम्बू काश्मीर आदि अनेक देशके स्वामी प्रभुवर रणवीरसिंह जीतिनाककें आज्ञासे पंडित गंगाराम करकें संगृहीत जो धर्मशास्त्रका महानिबंध तिसकें प्रायश्चित्त भागविषे व्रत प्रकरण पंचम समाप्तहोया ॥ ५ ॥ एह व्रतप्रकरण सभ तहांके प्रायश्चित्तके उपयोगी व्रतांकरकें संपूर्णहै और इसमे अपने अपणे विषयमें जोजो पाप दूरहोण वालेहै सोलिखेहैं और प्रकरणांतरमें भी इसका उपयोगहै ॥ व्रत विधान मनु आदका जानो धर्मनिधान सर्वपाप नसजातहै जो इसपढे सुजान ॥ १ ॥

स्वतइति इसकाअर्थ पीछेसें जानलेणा अथेति विशेष प्रायश्चित्त कथनतें उपरंत अब
छेवें प्रकरणमें संपूर्ण पापोंका सांझा प्रायश्चित्त कथन करते हैं तिसके विषें पहलें
मनुका वाक्य है यतात्मनइति रोक लिआ है चित्त जिसने और सावधान है तिसकों
बारां १२ दिनका उपवास करणा लिखा है एहि पराक नाम करके कृच्छ्र संपूर्ण पापां
के नाश करणे वाला है ॥ १ ॥ विगतेति इसमें पूर्व श्लोककाहि अर्थ है सकृदिति
इसका एह तात्पर्य है कि जेकर बहुत पाप होवे तां एह पराक कृच्छ्र एक वार संपूर्ण
करणा जेकर पाप थोडा होवे तां एक पाद न्यून नौं९दिन करणा जेकर इसतें भी पाप न्यून
होवे तां अर्धकयाछें६दिनकरणा जेकर इसतें भी पाप न्यून होवे तां एक पाद तीन३दिन करणा
१ ॥ अब वेद पाठ पंच यज्ञ इनांका फल कथन करते हैं वेदाभ्यास इति दिन दिन प्रति वेद
पाठ करणा १ शक्तिकरके पाठ होम अभ्यागतका पूजन तर्पण वैश्वदेव बलि एह पंच महा

ओंनमः स्वतोमित्वातत्वामित्यादि अथसर्वपापसाधारणप्रायश्चित्तम् तत्र
मनुः यतात्मनोऽप्रमत्तस्यद्वादशाहमभोजनम् पराकोनामकृच्छ्रोयंसर्व
पापापनोदनः ॥ १ ॥ विगतानवधानस्यसंयतेंद्रियस्य द्वादशाहमभोजन
मेव पराकाख्यःकृच्छ्रः सकृदावृत्तितारतम्येनगुरुलघुसमफलपापनाशकः
॥ तथा वेदाभ्यासोऽन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा नाशयन्त्याशुपापा
निमहापातकजान्यपि ॥ १ ॥ क्षमाअपराधसहिष्णुता साचाकस्मिकसदू
वृत्तापराधे नतु चौराद्युपद्रवीये यथैधांस्तेजसावन्हिःप्राप्तान्निर्दहतिक्षणात्
तथाज्ञानकृतंपापंविप्रोदहतिवेदवित् ॥ १ ॥ अत्र वन्हिदृष्टान्तेन ज्ञानकृ
तमज्ञानकृतं च पापंवेदविद्विप्रोदहतीत्यर्थः

यज्ञ २ कीते होए अर क्षमा ३ एभी ब्रह्महत्यादि महापापका नाश करदेते हैं ॥ १ ॥ अब
क्षमा पदका अर्थ करतेहैं क्षमेति परकरकें कीते होए अपराधका सहारणा इसका
नाम क्षमाहै अर सो क्षमा एक वार स्वाभाविक महात्मा करके होआ जो अपराधहै तिसकें
विषे युक्तहै अर चौरादिकां करके कीताहोआ जो अपराधहै तिस विषयमे क्षमा युक्त नहि अब
वेद पाठका विशेष फल कथन करतेहैं यथेति जिस प्रकार प्राप्त होआं काष्ठांनूं तेज करकें
क्षणमात्रतें अग्नि दग्ध कर देताहै तिस प्रकार वेदके जानने वाला ब्राह्मण अज्ञान क
रके कीते होए पापकों दग्ध करदेताहै ॥ १ ॥ इसमे वन्हि दृष्टांत करके अग्नि क्या
लेणा जिस प्रकार अग्नि स्वाभाविक लग पवे तां भी दग्ध कर देताहै अर जेकर कोई लादेवे
तांभी दग्ध कर देताहै तिस प्रकार ज्ञान करके और अज्ञान करकें कीते होए पापकों वेदके
जानने वाला ब्राह्मण दग्ध कर देता है ॥१

अब प्राणायाम करके पापकी शुद्धि कथन करतेहैं सव्याहृतीति ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेव स्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् ॐआपोज्योतीरसोमृतंब्रह्मभूर्भुवःस्वरों इह जो सात व्याहृतिआं अर गायत्री अर ॐकार इनां के सहित जो सोलां १६ प्राणायाम हैं सो दिन दिन प्रति मास पर्यंत कीते होए गर्भके हत करण वालेनूं भी पवित्र करदेतेहैं ।२। इस श्लोकमें व्याहृति अर प्रणव तिनों दोनों करके गायत्री अर शिरस् एभि जानलेने क्योंकि गायत्री शिरसा सार्द्ध इत्यादि जो आगे संवर्तका वाक्यहै तिसमें अन्वहं एह जो पूर्व पद कथन कीता है तिस करके भी मास पर्यंत लैणा ॥ अब संवर्त ऋषिका वाक्य कथन करतेहैं अनादिष्टेष्विति अज्ञान करके कीते होए जो पाप हैं तिनके विषे प्रायश्चित्त कथन करते हैं दानों कर

सव्याहृतिप्रणवकाःप्राणायामास्तुषोडश अपिभ्रूणहनंमासात्पुनंत्यहरहःकृताः ॥ २ ॥ अत्रव्याहृतिप्रणवौगायत्रीशिरसोरुपलक्षकौ गायत्रींशिरसासार्द्धमित्यादिवक्ष्यमाणसंवर्त्तवाक्यात् अन्वहमित्यत्रापिकालाकांक्षायांमासादित्यन्वेति ॥ संवर्त्तः ॥अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तमथोच्यते दानैर्होमैर्जपैर्नित्यंप्राणायामैर्द्विजोत्तमः पातकेभ्यःप्रमुच्येतवेदाभ्यासान्नसंशयः ॥ १ ॥ सुवर्णदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापानिह्यन्यजन्मकृतान्यपि।२।तिलधेनुंचयोदद्यात्संयतायद्विजन्मने ब्रह्महत्यादिभिःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ३ ॥ संयतायजितात्मने द्विजन्मनेविप्राय

के १ अर होमों करके २ अर जपों करके ३ अर नित्य प्राणायाम करणे करके ४ अर वेद पाठ करणे करके ५ श्रेष्ठ ब्राह्मण पापांतें रहित होजाताहै इसमें संदेह नहिंहै ॥ १ ॥ अब सुवर्णादि दान करके पाप की शुद्धि कथन करतेहैं सुवर्णेति स्वर्णदान १ अर गोदान २ अर पृथ्वी दान ३ एह पूर्व जन्म के विषे कीते होए जो पापहैं तिनांका भी नाश करदेतेहैं ॥ २ ॥ अब तिल दान करके पापांकी शुद्धि कथन करतेहैं तिलधेनुमिति तिलांकी गौकों रचकर जो जितेंद्रिय ब्राह्मणके तांई देताहै सो ब्रह्महत्यादि पापांतें रहित हो जाता है इसमें संदेह नहिंहै ३ ॥ तिल धेनु का प्रकार लिखतेहैं पद्मपुराणमें क्या सोलां १६ आढककी धेनु बनानी अर चार ४ आढक का वछा अर इक्षुओंके पाद अर पुष्पोंके दांत अर नासां चंदनकीआं अर जिह्वा गुडकी अर आसन काले हरिणके चर्मका अर वस्त्र रत्न एनां करकेयुक इसप्रकारकी धेनु बनावे

अब पौर्णमासी के विषे तिलदानका विशेष फल कथन करतेहैं ॥ मासइति मास मासके विषे पौर्णमासीके दिन उपवास कौं रखकर ब्राह्मणके तांई तिलांकों देकरके पापांते रहित होजाताहै ॥ ४ ॥ अब कार्त्तिक मासकी पौर्णमासीका अधिक फल कथन करते हैं ॥ उपवासीति उपवासकों रखकर कार्त्तिक मासकी पौर्णमासीके दिन स्वर्ण १ अर वस्त्र २ अर अन्न ३ इनांके दान करके संपूर्ण पापांते रहितहोताहै ॥ ५ ॥ अब दानके विषे श्रेष्ठ तिथिआंकों कथन करते हैं ॥ अमावास्येति अमावास्या १ अर द्वादशी २ अर विशेष करके सूर्य संक्रांति ३ एह तिथीआं श्रेष्ठ कथन कीतिआं हैं अर तिस प्रकार आदित्यवार भी

मासेमासेचसंप्राप्तेपौर्णमास्यामुपोषितः ॥ ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्त्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ४ ॥ उपवासीनरोभूत्वापौर्णमास्यांचकार्त्तिके हिरण्यंवस्त्रमन्नंवादत्त्वामुच्येतदुष्कृतैः ॥ ५ ॥ अमावास्याद्वादशीचसंक्रान्तिश्चविशेषतः एताःप्रशस्तास्तिथयोभानुवारस्तथैवच ॥ ६ ॥ तत्रस्नानंजपोहोमोब्राह्मणानांचभोजनं उपवासस्तथादानमेकैकंपावयेन्नरम् ॥ ७ ॥ स्नातःशुचिर्धौतवासाःशुद्धात्माविजितेन्द्रियः सात्त्विकंभावमाश्रित्यदानंदद्याद्विचक्षणः ॥ ८ ॥ सप्तव्याहृतिभिर्होमोद्विजैःकार्योहितात्मभिः उपपातकशुद्ध्यर्थंसहस्रपरिसंख्यया ॥ ९ ॥

श्रेष्ठहै ॥ ६ ॥ इनांके विषे स्नान १ अर जप २ अर होम ३ अर ब्राह्मणांको भोजन खुआणा ४ अर उपवास ५ अर दान ६ इनांके विचों एकभी कीताहोइआ मनुष्यकों पवित्र करदेताहै ७ अब दानका प्रकार कथन करते हैं ॥ स्नातइति कीताहै स्नान जिसने अर पवित्र है अर धोतेहैं वस्त्र जिसने अर शुद्ध है अंतः करण जिसका अर जीतेहैं इंद्रिय जिसने सो बुद्धिमान् सतो गुणकेआश्रय होकर दानको देवे ॥ ८ ॥ अबहोमका फल कहतेहैं सप्तेति हितकी इच्छा वाले जो ब्राह्मण और वैश्य तिनांने पापकी शुद्धिके वास्ते ओंभूः ओंभुवःइत्यादि सप्त व्याहृतिआं करके हजार १००० संख्या करके होम करणा चाहिए अर्थात् हजार आहुति करणी चाहिए ॥ ९ ॥

अब ब्राह्मणांको भोजन खुलाणेका फल कथन करतेहैं ॥ महापातकइति ब्रह्म हत्यादि पाप करके संयुक्त भी ब्राह्मण क्षत्रि वा वैश्य होवे जीवन पर्यंत मास मासके विषे अथवा वर्ष वर्षके विषे लक्ष १००००० ब्राह्मणां को भोजन खुलाकर ब्रह्महत्यादि जो संपूर्ण पाप हैं तिनांते रहित होजाताहै अर तिसप्रकार गायत्रीके जपकरणे वाला भी ब्रह्महत्यादि संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ १०॥ अब गायत्रीके जपका विशेष फलकहतेहैं अभ्यसेदिति वनको जाकर नदीके कनारे उपर संपूर्ण पापांकी शुद्धिके वास्ते अतिशय करके पवित्र और वेदांके उत्पन्न करणेवाली जो गायत्रीहै तिसनूं जपे ॥ ११ ॥ अब गायत्रीके जपका प्रकार कथन करतेहैं ॥ स्नात्वेति ब्राह्मण क्षत्रि वा वैश्य नदीके विषें विधिसें स्नानको करके प्राणात्माको पवित्रकरे अर्थात् तीन ३ प्राणायाम करे फेर तीन ३ प्राणायाम करके शुद्ध

महापातकसंयुक्तोलक्षभोजंसदाद्विजः मुच्यतेसर्वपापेभ्योगायत्र्याश्चैव जापवान् ॥ १० ॥ अभ्यसेच्चमहापुण्यांगायत्रींवेदमातरं ॥ गत्वारण्यंनदीतीरेसर्वपापविशुद्धये ॥ ११ ॥ स्नात्वाचविधिवत्तत्रप्राणात्मानमपावयत् प्राणायामैस्त्रिभिःपूतोगायत्रींतुजपेद्द्विजः१२अक्लिन्नवासाःस्थलगःशुचौ देशेसमाहितः पवित्रपाणिराचांतोगायत्र्याजपमारभेत्१३ ऐहिकामुष्मिकंपापंपापंसर्वंविशेषतःपंचरात्रेणगायत्रींजपमानोव्यपोहति ऐहिकामुष्मिकं ऐहिकफलकमामुष्मिकफलक मित्यर्थः ॥ १४॥ गायत्र्यास्तुपरंनास्तिशोधनंपापकर्मणाम् महाव्याहृतिसंयुक्तांप्राणायामेनसंयुताम्॥१५॥

होआ होआ गायत्रीको जपे ॥ १२ ॥ अक्लिन्नवासा इति सुके हैं वस्त्र जिसके अर्थात् और शुद्ध वस्त्रांको लयकर नदीदे कनारेको प्राप्तहोआ होआ शुद्ध देशविषें स्थित होकर रोकलयेहैं इंद्रियांजिसने अर पवित्रहस्तवाला और कीताहै आचमन जिसने ऐसाहोकर गायत्रीके जपका आरंभ करे ॥ १३ ॥ ऐहिकेति इसलोक विषें फल देणवाले जो पापहैं अरपरलोक विषें फल देणवाले जोसंपूर्ण पापहैं तिनांकोंभी गायत्रीके जपकरण वाला पंच ५ रात्रि करके नष्टकर देताहै १४॥ अब गायत्रीकी संपूर्णतें श्रेष्ठताकथनकरतेहैं गायत्र्याइति गायत्रीतें परे औरकोई दूसरा पापकर्मके नाशकरणे वाला नहि अर्थात् गायत्रीहि संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाली है। और ॐभूः ॐभुवः इत्यादि सप्त महाव्याहृतिआं करके युक्त और प्राणायाम करके जो संयुक्तहै ऐसी गायत्रीको जपने वाला पुरुष संपूर्ण पापांतें रहित होजाता है॥ १५ ॥

अब और प्रकार कथन करतेहैं ब्रह्मचारीति ॥ ब्रह्म आचार वाला जोहै अर्थात् अष्ट प्रकार के मैथुनतें रहितहै अर थोडे भोजन के खाने वाला अर संपूर्ण जीवोंके हितकी इच्छाकरता है ऐसा पुरुष गायत्री के लक्ष १०००० जप करके संपूर्ण पापांतें रहित हो जाताहै ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं ॥ अयाज्येति पतितादिकों यज्ञ करवा कर और चंडालादिके अन्न नूं खाकर गायत्रीके अठ हजार ८००० जप करके संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै २ अब और प्रकार कथन करतेहैं अहनीति दिन दिन प्रति निश्चय करके ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनांके मध्यमें श्रेष्ठ जो गायत्रीनूं पड़ताहै अर्थात् जो जप करता है सो पुरुष एक मास करके संपूर्ण पापतें रहित हो जाताहै इसमें दृष्टांत है क्या कि जिस प्रकार सर्प कुंजतें रहित होजाताहै इस दृष्टांत करके क्या लेना कि जिस प्रकार सर्प सुखसें कुंजकों

ब्रह्मचारीमिताहारःसर्वभूतहितेरतः गायत्र्यालक्षजप्येनसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥१॥ अयाज्ययाजनंकृत्वाभुक्त्वाचान्नंविगर्हितं गायत्र्यष्टसहस्रंतुजाप्यंकृत्वाविमुच्यते ॥ २ ॥ अहन्यहनियोऽधीतेगायत्रींवैद्विजोत्तमः मासेनमुच्यतेपापादुरगः कंचुकाद्यथा ३ ॥ गायत्रींयःसदाविप्रोजपतेनियतःशुचिः सयातिपरमंस्थानंवायुभूतःखमूर्तिमान् ४ ॥ प्रणवेनतुसंयुक्ताव्याहृतीस्सप्तानित्यशः गायत्रींशिरसासार्द्धमनसात्रिःपठेद्द्विजः निगृह्यचात्मनःप्राणान्प्राणायामोविधीयते ॥ ५ ॥

उतार देताहै तिस प्रकार गायत्री के जप करके सुखसें हि पापतें रहित होजाताहै ॥ ३॥ अब गायत्री के जप करके मोक्ष कथन करतेहैं गायत्रीमिति नियम वाला अर शुद्ध जो ब्राह्मण सर्वदा काल गायत्री नूं जपताहै सो वायुस्वरूप होकर आकाशके स्वरूप वाला अर्थात् सर्वव्यापी होआ होआ वैकुंठको प्राप्त होवाहै ॥ ४ ॥ अब प्राणायामका स्वरूप कथन करते हैं प्रणवेनेति अपणेआं प्राणांनूं रोक कर ओंकारके सहित सप्त व्याहृतिआं नूं और शिरके साथ गायत्री नू मन करके तीन ३ वार पडे अर्थात् ओंभूः ओंभुवः ओंस्वः ओंमहः ओंजनः ओं तपः ओंसत्यं तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनःप्रचोदयात् ओंआपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों इह तीन३ वार मनविषे पडे इसका नाम प्राणायामहै ॥ ५ ॥

अब उसीका प्रकार कथन करतेहैं प्राणायामेति दिन दिन प्रति समाधि लगा कर पुरुष पूरक कुंभक रेचक करके तीन ३ वार प्राणायाम करे॥ अब प्राणायामका फल कथन करतेहैं मानसमिति तीन ३ बार प्राणायामके करणे करके मन करके कीता जो पाप और वाणी करके कीता जो पाप और देहकरके कीता जो पाप एह संपूर्ण पाप नष्ट होजातेहैं ॥ ६ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं ऋग्वेदमिति जो ऋग्वेद नूं और यजुर्वेदकी शाखाकों पडताहै अर सहित रहस्यके सामवेदकों जो पडताहै सो पुरुष संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ७ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं पावमानीमिति पावमानी ऋचानूं अर कौत्ससंज्ञिक मंत्रां कों जप कर और सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादि २२ मंत्रां कों जप कर संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै अर पितृभ्यः स्वधा इत्यादि ५० मंत्रां नूं जप कर संपूर्ण पापांतें रहि

प्राणायामत्रयंकुर्यान्नित्यमेवसमाहितः मानसंवाचिकंपापंकायेनैवतुयत्कृतं तत्सर्वंनश्यतेतूर्णंप्राणायामत्रयेकृते॥ ६ ॥ऋग्वेदमभ्यसेद्यस्तुयजुःशाखामथापिवा सामानिसरहस्यानिसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ७॥ पावमानींतथाकौत्संसपौरुषंसूक्तमेवच जप्त्वापापैःप्रमुच्येतपित्र्यंचमधुछांदसम्॥८॥ मंडलंब्राह्मणंरुद्रंसूतोक्ताश्चवृहत्कथाः वामदेव्यंवृहत्सामजप्त्वापापैःप्रमुच्यते ॥ ९ ॥ चांद्रायणंतुसर्वेषांपापानांपावनंपरं कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिपरमंस्थानमेवचेति ॥ १० ॥

त होताहै अर मधुवाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवःमाध्वीर्नःसंत्वोषधीःमधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवंरजःमधुद्यौरस्तुनःपितामधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमानस्तुसूर्य्योमाध्वीर्गावोभवंतुनः मधुमधुमधु इति इस मंत्रनूं भी जप कर संपूर्ण पापां तें रहित होताहै ॥ ८ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं मंडलमिति यदेतन्मण्डलंतपति इत्यादि जो ब्राह्मण मंडलके २२ मंत्र हैं अर ऊँनमस्ते रुद्रमन्यवेइत्यादि जो रुद्रसूक्तके ६६ मंत्रहैं अर सूतप्रोक्तकथा अर ब्राह्मण जो है और वामदेव्य संज्ञिक जो मंत्र १ है और वृहत्साम संज्ञिक जो मंत्र हैं इनां मंत्रांके जपकरणे करके भी संपूर्ण पापांतें रहित होजाताहै ॥ ९ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं चांद्रायणमिति संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला जो चांद्रायण व्रतहै तिसके करणे वाला जो पुरुष है सो भी पापांते रहित होजाताहै अर स्वर्गादि स्थान को प्राप्त होताहै ॥ १० ॥

अब इसीविषय में माधवीय ग्रंथके विषे कथन कीता जो यम ऋषि का वाक्य सों कथन करतेहैं सहस्रेति हजार १००० जप गायत्री का उत्तम कथन कीता है अर सउ १०० जप मध्यमहै अर दश १० वार जप न्यून कथन कीताहै अर्थात् ब्रह्महत्यादि पापां के नाश करणे वाली गायत्री कों हजार १००० अर शत १०० अरदश १० वार जो जपताहै सोसंपूर्ण पापांते रहित होताहै १ अब और प्रकार कथन करतेहैं विरुजमिति विरुजसंज्ञिक मंत्रां कों दो २ वार जप करके तिस दिनमें हि शुद्ध होताहै और वाम देव्य संज्ञिक पूर्व लिखाजो मंत्रहै इसकों भीदो२ वार जप करके तिसदिनमें हि शुद्धहोताहै ॥ २ ॥ अव और प्रकार कथन करतेहैं पौरुषमिति और सहस्र शीर्षाकों एक १ वार जपकर संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ अब और प्रकार कथनकरतेहैं वृषभमिति वृषभसंज्ञिक मंत्रांनूं सौ १०० वार पड कर तिस दिनमेंहि शुद्ध होजाताहै ॥ ३ ॥

माधवीयेयमः सहस्रपरमांदेवींशतमध्यांदशावराम् गायत्रींसंजपेन्नित्यं महापातकनाशिनीम् ॥ १ ॥ विरुजंद्विगुणंजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति वामदेव्यंद्विरावर्त्यतदह्नैवविशुध्यति ॥ २ ॥ पौरुषंसूक्तमावर्त्यमुच्यते सर्वकिल्बिषात् वृषभंशतशोजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति ॥ ३ ॥ वेदमेकगुणंकृत्वातदह्नैवविशुध्यति रुद्रैकादशकंजप्त्वातदह्नैवविशुध्यति ४ ॥ आथर्वणाश्चयेकेचिन्मंत्राःकामविवर्जिताः तेसर्वेपापहंतारोयाज्ञवल्क्य वचोयथा ॥ ५ ॥ ब्राह्मणानिचकल्पांश्चषडंगानितथैवच आख्यानानि तथान्यानिजप्त्वापापैःप्रमुच्यते ॥ ६ ॥ इतिहासपुराणानिदेवतास्तवनानिच जप्त्वापापैःप्रमुच्यतेधर्माख्यानैस्तथापरैरिति ॥ ७ ॥

और वेदनूं एक १ वार जप कर तिस दिनमें हिं शुद्धहोजाताहै ॥ अब और प्रकारकथनकरतेहैं रुद्रैकादशकमिति रुद्रियके यारां ११ अध्यायां नूं जप कर तिस दिनमें हि शुद्धहो जाताहै ४ ॥ अब और प्रकार कथन करते हैं आथर्वणाइति अथर्वणवेदके जेडे मंत्र निष्काम हैं अर्थात् मारण मोहन स्तंभन इत्यादि कामनातें रहित हैं सो संपूर्ण पापांके नाश करण वालेहैं एह याज्ञवल्क्य ऋषिका वचनसत्यहै । ५ । अव और प्रकार कथन करतेहैं ब्राह्मणानीति ब्राह्मण मंत्र औपनिषदः और शिक्षादि जो वेदके अंगहैं और जो ऋषिओं के वाक्य हैं इनां नूं जप कर संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ६ ॥ अव और प्रकार कथन करते हैं इतिहासेति महा भारतादि जो इतिहास हैं और भागवतादि जो पुराणहैं और जो देवताके स्तोत्रहैं और मनुस्मृत्यादि जो हैं इइनां के पाठ करणें करके भी संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ७ ॥

इसी विषयमें बौधायन जीका वाक्यहै विधिनेति शास्त्र करके देखी जो विधि तिस विधि क कै दिन दिन प्रति मासपर्यंत प्राणायाम नूं करे लिंग करके कीता जो पाप श्रौर चरणों करके श्रौर बाहुं श्रां करके श्रौर मन करके श्रौर वाणी करके श्रौर कर्णों करके श्रौर त्वचा करके श्रौर नासां करके श्रौर नेत्रों करके कीता जो पाप एह संपूर्ण पाप प्राणायाम के करणे करके शीघ्रहि नष्ट हो जातेहैं ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिका वाक्यहै मृगारेष्टिरिति मृगारेष्टि श्रौर पवित्रेष्टि श्रौर त्रिहवि श्रौर पावमानी एह संपूर्ण इष्टिश्रां वैश्वानर इष्टि करके युक्त होइयां होइयां पापांके नाश क

बौधायनः ॥ विधिनाशास्त्रदृष्टेनप्राणायामान्समाचरेत् यदुपस्थकृतंपापं पद्भ्यांवायत्कृतंभवेत् ॥ बाहुभ्यांमनसावाचाश्रोत्रत्वग्घ्राणचक्षुषेति ॥ १ ॥ प्राणायामाःमासपर्यन्तंप्रातिदिनम् ॥ चतुर्विंशतिमते ॥ मृगारेष्टिःपवित्रेष्टिस्त्रिर्हविःपावमान्यपि इष्टयःपापनाशिन्योवैश्वानर्यासमान्विताः १ कौर्मे ॥ जपस्तपस्तीर्थसेवादेवब्राह्मणपूजनम् ग्रहणादिषुकालेषुमहापातकशोधनम् ॥ १ ॥ पुण्यक्षेत्राभिगमनंसर्वपापप्रणाशनम् देवताभ्यर्चनंपुंसामशेषाघविनाशनम् ॥ २ ॥ अमावास्यांतिथिंप्राप्यमासमाराधयेद्भवम् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥

रणे वालीश्रां हैं ॥१॥ कूर्म पुराणमें भी लिखयाहै जपइति जप श्रौर तप श्रौर तीर्थ सेवन श्रौर देवताका पूजन श्रौर ब्राह्मणोंका पूजन एह संपूर्ण ग्रहणादि काल विषे कीतेहोए ब्रह्महत्यादि पापों के नाश करणे वाले हैं १ श्रौर पवित्र स्थान का सेवनभी संपूर्ण पापांका नाश कर देताहै श्रौर देवताका जो पूजनहै सो पुरुषां के संपूर्ण पापांके नाश करणे वाला है ॥ २ ॥ अब श्रौर प्रकार कथन करतेहैं अमेति अमावास्या तिथितें लेकर एक मास पर्यंत शिवजी का पूजन करे पीछे ब्राह्मणा नूं भोजन देकर संपूर्ण पापांते रहित होजाताहै ॥ ३ ॥

अब और प्रकार कथन करतेहैं कृष्णेति कृष्णपक्षकी अष्टमीके विषे तिसप्रकार कृष्णपक्षकी चतुर्दशी के विषे शिवजीकों पूजकर्के और बहुतिआं ब्राह्मणानूं पूज कर्के संपूर्ण पापातें रहित होताहै ॥ ४ ॥ ब्राह्मणान् इसस्थानमें सुज्ञान् एभी पाठ होताहै ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं त्रयोदश्यामिति तिसप्रकार त्रयोदशीकेदिन रात्रिके पहले पहरके विषे साहित भेटादे शिवजीनूं पूजकर्के संपूर्ण पापांते रहित होताहै ॥ ५ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं एकादश्यामिति शुक्लपक्षकी एकादशीके विषे उपवास व्रत रक्खकर द्वादशीकेदिन विष्णुकों पूज कर्के संपूर्ण पापावें रहितहोवाहै । ६ । अब और प्रकार कथनकरतेहैं उपोषितइति कृष्णपक्षकी

कृष्णाष्टम्यांमहादेवंतथाकृष्णचतुर्दशीं संपूज्यब्राह्मणान्सर्वान्सर्वपापैः प्रमुच्यते ४ ब्राह्मणान्सुज्ञानितिपाठः सर्वान्बहूनित्यर्थोवा ॥ त्रयोदश्यांतथारात्रौसोपहारंत्रिलोचनं दृष्ट्वेशंप्रथमेयामेमुच्यतेसर्वपातकैः ५ एकादश्यां निराहारः समभ्यर्च्यजनार्दनम् द्वादश्यांशुक्लपक्षस्यसर्वपापैःप्रमुच्यते ६ उपोषितश्चतुर्दश्यांकृष्णपक्षेसमाहितः यमायधर्मराजायमृत्यवेचांतकाय च ७ वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयायच प्रत्येकंतिलसंयुक्तान्दद्यात्सप्तोदकांजलीन् ८ स्नात्वानद्यांतुपूर्वाह्णेमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ तत्रैव नान्यत्पश्यामिजंतूनांमुक्त्वावाराणसींपुरीं सर्वपापप्रशमनंप्रायश्चित्तंकलौयुगे ॥ १ ॥

चतुर्दशीके दिन उपवास व्रत रक्षकर दिनके प्रथमपहरमें नदीके विषे स्नान कर्के और इंद्रियां कों रोककर्के यम धर्मराज मृत्यु अंतक वैवस्वत काल सर्वभूतक्षय एहजो धर्मराजके सप्तनामहैं इ नांसत्तांकेतांई भिन्न भिन्न तिलांकर्के संयुक्त सप्त जलकीअंजलियांदेवै तद संपूर्ण पापातें रहित होताहै ८ कूर्मपुराणमेंहि किसे ऋषिका किसेके प्रति वाक्य है नान्यदिति काशीपुरीकों त्याग कर्के कलियुगमें पुरुषांके संपूर्ण पापांके नाश करणे वाले और प्रायश्चित्तनूं नहि देखताहुं अर्थात् कलियुगमें संपूर्ण पापांके नाशकरणे वाली काशीहै ॥ १ ॥

यमजीका वाक्यहै जप्येदिति इस वामदेवकी वामीय ऋचानूंपडे और पावमानीऋचानूं पड करके और कुंताद्य ऋचानूं पड करके और वालखिल्यजो ऋचा हैं तिनानूं पड करके और निवृत्प्रैषा ऋचानूं पड करके और वृषाकपिनूं पड करके और होता यक्षत इत्यादि जो ऋचा हैं तिनानूं पड करके और नमस्तेरुद्रमन्यवे इत्यादि जो ऋचा हैं तिनानूं एकवार जप करके संपूर्ण पापांतें रहित होताहै ॥ १ ॥ मनुजीकाभी वाक्यहै एनसामिति वहुत और थोडे जो पाप हैं तिनके नाशकी इच्छावाला अवतेहेलो वरुण नमोभिरित्यादि जो अवेत्यृक् ऋचाहै इसनूं और यत्किंचेदमित्यादि ऋचानूं एक वर्ष जपे और जपके मध्यमें होर कार्य न करे

यमः ॥ जप्येद्वाप्यस्यवामीयंपावमानीरथापिवा कुंताढ्यंवालखिल्यांश्चनि वृत्प्रैषांवृषाकपिम् होतृन्रुद्रान्सकृज्जप्त्वामुच्यतेसर्वपातकैः १ मनुः। एन सांस्थूलसूक्ष्माणांचिकीर्षन्नपनोदनं अवेत्यृचंजपेदब्दंयत्किंचेदमितीतिच १ अवेत्यृक् अवतेहेलोवरुणनमोभिरित्यादिका। जपस्त्वर्थांतराविरुद्धेकाले॥ प्रायश्चित्तमयूखे हिरण्यदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच नाशयंत्याशुपापा निमहापातकजान्यपि १ गौत्तमः ॥ संवत्सरःषण्मासाश्चत्वारोमासास्त्रयो द्वावेकश्चतुर्विंशत्यहोद्वादशाहःषडहस्त्र्यहोऽहोरात्रइतिकालाः एतान्यना देशेविकल्पेनक्रियेरन् एतानिपूर्वोक्तकालपरिच्छिन्नानिगायत्र्याद्यनुष्ठाना नि एनसिगुरुणिगुरूणिलघुनिलघूनिकृच्छ्रचांद्रायणादीनि ॥

॥ १ ॥ प्रायश्चित्तमयूखमें भी लिखाहै ॥ हिरण्येति स्वर्णदान और गोदान और तिस प्रकार पृथिवी दान एह ब्रह्महत्यादितें उत्पन्नहोएजो पापहैं तिनानूंभी तात्काल नष्ट करदेतेहैं ॥ १ ॥ गौत्तमजीकावाक्यहै संवत्सरइति एक वर्ष और छे ६ मास और चार ४ मास और तीन ३ मास दो २ मास और एक १ मास और चौवी २४ दिन और बारां १२ दिन छे ६ दिन और तीन ३ दिन और एक १ दिन एह काल जपके कथन कीतेहैं ॥ जिस स्थानमें जपका काल नहि लिखा तिसस्थानमें पापकों देख करके काल कथन करणा ॥ और वहुते पापमें बहुत और थोडे पापमें थोडे करणे कृच्छ्र और चांद्रायणादि प्रायश्चित्त करणे

चतुर्विंशतिका मतहै अथेति इसके अनंतर संपूर्ण यत्न कर्के संपूर्ण पापांके विषे ब्रह्महत्यादि पापांके नाशकरणे वाले जप होमादिकों करे आदिशब्दतें चांद्रायणादि व्रत ग्रहण करणे १ ॥ जपेति इस लोकके विषे फलदेने वाला जो पापहै और परलोकविषे फलदेने वाला जो पाप है तिनांका जप और होमां कर्के नाश करे जप और होम कर्के हि मोक्षकों प्राप्त होताहै एहगर्गजीका वचन यथार्थहै ॥ २ ॥ इहां जप होमकर्के हजार १०००गायत्रीकेमंत्रकर्के ग्रहण करणें जितने पर्यंत शरीर भी इच्छारहे इसपूर्वोक्तयमजीकेवचनतें क्षत्रियइति क्षत्री अपनी भुजा दे बल कर्के आपद तरे। वैश्य और शूद्र धन कर्के तरें और ब्राह्मण जप और होमांकर्के तरें ३ ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें भी लिखाहै सायमिति सायं कालके विषे और तिस प्रकार प्रभात

चतुर्विंशतिमते। अथवासर्वयत्नेनसर्वेष्वपिचपाप्मसु जपहोमादिकंकुर्याद्ब्रह्महत्यादिनाशनम् १ जपहोमैर्दहेत्पापमैहिकामुष्मिकंचयत् ताभ्यांपरमवाप्नोतिगर्गस्यवचनंयथा २ जपहोमौचात्रसहस्त्रावच्छिन्नगायत्रीमंत्रेण यावच्छरीरस्वास्थ्यमितिपूर्वोक्तयमवाक्यात् ताभ्यांजपहोमाभ्यांपरंमोक्षमवाप्नोतीति॥ क्षत्रियोबाहुवीर्येणतरेदापदमात्मनः धनेनवैश्यशूद्रौतुजपहोमैर्द्विजोत्तमः ३ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ सायंप्रातस्तथाकृत्वावासुदेवस्यकीर्त्तनम् सर्वपापविनिर्मुक्तःस्वर्गलोकेमहीयते १ प्रभासखंडेश्रीभगवद्वाक्यम्॥ नाम्नांमुख्यतरंनामकृष्णाख्यंहेपरंतप ॥ प्रायश्चित्तमशेषाणांपापानांमोचकंपरम् १ वाराहे ॥ वासुदेवस्यसंकीर्त्यासुरापोव्याधितोपिवा मुक्तोजायेत नियतंमहाविष्णुःप्रसीदति ॥ १ ॥

कालके विषे विष्णुके कीर्त्तनकर्के संपूर्ण पापांते रहित होकर स्वर्गके विषे पूजीदाहै ॥ १ ॥ प्रभासखंडके विषे भी श्रीभगवान् जी का किसेके प्रति वाक्यहै नाम्नामिति हे परंतप मेरे नामांके मध्यमे मुख्य कृष्ण एह जो नाम है सो संपूर्ण पापांके नाश करणे वालाहै और प्रायश्चित्त रूप है अर पवित्रहै ॥ १ । वाराह पुराणमेंभी लिखा है वासुदेवेति विष्णु के कीर्त्तन कर्के मदिराके पीने वाला और रोगी भी निश्चय कर्के पापांतें रहित होताहै अर विष्ण्वादि संपूर्ण अवतारांका मूल रूप जो महाविष्णु हैं सो भी तिस पुरुषके उपर प्रसन्न होताहै अर्थात् मोक्षकों देताहै ॥ १ ॥

व्याधित इस पद करके पूर्वजन्म के विषे भी मदिरा आदि पान करण वाला ग्रहण करणा ॥ भ्रौ
विद्दाल भक्ति करके संयुक्त जो पुरुष हैं अथवा भक्तिसे रहित जो पुरुष हैं तिनां करके हे गोविंद इ
से कथन कीता होआ संपूर्ण पापांको भस्म करदेताहै जिस प्रकार प्रलय कालके विषे उठिआ
होआ अग्निजगतनूं भस्म करदेताहै। २। विश्वामित्रजीका वाक्यहै कृच्छ्रेति कृच्छ्र और चांद्रायणा
आदि जो प्रायश्चित हैं सो सब शुद्धि और मुक्तिके कारणहैं प्रत्यक्ष जो पाप कीता है और एकांत
विषे जो पाप कीता है और जिस पापका प्रायश्चित्त नहि और जिस पाप में संदेहहै और वि

व्याधितः पूर्वजन्मन्यपि सुरादिपानकर्ता विष्णवायवतास्मूलभूतोमहाविष्णुः॥ गोविन्देतितथाप्रोक्तंभक्त्यावाभक्तिवर्जितैःदहतेसर्वपापानियुगांताग्निरिवोत्थितः ॥ २ ॥ विश्वामित्रः॥ कृच्छ्रचांद्रायणादीनिशुध्यभ्युदयकारणं प्रकाशेचरहस्येचअनुक्तेसंशयेस्फुटे ॥ १ ॥ प्राजापत्यःसांतपनःशिशुकृच्छ्रः पराककः अतिकृच्छ्रःपर्णकृच्छ्रःसौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः॥ २ ॥ महासांतपनःसिद्धव्रतप्तकृच्छ्रस्तुपावकः जपोपवासकृच्छ्रास्तुब्रह्मकूर्चस्तुशोधकः ॥ ३ ॥ एतेव्यस्ताःसमस्तावाप्रत्येकंह्येकशोपिवा पातकादिषुसर्वेषुउपवासेषुयत्नतः ॥ ४ ॥

श्चित कीता जो पाप है इनां संपूर्ण पापांकी शुद्धिके कारण कृच्छ्र चांद्रायणादि हैं ॥ १ ॥ अब
और प्रकार कथन करतेहैं प्राजापत्य इति प्राजापत्य १ और सांतपन २ और शिशु
कृच्छ्र ३ और पराकक ४ और अतिकृच्छ्र ५ और पर्णकृच्छ्र ६ सौम्यकृच्छ्र ७
अतिकृच्छ्रक ८ महासांतपन ९ और पवित्र जो तप्त कृच्छ्र १० और जप ११ और उप
वास १२ और कृच्छ्र १३ और शुद्ध जो ब्रह्म कूर्च ॥ १४ ॥ एह संपूर्ण मिले होए
अथवा भिन्न भिन्न अथवा एक एक भी संपूर्ण पापोंके विषे और उपवासों के विषे शु
द्धिके वास्ते यत्न करके करणे चाहिदेहैं ॥ ४ ॥

कार्य्याइति प्राजापत्यादि संपूर्ण प्रायश्चित्त चांद्रायणों कर्के संयुक्त अथवा भिन्न भिन्न पापकी शुद्धि वास्ते करणे चाई देहैं ॥ अब चांद्रायण व्रतके भेद कथन करते हैं ॥ शिशिवति एक शिशु चांद्रायण एक यतिचांद्रायण ॥ ५ ॥ एक यवमध्यचांद्रायण अर एक . पैपीलिकाकृति चांद्रायण कथन कीताहै इनके स्वरूप व्रत प्रकरणमें देखलैने ॥ तीन ३ दिनका उपवास १ और मास उपवास २ और पंद्रां १५ दिनका उपवास ३ और आठ ८ दिनका उपवास ॥ ६ ॥ और छे ६ दिनका और बारां १२ दिनका उपवास पापांकी शुद्धि दी इच्छा करदा जो पुरुषहै तिसने करणे चाईवेहैं उपपातकां कर्के युक जो पुरुष हैं तिनां नें अनादिष्ट

कार्य्याश्चांद्रायणैर्युक्ताःकेवलावापिशुद्धये शिशुचान्द्रायणंप्रोक्तंयतिचांद्रायणंतथा ॥ ५ ॥ यवमध्यंतथाप्रोक्तंतथापैपीलिकाकृति ॥ उपवासस्त्रिरात्रंवामासःपक्षस्तदर्द्धकम् ॥ ६ ॥ षडहोद्वादशाहानिकार्य्यंशुद्धिफलार्थिना उपपातकयुक्तानामनादिष्टेषुचैवहि ॥ ७ ॥ प्रकाशेवाऽप्रकाशेवाअभिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वानुसकृद्द्विःकृतंतथा ॥ ८ ॥ अनुबंधादिकंदृष्ट्वासर्वंकार्य्यंयथाक्रमम् ॥ अनुबंधःप्रकृतस्यानिवर्त्तनम् ॥ प्रकाशउक्तंयत्किंचिद्विंशभागोरहस्यके त्रिंशद्भागःषष्टिभागःकल्प्योजात्याद्यपेक्षया ॥ ९ ॥

पापां के विषे चांद्रायणादि व्रत करणे चाईदेहैं ॥ ७ ॥ प्रकाशइति प्रकट पापके विषे और गुप्त पापके विषे प्रायश्चित्तीकी प्रतिज्ञा आदिकी अपेक्षा कर्के जाति और शक्ति और गुण इनां नूं देख कर्के अर तिस प्रकार एक बार कीते होए पाप कों अर दो बार कीते होए पाप को भी देखकर्के ॥ ८ ॥ अर प्रायश्चित्ती के हठकों भी देखकर्के संपूर्ण प्रायश्चित्त क्रमसें करणा चाईदाहै ॥ प्रकट पापके विषे जितना प्रायश्चित्त कथन कीताहै तिसतें वीवां २० हिस्सा गुप्त पाप के विषे ब्राह्मण कों कथन कीताहै अर क्षत्रीको त्रीवां ३० हिस्सा कथन कीताहै अर वैश्य को सठवां ६० हिस्सा कथन कीताहै ॥ ९ ॥

याज्ञवल्क्यजी का वाक्यहै ॥ अनादीति अनादिष्ट पापां की चांद्रायण व्रत करकें हि शुद्धि है और धर्मके अर्थ भी चांद्रायण व्रत कों करे सो चांद्रायण व्रतका कर्ता चंद्रमाके लोककों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ षट्त्रिंशत्के मतमें कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण इन तीनों २ का समुदाय कथन कियाहै ॥ यानीति जो कोई पाप ब्रह्महत्यादितें बडे हैं सो कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र और चांद्रायण करकें नष्ट होजाते हैं एह मनु कथन करता भया ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिके मतमें केवल प्राजापत्य हि पापांको नष्ट करताहै ॥ लघ्विति थोडे अनादिष्ट पापके विषे प्राजापत्यकों हिकरे इति ॥ शुक्र जी कृच्छ्र और चांद्रायण

॥ याज्ञवल्क्यः ॥ अनादिष्टेषुपापेषुशुद्धिश्चांद्रायणेनच धर्म्मार्थंयश्चरेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकताम् ॥ १ ॥ षट्त्रिंशन्मते त्रयाणांसमुच्चयःप्रतिपादितः ॥ यानिकानिचपापानिगुरोर्गुरुतराणिच ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रैस्तुशोध्यंतेमनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ निरपेक्षोहिप्राजापत्यश्चतुर्विंशतिमते ॥ लघुदोषेत्वनादिष्टेप्राजापत्यंसमाचरेदिति ॥ द्वयोः समुच्चयमाहोशनाः ॥ दुरितानांदुरिष्टानांपापानांमहतामपि कृच्छ्रंचांद्रायणंचैवसर्वपापप्रणाशनमिति॥ १ ॥ दुरितमुपपातकम् ॥ दुरिष्टंपातकम् ॥ कृच्छ्रानुवृत्तौ गौतमः ॥ प्रथमंचरित्वाशुचिःकर्म्मण्यःपूतोभवति द्वितीयंचरित्वायदन्यन्महापातकेभ्यःपापंकुरुते तस्मात्प्रमुच्यते तृतीयंचरित्वा सर्वस्मादेनसोमुच्यत इति ॥ प्रथमादिपदैः कृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रःकृच्छ्रातिकृच्छ्रश्चोच्यते ॥

करकें हि पापांके नाशकों कथन करतेभये ॥ दुरितानामिति बडे जो उपपातक पाप हैं और बडे जो पातक पाप हैं इनां संपूर्णांके नाश करणे वाले कृच्छ्र और चांद्रायण हि हैं इति ॥ १ ॥ गौतमजी वारंवार कृच्छ्रकेहि करणे करके पापका नाश कथन करते हैं ॥ प्रथममिति कृच्छ्र कों करकें कर्म करणे वाला शुद्ध होताहै अतिकृच्छ्रकों करकें ब्रह्महत्यादि महापातकतें और जिस पाप कों करताहै तिसतें रहित हो जाताहै कृच्छ्रातिकृच्छ्रकों करकें संपूर्ण पापातें रहित होजाताहै ॥ इनां तीनों २ का स्वरूप रहस्य प्रकरण मे देख लेणा ॥

हारीतजीका वाक्यहै चांद्रायणमिति चांद्रायण व्रत और पराकव्रत और तुला दान और गौआंके पीछे चलना एह संपूर्ण पापांके नाश करणे वालेहैं ॥ १ ॥ अब और प्रकार कथन करतेहैं तथेति तिसप्रकार गोमूत्र और गौका गुहा और गौंकादुग्ध और दधि और घृत और कुशाका जल और एक १ रात्रका उपवास एह संपूर्ण चंडालतुल्यपुरुषकोंभी शुद्धकरदेतेहैं ॥ २ ॥ इनांसंपूर्णांकी व्यवस्था विष्णु पुराणमें कथन कीतीहै पापइति ॥ मैत्रेयकें प्रति किसे ऋषिका वाक्यहै हे मैत्रेय प्रायश्चित्तांके जानणें वाले मन्वादि वडे पापकेविषें बडे प्रायश्चित्तकों करें अर थोडेपापके विषें थोडे प्रायश्चित्तकों करे एह कथन करते भए ॥ १ ॥भविष्य पुराणमें भी लिखाहै एवमिति पुत्रके प्रति किसेका वाक्यहै हे पुत्र इसतरह पापके भेदकर्के बडे और थोडे संपूर्ण प्रायश्चित्त करणे

हारीतः चांद्रायणपराकंचतुलापुरुषएवच गवांचैवानुगमनंसर्वपापप्रणाशनमिति ॥ १ ॥ तथा। गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् एकरात्रोपवासश्चश्वपाकमपिशोधयेत्। २ एतेषांसर्वेषांव्यवस्थोक्ताविष्णुपुराणे पापेगुरूणिगुरुणिस्वल्पान्यल्पेचतद्विदः प्रायश्चित्तानिमैत्रेयजगुस्स्वायंभुवादयः १। भविष्ये॥ एवंविषयभेदेनव्यवस्थाप्यानिपुत्रक प्रायश्चित्तानिसर्वाणि गुरूणिचलघूनिच ॥ १ ॥ अन्यथाहिमहावाहोलघूनामुपदेशतःगुरूणामुपदेशोहिनिष्प्रयोजनतांव्रजेत् ॥ २ ॥ गौतमः ॥ एनसिगुरुणिगुरूणिलघुनिलघूनि ॥ हविष्यान्प्रातराशान्भुक्त्वातिस्रोरात्रीर्नाश्नीयात् अथापरं त्र्यहंनक्तंभुंजीत अथापरंत्र्यहं न कंचन याचेत अथापरं त्र्यहमुपवसेत्

योग्यहैं अर्थात् बडे पापके विषे बडा प्रायश्चित्त करणा अर थोडे पापके विषे थोडा प्रायश्चित्त करणा ॥ १ ॥ हे महावाहो इसते जव व्यत्यय करे तों थोडे प्रायश्चित्तके कहनेसें बडे जो प्रायश्चित्तहैं सो निष्फलहि होवेंगे ॥ २ ॥ गौतम जीका वाक्य है एनसीति बडे पापमें बडा प्रायश्चित्त करे और थोडे पापमे थोडा प्रायश्चित्त करे इति ॥ हविष्यानिति प्रातःकाल तीन दिन ३ घृत और तिल और यव इत्यादि जो हविष्य हैं तिनांका भक्षण करें अर रात्रिके विषे कुछ न भक्षण करें इसतें उपरंत तीन ३ दिन रात्रिके विषे भक्षण करे इसते उपरंत तीन ३ दिन किसेसें नहि मांगे जेकर कोई देजावे तब भक्षण कर लेवे इसतें उपरंत तीन ३ दिन उपवास करे इस व्रतके दिन दिनकी कृत्य कहतेहैं

तिष्ठेदिति श्रीघ्राहि फलकी कामना वाला दिनविषे खड़ा रहे अर रात्रि विषे बैठा रहे अर सत्य कथन करे और नीचोंके साथवार्ता नकरे और रौरवयोधा संज्ञिक और जयसंज्ञिक मंत्रांकानित्य पठन करे और तीन ३ दिन त्रिकाल स्नान करे और ओंआपोहिष्ठा मयो भुवः १ ओंतानऊर्जे दधात नर ओंमहेरणाय चक्षसे १ एह पवित्र जो तीन ऋचा हैं इनों करके मार्जन करे और हिरण्य वर्णाः शुचयः पावका इत्यादि अष्ट ८ ऋचां करके भी मार्जन करे इसते उपरंत ओंनमो हमा यइत्यादि मंत्रों करके जलके विषे तर्पण करे और ओं अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिर नुष्टुप् छंदः भावभृतं दैवतं अश्वमेधावभृथेविनियोगः ओंऋतंच सत्यं चाभीद्धा तपसोऽध्य जायत ततो रात्रिरजायत ततः समुद्रो ऽर्णवः समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोऽजायत अहोरात्राणि

तिष्ठदहनिरात्रावासीताक्षिप्रकामः सत्यंवदेदनार्य्यैर्नसंभाषेत रौरवयो धाजयेनित्यंप्रयुंजीतानुसवनमुदकोपस्पर्शनम् आपोहिष्ठेतितिसृभिः पवित्रवतीभिश्चमार्जयेत् हिरण्यवर्णाःशुचयःपावकाइत्यष्टाभिः ॥ अथोद कतर्प्पणम् ओंनमोहमायेत्यंतर्जलेवाघमर्षणं त्रिरावर्त्तयन्सर्वपापेभ्यो मुच्यतेइति ॥ वृहन्नारदीये ॥ प्रायश्चित्तानियःकुर्यान्नारायणपरायणः तस्यपापानिनश्यंतिअन्यथापतितोभवेत् ॥ १॥ यस्तुरागादिनिर्मुक्तअनु तापसमन्वितः सर्वभूतदयायुक्तोविष्णुस्मरणतत्परः ॥ २ ॥

विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी सूर्याचंद्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवंच पृथि वींचांतरिक्ष मथो स्वः इति इस मंत्रको तीन ३ वार पाठ करे तो संपूर्ण पापांतें रहित होताहै इति ॥ वृहन्नारदीय पुराणमें भी लिखाहै प्रायश्चित्तानीति जो प्रायश्चित्तां नूं करता होआ ईश्वरपरायणहै अर्थात् ईश्वरका स्मरण करताहै तिसके संपूर्ण पाप नष्ट होतें हैं जेकर इसते व्यत्यय करे तब पापी होताहै ॥ १ ॥ यइति जो पुरुष राग द्वेषादितें रहितहै और पश्चात्ताप करके युक्त है और संपूर्ण जीवांके उपर दया करणे वाला अर विष्णुके स्मरण विषे तत्परहै ॥ २ ॥

महेति महाहत्यादिपापांककें अथवा होरना संपूर्ण पापांककें युक्त होवे तदभी संपूर्णपापांतें तात्काल रहित होताहै जिस कारणतें तिसका चित्त विष्णुके विषेस्थितहै ॥३॥ नारायणमिति आद और अंततें रहित और जगत्स्वरूप और अवीनाशी ऐसा जो विष्णुहै तिसका जो पुरुष नित स्मरण करता है सो संपूर्ण पापांते रहित होजाता है ॥ ४ ॥ विष्णुके विस्मरणविषे दोष कहते हैं विष्णिवति विष्णुका स्मरण न करणा पापहै अर उसकास्मरण पापांके छेदन करणे वाला है इसमे दृष्टांत है कि जिस प्रकार वडे दीपकदे जगां नेसें गुफाके मध्यमें जो अंधकारहै तिसके वलका नाश होजाताहै ॥५॥ और प्रकार कहतेहैं स्मृतइति स्मरणकीताहोआ अर पूजन कीता होआ अर चिंतन कीताहोआ अर नमस्कार विषय कीता होआ जो सनातन विष्णु

महापातकयुक्तोवायुक्तोवासर्वपातकैः सर्वैःप्रमुच्यतेसद्योयतोविष्णुपरंमनः ३ नारायणमनाद्यंतंविश्वाकारमनामयम् यस्तुसंस्मरतेनित्यंसर्वपापैःप्र मुच्यते ४ विष्णुविस्मरणंपापंस्मरणंपापकृंतनम् गुहांतध्वांतवलभिन्महा दीपोदयोयथा५स्मृतोवापूजितोवापिध्यातोवानमितोपिवा नाशयत्येवपापा निविष्णुरेवसनातनः६संपर्काद्यादिवामोहाद्यस्तुपूजयतेहरिम् सर्वपापविनि र्मुक्तः प्रयातिपरमंपदम् ७ सकृत्संस्मरणाद्विष्णोर्नश्यतिक्लेशसंचयःस्वर्गा दिभोगप्राप्तिस्तुसुलभापरिकीर्त्तिता ८ तस्मात्तडिल्लतालोलंमानुष्यंप्राप्यदुर्ल भम् हरिंसंपूजयेद्भक्त्यासर्वपापविमोचकम् ९ सर्वेन्तरायानश्यंतिमनःशु द्धिश्चजायते परंमोक्षंलभेच्चैवपूज्यमानेजनार्दने ॥ १०

है सो निश्चयककें पापांकानाश करदेताहै ॥६॥ संपर्केति किसेदे संगतें अथवा मोहतें जो पुरुष विष्णुनूंपूजताहै सो संपूर्ण पापां तें रहित होकर विष्णुके लोकनूंप्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ सकृदि ति विष्णुके एकवार स्मरणकरणेतें दुःखांके समूहका नाशहोजाताहै अर स्वर्गादि भोगां की प्राप्ति सुखाली प्राप्त होतीहै ॥८॥ तस्मादिति तिस कारणते विजलीकी न्यांई चंचल अर दुर्लभ मनुष्यजन्मकों प्राप्त होककें संपूर्णपापांके नाशकरणेवाले विष्णुकों भक्तिककें पूजे ॥९॥ इसका फलकहतेहैं सर्वइति तद संपूर्ण विघ्न नष्ट होजाते हैं अर चित्तकी शुद्धि होतीहै अर विष्णुके पूजया होआं निश्चयककें मुक्तिकों भी प्राप्त होताहै ॥१०॥

धर्मेति धर्म अर अर्थ और काम और मुक्ति एह सब पुरुषोंके अर्थ विष्णुकी पूजाकरण वालिओंके निश्चयकर्के सिद्धहोतेहैं इसमें संदेह नाहिहै ॥ ११ ॥ अग्निपुराणमें औरभी अग्निपुष्करसंवादके विषे एक विष्णुजीका स्तोत्र सर्वपापहर लिखाहै परेति परस्त्री और परधन और परका मारणा इत्यादिओं विषे जद पुरुषांका मन प्रवृत्त होवे तब विष्णुकी स्तुति प्रायश्चित्तहै ॥ १ ॥ विष्णुकी स्तुति कथन करतेहैं विष्णवइति विष्णुके ताईं वारंवार ४ नित्य नमस्कारहोवे मनकेविषे स्थित अर अहंकारकास्थान जो विष्णुहै तिसनूंमै नमस्कार करताहां २ ॥ चित्तस्थमिति जो विष्णुमनकेविषे स्थितहै अर एकहै अर नाहिप्रकटहै अर नहि नाश जिसका अरनाहि किसेकर्के जितयाजांदा

धर्मार्थकाममोक्षाख्याःपुरुषार्थाःसनातनाः हरिपूजापराणांतुसिद्ध्यंतेऽत्र नसंशयः११ ॥ अग्निपुराणेअग्निपुष्करसम्वादे परदारपरद्रव्यपरहिंसादिके यदाप्रवर्ध्दतेनृणांचित्तंप्रायश्चित्तंस्तुतिस्तदा १ विष्णवेविष्णवेनित्यंविष्णवे विष्णवेनमः नमामिविष्णुंचित्तस्थमहंकारगतंहरिम् २ ॥ चित्तस्थमेकमव्यक्तमच्युतंह्यपराजितम् विष्णुमीशमशेषेणअनादिनिधनंविभुम् ३ ॥ विष्णुंचित्तगतंजानन्विष्णुंबुद्धिगतंचयः यश्चाहंकारगांविष्णुंसाविष्ण्वार्पितसांस्थितिः ४ करोतिकर्तृभूतोसौस्थावरस्यचरस्यच तत्पापंनाशमायातितास्मिन्नेवतुर्चिंतिते ५ ॥ ध्यातोहरतियःपापंस्वप्नेदृष्टस्तुभावतः तमुपेंद्रमहंविष्णुंप्रणतार्त्तिहरंहरिम् ॥ ६ ॥

अर संपूर्णोंका स्वामी अर जन्म मरणतें रहित अर सर्वव्यापी ऐसा जो विष्णुहै तिसनूं मै नमस्कार करताहां । ३ ।विष्णुमिति जो पुरुष मनके विषे अर बुद्धिके विषे अर अहंकारके विषे प्राप्त होए होए विष्णुनूं जानताहै सो विष्णुकेविषेहि स्थित है ॥ ४ ॥ करोतीति जेडा एह विष्णु कर्त्तारूपहोकर पर्वतादि अर मनुष्यादिआंनूं करताहै तिस विष्णुके स्मरण कीतिआं होआं तिस पुरुषकापाप निश्चयकर्के नाशकों प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ ध्यातइति जेडाविष्णु भक्तिकर्के चिंतितकीता होआ अर स्वप्नेके विषे देखिआ होआ पापका नाश करदेताहै तिस शरणागतकी पीडाहरण वाले विष्णु नूं मै नमस्कार करताहों ॥ ६ ॥

जगतीति ॥ आश्रयते रहित जो एह जगत् है इसकें नरकके विषे हिठा पौंदिआं होआं हस्त का आश्रयदेणवाला और परतें भी परे जो विष्णुहै तिस नूं मैनमस्कारकरता हां॥७॥सर्वेति हेसं पूर्णोंके ईश्वर हेसर्वव्यापक हेपरमात्मन् हे अधोक्षज हे इंद्रियोंके ईशर हेकृष्ण वर्णी केशां वाले तेरे तांई नमस्कार होवे ॥ ८ ॥ नृसिंहेति हेनृसिंह हेअंततें रहित हेगौआंके पालन कर णे वाले हेजीवांके उत्पन्न करणे वाले हे सुंदरकेशां वाले मुझका खोटा कथन और कर्म और चिंतन और मानस दुःख का नाशकर अर्थात् वाणी करके और शरीर करके औरमन करके कीता जो पापहै तिसकों दूरकर तुझकों नमस्कार होवे।९।ब्रह्मण्येति हे ब्राह्मणोंके पूजने वाले हे गोविंद हेपरात्पर हेपरायण हे जगत्के ईश्वर हे जगत्के पालन करण वाले हे अच्युत मुझके पापका

जगत्यस्मिन्निराधारेमज्यमानेतमस्यधः हस्तावलंबनंविष्णुंप्रणमामिपरा त्परम् ॥ ७॥ सर्वेश्वरेश्वराविभोपरमात्मन्नधोक्षज हृषीकेशहृषीकेशकृष्णके शनमोस्तुते ॥ ८॥ नृसिंहानंतगोविंदभूतभावनकेशव दुरुक्तंदुष्कृतंध्यातंश मयाधिंनमोस्तुते ॥ ९ ॥ ब्रह्मण्यदेवगोविंदपरात्परपरायण जगन्नाथज गन्नातःपापंप्रशमयाच्युत॥१०॥यच्चापराह्णेसायाह्णेमध्याह्णेचतथानिशि कायेनमनसावाचाकृतंपापमजानता ॥ ११ ॥ जानताचहृषीकेशपुंडरीकाक्ष माधव पापंप्रशमयाद्यत्वंवाकृकृतंममामाधव ॥ १२ ॥ यदश्नन्यत्स्वपंस्ति ष्ठन्यद्गच्छन्स्वेच्छयास्थितः कृतवान्पापमद्याहंकायेनमनसापिवा ॥ १३ ॥ यत्सूक्ष्ममपियत्स्थूलंकुयोनिनरकावहम् तद्यातुप्रलयंसर्वंवासुदेवादिकी र्तनात् ॥ १४ ॥

नाशकर ॥१०॥ यच्चेति प्रातः काल और सायंकाल और मध्याह्नकाल और रात्रि इन्हों विषे शरीर करके और मन करके और वाणी करके और अज्ञान करके॥११॥ और ज्ञान करके मैंने कीतो जो पाप है तिसका हेहृषीकेश हे पुंडरीकाक्ष हेमाधवतूं नाशकर॥ १२ ॥ यदिति भक्षण करदा हों आ और शयन करदा होआ और खडा हुंदा होआ और गमनकरदा होआ और अपनी इच्छा सें स्थित हुंदा होआ में शरीर करके और मन करके आदिशब्दने वाणीकरकेभी जो पाप कर्ता भया हे माधव तिस का तूं नाशकर॥ १३ ॥ यदिति खोटीयोनि और जोगर्भादि योंकीहै नरककों प्राप्तकरणे वाला थोडाऔर वहुत जो मुझका पापहै सो संपूर्ण वासुदेवादि नामके कथन करणे तें नाशकोंप्राप्त होवे एह मेरी प्रार्थना आपकोस्वीकृतहोवे ॥१४

परमिति परमब्रह्म श्रौर परम तेजरूप श्रौर परमपवित्र ऐसा जो विष्णुहै तिसके कीर्तन कीतिश्रां होश्रां संपूर्ण पाप नाशकों प्राप्तहोवे ॥ १५ ॥ यदिति बुद्धिमान्पुरुष जिस स्थानकों प्राप्तहोकर्के फेर जन्मकों नहि प्राप्त हुंदे श्रौर गंध स्पर्शादि विषय सुखतें रहित और श्रपूर्वक जो विष्णुका स्थानहै सो मेरे पापका नाश करे ! १६ । इस स्तोत्रका फल कथन करतेहैं पापेति पापकेनाशकरणे वाले इस स्तोत्रका जो पाठकरताहै श्रौर जोसुणताहै सो पुरुष शरीरकर्के श्रौर चित्तकर्के श्रौर वाणी कर्के कीते होए जो पापहै तिनांते रहित होजाताहै १७ सर्वेति औरसंपूर्ण पापीसूर्यादि ग्रहांसें मुक्तहोताहै श्रर्थात् सूर्यादिपापग्रह उसको पीडा नहि देतें श्रौर विष्णुके परमपदकों प्राप्तहोताहै तिस कारणते पापदेकीतिश्रां होश्रां संपूर्णपापोंके नाशकरणे वाला एह स्तोत्रजपना चाहिए १८ प्रायश्चित

परंब्रह्मपरंधामपवित्रंपरमंतुयत् तस्मिन्प्रकीर्तितेविष्णौपापंसर्वंप्रणश्यतु १५ यत्प्राप्यननिवर्तन्तेगंधस्पर्शादिवर्जितम् सूरयस्तत्पदंविष्णोस्त्वपूर्वं शमयत्वघम् १६ पापप्रशमनंस्तोत्रंयःपठेच्छृणुयादपि शरीरैर्मानसैः कायैःकृतैःपापैःप्रमुच्यते १७ सर्वपापग्रहादिभ्योयातिविष्णोःपरंपदम् तस्मात्पापेकृतेजप्यंस्तोत्रंसर्वाघमर्दनम् १८ प्रायश्चित्तमघौघानांस्तोत्रं व्रतकृतेवरम् प्रायश्चित्तैःस्तोत्रजापैर्व्रतैर्नश्यतिपातकम् १९ प्रायश्चित्तेंदुशेखरेपि * तत्रमहापातकादर्वाचीनेषु बहुविधेष्वज्ञानकृतेषुप्रतिनिमित्तंकर्तुमशक्तौसर्वप्रायश्चित्तंषडब्दम् ॥ अत्यंतगुणवतोविरक्तस्याऽभ्यासेद्विगुणम् ॥ मत्याग्निगुणम्॥ मत्याऽभ्यासेचतुर्गुणम् ॥ अत्यंताभ्यासेनिरंतराभ्यासे वा पंचगुणम् ॥

मिति व्रतांकीकृत्यकेविषे एह स्तोत्र पापांके समूहोंका श्रेष्ठ प्रायश्चित्तहै प्रायश्चित्तोंकर्के श्रौर स्तोत्रों कर्केजपों कर्के श्रौर व्रतां कर्के पाप दूर होताहै १९॥ *प्रायश्चित्तेंदुशेखर में भी लिखाहै तत्रेति पापोंके मध्यमें ब्रह्महत्यातें विना बहुत प्रकारके श्रज्ञान कर्के कीते होए जो पापहैं तिनांके विषे कहा जो प्रायश्चित्तहै तिसके करणेविषे जद सामर्थ्य न होवे तद छे६वर्षका संपूर्ण प्रायश्चित्त करणा चाहिए ॥ श्रतिशयतकर्के गुणवाला श्रौर विरक्तहोवे तिसके पापके श्रभ्यासमें बारां१२ वर्षका प्रायश्चित्त लिखाहै श्रौर बुद्धिकर्केकीतें होए पापके विषे चौवी२४वर्षका व्रत श्रौर श्रतिशय कर्के श्रभ्यासके विषे श्रथवा सर्वदाकालपापांके श्रभ्यासमें पंचगुणक्यातीस३०वर्षका व्रत करणाचाहिए प्रतिदिन बहुवारकरणेमे श्रत्यंताभ्यासहै श्रौर विच्छेदसे प्रतिदिन करणेमे निरंतराभ्यास कहीदाहै

अर इसोंमेभीवहुतकालके अभ्यासमें छत्ती२६ वर्षकाप्रायश्चित्तलिखाहै और गोहत्यादितेलेकरके उरेहोणेंवाले अज्ञानकर्केकीवेहोएजो जातिभ्रंशादि पापहैं तिनमे कथन कीता जो प्रायश्चित्तहै तिसकेकरणेमे जव सामर्थ्यनहोवेतवदो२ वर्षकाप्रायश्चित्तलिखाहै। अभ्यासादिउोंमें पूर्वकीन्याईकरणा जैसेगुणवालेविरक्तके अभ्यासमेंचार ४ वर्षका अरवुद्धिकर्के कीते होएमें छे ६ वर्षकाअर वुद्धि के अभ्यासमें आठ८ वर्षका अर अतिशय उोर निरंतरअभ्यासमे दश१०वर्षका अर वहुतकाल के अभ्यासमे वारां१२ वर्षका प्रायश्चित्त लिखाहै और तिउोजोए प्रकीर्णक जोपापहैं तिनकेविषे उक्त प्रायश्चित्तकरणे असमर्थहोवे तद एक १ वर्षका प्रायश्चित्तकरे उोर गुणवालें विरक्तकों दो २ वर्षकाअर वुद्धिकर्के कीतेमें तीन३ वर्षकालिखाहै उोरसवपूर्वकीन्याई जानलैंनें। क्षुद्रेति अर थोड़े

वहुकालाभ्यासेषड्गुणम् उपपातकमारभ्यार्वाचीनेषु पापेष्वज्ञानकृतेषु प्रतिनिमित्तंकर्तुमशक्तौद्व्यब्दंप्रायाश्चित्तम् अभ्यासादौप्राग्वत् प्रकीर्णकेषु तादृशेषुतादृशस्यैकाब्दम् अभ्यासादौप्राग्वत् क्षुद्रपापेषु तादृशेषु तादृशस्य कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रायणानि तत्स्थाने द्वादश कायानिवा अभ्यासादौप्राग्वत् चतुष्टयमिदं चोत्तमस्य मध्यमस्यद्विगुणम् उत्तममध्यमादिविषये द्विगुणादिव्यवस्थातु वर्णाश्रमसाधारणीवोध्या यथोत्तमब्राह्मणस्योक्तमेव मध्यमब्राह्मणस्यद्विगुणमेवमग्रेपि अधमस्यत्रिगुणम्

जो पापहैं तिनके विषे लिखा जो प्रायश्चित्तहै तिसके विषे जव सामर्थ्य न होवे तव कृच्छ्र उोर अतिकृच्छ्र उोर चांद्रायणकों करे अथवा वारां१२ प्राजापत्य करे॥ अभ्यासादिउोंमें पूर्वकीन्याई जानलैना एह चारे ४ प्रायश्चित्त महांपातकांके उरले १ और उपपातकांके उरले २ और प्रकीर्णक ३ और अनस्थिजीववध और अस्थिवाले कहेहोए ते विलक्षण जो जीवतिनांकावध ४ एह सभ व्यवस्था जैसी वर्णोंमेहै तैसी आश्रमोमे भीजानणी उत्तम ब्राह्मणकों एक वार करणा चाहिए अर गुणांकर्के मध्यमजो ब्राह्मणहै तिसकों दो२ वार करणा चाहिए उोर नीच ब्राह्मणकों तीन३ वार करणा चाहिए

अर इसतेंभी जो नीच ब्राह्मणहै तिसको चवीस २४ वर्षका करणा चाहिए इस प्रकार क्षत्री और वैश्य और शूद्र इनकों भी क्रम करकें प्रायश्चित्त जान लैना ब्रह्म हत्यादि जो संपूर्ण पापहें तिनोंका एह प्रायश्चित्तहै अर जिनो पापोंका प्रायश्चित्त नहि लिखा तिनकें विषे प्रायश्चित्तकी सामर्थ्य देख करकें एकठे अथवा भिन्न भिन्न कृच्छ्र और चांद्रायणादि व्रत करने चाहिए अर थोंडिओं पापोंके विषे एक दिनका उपवास और तीन ३ रात्र उपवास और प्राजापत्य योग्यता करकें करने चाहिए और बहुत थोंडे जो पापहैं तिनकें विषे वारां १२ अथवा छे ६ अथवा तीस ३० प्राणा याम करणे चाहिए ॥ स्त्रीआं को और शूद्रांको मंत्रांतें बिना प्राणायाम करणे चाहिए अथवा जितने अन्नसें एक पुरुष तृप्त होजावे अथवा गिआसन

ततोप्यधमस्यद्वादशाब्दंद्विगुणं महापातकावधिसकलपापप्रायश्चित्तमिति सर्वत्रानुक्तनिष्कृतौ कृच्छ्रचांद्रायणादीनि समस्तव्यस्तरूपेण योग्यतयायोज्यानि ॥ क्षुद्रेषुपापेषुउपवासत्रिरात्रप्राजापत्यानि अतिक्षुद्रेषु द्वादशषट् त्रिंशद्वाप्राणायामाःकार्य्याःस्त्रीशूद्राणाममंत्रकास्ते पुरुषाहारहंतकाराग्रदानानिवा मौनलोपेविष्णुस्मरणम् ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजंम्वूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीश प्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतश्रीदेविकोपकण्ठवासिदेवीदत्तसुतपण्डितगंगारामसंगृहीते पंचविषयात्मप्रातिरूपकेधर्म्मशास्त्रमहानिवन्धप्रायश्चित्तभागेसाधारणप्रकरणं षष्ठम् ॥ ६ ॥

इत्यादि अन्न दानकरणा चाहिए और मौनव्रतके लोपके विषे विष्णुका स्मरण करणा (इति) एह पद प्रकरण की समाप्तिके विषे जानणा लक्ष्मीकर्के युक्त जो वडे राजेहैं तिनोंकाभी राजा अर जंबू और काश्मीर आदि पद करकें गिलगिचादि जो अनेक देशहैं तिनोका स्वामी श्रेष्ठ जो राजा रणवीर सिंह तिस करकें आज्ञप्त कीते होंए सारस्वत ब्राह्मण संज्ञा वाले और श्रीदेविका जीके कनारे पर रहण वाले और पंडित देवी दत्तके पुत्रपंडित गंगा रामजी तीनों करकें संग्रह कीतेहोए धर्मशास्त्र महानिबंधके प्रायश्चित्त भागमे छेमां साधारण प्रकरण समाप्त होया ॥ ६ ॥

साधारणप्रकरणतें उपरंत अब विधान कीता जौकर्म तिसका नकरणा १ अर वर्जित कर्मका करणा २ अर इन्द्रियों का रोकणा एह जो कारण तीन ३ हैं इनातें उत्पन्न हुए जो जातिभ्रंशकरतें आदलेकर नौं ९ प्रकारके पापहैं सौ ब्रह्महत्या प्रायश्चित्त प्रकरणमें कथन करेहैं ॥ तिनां नवांके मध्यमे जातिभ्रंशकर पापां कों मनुजी कहतेहैं ॥ ब्राह्मेति ब्राह्मणकों दंडादि करकें दुःखदेणा १ और अति शय करके दुर्गंध वाला जो थोम अर विष्ठादिहै इसका अर मदिराका सिंघणा २ ॥

॥ ॐश्रीगणेशायनमः ॥ अथविहिताकरणादिहेतुत्रयोत्पन्नजातिभ्रंशक रादिनवविधानि पापानि ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणउक्तानि तत्र जाति भ्रंशकराण्याह मनुः । ब्राह्मणस्यरुजःकृत्वाघ्रातिरघ्रेयमद्ययोः जैह्म्यंच मैथुनंपुंसिजातिभ्रंशकरंस्मृतम् ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्यदंडादिनापीडाकरणं १ अतिशयदुर्गंधियल्लशुनपुरीषादि तस्य मद्यस्यचघ्रातिराघ्राणं २ जैह्म्यंमित्रे ३ पुंसिमुखादौचमैथुनं ४ प्रत्येकंजातिभ्रंशकरंनतु समस्तम् याज्ञवल्क्येनात्र पशुमैथुनमप्युक्तम् ॥ इमान्येव प्रायश्चित्तप्रकरण प्राय श्चित्तरत्न प्रायश्चित्तमुक्तावली प्रायश्चित्तशेखर प्रायश्चित्तमयूख प्राय श्चित्तकदंवादौ प्रोक्तानि २

और मित्रके साथ द्रोह करणा ३ और पुरुषके साथ अर स्त्रीके मुखमें मैथुन करणा ४ एह एकभीपाप कीता होआ जातितें भ्रष्ट करदेताहै ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्य इत्यादि पदों करकें इसी श्लोककाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥ अर याज्ञवल्क्यजीनें पशुके साथ जो मैथुनहै सोभी जातितें पतित करण वाला कथनकीताहै अर प्रायश्चित्त प्रकरण अर प्रायश्चित्तरत्न अर प्रायश्चित्तमुक्तावली अर प्रायश्चित्तशेखर अर प्रायश्चित्तमयूख अर प्रायश्चित्त कदंब इत्या दि ग्रंथोंमें भी एही चार ४ पाप जातितें गिडा देणवाले लिखें हैं ॥

तिनांके मध्यमें जातिभ्रंशकर पापके प्रायश्चित्तको मनुजी कहते हैं जातीति ब्राह्मणस्यरुज इसतें आदलेकर जो जातिभ्रंशकर कर्म कथन कीतेहैं तिनके मध्यमें इच्छासें किसी कर्मनूं करके सत ७ दिनका जो सांतपन कृच्छ्र व्रतहे तिसको करे जेकर जातिभ्रं शकरादिकर्म इच्छासें न करे तद प्राजापत्य व्रत करे इसमें एह (प्रश्न) हे कि जो पाप इच्छासे होताहै तिसका प्रायश्चित्त वहुतहे श्रोर जो विनाइच्छा से कीताहो श्रा पापहे तिसका थोडा प्रायश्चित्त होणा चाहिए श्रोर इस जगा विपरीतक्योंहै सांतपन ७ दिनका श्रोर प्राजा पत्य १२ दिनकाहै (उत्तर) इसजगा सांतपनशब्द करके महासांतपन जानणा सो २१ दिन करके होताहे इसतें विरोध नहि श्रथवा श्रर्थ से विपरीत कर लेणा इच्छामें प्राजापत्य श्रोर श्रनिच्छामें सांतपन तदभी विरोध नहि श्रांउदा ॥ १ ॥ ब्राह्मणस्य इत्यादि

तत्रजातिभ्रंशकरपापप्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ जातिभ्रंशकरंकर्म्मकृत्वान्य तममिच्छया चरेत्सांतपनंकृच्छ्रंप्राजापत्यमनिच्छया ॥ १ ॥ ब्राह्मण स्यरुजइत्याद्युक्तजातिभ्रंशकरकर्म्मोक्तं तन्मध्यादन्यतममपि कर्म कृ त्वा सांतपनंसप्ताहसाध्यंकृच्छ्रंव्रतंचरेत् इदमिच्छयाकामेन अनिच्छ यातु प्राजापत्यंकुर्य्यात् केचित्तु इच्छयैतत्कर्म्मकृत्वाप्राजापत्यमनिच्छ यातुसांतपनंचरेदित्याहुः वृहस्पतिनात्रविशेषउक्तोयथा ब्राह्मणस्यरु जःकृत्वारासभादिप्रमापणम् निंदितेभ्योधनादानंकृच्छ्रार्द्धंव्रतमाचरेदिति ॥ १ ॥ इदमेवप्रायश्चित्तंप्रायश्चित्तेन्दुशेखरे प्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानं तदशक्तौ चूर्णीदानंयथाशक्तिदक्षिणा ॥

पद करके इसी श्लोकका हि श्रर्थ दिखायाहे ॥ वृहस्पतिजीनें इसमें विशेष कहाहे ॥ ब्रा ह्मेति ॥ ब्राह्मणको दंडादि करके दुःख देकरके श्रोर गर्दभादिओंको मार करके श्रोर निषिद्ध पुरुषोंतें धनका ग्रहण करके अर्द्धा कृच्छ्र व्रत करे ॥ १ ॥ एही प्रायश्चित्त प्रायश्चित्ते न्दुशेखरमेंभी लिखाहै प्रायेति॥जब कृच्छ्रादि व्रत करणेमें सामर्थ्य ना होवे तब प्रसूतहुइ गौका दान करे श्रर जब गौके दानमें भी सामर्थ्य ना होवे तब चूर्णीदानकरे श्रर्थात् एक सौ १०० कोडीदानकरे श्रर जैसी सामर्थ्य होवे तैसी दक्षिणा देवे (प्रश्न) जिसने १०० कपर्दिका मात्र दान कीता उसकी शक्तितो प्रतीत होगई फेर यथाशक्ति क्योंकिहा (उत्तर) चूर्णीदान इसजगा गोदानकी जगाहै तिसके पीछे यथाशक्ति मुद्रिकादि दक्षिणा देवें एह श्रभिप्रायहै ॥ ऐसे श्रागेभी जानणा ॥

अंकर ब्राह्मणकों इच्छा करके पीडा देवे तद सांतपन व्रतकों करे ॥ अर जब व्रत करणे की शक्ति न होवे तब गोदानकरे जब गौदानकी भी समर्था न होवे तब षट्कार्षापणदेवे अर्थात् सत्त हजार ७००० अर आठ ८०० सौ अर अस्सी ८० कौडिआंका दानकरे अर यथा शक्ति दक्षिणा देवे ॥ इसप्रकार जब थोमादि अर विष्टा और मदिरा इनांकों इच्छासें न लिये तब प्राजापत्य व्रतकरे। जब व्रतकरणमें सामर्थ्य नहोवें तब एक प्रसूत गौकादानकरे जब गौ दानमेंभी सामर्थ्य ना होवे तद तीन ३ कार्षापणका दानकरे जदमित्रके विषे इच्छा करके द्रोहकरे तब प्राजापत्य व्रतकरे ॥ जद व्रतकरणेकी समर्था ना होवे तदगो दानकरे ॥ जद गोदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापणका दानकरे ब्राह्मणाकों पाषाणादि के उग्रणेमें अर्थात् प्रहार करणेकी इच्छा विषे प्राजापत्य व्रतकरे जद व्रतकरणकी समर्था ना होवे तद एक गौदानकरे गौदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापण दान करे और

ब्राह्मणपीडाकरणेकामतः सान्तपनंतदभावेधेनुदानं तदभावेषट्कार्षापणाः यथाशक्तिदक्षिणा एवंलशुनादिमद्ययोराघ्राणेऽकामतः प्राजापत्यम् तदशक्तौ १ धेनुःतदभावेकार्षापणाः३ मित्रकौटिल्येसाभ्यासेचैवम् ॥ ब्राह्मणावगूरणेप्राजापत्यंतदशक्तौधेनुः १ तदभावेत्रयःकार्षापणाःपुंसिमैथुने ब्राह्मणेदंडादिपातनेच अतिकृच्छ्रम् तद. धेनुः तद. कार्षा- ३ यथाशक्तिदक्षणा ॥ब्राह्मणशोणितोत्पादनेकृच्छ्रातिकृच्छ्रंतद.५ धेनवःतद. १० कार्षापणाःयथाश- ब्राह्मणांगच्छेदनेप्येवम् ॥ अत्यंताभ्यासेचान्द्रम् दशगोदानंच ॥ तद.७ धेनवःतदभावे २१ यथाशक्तिदक्षिणा ॥

जद पुरुषके साथ मैथुनकरे अर ब्राह्मणकों दंडादिओं करके पीडादेवे तद अति कृच्छ्र व्रतकरे जद व्रतमें समर्था ना होवे तदगोदान करे गोदानकी भी समर्था ना होवे तद तीन ३ कार्षापण दान करे अर शक्तिके अनुसार दक्षिणादेवे अर जब ब्राह्मणकों रुधिर वगादेवे तवकृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतकरे अर व्रतकरणेमें समर्था नाहोवें तद पांच ५ गौंकादानकरे अबतिसमेंभी सामर्थां नाहोवे तव दश १० कार्षापणदानकरे अर यथाशक्तिसें दक्षिणादेवे ॥ अर जब ब्राह्मणका अंग कट देवे तदभी इसीप्रकार व्रतादिकरे जब इसमें बहुत अभ्यास होवे तब चांद्रायणव्रत करे ॥ जदइसमें सामर्था नाहोवे तद दस १० गौकादान करे इसमेंभी सामर्था ना होवे तद नवीन सूईआं होईआं सत्त ७ गौआंका दानकरे इसमेंभी सामर्था ना होवे तब २१ कार्षापण का दानकरे अर यथाशक्तिसेंदक्षिणादेवे ॥ एह जातिभ्रंश करपापसमाप्तभये ॥ ॥

इतिजातिभ्रंशकराणि

अथेति जातिभ्रंशकरां पापांते उपरंत संकरीकरण संज्ञिक पापांकों कहतेहैं ॥ तिन कि विषे मनुजी का वाक्य है खरेति गधा और घोडा और ऊट और हरिण और हस्ती और बकरा भिड्डू और मच्छी और सर्प और महिषी इनांमिसें एकका भी मारणा संकरी करण पाप जानना चाहिए ॥ १ ॥ गर्द्दभइत्यादि पदों कर्के इसीका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै याज्ञवल्क्य जीनें इसमें भेद कथन कीताहै ॥ ग्राम्येति ग्रामके और वनके पशुआंका मारणा हि संकरीकरण कथन कीताहै तिस विषे देवताके निमित्त मारिया जो पशुहै तिसका पाप नहिहै ॥ प्रायश्चित्त प्रकरण आदि उंमें मनुने कहा जो संकरी करण है सोई लिखाहै अर

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ अथसंकरीकरणानि ॥ तत्रमनुः॥खराश्वोष्ट्रमृगेभा नामजाविकवधस्तथा संकरीकरणंज्ञेयंमीनाहिमहिषस्यच ॥ १ ॥ अस्यार्थः खरेति गर्दभतुरगोष्ट्रमृगहास्तिछागमेषमत्स्यसर्पमाहिषाणां प्रत्येकं वधः संकरीकरणंज्ञेयम् १ याज्ञवल्क्येनतु ग्राम्यारण्यपशूनां हिंसनमेवसं करीकरणमुक्तम् तत्रदेवतोद्देशेनवधेकृते न दोषः ॥प्रायश्चित्तप्रकरणे प्रा यश्चित्तरत्ने प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे प्रायश्चित्तमयूखेप्रा यश्चित्तकदंबादावेमनूक्तमेवसंकरीकरणम् संकरीकरणा पात्रीकरणमलिनी करणीयेषु पापेषु प्रायश्चित्तमाह मनुः ॥ संकरापात्रकृत्यासुमासंशोधन मैन्दवम् मलिनीकरणीयेषुतप्तः स्याद्यावकैस्त्र्यहम् ॥ १ ॥ खराश्वोष्ट्रेत्या दिनासंकरीकरणान्युक्तानि तेषां मध्यादन्यतममिच्छातः कृत्वाचांद्रायणं मासंशुद्ध्यैकुर्यात्

याज्ञवल्क्य वाला नहि लिखा ॥ संकरीकरण अपात्रीकरण अर मलिनीकरण एह जो पाप हैं इनके विषे प्रायश्चित्त नूं मनुजी कहतेहैं ॥ संकरेति संकरीकरण और अपात्रीकरण एह जो पाप हैं इनके करण विषे एक १ मास तक चांद्रायण व्रत करे अर मलिनी करण जो पाप हैं इनांमें जवां कर्के तीन ३ दिन तप्तकृच्छ्र व्रत करे १ एहि अर्थ प्रकट कर्के कहतेहैं खरेति खराश्वोष्ट्र इत्यादि कर्के जो संकरीकरण पाप कहेहै तिनके मध्यमें इच्छासें एक पापकों कर्के शुद्धिके वास्ते एक मास पर्य्यंत चांद्रायण व्रत कों करे ॥ इन व्रतोंका स्वरूप व्रत प्रकरणमे देख लेणा ॥ १ ॥

तिस प्रकार प्रायश्चित्तमयूखमें भी विष्णुजीं का वाक्यहे ॥ संकेति संकरीकरण पापनूं कर्के एक मास पर्यंत जवां का भक्षणकरे अथवा कृच्छ्रातिकृच्छ्र प्रायश्चित्त नूं करे ॥ १ ॥ इस विषेमें अज्ञानतें कीता जो संकरीकरण पापहे तिसके अनुष्ठानमें एक मास पर्यंत जवांका भक्षण करे और अब ज्ञान कर्के संकरी करण पाप नूं करे तब कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे और अज्ञानाभ्यासमें चांद्रायण व्रत करें और ज्ञानाभ्यासमें दो २ चांद्रायण व्रत करे और याज्ञवल्क्यजीने भी इसमे कुछ कहाहै गजके हत कीतियांहोयां पांच ५ नीलवृष देंवें और खर बकरा

तथाच प्रायश्चित्तमयूखेविष्णुः ॥ संकरीकरणंकृत्वामासमश्नीतयावकम् कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवाप्रायश्चित्तंतुकारयेदिति॥ १ ॥अत्राज्ञानात्संकरीकरणानुष्ठाने मासंयावकाशनम् ज्ञानात्कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् अज्ञानाभ्यासेतु चान्द्रायणम् ज्ञानाभ्यासेतुचान्द्रायणद्वयंकल्प्यम् ॥ याज्ञवल्क्येनतु गजेनीलवृषाःपंचखराजमेषेषुवृषोदेयःहयेंशुकम् उरगेआयसोदंडः॥ उष्ट्रेगुञ्जाअक्रव्यान्मृगे वस्तिका जलचरे गौः ॥ यमेनापीदमेवोक्तम् ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरे अज्ञानतःसंकरीकरणानुष्ठाने मासंयावकाशनम् ॥ ज्ञानतःकृच्छ्रातिकृच्छ्रः अज्ञानतोऽभ्यासेचांद्रम् ज्ञानतस्तथात्वेचान्द्रायणद्वयम् प्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानम्

भेडा इनके हतकीतियां होयांएक १ वृषदान करणा और घोडेके वधमे वस्त्र और सर्पके वधमे लोहदंड और ऊटके वधमे गुंजाफलभूषण और अमांसाशी मृगके वधमे वस्तिकाख्या वस्त्रविशेष और जलचरके वधमे गोदानकरे ॥ यमजीनेंभी एहि कहाहै अर प्रायश्चित्तेंदुशेखरमेंभी लिखाहै अज्ञेति जान कर्केनहिकीता जो संकरी करण पाप तिसके अनुष्ठानमें एकमास जवांकाभक्षण करे और ज्ञान कर्के कीता जो है तिसके विषें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे।अज्ञानते अभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे।ज्ञानते अभ्यासमे दो२ चांद्रायण व्रत करे॥ और जद प्रायश्चित्तकरणेकी ना समर्थी होवे तद धेनु दानकरे

तिसमें भी ना शक्तिहोवे तद सौ १०० कौडीका दान करे अर यथाशक्तिदक्षिणा देवें गधा और घोडा और ऊठ और हरिण और हस्ती और बकरा और भिडु और मछ और सर्प और महिष इनके मध्यमें एककोंभी एक वार मारकर्के एक मास जवांकापान करे जव इसमेंना सामर्थ्यां होवें तद दो २ धेनु दानकरे अर तिसमें भी ना सामर्थ्या होवे तव छे ६ कार्षापण दान करे अरशक्तिके अनुसार दक्षिणा देवे अर अभ्यासमें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे इसमे ना सामर्थ्यां होवे

तदशक्तौचूर्णीदानम् कपर्दिकाशतं १०० चूर्णी दक्षिणायथाशक्ति खराश्वोष्ट्रमृगहस्तिच्छागमेषमीनाहिमहिषाणांवधरूपेषुसकृत्करणेमासं यावकपानम् तदशक्तौद्वेधेनू ० तदभावे षट्कार्षापणाः यथाशक्ति दक्षिणा अभ्यासेकृच्छ्रातिकृच्छ्रम् तदशक्तौ पंचधेनवः तदभावेपंचदश कार्षापणाः दक्षिणायथाशक्ति अत्यंताभ्यासे चान्द्रायणम् तदशक्तौसार्द्धसप्तधेनवः तदभावेसार्द्धद्वाविंशतिकार्षापणाः दक्षिणायथाशक्ति ॥
इतिसंकरीकरणानि ॥ २ ॥

तव पंच ५ धेनु दानकरे तिसमे भी ना सामर्थ्या होवे तव पंद्रां १५ कार्षापण दानकरे और शक्तिसें दक्षिणा देवे अर अतिशय कर्के अभ्यासमें चांद्रायण व्रतकरे तिसमें ना सामर्थ्या होवे तव साढिआं सत्त ७ धेनु दानकरे इसमें भी ना सामर्थ्या होवे तव साडेबाईस २२ कार्षापण दान करे अर शक्तिसें दक्षिणा देवे धेनुका अर्द्ध पूर्वोक्त मुल्ल कर्के हिजानणा एह संकरी करण
॥ पाप समाप्त भया ॥
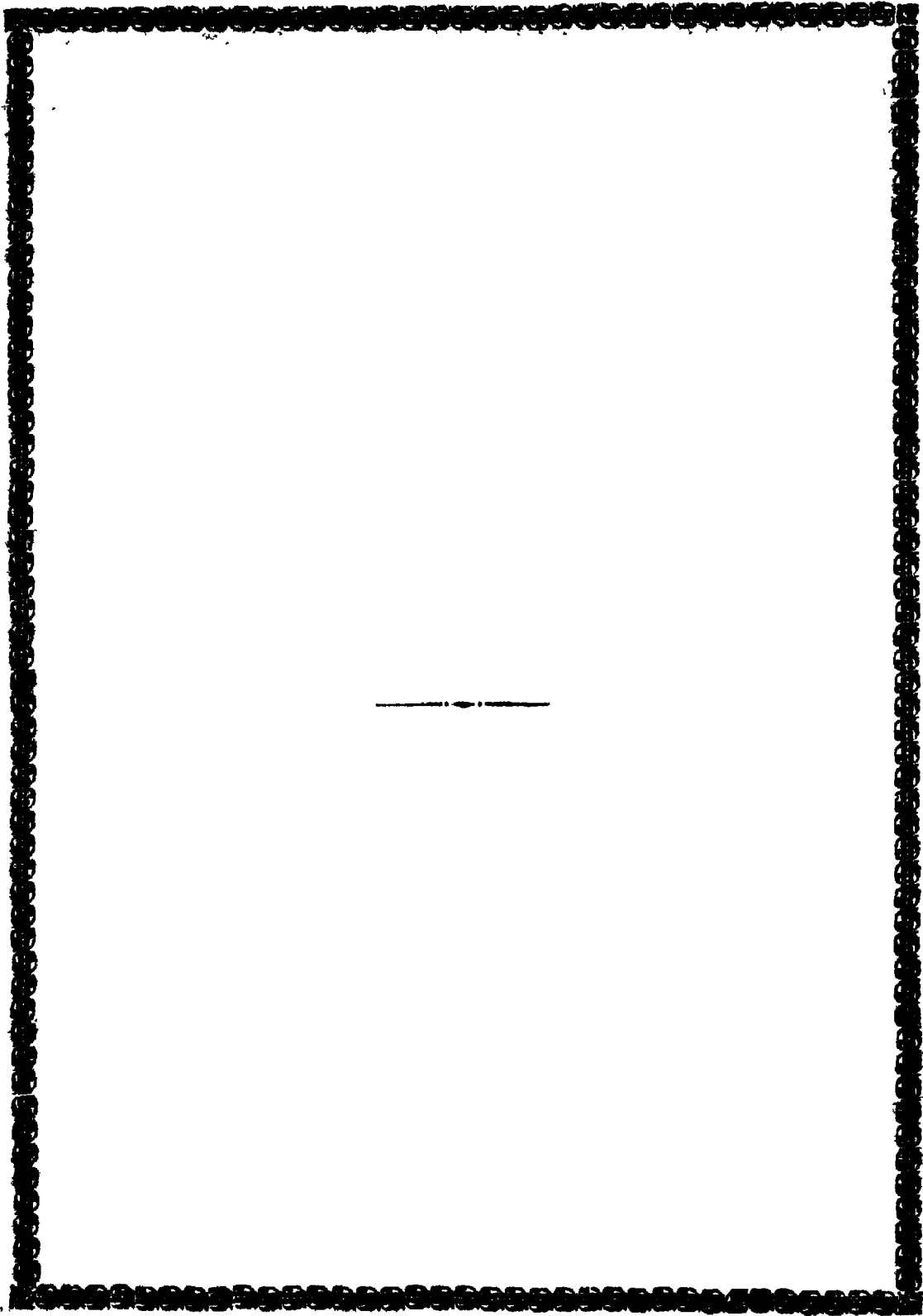
अथेति संकरीकरणतें उपरंत अपात्री करणपाप कहतेहैं ॥ इसकेविषें मनुजीकावाक्यहै ॥ निंदितेति शूद्र और पापी इत्यादिउंतें दानलैणा और शूद्रका कर्म करणा और शूद्रकी सेवा करणी और झूठ बोलना एह एक भी कर्म कीता होआ अपात्री करण पाप होताहै ॥ अप्रति इत्यादिपदोंकर्के इसी श्लोककाहि अर्थ कीताहै ॥ १ ॥ और याज्ञवल्क्यजीनें इसमें भेद कहाहै ॥ निंद्येति ॥ निंदितादिउंतें दान लैणा और शूद्रका कर्म करणा और ब्याज कर्के जीविका करणी और झूठ बोलना और शूद्रकी सेवाकरणी एह अपात्री करण पाप कहेहयन और इसमें पूर्वोक्तसे वृद्धि जीवन अधिकहै प्रायश्चित्त रत्नादिग्रंथोंमें मनु वालाहि अपात्री

अथापात्रीकरणम् तत्रमनुः ॥ निंदितेभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम् अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाषणम् । १ । अस्यार्थःअप्रतिग्राह्यधनेभ्यः प्रतिग्रहो वाणिज्यं शूद्रस्यपरिचर्य्या अनृताभिधानं इत्येतत्प्रत्येकमपात्रीकरणंज्ञेयम् ॥ याज्ञवल्क्येनतु निंदितेभ्योधनादानं वाणिज्यं कुसीदजीवनमसत्यभाषणंशूद्रसेवनमित्यपात्रीकरणान्युक्तानि प्रायश्चित्तरत्नादौमनूक्तमेवापात्रीकरणलक्षणम् ॥ विष्णुस्मृतौतु याज्ञवल्क्यसमानम् ॥ अपात्रीकरणपापापायप्रायश्चित्तमाहमनुः। संकरापात्रकृत्यासुमासंशोधनमैन्दवमिति ॥ निन्दितेभ्योधनादानमित्यादिनाचापात्रीकरणान्युक्तानि तेषांमध्यादन्यतमामिच्छातः कृत्वा चान्द्रायणंमासंशुद्धयेकुर्यादिति ॥ प्रायश्चित्तमयूखेविष्णुः अपात्रीकरणंकृत्वातप्तकृच्छ्रेणशुद्धयति

करण कथन कीताहै और विष्णुस्मृतिमें याज्ञवल्क्य वाला अपात्री करण कहाहै । अपात्रीकरण पापके दूर करण वास्ते प्रायश्चित्तको मनुजी कहतेहैं संकरेति संकरी करण और अपात्री करण पापों के विषें एक मासपर्यंत चांद्रायण व्रत करे तदशुद्धिहोतीहै इसीके अभिप्रायको कहतेहैं निन्दितेभ्य इति निंदितेभ्य इत्यादि कर्के कहे जो अपात्री करण पापहैं तिनके मध्यमे एक किसीनें इच्छानालकीताहोवे तां तिसकी शुद्धि वास्ते एक मासपर्यंत चांद्रायण व्रतको करे ॥ प्रायश्चित्त मयूख विषें विष्णुजीने कहाहै ॥ अपेति अपात्री करणपापनू करनवाला तप्तकृच्छ्रनालशुद्ध होताहै

श्रीर शीतकृच्छ्र करें अथवा वारंवार महासांतपन व्रत करणेकर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अज्ञानते अपात्री करण पापके विषे तप्त कृच्छ्र अथवा शीत कृच्छ्रकरे ॥ ज्ञानके विषेमें पूर्व की न्याई महासांतपन अथवा चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ प्रायश्चित्त मयूखमें कहाहै कि आपदाकेविषे शूद्रकी सेवादि कीतिश्रां भी प्रायश्चित्तके योग्य नहि होता ॥ एह भेद दिखाश्राहै श्रीर प्रायश्चित्तेंदुशेखरमें भी लिखाहै ॥ अज्ञेति ॥ अज्ञानतें अपात्री करण पापकेविषे तप्तकृच्छ्र अथवा शीतकृच्छ्र नूं करे ॥ जब जानकरके करे तब महासांतपन अथवा चांद्रायण व्रत पूर्वकी न्याईं करे जब व्रतों मे ना सामर्था होवे तव नवीन सूई होई गौकादान करे इसमें भी ना समर्थाहोवे तव सौ १०० कौडीका दानकरे श्रीर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ श्रीर कहतेहैं निंदितेभ्य इति पतितादिडोतें दान लेणा श्रीर शूद्रका कर्म करणा श्रीर शूद्रकी

शीतकृच्छ्रेणवाभूयोमहासांतपनेनवा १ अज्ञानादपात्रीकरणेतप्तकृच्छ्रम् शीतकृच्छ्रंवा ज्ञानतोमहासांतपनं चांद्रायणंवापूर्ववत् । प्रायश्चित्तमयूखेएवापदिसच्छूद्रस्यकृतेऽपिसेवने प्रायश्चित्ताधिकारी न भवतीतिभेदोदार्शितः । प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञानादपात्रीकरणे तप्तकृच्छ्रम् शीतकृच्छ्रंवा ॥ ज्ञानतोमहासांतपनंचान्द्रंपूर्ववत् तदशक्तौधेनुदानम् तदशक्तौचूर्णीदानं दक्षिणायथाशक्ति ॥ निंदितेभ्योधनादानेवाणिज्येशूद्रसेवने असत्यभाषणेच सकृत्करणे चतुरहःसाध्यंतप्तकृच्छ्रंशीतकृच्छ्रं वा तदशक्तौसपादधेनुः तदभावेएकोनचत्वारिंशत्कार्षापणाः अभ्यासेमहासांतपनम् तदशक्तौषड्धेनवः तदभावे अष्टादशकार्षापणाः यथाशक्तिदक्षिणा अत्यन्ताभ्यासेचान्द्रायणम् तदशक्तौसार्द्धसप्तधेनवः तदभावेसार्द्धद्वाविंशति कार्षापणाः । यथाशक्तिदक्षिणा ॥ इत्यपात्रीकरणानि ॥ ३ ॥

सेवाकरणी श्रीर झूठ वोलना इनके एक वार करणे में चार ४ दिनका तप्त कृच्छ्र अथवा शीत कृच्छ्र करे इसमें ना समर्था होवे तद एक धेनुका चौथाईमुल्लऔर एक धेनुका दान करे इसमेंभी ना समर्था होवे तव उनताली ३९ कार्षापण दानदेवे अभ्यासके विषे महासांतपन व्रत करे इसमें ना समर्था होवे तव छे ६ धेनु दानकरे ॥ एभी ना होसके तव अठारां १८ कार्षापणदानकरे श्रीर शक्तिनाल दक्षिणा देवे ॥ श्रीर अत्यंतअभ्यासमें चांद्रायण व्रत करे ॥ एभी ना होसके तद एक धेनु का अधा मुल्ल श्रीर सत ७ धेनु दान करे श्रीर एभी ना होसके तब साढे बाईस २२ कार्षापण दान करे श्रीर सामर्था नाल दक्षिणा नाल देवे एह अपात्री करण पाप समाप्त भये ॥ ३ ॥

कम करके प्राप्त होआ जो मलावह पाप तिसको मनुजी कहतेहैं ॥ कृमीति कीडिआं और कीडे और पक्षी इनोंका मारणा और जो मदिराके साथ लिआंदा शाकादिहै तिसका भक्षण करणा और फल और लकडीआं और पुष्प इनां का चुराणा और थो ही जेहि हानि दे होआं होआं वहुत व्याकुलता होणी एह एक भी कर्म मलिनी करण पाप है॥ १ ॥ कृमि पद करके छोटे कीडे ग्रहण करणे ॥ तिनाति कुछक वडे जीहयन सो कीट पद करके ग्रहण करणे(वयः) इसपद करके पक्षिग्रहणाकरणे इनोंका मारणा अर एहि अर्थ स्पष्ट

क्रमप्राप्तंमलावहमाहमनुः ॥ कृमिकीटवयोहत्यामद्यानुगतभोजनम् फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्य्यंचमलावहम् ॥ १ ॥ कृमयःक्षुद्रजंतवःतेभ्यईषत्स्थूलाःकीटाः । वयांसिपक्षिणःतेषांहत्यावधः मद्यानुगतं शाकाद्येकत्रपिण्डीकृत्वामद्येनसहानीतंयद्भोज्यंतस्यभोजनम् केचित्तु मद्यानुगतंमद्यसंस्पृष्टमित्याहुः प्रायश्चित्तगौरवात्तदुपेक्ष्यम् ॥ फलकाष्ठपुष्पाणांचौर्य्यं देवतार्थंपुष्पचौर्य्येनदोषः ॥ अल्पेऽपचयेप्यत्यंतवैक्लव्यं एतत्प्रत्येकंमलिनीकरणम् याज्ञवल्क्येनतु जलचरपक्षिघातनमपिमलावहमुक्तम् इदमेवप्रायश्चित्तप्रकरणप्रायश्चित्तकदंवादौ वर्त्तते विष्णुस्मृत्यांच ॥

करी दाहै मद्येति मद्यानुगतं इस पद करके क्या लयणा कि मदिराके साथ एक टोकरे दा लिआंदाजो शाकादि भक्ष्यहै तिसका भक्षण करणा ॥ कैईक मद्यानुगतं इसपद की न्यूनता रा करके स्पर्श कीते होए कों ग्रहण करते हैं सो यथार्थ नहि क्योंकि प्रायश्चित्त किहाहो वहुतहै ॥ इसमें इतनाभी अर्थ प्रकरणांतरका किहा होआ जानणा कि पुष्प चुराणे का दोष नहि ॥ अर याज्ञवल्क्यजीने जल चर पक्षिका भी करणा पाप कहाहै ॥ एहि प्रायश्चित्त प्रकरण अर प्रायश्चित्तकदंव अर इत्यादिकोंमें भी लिखाहै ॥

मलावह पाप के प्रायश्चित्तको मनुजी कथन करतेहैं ॥ मलिनीति मलिनी करण पा
पों के विषे जवां के काडे करके तीन ३ दिन तप्त कृच्छ्र करे इति ॥ इसीका अर्थ
स्पष्ट करके कहतेहैं कृमीति कृमिकीट वयोहत्या इत्यादि करके कथन कीते जो
मलिनी करण पाप हैं तिनके मध्यमें इच्छा नाल एक कों भी करके तीन ३ दिन जवांके
कोढेको काढ्ड करके भक्षण करे ॥ प्रायश्चित्त मयूख अर विष्णु स्मृति इनमें भी विष्णु
जीका वाक्य है ॥ मलिनीति मलिनी करण पापोंके दूरकरणे वास्ते तप्त कृच्छ्र
व्रत है अथवा कृच्छ्रातिकृच्छ्र प्रायश्चित्त पापका शोधन वाला है ॥ १ ॥ इसमें अज्ञानतें मलि

मलावहप्रायश्चित्तमाहमनुः ॥ मलिनीकरणीयेषुतप्तःस्याद्यावकैस्त्र्यहम् ॥
कृमिकीटवयोहत्येत्यादिनामलिनीकरणान्युक्तानि तन्मध्यादेकमप्यिच्छातः
कृत्वात्रिरात्रंयवागूंक्वथितामश्नीयात् ॥ प्रायश्चित्तमयूखे विष्णुस्मृत्योश्च वि
ष्णुः ॥ मलिनीकरणीयेषु तप्तकृच्छ्रंविशोधनम् कृच्छ्रातिकृच्छ्रमथवाप्रा
यश्चित्तंविशोधनम् १ अत्राज्ञानात्त्र्यहंयावकम् ज्ञानात्तप्तकृच्छ्रं अज्ञानतोऽ
भ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रम्॥ प्रायश्चित्तेन्दुशेखरे अज्ञानतोमलिनीकरणानुष्ठाने
त्र्यहंतप्तयावकपानम् ज्ञानात्तप्तकृच्छ्रः महासांतपनंवा अज्ञानतोऽभ्या
से कृच्छ्रातिकृच्छ्रः ज्ञानतोऽभ्यासेद्विगुणम् ॥

सेव[illegible] रण विषे तीन ३ दिन जवां को भक्षण करे । जब जान करके पाप करे तब तप्त कृच्छ्र
कृच्छ्र पर अज्ञानते अभ्यासमें कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे ॥ प्रायश्चित्तेंदुशेखरमें भी लिखा
नुका दीन [illegible] ति ॥ अज्ञानतें कीता जो मलिनी करणहै तिसके प्रायश्चित्ताऽनुष्ठानके विषे तीन
महासांतपन [illegible] ां काढ्ड करके पानकरे ॥ अर ज्ञानके विषे में तप्त कृच्छ्र अथवा महा सांतपन
ठारां १८ क अज्ञानतें अभ्यासके विषेमें कृच्छ्राति कृच्छ्र व्रत करे ॥ अर ज्ञानते अभ्या
व्रत करे ॥ ए २ कृच्छ्रातिकृच्छ्र करणे चाहिए ॥
कृमी ना [illegible]
देवे एह ड

अर जब व्रत करणमें ना सामर्थ्य होवे तब नवप्रसूता गौका दान करे ॥ इसमें भी ना सामर्थ्य होवे तद सौ १०० कौडीका दान करे ॥ अर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ कृमि और कीडे और पक्षि इनके एक वार मारणेमें तीन ३ दिन जवांका जल भक्षण करे अर मद्यानुगत द्रव्यके भोजनमे अर्थात् जिसवस्तुके साथ मदिराकापात्र ल्यांदाहै तिसवस्तुके भोजनमें अर फल और काष्ठ और पुष्प इनके चुराणके अभ्यासमें तप्तकृच्छ्र व्रत करे ॥ इसमें ना सामर्थ्य होवे तब चार ४ नव प्रसूता गौआंका दानकरे इसमें भी ना शक्ति होवे तद बारां

प्रायश्चित्ताशक्तौधेनुदानम् तदशक्तौचूर्णीदानम् यथाशक्तिदक्षिणा ॥ कृमिकीटपक्षिणांहननेसकृदाचरणे त्र्यहंयावकम् मद्यानुगतद्रव्यभोजने फलकाष्ठपुष्पाणांस्तेयेऽभ्यासेतप्तकृच्छ्रम् तदशक्तौचतस्रोधेनवः तदभावे द्वादशकार्षापणाः ॥ अधैर्येऽत्यंताभ्यासे कृच्छ्रातिकृच्छ्रम् तदशक्तौपंच धेनवः तदभावेपंचदशकार्षापणाः यथाशक्ति दक्षिणा ॥ एतच्चतुष्ठये प्रायश्चित्तानुक्तौ तारतम्यंस्वयमूह्यम् ॥ इतिमलावहानि ॥ ४ ॥ *

१२ कार्षापण दानकरे अर अधैर्यता जो पीच्छेकहीहै तिसके अत्यंताभ्यासमे क्या बहुवारकरणेमे कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रत करे ॥ अर व्रतमें ना शक्ति होवे तब पांच ५ धेनुका दान करे ॥ अर एभी ना कर सके तब पंदरां १५ कार्षापणका दान करे ॥ अर शक्ति नाल दक्षिणा देवे ॥ इन चारों पापांमें जहां प्रायश्चित्त नहि कहा तिस स्थानमें पापकी न्यूनता अधिकता देख करके प्रायश्चित्त करणा ॥ एहमलावहनाम वाले पापोंका प्रायश्चित्त किहाहोआ समाप्तहोया ॥ ४ ॥ ● ॥

अथेति मलिनीकरण पापसें उपरंत क्रम करके प्राप्त होए जो प्रकीर्णक पापोंके प्रायश्चित्तहैं तिनांको कहतेहैं तिनके विषे मनुजी का वाक्यहै अन्येति पूर्व कथन कीते जो पापहैं तिनां ते भिन्न संपूर्ण प्रकीर्णक पापहैं तिसनू कथन करतेहैं ॥ सो कहाहै प्रायश्चित्त मुक्तावली के विषें नारदजीने राज्ञामिति राजओं की आज्ञाका भ्रर तिस प्रकार तिनकेकाथित कर्म का न करणा और एकवार संकल्प कीती होई वस्तु का फेर संकल्प करणा और स्वामी और वजीर और मित्र और तोशे खाना और राज्य और किला और सेना और पुरके लोकोंकीआं पंक्तिआं इन की वृद्धिकी विपरीत ता होणी अर्थात् स्वौचित धर्म्म का परित्याग १ और वेदके प्रमाणनूना मनन वाला और नास्तिक और तरखाण भ्रर लुहारादि दश संस्कार रहित ४ इनके संगते अधर्म

अथ क्रमोपस्थितानि प्रकीर्णकपापप्रायाश्चित्तानि तत्रमनुः अन्यत्सर्वंप्रकीर्णकमिति पूर्वेभ्योऽन्यत् तत्तुवक्ष्यते तदुक्तं प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां नारदेन राज्ञामाज्ञाप्रतीघातस्तत्कर्माकरणंतथा पुनःप्रदानंसंभेदःप्रकृतीनांतथैवच ॥ १ ॥ पाषण्डिनैगमश्रेणिगणधर्म्मविपर्य्ययाः पितापुत्रविवादश्चप्रायश्चित्तावपर्य्ययः ॥२॥ प्रतिग्रहविलोपश्चकोपश्चाश्रमिणामपि वर्णसंकरदोषश्चतद्वृत्तिनियमस्तथा नदृष्टंयत्तुपूर्वेषुसर्वंतत्स्यात्प्रकीर्णकम् ॥३॥पुनः प्रदानं दत्तस्यैवदानम् संभेदोवैमत्थम् प्रकृतीनामित्यर्थः पाषण्डिनोवेदस्यप्रामाण्यमेवनमन्यमानाःसौगतादयः नैगमाविदस्यान्यप्रणीतत्वेनाप्रामाण्यवादिनः श्रेणयएकशिल्पोपजीविनः गणोव्रात्यःएषांसंबंधाद्धर्मविपर्ययोऽधर्मः ॥

होणा और पिता पुत्रका झगडा और प्रायश्चित्त का विपर्य्यय करणा अर्थात् चांद्रायण व्र के विषे कृच्छ्र करणा भ्रर कृच्छ्रके विषे तप्त कृच्छ्र करणा इत्यादि विपर्य्ययकरणाहै । २। और दाननू चुककर फेर उसकों छपालैणा और ब्रह्मचारी १ और गृहस्थी २ और वानप्रस्थी ३ और संन्यासी ४ इनके उप्परवृथाक्रोधकरणा और वर्ण संकर दोष और ब्राह्मणने क्षत्रियादिओंके कर्म करके उपजीविका करणी और वडडोंके विषे नही देखिआ जो कर्महै तिसका करणा एह संपूर्ण प्रकीर्णक पाप कहाहै ॥१॥ पुनः प्रदानं इत्यादि पदों करके इनो श्लोकोंकाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै इन संपूर्णोंका प्रायश्चित्त साधारण प्रकरणमें देखलैणा ॥ और जो इसमें विशेष आवेगा सो लिहाजावेगा ॥

और प्रकार कथन करतेहैं ॥ तिसकें विषे याज्ञवल्क्य जीका वाक्यहै ॥ प्राणेति गर्दभ १ और ऊट २ इन करके युक्त जो बग्गी आदिक है तिसके उपर चढ करके जो पुरुष जाताहै और नंगा जो स्नान करताहै और धोती ना लाकर जो पुरुष अन्न खाताहै और दिने अपणी स्त्रीके साथ मैथुन करताहै सो पुरुष तला और नदी आदि ओंकेविषे स्नान नूं करके पश्चात् प्राणायामकों करे तो शुद्ध होताहे ॥ १ ॥ एह इच्छाके विषयमें जानना इसी विषयमे मनुजी का वाक्यहै उष्ट्रेति ऊट और गर्दभ करके युक्त जो असवारीहै तिस उपर इच्छा सें जो आरूढ होताहै सो पुरुष सहित वस्त्रोंके जलविषे स्नान करके पश्चात्

प्रायश्चित्तविपर्ययो व्यत्ययेन चांद्रेकृच्छ्रकरणं कृच्छ्रे तप्तकृच्छ्रमित्यादि प्रतिग्रहविलोपोगृहीतप्रतिग्रहसंगोपनम् तद्वृत्तिनियमोवर्णसंकरवृत्तिः क्षत्रियादिवृत्तिस्तयानापद्यपिजीवनम् ॥ एषांप्रायश्चित्तं साधारणप्रकरणे द्रष्टव्यम् विशेषस्तूच्यते) * तत्रयाज्ञवल्क्यः प्राणायामीजलेस्नात्वाखर यानोष्ट्रयानगः नग्नःस्नात्वाचभुक्त्वाचगत्वाचैवादिवास्त्रियम् १ ॥ अस्यार्थः खरयुक्तंयानंखरयानम् उष्ट्रयुक्तंयानमुष्ट्रयानम् रथगंत्र्यादि तेनाध्वगम नंकृत्वादिगंवरः स्नात्वाऽभ्यवहृत्यवा वासेरच निजांगनासंभोगं कृत्वाच तडागतरंगिण्यादाववगाह्यकृतप्राणायामःशुद्ध्यति ॥ इदंच कामकारविषय म् उष्ट्रयानंसमारुह्यखरयानंतुकामतः सवासाजलमाप्लुत्यप्राणायामेनशु द्ध्यतीति मनुस्मरणात् अकामतःस्नानमात्रंकल्प्यम् साक्षात्खरारोहणे तुद्विगुणावृत्तिः कल्पनीया तस्य गुरुत्वात् ॥१॥ विष्णुरपि ॥ उष्ट्रेणवाग त्वानग्नःस्नात्वाभुक्त्वाच प्राणायामंकुर्य्यादिति ॥साक्षात्खरोष्ट्रारोहणेयमः खरयानमुष्ट्रयानंवाधिरोहेद्द्विजोत्तमः अपोवाप्रविशेन्नग्नस्त्रिरात्रंक्षप णंस्मृतमितिप्रायश्चित्तमयूखः ॥ १ ॥

प्राणायामके करणे करके शुद्ध होताहे और अकामके विषयमे केवल स्नानाहीं कहाहै साक्षात् गर्दभउपर आरूढ होणेमें दो २ बार स्नान और प्राणायाम करणा चाहिए क्यों कि इसको बडा पाप होणेसें ॥ १ ॥ विष्णु जीका भी कथन है ऊटके उपर चडकर और नग्न होकर स्नान करके और नग्न होकर अन्न खा करके प्राणायाम नूं करे इति ॥ साक्षात् ऊट और गर्दभके विषे प्रायश्चित्त मयूखमें यमजीने कहाहै खरेति गर्दभ और ऊट इनकरके युक्त जो असवारीहै तिस उपर अथवा साक्षात् गर्दभ और ऊट उपर जो आरूढ होताहै और नग्न जो स्नान करताहै तिस पुरुषकी शुद्धिके वास्ते तीन रात्रि उपवास लिखाहै ॥ १ ॥

गुरुमिति पिता और ताउ और बापू इत्यादिओं कों झिडक करके अर्थात् तूंहि कैंदाथा अर तैनैंहि एह कीता इस प्रकार एक वचन उच्चारण करणे करके झिडक कर के और ब्राह्मण और वडाभ्राता और छोटाभ्राता इनानूंभी क्रोधसें झिडक करके अर्थात् तूंचुप करके वैठ मत बोल इसप्रकार झिडक करके और झगडे सें अथवा हासेसें ब्राह्मणनूं जित करके अर वस्त्र करके थोडा जिआभी गलकें विषें बांधे तब उसके चरणानूं पकडकर क्रोधनूं त्यागकरा करके एकदिन उपवासकरे १ । गुरुं जनकादिकं इत्यादि पदोंमे इस काहि अर्थहै ॥ जो यमजीनेकहाहै वादेनेवि ब्राह्मणनूं झगडेसें जित करके प्रायश्चित्तकी इच्छा

गुरुंहुंकृत्यतुंकृत्यविप्रंनिर्जित्यवादतः वद्ध्वावावाससाक्षिप्रंप्रसाद्योपवसेद्दिनम्॥१॥ गुरुंजनकादिकंतुंकृत्यत्वमेवमात्थ त्वयैव कृतमित्येकवचनांतयुष्मच्छब्दोच्चारणेन निर्भर्त्स्यैविप्रं वा ज्यायांसं समंकनीयांसं वा सक्रोधंहुंतूष्णीमास्वहुंमावहुवादीरित्येवमाक्षिप्य जल्पवितंडाभ्यां जयफलाभ्यांविप्रंनिर्जित्यकंठे वाससा मृदुस्पर्शेनापि वद्ध्वा क्षिप्रंपादप्रणिपातादिनाप्रसाद्य क्रोधंत्याजयित्वादिनमुपवसेत् अनश्नन्कृत्स्नंवासरंनयेत् । यत्तुयमेनोक्तम् वादेनब्राह्मणंजित्वाप्रायश्चित्तविधित्सया त्रिरात्रोपोषितःस्नात्वाप्रणिपत्यप्रसादयेदिति ॥ १ ॥ तदभ्यासविषयम्॥मनुः ॥ हुंकारंब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंकारंचगरीयसः स्नात्वानश्नन्नहःशेषमभिवाद्यप्रसादयेत् १ ताडयित्वा तृणेनापिकण्ठेवावध्यवाससा विवादेवाविनिर्जित्यप्रणिपत्यप्रसादयेत् २ अर्थः हुंतूष्णींस्थीयतामित्याक्षेपंब्राह्मणस्यकृत्वा विद्यादिनाधिकस्य त्वंकारंचोक्त्वा अभिवादनकालादारभ्याहःशेषं यावत्स्नात्वा भोजनानिवृत्तः पादोपग्रहणेनापगतकोपं कुर्य्यादिति ॥

करके तीन ३ रात्रि उपवास रक्खकर स्नान करके ब्राह्मणके चरणानूं पगड करके प्रसन्नकरे १ ॥ एह अभ्यासका विषयहै अर्थात् बहुतवार पाप करणेमे प्रायश्चित्तहै ॥ मनुजीका भी वाक्यहै हुमिति तूं चुप करके वैठ इसप्रकार ब्राह्मणकों झिडककर कहे अर तूंहि कैंहदाहैं तैंनैंहि कीताहै इसप्रकार विद्या करके अधिकनूं झिडक करके अर नमस्कार और स्नान इनांनूं करकें तिससें लैकर रैंदा जेडा दिनहै तिसके विषें ब्राह्मणके चरणोंकों पगड करकें प्रसन्नकरें । १ । अर जब तृणभी ब्राह्मणको मारे अर गळ विषें वस्त्रपाए अर झगडे करकें जित्ते तौभी चरणांतें पगड करकें प्रसन्नकरे अर्थः इत्यादि पदोंसें इसीका अर्थ स्पष्टकीताहै ॥ २ ॥

॥ कुच्छ्क और कहतेहैं ॥ विप्रेति ॥ ब्राह्मणकों मारणदी इच्छा करके सोटा उमसे हैं कृच्छ्र व्रत अर डंडा मारणेमें अति कृच्छ्र अर रुधिर निकालनेंमें कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत शुद्धिका कारणहै ॥ अर मारणे करकें अंदर रुधिर पाणेमें भी कृच्छ्र व्रत शुद्धिका कारणहै ॥ १ ॥ विप्रजिघांसया इत्यादि पदोंमें इसीश्लोकका हि अर्थहै ॥ बृहस्पतिजीने इसमें विशेष कहाहै ॥ काष्ठेति काष्ठादिके मारणें करके त्वचा छेदन करे तब कृच्छ्र व्रतनूं शुद्धिके वास्ते करें अर जब पाषाणादि मार करके हड्डी भग्न देवे तब अतिकृच्छ्र व्रतनूं करे अर अंग छेदनमें पराकव्रत शुद्धिका कारणहै ॥ १ ॥ यमजीकाकथनहै॥ पादेनेति चरणकरके ब्राह्मणनूं स्पर्शकरे तब प्रायश्चित्तके विधानकी इच्छा करके दिनके विषे उपवास करें अर स्नान करे ब्राह्मणनूं चरणांतें पकड कर प्रसन्नकरे ॥ १ ॥ एह सानुवंध विषयमेंहै अर्थात् अनुवंध साथजो

किंच विप्रदंडोद्यमेकृच्छ्रस्त्वतिकृच्छ्रोनिपातने कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसृक्पाते कृच्छ्रोभ्यंतरशोणितइति १ विप्रजिघांसयादंडोद्यमेकृच्छ्रःशुद्धिहेतुः निपातनेताडनेअतिकृच्छ्रः रुधिरस्रवणेकृच्छ्रातिकृच्छ्रः ताडनादिनाअभ्यंतरशोणितेपिकृच्छ्रःशुद्धिहेतुः॥ बृहस्पतिनाप्यत्रविशेषउक्तः॥ काष्ठादिनाताडयित्वात्वग्भेदेकृच्छ्रमाचरेत् अस्थिभेदेऽतिकृच्छ्रःस्यात्पराकस्त्वंगकर्तने १ यमः॥ पादेनब्राह्मणंस्पृष्ट्वाप्रायश्चित्तविधित्सया दिवसोपोषितः स्नात्वाप्रणिपत्यप्रसादयेत् १ सानुवंधेएतत्अनुवंधश्चवाचाधर्षणम् इच्छापूर्वकदोषकरणमनुवंधइतिशब्दार्थचिंतामणिः॥ तथा॥ अवाच्यंब्राह्मणस्योक्त्वाप्रायश्चित्तंविधीयते कृच्छ्रातिकृच्छ्रंकृत्वातुप्रणिपत्यप्रसादयेत् १ ॥ एतत्तुपीडातिशयेऽनुवंधातिशयेच आक्रोशमनृतंहिंसामनुवंधंसमाचरेत् एकरात्रंत्रिरात्रंवाषड्रात्रंवाविधीयते ॥ २ ॥

पाद स्पर्शहै तिस विषे जानणा अनुवंध क्या वाणी करके जो निरादर करणा तिसका नामहै. इच्छा सें जो दोष करणाहै तिसका नाम अनुवंधहै एह शब्दार्थ चिंतामणिमें लिखा है॥ तिस प्रकार औरभी कहतेहैं अवेति ब्राह्मणकों खोटा वचन कहके प्रायश्चित्तनूं करे क्या कृच्छ्राति कृच्छ्र व्रतनूं करके चरणोंतें पकड कर ब्राह्मणकों प्रसन्न करे ॥ १ ॥ एहअतिशयकरकें पीडा अर अतिशय करकें अनुवंधके विषे जानणा ॥ अब और कथन करतेहैं आक्रोशमिति ब्राह्मण और गुरु और वृद्ध और सिद्ध इनको झूठी चोरी लगाणी और झूठा कथन करणा और हिंसा और इच्छा सें व्यभिचारादि अपराध करणा इनांनू आचरण करके एकरात्र अथवा तीन ३ रात्र अथवा छे६ रात्र उपवासकरे ॥ २

मनुजीका वाक्यहै ॥ विनेति जलोंबिना अथवाजलकेमध्यमें जो पुरुष मूत्रऔर विष्ठा नूं करताहै सो ग्रामतेबाहर जाकर सहितवस्त्रोंके नद्यादिमें स्नानकरके पीछेसें गौनूंस्पर्शकरके शुद्ध होताहै १ ॥ एह विनाकामनासें जो पापहै तिसकाविषयहै । असन्निहित इत्यादिपदोंमें इसश्लोककाहि अर्थहै अबकामनाके विषयमेंकहतेहैं आपेति आपदाकेविषे जोपुरुषजलतें विनामूत्र और पुरीष कों करदाहै अर्थात् जलतें विना पिशाव और दिशा बैठदाहै सो एक दिन उपवास नूं करके पश्चात् समेत वस्त्रांदे जल विषे स्नानकरे एह यमजीका कथन जानना ॥ १ ॥ अनापदा केविषे इसतें दूणाकरे ॥ जो सुमंतुजीकावाक्यहै कि जलांके मध्यमें और अग्नि के विषे मूत्र और पुरीषकों जो पुरुष त्यागता हैं तिसको तप्तकृच्छ्र व्रत करणा चाहिए ॥ एह सुखवालेपुरुषका और अभ्यासकाविषयहै ।. अनभ्यासके विषे शंख और लिखितजो कहतेहैं रेत इति

मनुः ॥ विनाद्भिरप्सुवाप्यन्तः शारीरंसन्निषेव्यतु सचैलोवहिराप्लुत्यगामा लभ्यविशुध्यति।१ असन्निहितजलोजलमध्येवाशारीरंमूत्रपुरीषादिकंकृत्वा सवासावहिर्ग्रामाद्नद्यादौ स्नात्वा गां च स्पृष्ट्वाशुध्यति ।इदमकामतः कामतस्तु आपद्गतोविनातोयंशारीरंयोनिषेवते एकाहंक्षपणंकृत्वासचैलो जलमाविशेदितियमोक्तंवेदितव्यम् अनापदितु द्विगुणम् यत्तु सुमंतुवचनम् अप्स्वग्नौ वामे हतस्तप्तकृच्छ्रमिति तदनार्त्तविषयमभ्यासविषयंवा अनभ्यासेतु शंखलिखितौ रेतोमूत्रपुरीषाण्युदकेकृत्वात्रिरात्रोपोषितइदमापः प्रवहतेत्यृचंजपेत् यमः अटव्यामटमानस्यब्राह्मणस्यविशेषतः प्रणष्टसलिलेदेशेकथंशुद्धिर्विधीयते॥१॥अपोदृष्ट्वैवविप्रस्तुकुर्य्याच्छौचंसचैलकम्॥ गायत्र्यष्टशतंजप्यंस्नानमेतत्परंभवेत् ॥ २॥ देशंकालंसमासाद्यानावस्थामात्मनस्तथा धर्म्मंशौचंचसंतिष्ठन्नकुर्य्यान्वेगधारणम् ॥३॥ वेगोमलवेगः

जोपुरुष वीर्य और मूत्र और पुरीष इनांनू जलके विषे त्यागताहै सो पुरुष तीन ३ रात्र उपवासनू रखकर इद माप प्रवहतइस ऋचांकों एकवार अथवा १० वार जपे यमजीका वाक्यहै (प्रश्न) अटव्यामिति वनके विषे गमन करदा होआ सुचेतहोणेकी इच्छावालाजो ब्राह्मणहै जलतें रहित देशके विषे तिसकी किसप्रकार शुद्धि विधानकीतिहै ॥ १ ॥ (उत्तर) तिसकी शुद्धि कहतेहैं ॥ अपइतिसो ब्राह्मणजलनूं देख करके सहित वस्त्रांदे शुद्धि नूं करेपश्चात् एक सौ आठ १०८ वारगायत्रीको जपे एह परम स्नानहोताहै ॥२॥ देशमिति देश और काल और अपनी अनवस्थाकों प्राप्तहोकरके धर्म और शुद्धि नू जैसादेखेतैसा कर लेवे और मलके वेग नू कदेभी ना धारण करे क्यों किमलकावेग सहारणे सेरोगकी उत्पत्ति होजातीहै॥३

नित्यकर्मके नाशके विषे मनु जी प्रायश्चित्त कथन करतेहैं ॥ वेदविति वेदके विषे वि धान कीते जो संध्यावंदन अग्नि हवनादि नित्य कर्महैं तिनके और मनुस्मृतिके चौथे ४ अ ध्यायमें कथन कीते जो स्नातक व्रतहैं तिनके नाशहोआं होआं एक १ उपवास व्रत कीकरे ॥१॥ वेद विहित इत्यादिपदोंककेइसी श्लोककाहि अर्थस्पष्ट कीताहै ॥इसी विषे में बृहस्पति जीका भी वाक्यहै ॥ अनीति पाठ १ और होम २ अतिथि पूजन ३ और तर्पण ४ और वैश्वदेववलि ५ इनापंचमहायज्ञांको न करके रोगादितें रहित होआ होआ और धनके भी होआं होआं जो गृहस्थी पुरुष अन्नका भक्षण करदाहै सो आधे कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै ॥१॥ आहितेति अग्नि होत्री जो पुरुष अष्टमी १ और द्वादशी २ और अमावा वास्या ३ और पौर्णमासी ४ और सूर्य संक्रांति ५ इन पंचपर्वांके विषे होमनूं नहि करदा

नित्यकर्म्मलोपेतुमनुः ॥ वेदोदितानांनित्यानांकर्म्मणांसमातिक्रमे स्नातक व्रतलोपेचप्रायश्चित्तमभोजनम् ॥१॥ वेदविहितकर्म्मणामग्निहोत्रादीनाम नुपदिष्टप्रायश्चित्तविशेषाणांचपरिलोपे मनुचतुर्थाध्यायोक्तानांस्नातकव्रता नांच लोपे जाते एकाहोपवासंव्रतंकुर्य्यात् ॥ बृहस्पतिः ॥ अनिर्वर्त्यमहा यज्ञान्योभुंक्तेप्रत्यहंगृही अनातुरः सतिधनेकृच्छ्रार्द्धेनसशुध्यति॥१॥आहि ताग्निरुपस्थानंनकुर्य्याद्यस्तुपर्वणि ऋतौनगच्छेद्भार्य्यांयः सोपिकृच्छ्रार्द्ध माचरेदिति॥२॥स्नातकव्रतमधिकृत्यक्रतुनाप्युक्तम्॥एतेषामाचाराणामेकैक स्यव्यतिक्रमेगायत्र्यष्टशतंजप्त्वापूतोभवति॥ अत्रविशेषोऽग्रेवोध्यः। ऋष्य शृंगः॥इन्द्रचापंपलाशाग्निंयद्यन्यस्यप्रदर्शयेत् प्रायश्चित्तमहोरात्रंधनुर्दं डश्चदक्षिणेति ॥१ ॥इन्द्रचापोमेघांतरीयःअकस्मात्पलाशेपुपत्रेपुजातोयो ऽग्निःसपलाशाग्निः इंद्रचापप्रदर्शनेधनुर्दक्षिणा पलाशाग्निप्रदर्शनेदंडइति

और जो पुरुष ऋतुकालके विषे अपणी स्त्रीमेंगमन नहि करदा सोभी अर्द्धकृच्छ्र व्रत नूं करे ॥ २ स्नातक व्रतकों अधिकार करके ऋतुजीनेभी कहाहै ॥ एतइति इनां कर्म्मां के मध्यमें एकके भी व्यतिक्रमके विषय अर्थात् नाशदे होआंहोआं गायत्रीको एकसौ आठ वार १०८ जप करके पवित्रहोता है ॥ इसके विषय अधिक कहणाहै सो आगे जाणलैणा ऋष्यशृंग जीका वाक्यहै मेघ वर्षणतें पीछे जो आकाशके विषें इंद्रका धनुष पडताहै तिसकों और पत्रांके वि षस्वभावक उत्पन्न होआ जो अग्नि है तिसकों जद औरी पुरुषकों दखावे तब एक दिन रात उपवास करे अर धनुष और दंड एह दक्षिणा देवे अर्थात् इंद्रचाप दखांणेमें धनुष दक्षिणा अर पलाशअग्नि दखाणेमें दंडा दक्षिणा ॥ १ ॥

शंखऋषिका वचनहै अभ्येति ॥ पलाशवृक्षकी खड़ाऔर गाडी और पीपे और दातन इनकों प्राप्तहोकरके ब्राह्मण और क्षत्रि और वैश्य तीन ३ रात्र उपवास व्रतकरे । १ । अब क्षत्रीकों युद्ध के विषय नसनेका दोष कहतेहैं क्षत्रीति क्षत्रीजो युद्धके विषय मृत्युतें डरता होत्र्या नससजावे अर फलवाले वृक्षकों जो काटताहै सो पुरुष एक वर्षपर्यंत व्रतकोंकरे इसमें यावक व्रतग्रहण करणा अर्थात् यव भक्षणकरणे पूर्वोक्त शंखजीके वाक्यतें ।२ । दो ब्राह्मणआदिके बीचकेचलने का दोष कहतेहैं ॥ द्वाविति दो ब्राह्मण १ ब्राह्मण और अग्नि २ अर स्त्री और पति ३ अर गौ और बैल ४ इनके मध्यमे जबपुरुष लंघे तब सांतपन कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ ३॥ इसी विषयमें जो अंगिरा ऋषिका वाक्यहै ॥ दंपती स्त्री और भर्ता अर दो ब्राह्मण

शंखः ॥ अभ्यास्यशयनंयानंपादुकांदन्तधावनम् द्विजःपलाशवृक्षस्यात्रिरात्रंतुव्रतीभवेत् । १ ।क्षत्रियस्तुरणेपृष्ठंदत्त्वाप्राणपरायणः। संवत्सरंव्रतंकुर्य्याच्छित्त्वावृक्षंफलप्रदम् । २ । व्रतमत्रयावकंशंखोक्तत्वात् । ॥ ।द्वौविप्रौब्राह्मणाग्नीचदंपतीगोवृषौतथा अन्तरेणयदागच्छेत्कृच्छ्रंसातपनंचरेत् ॥ ३ ॥ यत्त्वंगिराः दंपत्योर्विप्रयोरग्न्योर्विप्राग्न्योर्वाद्विजातिषु अंतरंयोऽवगच्छेत्तुद्विजश्चान्द्रायणंचरेदित्येतत्कामकारविषयमभ्यासविषयंच॥होमकालेतथादोहेस्वाध्यायेदारसंग्रहे। अन्तरेणयदागच्छेद्द्विजश्चान्द्रायणंचरेत् ।२ । एतच्चमार्गान्तरसंभवेसतिद्रष्टव्यम् दोहे सान्नाय्यांगभूते ॥

२ दो अग्निआं ३ अर ब्राह्मण और अग्नि ४ इनकेमध्यमे ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य जो लंघता है सो पुरुष शुद्धिके वास्ते चांद्रायण व्रतकों करे । १ । एहकाम और अभ्यासका विषयहै ॥ अब और कथन करतेहैं । होमेति होम कालके विषय तिसप्रकार गौके दोहन समयमें अर अध्ययन समयमें अर विवाह समयमें ब्राह्मण अर क्षत्रि अथवा वैश्य जद मध्यमें लंघताहै सो शुद्धिके वास्ते चांद्रायण व्रतकोंकरे एहदोष दूसरे मार्गके होआहोआ जानणा जेकर और मार्ग नहोवे तब इसका दोषनहि जानणा इसजगा जो दोहनहै सो सान्नाय्यांग रूपजो यज्ञ कर्म्म तिसके अर्थवाले दोहनमे जानणा ॥ २ ॥

जलतें बिना मूत्र और पुरीष करणमें सुमंतुका भी वाक्यहै अनुदेति जलतें बिना मूत्र और पुरीषके करणेके विषय अर नख और वाल और रुधिर इनके भक्षण करणेमें तात्काल स्नान करे अर घृत और कुशा और स्वर्ण इनका जल पानकरे इसमें घृतादि पानकों प्रायश्चित्तके अर्थ हो नेतें भोजन भक्षण न करणा किंतु उसीको भोजनके स्थानसमझणा यत्त्विति जो मूत्रऔर पुरीष इनके कीतिओं जब जल न होवे तब जलकोंप्राप्त हो करके सहित वस्त्रांदे स्नान करकेही शुद्ध होताहे इह वाक्यहै ॥ १ ॥ और जो शातातपका वाक्यहे अनुदेति जलतें बिना मूत्र और पुरीष करणेमें सहित वस्त्रांके स्नानकरे और सप्त महाव्याहृतिओं करके हवन करे एह

अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सुमंतुरपि अनुदकमूत्रपुरीषकरणेनखकेशरुधिरप्राशने सद्यःस्नानं घृतकुशहिरण्योदकपानंचेति अत्र घृतादिपानस्य प्रायश्चित्तार्थत्वाद्भोजननिषेधः यत्तुकृतेमूत्रेपुरीषेवायदानैवोदकंभवेत् स्नात्वालब्ध्वोदकंपश्चात्सचैलस्तुविशुद्ध्यतीति १ यच्च शातातपः अनुदकमूत्रपुरीषकरणे सचैलस्नानंमहाव्याहृतिहोमश्चेति तदकामतः तथा नोदन्वतोंभसिस्नायान्नचश्मश्रुादिकर्तयेत् अंतर्वत्न्याः पतिःकुर्वन्नप्रजोभवतिध्रुवम् ॥ १ ॥ अयंचनिषेधःसप्तममासादूर्ध्वम् तथाच त्रिस्थलीसेतौवचनम् वपनंमैथुनंतीर्थंवर्जयेद्गुर्विणीपतिःश्राद्धंचसप्तमान्मासादूर्ध्वंनाऽन्यत्रवेदविदिति ॥ १

वाक्य अकामके विषयमे जानने॥तिस प्रकार गर्भवाली स्त्रीके पतिको समुद्र स्नानादिका निषेध करतेहैं नविति गर्भवाली स्त्रीका पति समुद्रके जलविषय स्नान न करे अर दाडीआदिके वालांनू भी न कटावे जो कदाचित् एह काम करे तब निश्चय करके संतानतें रहित होताहे एह निषेध सप्तम मासते उपरंत जानना सप्तम मासतें उरे इनका दोष नहि जानना १ ॥ तिस प्रकार त्रिस्थली सेतुमें भी किसेका वचन लिखाहै वपनमिति गर्भवाली स्त्रीकापति वेदके जानने वाला सप्तम मासतें उपरंत मुंडन और मैथुनऔर तीर्थयात्रा औरश्राद्धका भोजन इनानूं नसेवे।

इस विषय साधारण प्रायश्चित्त जोडनें योग्यहे तैसे दखाते हैं॥ प्राणेति इसजगा ऐसा अर्थ करणाकि उपपातक जिनोंतें उत्पन्न होतेहैं जैसे अवगूरणादिते गोवध रूप उपापतक उत्पन्न होताहै ऐसें सभपापांके दूरकरणे वास्ते और अनादिष्टजोपाप हैं (नौदन्वतोंभसिस्नायात्) इत्यादिश्लोकांकर्के कहेहोए तिना सबनां पापांके दूरकरणे वास्ते १०० प्राणायामकिहाहै सर्व शब्दका अन्वइस रीतिसें लगाणा यथा श्रुत नहि लगाणा क्योंकि १०० प्राणायामसे सारे पाप नहि दूरहो सके ॥१॥ याज्ञवल्क्यजीका वाक्य कथनकरतेहैं देशमिति देश

श्राद्धंश्राद्धभोजनमित्यर्थः अत्र सामान्यप्रायश्चित्तंयोज्यम् तद्यथाप्राणायामशतंकार्य्यंसर्वपापापनुत्तये उपपातकजातानामनादिष्टस्यचैवहीति ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्यः देशंकालंवयःशक्तिंपापंचावेक्ष्ययत्नतःप्रायश्चित्तंप्रकल्प्यंस्याद्यस्यचोक्तानानिष्कृतिरिति १ ॥ मनुः॥शरणागतंपरित्यज्यवेदंविप्लाव्यचद्विजः संवत्सरंयवाहारस्तत्पापमपसेधति॥१॥अर्थः॥परित्राणार्थमुपगतं शरणागतं शक्तःसन्नुपेक्षतेयोद्विजःअनध्याप्यंवेदमध्याप्य एतज्जनितंपापं संवत्सरं निरंतरं यवाहारोऽपनुदति उपपातकानिगोवधादीनि जातानियेभ्योऽवगूरणादिभ्यस्तानितेषांचपुनरनादिष्टस्यनोदन्वतोंभासिस्नायादित्यादिनाकथितसर्वपापापनुत्तये प्राणायामशतंकार्य्यमित्यर्थः

और कालऔर आयुषा और बल और पाप इनांनू देखकरके यत्ननाल प्रायश्चित्त कल्पना करना चाहिए अरजिसपापका प्रायश्चित्त नहिकहा तिसका भी यथा योग्य प्रायश्चित्त कल्पना करणा चाहिए ।१।आगे मनुजीका वाक्यहे॥ शरेति रक्षाके अर्थ वास्ते शरणी आनपडा जोपुरुषहै तिसनू जो समर्थ होआ पुरुष त्याग देताहै और वेदनू आप ना पड करके जो पुरुष दूसरेनू भडाताहै सो पुरुष एक १ वर्ष पर्यंत यवांनू भक्षण करदा होआ तिस पापनूं दूर करताहै अर्थः इत्यादि पदों कर्के इसी श्लोक का हि अर्थ कीताहै ॥ १॥

षट्त्रिंशत्के मतविषय यमजीका वाक्यहै ॥ चांडालेति वेदऔर मन्वादिस्मृति इनके पाठनूं चांडाल श्रवण कर लेवे तब पाठ करणेवाला पुरुष एकरात्र उपवास व्रत करे ॥ वसिष्ठजी कहतेहैं ॥ पतितेति ॥ पापी और चंडाल और धूर्त इनके समीप जानकरके जो वेद पढे तब तीन ३ रात्र उपवास करें वाणानूं रोक करके स्थितहोंण भोजन नूं न भक्षण करदेहोए स्थित होण अथवा जितनाक पाठ चांडालादियोंने श्रवण कीताहै तितने पाठ नूं हजार १०००वार जपें तब पवित्र होतेहैं ॥ शठश्रावणं इत्यादिपदोंमें एहि अर्थहै ॥ सर्पादिकेमध्यमें गमन करणेमें यमजी

षट्त्रिंशन्मते ॥ यमः ॥ चांडालश्रोत्रावकाशे श्रुतिस्मृतिपाठे एकरात्रमभोजनमिति वृद्धिकृते तु वासिष्ठआः ॥ पतितचांडालशठश्रावणे त्रिरात्रम् वाग्यता अनश्नंत आसीरन् सहस्रपरंवा तदभस्यन्तःपूताभवंतीति विज्ञायते शठश्रावणं शठसंन्निधावध्ययंनम् सहस्रपरमितियावान्भागश्चांडालादिभिःश्रुतस्तावंतंभागंसहस्रकृत्वोजपेदित्यर्थः ॥ सर्पादेरंतरागमनेतुयमआह ॥ सर्पस्यनकुलस्याथअजमार्जारयोस्तथा मूषकस्यतथोष्ट्रस्यमंडूकस्यचयोपितः १ पुरुषस्यैडकस्यापिशुनोऽश्वस्यखरस्यच अन्तरागमने सद्यः प्रायश्चित्तमिदंशृणु त्रिरात्रंह्युपवासश्चात्रिरहश्चाभिषेचनामिति २

किसेके प्रति कहतेहैं ॥ सर्पेति सर्प और नेउल ॥ और बकरा और बिल्ला ॥ और तिसी प्रकार चूहे और तिसी प्रकार ऊठ ॥ और डिड्डू और स्त्री ॥१॥ और पुरुष और भिड्डू और कुत्ता और घोडा अथवा गधा इनके मध्यमे लंघनके विषय तात्काल प्रायश्चित्तनूं श्रवण कर क्याकि तीन रात्र उपवास अर तीन दिन तिन्नां कालांके विषय स्नान करणा २ ॥ इस विषयमें भी दोष और किसी मार्गके विद्यमान होआं जानना जेकर और मार्ग न होवे तां इनके मध्यमें लंघने का दोष नहि ॥

प्रकीर्णेति प्रकीर्णक प्रायश्चित्त करणमें जद समर्थ न होवे तद नवीन सूई होई एक गौका दानकरे जब इसमें भी समर्था न होवे तब एक सौ १०० कौडी दान करे अर शक्तिके अनुसार दक्षिणा देवे ॥ अपणी स्त्रीकों मिथ्यादोषारोपणके विषय यम जीका वाक्यहै स्वभार्यामिति तूं नहि मैथुन करणेके योग्य ऐसें जद पुरुष अपणी स्त्रीको क्रोधतें कथन करे तद ब्राह्मण प्राजापत्य व्रत कों करे अर क्षत्री नौ ९ दिन व्रत करे अर वैश्य छे ६ रात्र व्रत करे अर शूद्र तीन ३ रात्र व्रत करे ॥ १ ॥ स्नानतें विना भोजनादिके विषय हारीतजी कथन

एतदपिमार्गांतेरसंभवेसतिज्ञेयम्) प्रकीर्णकप्रायश्चित्ताशक्तौ धेनुदानम् ॥ तदशक्तौचूर्णीदानम् ॥ कपर्दिकाशतंचूर्णी यथाशक्ति दक्षिणा स्वभार्याभिशंसनेतुयमः ॥ स्वभार्यांतुयदाक्रोधादगम्येतिनरोवदेत् प्राजापत्यंचरेद्विप्रःक्षत्रियोदिवसान्नव षड्रात्रंतुचरेद्वैश्यस्त्रिरात्रंशूद्रआचरेत् ॥ १ ॥ अस्नातिभोजनादौ हारीतआह ॥ वहन्कमंडलुं रिक्तमस्नातोऽश्नंश्चभोजनम् अहोरात्रेणशुद्धःस्यादिनजप्येनचैवहीति ॥ १ ॥ एतच्चा रोगिस्नाने क्लेशदायिस्थानविशेषादिस्नानव्यतिरिक्तेद्रष्टव्यम् एकपंक्त्युपविष्टानांस्नेहादिना वैषम्येण दानादौ यमआह ॥

करतेहैं वहेति ॥ सखणे लोटे नूं धारदाहोआ और स्नानतें विना जो पुरुष भोजन भक्षण करदाहै सो एक दिनरात्र उपवास करणे करके अर दिनके विषय जप करणे करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त अरोगि स्नान विषे और कष्टदे देणे वालाजो पर्वतादिहै तिसतें विनाग्रहण करणा अर्थात् रोगी पुरुषकों और बरफादि करके युक्तजो स्थानहै उसके विषय दोष नहि ॥ एक पंक्तिके विषें वैठे होए जो पुरुष हैं तिनकों न्यून अधिक घृतादि देणके विषय यमजी दोष कहतेहैं ॥

नेति एकपंक्तिके विषे भेदकरके न देवे अर न मांगे अर नकिसीको दुवाए क्यों कि मांगने वाला अर दुवाणेवाला अर देणे वाला एह स्वर्गको नहिं प्राप्तहोते अर्थात् नरकको प्राप्त होते हैं और प्राजापत्य अथवा कृच्छ्र व्रतकोंकरके तिसकर्मतें शुद्धहोतेहैं ॥१॥ इसस्थानमें विषम क्या न्यूनताअधिकता भोजनखानवालिआंकी इच्छादे होआं होआं जाननी अर्थात् भोजन खाणे वालेकी इच्छाहोवे अर वो न देवे तद दोषहै जेकर तृप्त होरएहोण एक न तृप्त होवे तदभी दोष नहिं इसीविषयमें शंखजीका वाक्यहै एकेति एकपंक्तिकेविषे भोजन करदे जो पुरुषहैं तिनाकों जोभेद सें देताहै अर्थात् एककों बहुत एककों थोडा देताहै और जो भेदकरके मांगता है सो पुरुष ब्रह्महत्यारेके व्रत नूं एकपक्ष १५ पर्यंत करे ॥ १ ॥ यमजीका वाक्य है ॥ नदीति

नपंक्त्यांविषमंदद्यान्नयाचेतनदापयेत् याचकोदापकोदातानवैस्वर्गस्य गामिनः प्राजापत्येनकृच्छ्रेणमुच्यंतेकर्मणस्ततः १ विषममन्नसहोपविष्टभोजकांतराकांक्षानिरासे सति बोध्यम् ॥ शंखः ॥ एकपंक्त्युपविष्टानांविषमंयःप्रयच्छति यश्चयाचत्यसौपक्षंकुर्याद्ब्रह्महणिव्रतम् १ याचति याचते ॥ यमः ॥ नदीसंक्रमहंतुश्चकन्याविघ्नकरस्यच समेविषमकर्तुश्च निष्कृतिर्नोपपद्यते ॥ १ ॥ त्रयाणामपिचैतेषांप्रत्यापत्तिंतुमार्गताम् भैक्ष्यलब्धेनचान्नेनद्विजश्चांद्रायणंचरेदिति ॥ २ ॥ संक्रम उदकावरणमार्गः समे पूजादौ ॥ पतितादिसंभाषणे तु गौतमआह ॥ नम्लेच्छाशुद्धाधार्मिकैः सहसंभाषेत संभाष्यपुण्यकृतोमनसाध्यायेद्ब्राह्मणेन वासहसंभाषेत

नदीके घाटकों जो ढादेताहै अर कन्याके विवाहादिके विषय विघ्नकों करदा है अर पूजादिके विषयमें विषमता करदा है इनकी शुद्धि नहिं होती ॥ १ ॥ इनतीनोंकीशुद्धिदेखणी चाहिए किभिक्षादे अन्नकरके ब्राह्मण अर क्षत्रि अथवा वैश्य चांद्रायणव्रतनूंकरे । २ संक्रमइत्यादिपदोंमें इसीका अर्थस्पष्टकीताहै और पतितादिके संभाषणके विषय गौतमजीका वाक्यहै नेति म्लेच्छ और अशुद्ध औरअधार्मिक इनके साथ धार्मिक पुरुष संभाषण न करे जेकर संभाषण करेतांपुण्यदेकरण वालिआं पुरुषांनूं राजा नल और युधिष्ठिरादिकाकों मनकरके स्मरणकरे अथवा ब्राह्मणके साथ संभाषण करे तो शुद्ध होताहै

म्लेच्छ नाम उसकाहै जो गौका मांसभक्षण करणवाला यवनजाति विशेष होवे और अशुद्ध उसका नामहै जो रजस्वलागमनादिवालाहोवे भार्या और धनके लाभके विघ्न विषय भि न भिन्न वर्षांकों कहतेहैं ॥ इसी स्मृति का अर्थ लिखतेहैं भार्य्येति स्त्री अर अन्न अर धन एह किसीकों प्राप्त होने लगें तिस विषय जो विघ्न करणाहै तिसके विषयमें एक एक वर्ष सामान्य ब्रह्मचर्य लिखाहै अर्थात् इस ब्रह्मचर्य्यमें स्त्री संभोगते विना और कोई विधान नहि चौरादिके दंड त्यागके विषय वसिष्ठजी का वाक्यहै दंडेति राजा चौरादिकों जब दंड न देवे तब एक रात्र उपवासकरे अर राजाका पुरोहित तीन ३ रात्र उपवासकरे अर दंडके योग्य नहि जो पुरुष तिसको जब राजा दंडदेवे तब पुरोहित कृच्छ्र व्रत करे अर राजा तीन ३ रात्र उपवासकरे ॥ कुनेति कुनखी क्या खोटे नखां वाला अर स्वभाव

म्लेच्छा गोमांसभक्षका यवनविशेषाः अशुद्धाउदक्यादिगामिनः तत्पान्न धनलाभवधे पृथग्वर्षाणीति ॥ भार्यान्नधनानांलाभस्यवधे विघ्नकरणेप्रत्ये कंसंवत्सरंप्राकृतंब्रह्मचर्य्यमित्यर्थः प्राकृतंसामान्य मष्टविधस्त्रीसंभोग त्यागरूपं नतु साविधानम् ॥ चौराद्युत्सर्गादौवसिष्ठः ॥ दंडोत्सर्गेराजैकरात्र मुपवसेत्त्रिरात्रंपुरोहितः कृच्छ्रमदंड्यदंडे पुरोहितास्त्रिरात्रंराजा कुनखी श्यावदंतश्च कृच्छ्रं द्वादशरात्रंचरित्वोद्धरेयातामिति ॥ दंतान्नखांश्चेत्य भिप्रेतम् ॥ स्तेनपतितादिपंक्तिभोजनेतु मार्कण्डेयः ॥ अपांक्तेयस्ययःक श्चित्पंक्तौभुंक्तेद्विजोत्तमः ॥ अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति १

तौंहें कालिआं दंदां वाला एह दोनों बारां १२ दिन कृच्छ्र व्रत कों करके खोटिआं नखां की अर दंतांकी कृष्णता कों त्यागदेते हैं अर्थात् तिसरोगतें रहित होतेहैं क्योंकि लिखाहै कि स्वर्णके चुराणे वाला कुनखी होताहै अर मदिराके पान करणे वाला श्यावदंतक होताहै इस वास्ते तिनकों प्रायश्चित्त करणा चाहिए ॥ चोर और स्वधर्म त्यागी इत्यादियों की पंक्तिके भोजन विषयमें मार्कंडेयजीका वचनहै ॥ अपामिति पंक्तिके अधिकारतें रहित जो चोरादि हैं तिनके साथ एक पंक्तिके विषय बैठ करके ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य इनके मध्यमें श्रेष्ठ जो पुरुष भोजन करताहै सो एक १ दिन रात्र उपवास रख कर पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

भविष्य पुराणमें नीलका दोष लिखाहै ॥ नीलीति नीलके क्षेत्रके बिचों जद अज्ञानतें कदाचित् ब्राह्मण लंघजावे तद एक दिन रात्र उपवासकों करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अब नीलकी दातनका दोष कहतेहैं ॥ कुर्य्येति जो पुरुष अज्ञानतें नीलके काष्ठकी दातन करताहै तद सो पुरुष एक दिन रात्र उपवासकों करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै २ ॥ नीलीरसके अंदर जानेमे आप स्तंबजी दोष कहतेहै रोमेति जब तीनो वर्णों मेंसे किसीपुरुष के रोमकूपोमें नीलीका रस चला जावे तो सामान्य से तप्तकृच्छ्र व्रत प्रायश्चित्त कहाहै ॥ १ और ब्राह्मणका पाप तीन ३ कृच्छ्रों कर्के शुद्ध होताहै औरनीलीकी दातनादिकरनेसें ब्राह्मणके

भविष्ये नीलीमध्येयदागच्छेत्प्रमादाद्ब्राह्मणःक्वचित् अहोरात्रोषितोभूत्वा पंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ कुर्य्यादज्ञानतोयस्तुनीलीजंदंतधावनम् एक रात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ आपस्तंबः॥ रोमकूपेयदागच्छे द्रसोनील्यास्तुकस्यचित् त्रिवर्णेषुचसामान्यंतप्तकृच्छ्रंविशोधनम् ॥ १ ॥ पातनंचभवेद्विप्रेत्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ नीलीदारुयदभिंद्याद्ब्राह्मणस्यश रीरतः शोणितंदृश्यतेयत्रद्विजश्चांद्रायणंचरेत् ॥ २ ॥ नीलीरक्तंयदावस्त्रं ब्राह्मणोंगेषुधारयेत् अहोरात्रोषिताभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ भृगुः स्त्रीधृताशयनेनीलीब्राह्मणस्यनदुष्यति नृपस्यवृद्धवैश्यस्यपर्ववर्जंविधारण म् ॥ १ ॥ विधिनाधारणंविधारणं नसाक्षात् तदपिपर्वसु संक्रांत्यादिषु न धार्य्यमित्यर्थः ॥

शरीरतेंजब रुधिर निकले तब द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्यएह चांद्रायणव्रतकों करे तो शुद्धहोताहै २ नीलीति जद नील करके रंगे होए वस्त्रकों ब्राह्मण शरीरके विषय धारण करे तब एक १ दिन रात्र उपवास व्रत कों करके पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होता है ॥ ३ ॥ इसीमें भृगुजीका भी वचन है ॥ स्त्रीति स्त्रीनें धारिआ होआ जो नीला वस्त्रहै स्त्रीको क्रीडा समयके विषय ब्राह्मणकों तिसका दोष नहि क्षत्री अर वृद्धवैश्यइनकों पंच पर्वोतें बिना विधिकरके नीले वस्त्रका धारणा लिखाहै अर्थात् संक्रांति अर अष्टमी और द्वादशी और अमावस्या और पौर्णमासी इनपंचपर्वोंमे विधि करके भी नहि धारणा लिखा १

वस्त्रके भेद करके इसका दोष नहि सो दखातेहैं ॥ कंबेति कंबलके विषय अर पट्टके वस्त्रके विषें नीलके रंगका दोष नहि अर्थात् नीली लोई अर नीला पट्टका वस्त्र इनके धारणेका दोष नहि ॥ भविष्य पुराणके विषय और भेद कहाहै ॥ शृणुष्वेति किसे ऋषिका किसे राजाके प्रति कथनहै ॥ हे वडीआं भुजांवाले हेगणांके मध्यमे श्रेष्ठ संपूर्णतासें कथन करदा जो मै हां ऐसे मेरेतें नीले वस्त्रके धारणेतें दोषकों श्रवण कर ॥ १ ॥ पालेति नीलका पालना अर नील करके उपजीविका करणी इनोंकर्मों करके ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य पतितहोताहै अर तीन ३ वर्षों करकें अर्थात् तीनवर्षतक कृच्छ्र व्रतकरणे करकें शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ और प्रकार कथन करतेहैं नीलेति नीले वस्त्रकों धार करकें जिस कर्म कों

वस्त्रविशेषकृतोपिकश्चित्प्रतिप्रसवो यथा ॥ कंबलेपट्टसूत्रेचनीलीरागो नदुष्यतीति ॥ भविष्येऽपरोविशेषः ॥ शृणुष्वेतिमहावाहोनीलरक्त स्यधारणात् वाससोगणशार्दूलगदतोममकृत्स्नशः ॥ १ ॥ पालना द्विक्रयाच्चैवतद्वृत्तेरुपजीवनात् पतितस्तुभवेद्विप्रस्त्रिभिर्वर्षैर्विशुद्धयति २ ॥ नीलरक्तेनवस्त्रेण यत्कर्म्मकुरुतेद्विजःस्नानंदानंतपोहोमःस्वाध्यायः पितृ तर्प्पणम् ॥ ३ ॥ वृथातस्यमहायज्ञोनीलवस्त्रस्यधारणात् नीलरक्तंयदाव स्त्रंकश्चिद्विप्रस्तुधारयेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्धयतीति ॥ ४ एवमेव केशनिर्म्मितवस्त्रपरिधारणेचोपवासः पंगचव्यंहिरण्योदकंचाधि कमिति केशाश्चात्रोर्णाव्यतिरिक्ताः स्थूलावोध्याः ॥स्त्रीणांक्रीडार्थसंभो गेशयनीयेनदुष्यतीति ॥

करताहै और स्नान और दान और तप और होंम और पाठ और पितृतर्पण ॥ ३ ॥ और पंच पूर्व लिखे जो पंच महायज्ञ एह संपूर्ण नीलवस्त्रके धारणेतें तिस पुरुषके वृथाहि होतेहैं और प्रकार कहतेहैं नीलेति नीलेवस्त्रकों जदकोई ब्राह्मण धारदाहै तद एक दिन रात्र उपवासकों करके पश्चात् पंचगव्यकेपीने करके शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ इसी प्रकारवालांका जो वस्त्र तिसके धारणेमे उपवास और पंच गव्य और स्वर्णका जल इन करके शुद्धि होतीहै ॥ केश पद करके इहां उनकें वस्त्रतें विना वकरे आदिके केश ग्रहण करणे स्त्रीयोंकी क्रीडाके अर्थ शय्याके विषय नीले वस्त्रका दोष नहि ॥

सहित छेकके सूर्य और चंद्रादि औरअशुभ शिवारुतादि इनके दर्शनके विषय शंख जीका वा कथहै ॥ दुरिति खोटास्वप्न और उत्पात इनके दर्शनादिके विषय घृत और स्वर्णदान करे यमजीका वचन है प्रत्येति सूर्यके सन्मुख होकर लघी न करे क्या न मूत्रे अर दिशा वे डाहोआ अपणे विष्टेनूं न देखे जबदेखे तद पश्चात् सूर्य और ब्राह्मण अथवा गौं इनका दर्शनकरे । १ । शंखजीका वाक्यहै ॥ पादेति अग्निके विषय पयरांनूं सेक करके अर पयर से अग्नि नू हिठां दबाकरके अर कुशानाल पयरां नू पूंजकरके एक दिनउपवास व्रत करे॥ १ वृद्धपराशरकाभीएही कथनहै ॥ क्षत्रियादिकों नमस्कारकरणके विषय हारीतजीका वचनहै क्षत्रीति क्षत्रीकों जद ब्राह्मण नमस्कार करे तब एक दिनरात्र उपवास करे अर वैश्यकों नमस्कार करेतद

सछिद्रादित्याद्यरिष्टदर्शनादौ शंखः दुःस्वप्नारिष्टदर्शनादौघृतंहिरण्यंच दद्यादिति ॥ यमः ॥ प्रत्यादित्यंनमेहेतनपश्येदात्मनःशकृत् दृष्ट्वासूर्यं निरीक्षेतब्राह्मणंगामथापिवा ॥ १ ॥ शंखः ॥ पादप्रतपनंकृत्वाकृत्वावाह्नि मधस्तथा कुशैःप्रमृज्यपादौतुदिनमेकंव्रतीभवेदिति ॥ १ ॥ वृद्धपराशरोऽकिरणीयम् ॥ क्षत्रियाद्यभिवादने हारीतः ॥ क्षत्रियाभिवादनेऽहोरात्रमुपवसेत् ॥ वैश्यस्याभिवादनेद्वौशूद्रस्याभिवादनेत्रिरात्रमुपवासः॥तथा॥ शय्यारूढपादुकोपानदारोपितपादोच्छिष्टांधकारस्थश्राद्धकृज्जपदेवपूजादिरताभिवादने त्रिरात्रमुपवासःस्यादन्यत्रनिमंत्रितेनान्यत्र भोजनेऽपि त्रिरात्रमिति ॥

दो २ दिन उपवास करे अर. शूद्रकों नमस्कार करे तब तीन ३ रात्र उपवास करे तिस प्रकार शय्यादिकोंके ऊपर आरूढ पुरुषकों नमस्कार करणेका दोष कथन करतेहैं शय्येति खट ऊपर जो स्थित होआ होआहै और पौए और जोडा एह जिसने पयरोंमेलाए होए हैं और जूठाजो है और अंधकारविषे जो स्थित है और श्राद्ध नूं जो करता है और जप और देवताओं पूजा इत्यादियोंमें जो लगाहुआ है इनके नमस्कार करणेमें तीन ३ रात्र उपवास लिखाहै।और निमंत्रण कीता होआ और स्थानमें भी जो भोजन करताहै अर्थात् एकस्थानमें भोजन करके और स्थानमेंभी जो खाताहै तिसकोंभीनमस्कार करणेमें तीन ३ रात्रहिं उपवासलिखाहै

समीति समिधा और पुष्प इत्यादि जिसके हाथमेंहैं तिसकोंभी नमस्कार करणेमें तीन ३ रात्रहि उपवास लिखाहैं ॥ आपस्तंबस्मृतिमें भी एही लिखाहै ॥ समीति समिधा और पुष्प और कुशा और घृत और जल और मृत्तिका और अन्न और अक्षत एह हैं हाथमें जिसके अर जप और होम नूं करदा जो ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्यहै तिसनूं नमस्कार न करे ॥ १ ॥ जेकर जप आदिकां नूं करदा होआ जो पुरुष नमस्कार नू करदा है तिस पुरुष कों भीं एहि प्रायश्चित्त करणा लिखाहै॥जिस प्रकार शंखजी कहतेहैं ॥ नोदेति जलका कुंभहैहाथमें जिसके और मलोत्सर्गादिककर्के अशुद्ध जो है जप और देवताकार्य्य उर पितृकार्य्य इनानूं करता होआ उर खट्ट उपर आरूढ होआ होआ नमस्कारको नकरे ॥ यज्ञोपवीततें विना विष्ठा और मूत्रके त्यागआदिकांके विषय किसे स्मृतिमें प्रायश्चित्त कहाहै ॥ जैसे ॥ विनेति यज्ञोप

समित्पुष्पादिहस्तस्याभिवादनेऽप्येतदेव समित्पुष्पकुशाज्यांबुमृदन्नाक्ष तपाणिकम् जपहोमंचकुर्वाणंनाभिवादेतवैद्विजमित्यापस्तंबीये ॥ जपा दिभिःसमभिव्याहारादभिवादकस्यापीदमेवप्रायश्चित्तम् ॥ यथाह शंखः नोदकुंभहस्तोऽभिवादयेन्नाशुचिर्नजपन्नदेवपितृकार्य्यंकुर्वन्नशयानइति ब्रह्मसूत्रंविनाविण्मूत्रोत्सर्गादौस्मृत्यंतरे प्रायश्चित्तमुक्तम् ।यथा। विनाय ज्ञोपवीतेनयद्युच्छिष्टोभवेद्द्विजः प्रायश्चित्तमहोरात्रंगायत्र्यष्टशतंतुवा १। तत्रऊर्द्ध्वोच्छिष्टे उपवासअधउच्छिष्टेऽन्नभक्षणउदकपानेचगायत्रीजपइति व्यवस्था ।भोजनेनोर्ध्वोच्छिष्टोविण्मूत्रोत्सर्गेणाधउच्छिष्टोभवतीत्यर्थः । अकामतस्तु ॥ पिवतोमेहतश्चैवभुंजतोऽनुपवीतिनः प्राणायामत्रिकंषट्कं नक्तंचत्रितयंक्रमादिति स्मृत्यंतरे ॥

वीततें रहित ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य उच्छिष्ट जद होवे अर्थात् भोजनादि करके अपवित्र होवे तद एक १ दिन रात्र उपवास अथवा एक १ सौ१००अठ ८ वार गायत्री नूं जपे ॥ १ तिसके विषय एह व्यवस्थाहै कि जब भोजनकरके उच्छिष्ट होवे तब एक दिनरात्र उपवासकरेअर जब विष्ठा और मूत्रकों त्यागकर और विनाशौचते अन्न भक्षण और जलकापान करे तब गाय त्रीका जप करे इति ॥ भोजनखाकर ऊर्द्धवोच्छिष्ट होताहै और विष्ठा और मूत्रकों त्यागकर अधउच्छिष्ट होताहै॥ जब इच्छा सें न करे तिस विषय कहतेहैं ॥ पिवेति यज्ञोपवीतेंरहित जो जलादिकापान करदाहै तिसकों तीन ३ प्राणायाम करणे लिखेहैं अर विष्ठा और मूत्र नूं जो त्याग ताहै तिसको छे६ प्राणायाम लिखेहैं अर भोजननूं जो करदाहै तिसको नक्त व्रत त्रय लिखेहैं एह भी किसीस्मृतिमें कहाहै ॥ १ ॥

जो वृद्धपराशर जीने कहाहै सो इच्छा सें कीता जो अभ्यास तिसविषयमें है क्योंकि यज्ञोपे ति ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य यज्ञोपवीततें बिना भोजन करताहै अथवा मूत्र और पुरीष और वीर्य इनानूं त्यागताहै ॥ १ ॥तब ब्राह्मण तीन ३ रात्र उपवास करे अर क्षत्री कृच्छ्र व्रत का एक १ पाद करे अर्थात् चौथाहिस्सा कृच्छ्रव्रतका करे अर वैश्य एक १ दिनरात्र उपवासकरे इहशुद्धि सनातनीहै सो एहकामनातेबहुवारकरणेमेहै । २ । अन्नखाकर्के शुद्धिके वास्ते आचमननूं नकरके उठणके विषय पराशरजीहि कहतेहैं यदिति जदभोजननूं खाकर अर आचमन नूं नकर्के जोपुरुष आसनतें उठबैंदाहै तिसतें उपरंत सो पुरुष शुद्धिके अर्थ तात्काल स्नाननूं करे जेकर स्नान न करे तद प्रायश्चित्ती होताहै ३ ॥ नित्ययज्ञादिके न करणेमें आचारमाधवीयमें प्रजापतिने

यत्तु वृद्धपराशरः।यज्ञोपवीतेनविनाभोजनंकुरुतेद्विजःअथमूत्रपुरीषेवारेतः सेचनमेववा १ ॥त्रिरात्रोपोषितोविप्रःपादकृच्छ्रंतुभूमिपः अहोरात्रोषितोवै श्यःशुद्धिरेषासनातनीति। २। तत्कामतोऽभ्यासे ॥ भुक्त्वाशौचार्थाचमनम कृत्वोत्थानेतुसएव ॥ यद्युत्तिष्ठेदनाचांतोभुक्तवानासनात्ततः सद्यःस्नानं प्रकुर्वीतसोऽन्यथाप्रयतीभवेदिति। ३ प्रयतीप्रायश्चित्ती। नित्ययज्ञाद्यकर णेतुआचारमाधवीयेप्रजापतिः ॥ दर्शंचपौर्णमासंचलुप्त्वाथोभयमेवच एकस्मिन्कृच्छ्रपादेनद्वयोरर्द्धेनशोधनम् १ ॥ हविर्यज्ञेप्यशक्तस्यलुप्तमप्ये कमादितः प्राजापत्येनशुद्ध्येतपाकसंस्थासुचैवहि २ विधानपारिजातेए कविंशतिसंस्थागणनायां अष्टकापार्वणश्राद्धश्रावण्याग्रहायणीप्रौष्टपदी चैत्र्याश्वयुजीतिसप्तपाकयज्ञसंस्थाः अग्न्याधेयाग्निहोत्रदर्शपौर्णमासाग्र यणचातुर्मास्यनिरूढपशुबंधसौत्रामणीति सप्त हविर्यज्ञसंस्थाः ॥ अग्निष्टो मात्यग्निष्टोमोक्थषोडशीवाजपेयातिरात्राप्तोर्यामेति सप्त सोमसंस्थाः।

कहाहै दर्शमिति दर्श अथवा पौर्णमास यज्ञ नूं जो नहि करदा तिसकों कृच्छ्रव्रतका एक पाद करणा लिखाहै जो पुरुष दोनों कों नाहि करदा तिसको आधा कृच्छ्र करणा लिखाहै ॥ १ ॥ जो पुरुष हविर्यज्ञके विषय असमर्थहै अर आदेंतलेकर एकभी हविर्यज्ञ जिसका लोपहोगिआहै सो पुरुष प्राजापत्य व्रतकर्के शुद्ध होताहै इसी प्रकारपाक संस्थाके विषय जान लैणा॥ २ ॥ इसमे विधानपारिजातका वचनहै विधेति अग्न्याधेय १ और अग्निहोत्र २ और दर्शपौर्णमास ३ और आग्रयण ४ और चातुर्मास्य ५ और निरूढपशुबंध ६ और सौत्रामणी ७ एह सप्त हविर्यज्ञसंस्थाकहैं पाकसंस्था क्याहै कि अष्टकाश्राद्ध १ और पार्वण श्राद्ध २ और श्रावणी ३ और आग्रहायणी ४ और प्रौष्टपदी५ और चैत्री ६ और आश्वयुजी७ एहसप्तपाकयज्ञसंस्थाहैं

संध्येति संध्योपासन और नित्यस्नान और होम और नित्यकर्म इनके भी नाश होआं होआं शुद्धि के वास्ते अठहजार ८००० गायत्रीका जप करे ॥ ३ ॥ सेति अग्निष्टोम १ और अत्यग्निष्टोम २ और उक्थ ३ षोडशी ४ और वाजपेय ५ और अतिरात्र ६ और आप्तोर्याम ७ एहसत्त यज्ञ सोमसंस्था हैं वर्षके अंतमे सोमयज्ञांके नाशदे होआं होआं चांद्रायण व्रत नूं करे और अधिकारहोयेतें इन यज्ञांके मध्यमे एक किसी नूं भी न करके उपवास व्रत करके शुद्ध होताहै पाकसंस्थाके विषय भी इसी प्रकार जाण लैणा ॥ ४ ॥ कात्यायनजीका वचनहै पित्रिति पितृ यज्ञके नाशके विषय अर्थात् पितृतर्पणके नकीतिआं होआं और वैश्वदेव वलिके नकीतिआं होआं और नवें अन्नके भक्षण समयके विषय नवयज्ञ करके नपूजन करके और तिसी प्रकार पतितके अन्न का भक्षण करके शुद्धिके वास्ते चातुर्वैश्वानरी इष्टि नूं करे ॥ १ ॥ बौधायनजीका वाक्यहै यस्येति जिस पुरुषके

संध्योपासनहानौतुनित्यस्नानंप्रलोप्यच होमंचनैत्यकंशुद्ध्यैगायत्र्यष्टसहस्रकम् ३ समांतेसोमयज्ञानांहानौचान्द्रायणंचरेत् अकृत्वान्यतमंयज्ञंयज्ञानामधिकारतःउपवासेनशुद्ध्येतपाकसंस्थासुचैवहीति ४ कात्यायनः। पितृयज्ञात्ययेचैववैश्वदेवात्ययेपिच अनिष्ट्वानवयज्ञेननवान्नप्राशनेतथाभोजनेपतितान्नस्यचातुर्वैश्वानरोभवेत् १ चातुर्वैश्वानरीमिष्टिंकुर्यादित्यर्थः ॥ बौधायनः ॥ यस्यानित्यानिलुप्तानितथैवागंतुकानिच विपद्यपिनसस्वर्गंगच्छेताऽऽपतितोहिसः १ तस्मात्कंदैःफलैर्मूलैर्मधुनाज्यरसेनवा नित्यंनित्यानिकुर्वीतनचनित्यानिलोपयेदिति २ ऋतौस्वपत्न्यगमनेतुविष्णुः। पर्वाऽऽनारोग्यवर्जंऋतावगच्छन्पत्नींत्रिरात्रमुपवसेदिति अत्र पर्वपदं ब्रह्मचर्यादिलोपोपलक्षकम् ऋतूरजःस्नानदिनादारभ्यद्वादशादिनानि

आपदा काल विषय भी नित्यकर्म अर्थात् पंचयज्ञ और आगंतुककर्म नष्ट होगयेहैं सो पुरुष स्वर्ग नूं नहि प्राप्त होता किंतुचारे और तें पतित होताहै ॥ १ ॥ तिस कारणतें कंद और फल और मूल और मधु और घृत और रस इनों करके दिन दिन प्रति अवश्यनित्यकर्मों नूं करे कदे भी नित्यकर्मोका नाश न करे ॥ २ ॥ ऋतुसमयके विषय अपणी स्त्रीके अगमनके विषय विष्णुजी का वचनहै पर्वेति संक्रांत्यादि पंच पर्व और रोग इना नूं वर्जित करके ऋतुसमयके विषय जो पुरुष अपणी स्त्रीके साथ मैथुन नहि करदा सो तीन ३ रात्र उपवास करे अर्थात् पंचपर्व और रोग इनके विषय ऋतुकालमें भी न गमन करे इस स्थानमें पर्व पद करके ब्रह्मचर्य और व्रतादि इनाके लोपका भी ग्रहण करणा अर ऋतुपद करके क्या लैणा कि स्नानदिनतें आद लैकर बारां १२ दिनपर्यंत ग्रहण करणा ॥

र्त्तो संवर्त्तजीने कहाहे सो अकामके विषयमेहै अर्थात् उसकों कामनाथी परंतु किसे कार्य्यवशाथे गमन नाहिहोया इसवास्ते थोडा प्रायश्चित्तकहाहै ऋताविति जो पुरुष ऋतुकालके विषय व्रतकें आचरण करणवाली अपणी स्त्रीमे गमन नहिकरदा नियमके अतिक्रमकेभयतें तिस पुरुषकों एकसौ १००प्राणायाम कथनकीताहै । १। एह वाक्य निकट देशकेविषय रहणे वालेपर ग्रहण करणा अर दूर देशके विषय स्थित होवे तव दोष नहि क्योंकि मिताक्षरामें कहाहै ऋत्विति समीपकेविषये निवास करदा होआ जो पुरुष ऋतु स्नात अपणी स्त्रीमेगमन नहि करदा सो पितरांके सहित वडी जो गर्भकी हत्याहै अर्थात् गर्भ हत्या वाला जो नरक है तिसमें डूवताहै ।२। इसवचनतें स्त्रीकोंभी ऋतुकालके विषयमें भर्त्ताके समीप न प्राप्तहोणका एहि प्राय

यत्तुसंवर्त्तः।ऋतौनोपैतियोभार्यांनियतांव्रतचारिणीं नियमातिक्रमात्तस्यप्राणायामशतंस्मृतमिति तदकामतः १ ॥ एतच्चसमानदेशविषयम् ॥ ऋतुस्नातांतुयोभार्यांसन्निधौनोपगच्छति घोरायांभ्रूणहत्यायांपितृभिःसह मज्जतीतिमिताक्षरावचनात् २ ऋतौभर्त्तुरनुपसर्पणेस्त्रिय अपि एतदेव प्रायश्चित्तम् ॥ तस्याअपिनारदीयेदोषश्रवणात् ॥ आहूतायातुवैभर्त्रानोपयातित्वरान्विता साध्वांक्षीजायतेपुत्रदशवर्षाणिपंचचेति ॥ १ ॥ तासुतुस्त्रीत्वादर्द्धम् ॥ अंगिराः ॥ अनापदिचरेद्यस्तुसिद्धांभिक्षांगृहेवसन् दशरात्रंपिवेद्वज्रमापत्कालेत्र्यहंद्विजः ॥ १ ॥ वज्रंवज्रकृच्छ्रसंवंधिद्रव्यमित्यर्थः देवादीनामाभिमुख्येनिष्ठीवनादौ सुमंतुः ॥

श्चित्त लिखाहे १ तिसकोंभी नारदीयपुराणकेविषय दोषकेश्रवण करणेतें सोकहतेहैं आहूतेति ऋतुकालके विषय भर्ता करके वुलाई होई जो स्त्री शीघ्र नहि प्राप्तहोती हेपुत्र सोस्त्रीपंदरां १५ वर्षतककाकयोनिमेंप्राप्त होतीहै ।१। परंतुस्त्रीभावहोणेनें तिनांके विषय अद्धा प्रायश्चित्त लिखाहै अंगिराजीकावाक्यहै अनेति आपदाकालतें विनागृहके विषय निवास करदाहोआ जोपुरुष सिद्ध भिक्षाका आचरण करदाहै सो दश १० रात्र वज्रकृच्छ्र व्रतके विषय लिखीजो वस्तुहै तिसकापानकरे जब आपदाकालके विषय व्राह्मण और क्षत्रीअथवा वैश्यभिक्षाका आचरणकरे तव तीन ३ दिनपीवे १ । देवादियोंके सन्मुख थुकणादिआंके विषयमें सुमंतुजीका वचनहै

देवेति देवता और ऋषि और गो और ब्राह्मण और गुरु और माता और पिता और राजाइ नके सन्मुखजोथुकेऔरझूठकहे सोअग्निकर्के जिह्वानूं साडदेवे औरस्वर्णदानकरे परंतु तिवना जिह् वानूंसिकदेवे जितने करके जीवतारहे एह जानलेणा। जनांका निवास स्थान और बाग और देवताका मंदिर इत्यादिके ढाणके विषयमें काश्यपजीका वचनहै वापीति बावली और खूआ और बाग और पुल और वेल और तला और नदी आदिकोंका कनारा और देवताका स्थान इनके ढाणके विषयमें ब्राह्मणांके तांई प्रायश्चित्त दस करके अर्थात् तिनांते पुछकर्के पश्चात्चार ४ घृतकीआं आहुतीआंका हवन करे आहुतीआं दखावतेहैं इदमिति(इदं विष्णु) इसमंत्र करके पहली आहुति करे (मानस्तोक)इसकरके दूसरी आहुति करणी अर (विष्णोःकर्माणि)इस कर

देवर्षिगोब्राह्मणाचार्य्यमातृपितृनरेन्द्राणां प्रतिष्ठीवने आक्रोशने च जिह्वांदहेद्धिरण्यंदद्यादिति ॥ दाहोजीवनाविरोधेन ॥ मंडपोद्यानदे वतागारादिभेदे ॥ काश्यपः ॥ वापीकूपारामसेतुलतातडागवप्रदेवता यतनभेदनेप्रायश्चित्तंब्राह्मणेभ्योनिवेद्य ततश्चतस्त्र आज्याहुतीर्जुहुयात् इदंविष्णुरितिप्रथमाम् मानस्तोक इतिद्वितीयाम् पादोस्यांत्यामितिचतु र्थीम् ॥ देवतामुच्छेदयति तस्यैदेवतायै ब्राह्मणान्भोजयेदिति ॥ एत च्चाल्पोपघाते ॥ महत्युपघातेऽभ्यासेच प्राजापत्यादि कल्पनीयम् देव ताचात्रमृण्मयीपूजिताऽपूजिता वा ग्राह्या प्रायश्चित्तस्याल्पत्वात् अन्य त्रतु दंडगौरवदर्शनेन प्रायश्चित्तं कल्प्यम्

के तीसरी अर(पादोस्यांत्यां) इस करके चौथीआहुति करणी जो पुरुष देवताकी मूर्त्तिकों छेद ताहै सो तिस देवताके वास्ते ब्राह्मणानूं भोजन खुवाए एह प्रायश्चित्त थोडे नाशके विषय जानना अर जब बहुत छेदनकरे अर तिसीमें बहुत अभ्यासकरे तब प्राजापत्यादि व्रतकों करे। इस स्थानमें देवता मृत्तिकाकी पूजी होई अथवा न पूजी होई ग्रहण करणी प्रायश्चित्तकों थोडा होणेतें उंरजगां दंडको बडा देखणे करके प्रायश्चित्त बडा कल्पनाकरणा क्योंकि दंडकी न्याईप्रायश्चित्त होताहै इसवचनतें अर्थात् थोडा पापहोवेतां थोडा प्रायश्चित्त अर बहुतपापहोवें तां बहुत प्रायश्चित्त दस्सणा ॥

तिसप्रकार इसके विषय दंडकीगौरवताकों कात्यायनजी कहतेहैं हरेदिति जोदेवताकी प्रतिमाकों जव चुरालये अर खंडित करदेवे अर दग्धकरदेवे अर देवताके स्थानका भेदन कर देवे तद सो पुरुष उत्तम दंड कों प्राप्तहोवे ॥ १ तीन ३ प्रकारका दंड याज्ञवल्क्यजीने लिखाहै उत्तमदंड १ और मध्यमदंड २ और अधमदंड ३ जो एक हजार १००० और अस्सी ८० पैसे चढा है सो उत्तमदंडहै अर इसते आधा मध्यमदंड है अर इसतेंभी आधा अधम दंड है ॥ इति ॥ विष्णुजीका वाक्यहै अभेति थोमादि और नहि वेचने योग्य जो वस्तु इनके वेचने वाला और

दंडवत्प्रायश्चित्तंभवतीतिवचनात्) तथाऽत्रदंडगौरवमाहकात्यायनः हरे च्छिंद्याद्दहेद्वापिदेवानांप्रतिमांयदि तद्गृहंचैवयोभिंद्यात्प्राप्नुयात्पूर्वसाहसम् १ विष्णुरपि ॥ अभक्ष्यस्याविक्रेयस्यचविक्रयी प्रतिमाभेदकश्चोत्तमसाहसंदं डनीयः ॥शंखलिखितौ ॥ प्रतिमारामसंक्रमध्वजसेतुनिपातनभंगेषु तत्सम् त्थापनंप्रतिसंस्कारोऽष्टशतंचेति कूपादिसमीपेऽल्पजलाशयोनिपातनम् यद्वाप्रतिमादीनांनिपातनेभंगेचसति ॥ निपातनेतत्समुत्थापनंभंगेप्रतिसं स्कारइत्यर्थः ॥ मनुः ॥ संक्रमध्वजयष्टीनांप्रतिमानांचभेदकः ॥ प्रति कुर्य्याच्चतत्सर्वंपंचदद्याच्छतानिच ॥ १ ॥

देवताकी मूर्त्तिके छेदने वाला एहदोनों उत्तम दंडके योग्यहैं इसी विषयमें शंख और लिखि तका भी वचनहै प्रतीति देवताकी मूर्त्ति और वाग नदी तला आदिक पत्तन औरपुल और कूप दिके समीप थोटा जिआ जलका स्थान इनके भेदन करणे वाला तिनानूं फेर नवीन वणावे अथवा पांचसौ ५०० पयसा दान करे ॥ इसीवाक्यमे मनुजीने भी लिखाहै ॥ संक्रेति जलका घाट और धजा और लाठी और देवताकी छोटी जैसी मृत्तिकादि मूर्त्ति इनके छेदन क रणे वाला इनां संपूर्णा नूं नवीन वणावे अथवा पांचसौ ५०० पण दान करे ॥ १ ॥

सामितिसंक्रम इत्यादि पदोंमें इसी श्लोककाहि अर्थ स्पष्ट कीताहै इसस्थानमें प्रतिमाके छोटे बडे भेद करकेअर प्रतिमाके छोटे वडे छेदनके भेद करके दंड और प्रायश्चित्तकाभी भेद जानना अर्थात् थोडा छेदन करे तां थोडा दंड अथवा प्रायश्चित्तकरे जेकर वहुता छेदनकरे तां वहुत दंड अथवा प्रायश्चित्त करे एह व्यवस्थाहै ॥ दारिद्र्यादिकरके भर्ताके निरादरके विषय आपस्तंवजीका वाक्यहै भर्तु रिति निर्धनता और क्रोध और चुगली इत्यादि करके भर्ताका जवस्त्री निरादर करे तव कृच्छ्र व्रत करे इति ॥ पर्वके विषय मैथुन करणेका दोष विष्णु पुराणमें लिखाहै ॥ किसे ऋषिका किसे राजाके प्रतिवचनहै हे राजन् चतुर्दशी १ और अष्टमी २ और अमाव

संक्रमोजलोपरिगमनार्थंकाष्ठशिलादिरूपःध्वजश्चिह्नंराजद्वारादौ यष्टिः पुष्करिण्यादौ प्रतिमाश्च क्षुद्रामृण्मय्यादयः एतद्भेदकःपुनर्नवंकुर्य्यात् पणानांपंचशतानिचदद्यात् ॥ अत्रच प्रतिमातारतम्येन तद्भेदतारतम्येन दंडप्रायश्चित्तयोर्व्यवस्था ॥ दारिद्र्यादिना भर्तुरतिक्रमे आपस्तंवः भर्तुरतिक्रमेकृच्छ्रइति ॥ अतिक्रमोदारिद्र्यक्रोधमात्सर्य्यादिनाऽवमाननम् पर्वणिमैथुनेविष्णुपुराणे।चतुर्दश्यष्टमीचैवअमावास्याथपूर्णिमा पर्वाण्येतानिराजेन्द्ररवेः संक्रांतिरेवच १ स्त्रीतैलमांससंभोगीपर्वस्वेतेषुयोनरः विण्मूत्रभोजनंनामप्रयातिनरकंमृतः २ अस्यप्रतिप्रसवः ॥ शनिषष्ठ्यांस्मृतं तैलंमहाष्टम्यांपलाशनम् तीर्थेक्षौरंचतुर्दश्यांदीपावल्यांचमैथुनम् ॥ १ ॥ महाष्टमी आश्विनशुक्लाष्टमी ॥

स्या ३ और पूर्णमासी ४ और सूर्यकी संक्रांति ५ एह पंच पर्वहैं ॥ १ ॥ इनोंके विषय जो पुरुष स्त्री और तेल और मांस इनानूं भोगताहै सो मरकरके विष्टा और मूत्रहैं भोजन जिसके विषय ऐसे नरकको प्राप्त होताहैं ॥ २ ॥ इसका भिन्न भिन्न दोष निवारणकहतेहैं शनीति ॥ शनिवार षष्ठीके विषय तेल मले अर आश्विनके शुक्ल पक्षकी अष्टमीके विषय मांस भक्षणकरे अर तीर्थके विषय चतुर्दशीके दिन क्षौर कराए अर दिवालीके विषय मैथुन करे तोभी इसी नरकको प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥

और किसे स्मृतिकाभी वाक्य है अष्टेति अष्टमी ८ और चतुर्दशी १४ और दिन और पर्व इनके विषय मैथुन कों करके सहित वस्त्रांके स्नान नूं करके पश्चात् वरुण है देवता जिनां का तिनां मंत्रों करके मार्जन करे ॥ १ ॥ उलटीके विषय शातातप जीका वाक्य है विच्छेति ब्राह्मण और क्षत्री और वैश्य इनकी उलटीके विषय और भन्ने होए पात्रक विषय भोजन करणेके विषय पंच गव्य करके शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ मांसादिके वमनके विषय यमजी विशेष कहतेहैं ॥ मसूरेति जो ब्राह्मण अर क्षत्री अथवा वैश्य मसर और मांह और मांसको भक्षण करके उलटी करताहै तिसकों तीन ३ रात्र उपवास प्रायश्चित्त करणा लिखाहै अर स्नान करके अर तीन ३ प्राणायामों करके अर घृतका भक्षण करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ यज्ञोपवीतादियोंके नाशके विषय भी यम

स्मृत्यंतरे अष्टम्यांचचतुर्दश्यांदिवापर्वणिमैथुनम् कृत्वासचैलंस्नात्वाचवारुणी भिश्चमार्जयेदिति १ वारुणीभिर्वरुणदेवताकैर्ऋग्भिरित्यर्थः।वमनेशातातपः विच्छर्दनेद्विजातीनांभिन्नभांडेचभोजने पंचगव्येनशुद्धिःस्यादितिशातातपो ऽब्रवीत् १ मांसादिवमनेतुविशेषमाह यमः॥ मसूरमाषमांसानिभुक्त्वावावम तिद्विजः त्रिरात्रमुपवासोऽस्यप्रायश्चित्तंविधीयतेप्राणायामैस्त्रिभिः स्नात्वा घृतंप्राश्यविशुद्ध्यति १ यज्ञोपवीतादिनाशेपि सएव मेखलादंडाजिनयज्ञोप वीतावपातेषु मनोव्रतवतीभिःसप्तआज्याहुतीर्जुहुयात्पुनर्यथार्थंप्रतीयात् असकृद्भैक्ष्यभोजनेऽभ्युदितेऽभिनिर्मुक्तेवांतेदिवास्वप्नेनग्नस्त्रीदर्शनेनग्नस्वापे श्मशानमाक्रम्यहयादींश्चारुह्यपूज्यातिक्रमेचैताभिरेवजुहुयादग्निसमिंधने

जीनेहि प्रायश्चित्त लिखाहे ॥ मेखेति तडागी और दंड और चर्म और यज्ञोपवीत इनके नाशके विषय मनोव्रतवती इत्यादि मंत्रों करके घृतकीआं सप्त ७ आहुतीआं करके पश्चात् मेखलादिकों धारणाकरे अर अनेकवार भिक्षाकों भोजन करणा और जिसके सुतिआं होआं सूर्य उदय होताहै अर जिसके सुतिआं होआं अस्त होताहै उलटी होणी और दिनके विषय सौना और नग्नस्त्रीकों देखणा और नग्न सौणा और श्मशान भूमिके विचों लंघना और घोडे आदिकोंके उपर चडकर और महात्माकों उलंघन करणा अर्थात् तिनकी आज्ञाकों नहि मन्नणा अथवा विना नमस्कारके चलेजाणा इन संपूर्णोंके विषयमें बलदी अग्निके विषय मनोव्रतवती इत्यादि सप्त मंत्रों करके आहुतीआं करे॥ ॥

स्थेति वृक्षादि और माहिष्यादिकी हिंसाकरणेकेविषें (यद्देवादेवहेडनं) इत्यादि जो कूष्मांड संज्ञिकमंत्रहैं इनोंकरके घृतका होमकरे ॥ मणि और वस्त्र और गौ और स्वर्ण इत्यादियोंका दानलेकरके गायत्रीका अठ हजार ८००० जपकरे इति ॥ अर्थः (मनोजूतिर्जुषतां) इत्यादि मंत्रों करके अर (त्वमग्नेव्रतपाअसि) इत्यादिमंत्रोंकरके होमकरे अर यथार्थक्या उपनयन विधि करके सहितमंत्रांके यज्ञोपवीतका ग्रहणकरे ॥ अभ्युदितादिके स्वरूप नूं यमजी कथन करतेहैं ॥ सूर्य्येति जो पुरुष सूर्यके उदयहोआं होआं सुत्तारहिताहे तिसको अभ्युदित कहतेहैं अर जोपुरुष सूर्यके अस्त होआं होआं सुत्ता रहिताहै तिसको निर्मुक्त कहतेहैं ॥ १ ॥ अभ्युदितके विषय प्रायश्चित्त नूं भी यमजी कहतेहैं ॥ अजीति अन्नका नपचना और अभ्यु

स्थावरसरीसृपादीनांवधे यद्देवादेवहेडनमितिकूष्मांडीभिस्त्रिरात्रमाज्यंजुहुयान्मणिवासोगवादीनांचप्रतिग्रहे गायत्र्यष्टसहस्त्रंजपेदिति मनोजूतिर्जुषतामितिमनोलिंगाभिः त्वमग्नेव्रतपाअसीतिव्रतलिंगाभिश्च यथार्थमुपनयनोक्तेनविधिनासमंत्रकं प्रतीयाद्गृह्णीयात् । अभ्युदितादिस्वरूपमाहयमः। सूर्योदयेतुयश्शेते ससूर्योदितउच्यते अस्तंगतेतुयःशेतेसूर्येनिर्मुक्त एवसः १ अभ्युदितेप्रायश्चित्तमाहसएव अजीर्णेऽभ्युदिते वांतिश्मश्रुकर्मणि मैथुनेदुःस्वप्नेदुर्जनस्पर्शेस्नानमात्रंविधीयते ॥ २ ॥ अत्रैवकामतोगौतमः सूर्याभ्युदितेब्रह्मचारीतिष्ठदहन्यभुंजानोऽस्तमितेरात्रौसावित्रींजपेत् । अभ्यासेत्वावृत्तिरूह्या । गर्भाधानादिसंस्कारातिपत्तौतु आश्वलायनः। आरभ्याधानमाचौलात्कालातीतेतुकर्मणाम् व्याहृत्याज्यंसुसंस्कृत्यहुत्वाकर्म यथाक्रमम् ॥ १ ॥ एतेष्वेकैकलोपेपि पादकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥

दित और उद्वमन और थोडा क्षौर कर्म और मैथुनकरणा और खोटास्वप्न और दुष्ट पुरुषके साथ स्पर्शकरणा इनकेविषयस्नानहि विधानकीताहै ॥ २ ॥ इसकेविषयहि कामनाकेविषयमें गौत्तमजी कावाक्यहै सूर्य्येति अभ्युदितके विषय दिनके विषय अन्नकों न भक्षण करदाहोआ अष्टांगमैथुनतेंरहितहोकर स्थितहोवे सूर्यकेअस्तहोआंहोआं रात्रिके विषय गायत्री नूं जपे इसोंके अभ्यास केविषयमें एहीप्रायश्चित्त दोवारकरे इति ॥ गर्भाधानादिसंस्कारके नाशके विषय आश्वलायनजीका वाक्यहै आरेति गर्भाधान कर्मतें लेकर चौलकर्म पर्यंत कर्मांका कथनकीता जो काल है तिसके वीतिआंहोआं व्याहृतीआं करके हछी तरां संस्कारकों करके क्रमसें घृत करके होमनूं करे १ इनकर्मोंके मध्यमे एककर्मकेभी नाश होआं होआं एक पाद कृच्छ्र व्रतको करे ॥

चूडेति चूडा कर्मके नाशके विषय आधा कृच्छ्रव्रतकरे आपदासमय मेंभीएहि करणा अर जब आपदा न होवे अर संस्कार कर्मका नाशहो जावे तब संपूर्णस्थानके विषय दूणा प्रायश्चित्त करे ॥ २ ॥ इसीमें कात्यायन जी भी कहतेहैं ॥ लुप्त इति संस्कार कर्मके नाशके विषय संपूर्णस्थानके विषय प्रायश्चित्त करे अर प्रायश्चित्तके कीतिआंहोआं पीछेसें नाश होए कर्म नूं करे ॥ १ ॥ त्वन्नइति(त्वन्नःसत्वन्न)इनांमंत्रांकरके और तिसप्रकार(इमंमे)इसमंत्रकरके आहुतीआं नूं करे अर(येतेशतमयाश्चाभ्यामुदुत्तमम्रृचा)इत्यादिऋचा करकेहोम नूंकरे २ ॥ हुत्वेति भिन्न भिन्न हवन नूं करे पश्चात् कृच्छ्रव्रत का एकपादकरे अर चौल कर्मकें विषय आधो कृच्छ्रव्रतकरे स्त्रीआंकों भी इसीप्रकार मंत्रांकर्के जातादि कर्म करणा ॥ ३ ॥ गर्भाधान कर्मके न करणे के विषय

चूडाया अर्द्धकृच्छ्रः स्यादापदीत्येवमीरितम् ॥ अनापदितुलुप्तेतुसर्वत्रद्विगुणंचरेत् २ ॥ कात्यायनोपि ॥ लुप्तेकर्मणिसर्वत्रप्रायश्चित्तंविधीयते । प्रायश्चित्तेकृतेपश्चाल्लुप्तंकर्मसमाचरेत् ॥ १ ॥ त्वन्नःसत्वन्नइत्याभ्यां इमंमेतुतथाहुतीः येतेशतमथाश्चाभ्यामुदुत्तमम्रृचाहुतीः ॥२॥ हुत्वापृथक् पृथक्पादमर्द्धंचौलेसमाचरेत् स्त्रीणामप्येवमेवस्याज्जाताद्यामंत्रिकाक्रियेति ॥३॥ गर्भाधानाकरणआश्वलायनः ॥ गर्भाधानस्याकरणेतस्यांजातस्तुदुष्यति अकृत्वागांततोदत्त्वाकुर्यात्पुंसवनंपतिरिति ॥ १ ॥ क्षुतादौवृद्धपराशरः विप्रः क्षुत्कृत्यनिष्ठीव्यकृत्वाचानृतभाषणम् वचनंपतितैःकृत्वादक्षिणंश्रवणं स्पृशेत् प्रेक्षणंशशिनोऽर्कस्यब्रह्मेशहरिसंस्मृतिः ॥१॥ एतच्चजलाभावेकर्मण्याप्तेवा अतएव वृद्धशातातपः ॥

आश्वलायनजी का वाक्यहै । गर्भेति ॥ जिस स्त्रीका गर्भाधानसंस्कार नहि कीआ तिस केविषों उत्पन्न होआ बालक दुष्ट होताहै अर गर्भाधान संस्कार नू नकरके तिसतें उपरंत गोदान करके पश्चात्- भर्त्ता पुंसवन संस्कारकों करे ।१। छिक्यादिकांकेविषय वृद्धपराशरजी का वचनहै विप्रइति छिक और थुक और झूठ वचन और पतितांके साथ वार्त्ताइनां नू-करके ब्राह्मण सज्जे कांन नू हाथ लगावे और चंद्रमा अर सूर्यका दर्शन करे और ब्रह्मा और शिवजी और विष्णु इनका स्मरण करे ।१।एह वार्ता कबकरे जब पासजल नहोवे अथवा किसी काममें लगा होआ होवे ॥ इसी कारणतें वृद्धशातातपनें कहा है ॥ ॥

क्षुत्वेतिछिकमार करके और थूक करके और वस्त्र कों पहिर कर बुद्धिमान् पुरुष आचमन करे अथवाब्राह्मणकों स्पर्श करे अथवा गौकी पिठका दर्शन करे॥१॥यथेति जिस प्रकार एह कथन कीतेहैं तिस प्रकार प्रथमके अभावमें अगले कों ग्रहण करे प्रथमके नाशमें दूसरेकी प्राप्ति इच्छित है अर्थात् जलके अभावमें ब्राह्मण कों स्पर्श करे अर ब्राह्मणके अभावमें गौका दर्शन करे ॥ २ ॥ संवत्सर कर्मके नाशके विषय विष्णु पुराणमें किसे ऋषिनें किसीके प्रति कहाहै । संवेति एक वर्ष पर्य्यंत जिस पुरुष के कर्मका नाश होआहै अर्थात् जिस पुरुषने एक वर्ष नित्य कर्म नहि कीता तिसके दर्शन करणेतें श्रेष्ठ पुरुषानें सर्वदा काल सूर्यका दर्शन करणा योग्यहै॥१॥हे महामते तिसके स्पर्शमें सहित वस्त्रां के स्नान करणा एही

क्षुत्वानिष्ठीव्यवासस्तुपरिधायाचमेद्बुधः कुर्याद्वाब्राह्मणस्पर्शंगोपृष्ठस्यचदर्शनम् ॥ १ ॥ यथाविभवतोह्येतत्पूर्वाभावेततःपरम् अविद्यमानेपूर्वोक्तेउत्तरप्राप्तिरिष्यत इति ॥२ ॥ संवत्सरक्रियातिपाते विष्णुपुराणे ॥ संवत्सरंक्रियाहानिर्यस्यपुंसःप्रजायते तस्यावलोकनात्सूर्य्योनिरीक्ष्यःसाधुभिः सदा ॥ १ ॥ स्पृष्टेस्नानं सचैलंतुशुद्धिहेतुर्महामते पुंसोभवति तस्योक्तानशुद्धिःपापकर्मणइति ॥२॥अत्रच प्रायश्चित्तविशेषाश्रवणादेकाहातिक्रमेचैकाहमभोजनेनतस्योक्तत्वात्तदनुसारेणच षष्ट्यधिकशतत्रयदिनापचारे तावदुपवासकरणाशक्तेस्तत्प्रत्याम्नायत्वेन षडुपवासैरेकैकप्राजापत्यकल्पनयायोज्यम् ॥ निमंत्रणत्यागेतुयमः

शुद्धिका कारणहै अर जिसके दर्शनादितें एह सूर्य्य निरीक्षणादि प्रायश्चित्तहै तिस पापी पुरुषकी शुद्धि नहि कथन कीती ॥ २ ॥ इसके विषयप्रायश्चित्तके वहुत भेदके देखणेतें क्योंकि एक दिन कर्मके न करणेमें एक उपवास तिसकोंकथन कीताहै तिसके अनुसार करके अर्थात् जिस हसाब करके तीन सौ अर साठ ३६० दिन के वीतिआं होआं तिस उपवास करणेके विषय समर्थाके न होणेतें तब तिस प्रायश्चित्तके बदले करके छिआं ६ उपवासां करके एक एक प्राजापत्य व्रत की कल्पना करके जोडने योग्यहै निमंत्रण कों ग्रहण करके तिस के त्यागके विषयें यमजीका वचनहै ॥

केतेति जो ब्राह्मण श्राद्धादिके विमंत्रण कों करवाके अर्थात् भोजनकों मान करके पश्चात् नहि खांदा सो ब्राह्महत्याके पाप कों प्राप्त होताहै अर मर करके शूद्र योनिकों प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ इस पापके प्राप्त होश्रां होश्रां ब्रह्मण नियम कों धार करके यति चांद्रायण व्रत कों करके तिस पापतें रहित होताहै ॥ २ ॥ निमंत्रित कीते होए ब्राह्मण कें न बुलाणेमें भी एही प्रायश्चित्त जानना ॥ एह वाक्य कामके अभ्यासमेंहै ॥ झूठे वचनादिकें विषयमें शंख और लिखितका वाक्य है आक्रोशेति तुमने स्वर्ण चुराश्राहै इस मिथ्याका नाम आक्रोश है आक्रोशनश्रौरझूठ कथन करणा इनके विषयमें एक १ रात्र अथवा तीन ३ रात्र उपवास करणा इति अर कामतें अभ्यासकें विषयमें असत्यभाषण

केतनंकारयित्वातुयोनिपातयतिद्विजः ब्रह्महत्यामवाप्नोतिशूद्रयोनौच जायते ॥ १ ॥एतस्मिन्नेनसिप्राप्तेब्राह्मणोनियतव्रतः यतिचांद्रायणंचीर्त्वा ततःपापात्प्रमुच्यते इति २ श्राद्धादौनिमंत्रणंकेतनम् ॥ निमंत्रितस्याऽनाहूवानेप्येतदेव एतच्चकामाभ्यासे ॥ अनृतवचनादौ शंखलिखितौ ॥ आक्रोशनानृतवादे एकरात्रंत्रिरात्रं चोपवास इति ॥ कामतोभ्यासेतु असत्यभाषणं शूद्रसेवनम् इत्यपात्रीकरणंकृत्वा तप्तकृच्छ्रंकृत्वा शुद्ध्यतीति विष्णूक्तंज्ञेयम् ॥ वधफलकेऽनृते तु व्यसनप्रायश्चित्तप्रसंगेनोपपातके षूक्तं द्रष्टव्यम् ॥ व्रणमध्ये कृमिपाते गरुडपुराणे ॥जायंतेयस्यशिरसि कृमयोविनतात्मज कृच्छ्रंतदाचरेत्प्राज्ञःशुद्ध्येकश्यपात्मज इति १ यत्तुच्यवनः ॥ कृमिदर्शने सांतपनम् ॥ वृषभोदक्षिणेति ॥

और शूद्रसेवन इस अपात्री करण संज्ञिकपापकों करके तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै एह विष्णुजीका कहाहोया वचन जानना हिंसा है फल जिसका ऐसा जो झूठ है तिसके विषय प्रायश्चित्त व्यसन प्रायश्चित्तके प्रसंग करके उपपातकांके मध्यमें कथन कीताहै सो तिस स्थानमें देख लेणा इति जखमके मध्यमे कीटों के पौणेमें गरुड पुराणमें कहा है ॥ जायमिति । हे गुरुड जिस पुरुषके शिरके विषये कीडे उत्पन्न होतेहैं हे कश्यपके पुत्र सो बुद्धिमान् पुरुष शुद्धिके वास्ते कृच्छ्र व्रतकों आचरण करे ॥ १ ॥ जो च्यवनजीनें कहाहै कि कृमिओंके पौणेमें सांतपन व्रत करै और एक बैल दक्षिणा देवे

एह वाक्य जब एकसमयके विषय अनेकों जखमोंके विषय तीक्ष्णकी डेउत्पन्न होवें तिस विषय विषे जानना इसस्थानमे क्षत्री आदिश्रोंकों एह प्रायश्चित्त एक एक पाद न्यूनजानना अर्थात् क्षत्रीकों तीन ३ पाद सांतपन व्रत अर वैश्यकों आधा अर शूद्रकों एकपाद जानना ॥ दिनमें मैथुनादिके विषयमे शंखजीने कहाहै दिवेति दिनके विषय मैथुननूं करके और तिसी प्रकार जलके विषय नग्न होंकर स्नान करके और नंगी बगानी स्त्रीनूं देखके एक दिन भोजन न करें इति ॥ १ ॥ नग्न शब्दका अर्थ दिखातेंहैं नग्न इति एकवस्त्र वाला पुरुष नग्न होताहै इस वचनतें दो २ वस्त्र लय करके अर्थात् धोती और एक उपरणा

तद्युगपदनेकव्रणेषु खरकृम्युत्पत्तौज्ञेयम् ॥ अत्रक्षत्रियादीनांपादपादन्यूनम् ॥ दिवामैथुनादौतुशंखः ॥ दिवाचमैथुनंकृत्वानग्नःस्नात्वातथांभसि नग्नांपरस्त्रियंदृष्ट्वादिनमेकमभोजनमिति ॥ १ ॥ नग्नस्त्वेकवासाःस्यादितिवचनाद्वस्त्रद्वयवान्स्नायादित्यर्थः अत्रनग्नस्नानादावेकरात्रत्रिरात्रयोरभ्यासाद्यपेक्षयाव्यवस्था द्रष्टव्या निषिद्धकाष्ठदंतधावने वृद्धपाराशरःप्राह ॥ पलाशशिंशपाकाष्ठदंतधावनकृन्नरः दिवाकीर्तिसमस्तावद्यावद्गांनैवपश्यतीति ॥ १ ॥ एतच्चनिषिद्धकाष्ठांतराणामप्युपलक्षणम् ॥

इनानूं धार करके स्नान करे ॥ इस स्थानमें नग्न स्नानादियोंके विषय एक रात्र और तीन ३ रात्र इनकी व्यवस्था अभ्यासादियोंकी इच्छा करके जाननी अर्थात् कामतें अभ्यासके विषय तीन ३ रात्र उपवास जानना ॥ निषिद्ध काष्ठकी दातनके विषय वृद्धपाराशरजी कहतेंहैं पलेति पलाह और टाली इनके काष्ठांकी दातन करणे वाला पुरुष तितना पर्यंत नाईके तुल्य होवाहै जितना पर्यंत गौकों न देखे ॥ १ ॥ पलाशशिंशपा इस पद करकें खजूर उीर केंउडा और नारकेल इत्यादि जों निषद्धे काष्ठ हि इनकाभी ग्रहणकरणा

ब्रह्मचारीके धर्मके नाशके विषय बौधायनजीका वाक्यहै शौचेति शौच और आचमन और संध्यावंदन और कुशा और भिक्षा और होम इनका त्याग और शूद्रादिके साथ स्पर्श और कौपीन और कटिसूत्र और यज्ञोपवीत और तडागी और दंड और मृगाचर्म इनका त्याग और दिने सौणा और छतडीका धारणा और पौये पाणे और पुष्पादि मालाका धारण करणा और बुटना मलना और चंदनादि सुगंधि वाले द्रव्यका मलना और सुरमा पाणा और जलक्रीडा और जूवाखेलणा और नृत्य अर गायन अर वाजा इनके विषय प्रीति करणी और पाषंडी अर चंडाल इत्यादियोंके साथ संभाषण करणा

ब्रह्मचारिधर्मलोपेबौधायनः॥ शौचाचमनसंध्यावंदन दर्भभिक्षाग्निकार्यराहित्यशूद्रादिस्पर्शन कौपीनकटिसूत्रयज्ञोपवीतमेखलादंडाजिनवर्जन दिवास्वाप छत्रधारण पादुकाध्यारोहण मालाधारणोद्वर्त्तनानुलेपनांजनजलक्रीडाद्यूतनृत्यगीतवाद्याद्यभिरति पाषंडिचंडालादिसंभाषण पर्युषितभोजनादि ब्रह्मचारिव्रतलोपसकलनिर्हारार्थं ब्रह्मचारी कृच्छ्रत्रयंचरेत् महाव्याहृतिहोमंचकुर्यात् प्रथमंव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिश्चतस्रआज्याहुतीर्हुत्वा॥ ॐभूरग्नयेपृथिव्यै महतेचस्वाहा ॐभुवोवायवे चांतरिक्षायमहतेचस्वाहा ॐस्वरादित्यायचदिवेचमहतेचस्वाहा ॐभूर्भुवःस्वश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चमहतेचस्वाहा ॐपाहिनोअग्नएनसेस्वाहा

और वेहे अन्नका भक्षण करणा इन संपूर्णोंके विषय और ब्रह्मचर्य व्रतके नाशके विषय संपूर्णपापके त्यागणाके अर्थ ब्रह्मचारी तीन ३ कृच्छ्र व्रत करे अर महाव्याहृतिआं करके हवन करे अर प्रथम एक एक महाव्याहृति करके तीन ३ आहुतिआं करे पश्चात् सभना महाव्याहृतिआं करके क्या ॐभूः स्वाहा १ ॐभुवःस्वाहा २ ॐस्वःस्वाहा ३ ॐभूर्भुवःस्वःस्वाहा ४ इसरीतिसें तीनके पीछे एक आहुति करे इस प्रकार व्याहृतिआं करकें चार घृतकीआं आहुतिआं करके पश्चात् ॐपाहिनो अग्न एनसेस्वाहा इत्यादि करके हवन करे सो मूलमेंहि स्पष्टकीता होआहै ॥

जैसे बउ १ आहुति करके पुनारेति फेर महाव्या हृतिआंकर्के हवनकरे इति एह प्रायश्चित्त थोड़े धर्मके नाशके विषय करणा ॥ अर बहुते धर्मकेनाशके विषय अधिक प्रायश्चित्तनूं ऋग् विधान ग्रंथ विषय शौनकजी कहतेहैं तमिति श्मशानके शिवालयके विषय बैठकरके(तंवोधिया)इत्यादि मंत्रकाएक लक्ष १००००० जपकरे ब्रह्मचारिका धर्म शून्यभी होवे तदभी इसजपकरके पूर्ण हो ताहै इति ॥ ग्रहण कीता होआ जो व्रत तिसके भंगके विषय वायुपुराणमें लिखाहै लोभेति लो भ और मोह और प्रमाद इनसें कदाचित् व्रतभंग होवे तब तीन ३ उपवास व्रत करे अथवा

ॐपाहिनोऽग्नेविश्ववेदसेस्वाहा ॥ ॐयज्ञंपाहिविभावसोस्वाहा ॥ ॐसर्वं पाहिशतक्रतोस्वाहा ॥ ॐपुनरूर्जानिवर्त्तस्वपुनरग्नइषायुषा पुनर्नःपाह्यं हसः सहरय्यानिवर्त्तस्वाग्नेपिवस्वधारयाविश्वशियाविश्वतस्परिस्वाहा पुनर्व्याहृतिभिर्जुहुयादिति ॥ एतदल्पधर्मलोपे ॥ वाहुल्येतु प्रायश्चित्तवि शेषमाह ऋग्विधानेशौनकः ॥ तंवोधियाजपेन्मंत्रंलक्षंप्रेत्याशिवालये ब्रह्म चारिणोहिधर्मशून्यंचेत्पूर्णमेवहीति प्रेतानांयोग्यंस्थानंप्रेत्यंश्मशानमित्य र्थः॥ गृहीतव्रतभंगेवायुपुराणे॥ लोभान्मोहात्प्रमादाद्वाव्रतभंगोयदाभवेत् उपवासत्रयंकुर्यात्कुर्याद्वाकेशमुंडनम् प्रायश्चित्तमिदंकृत्वापुनरेवव्रतीभवेत् अत्र वाशब्दः॥ समुच्चयेमिथ्याशपथे यमः ॥ विप्रस्यवधसंयुक्तंकृत्वातुशप थंमृषा ब्रह्महायावकान्नेनव्रतंचांद्रायणंचरेत् ॥ १ ॥ एतच्चशपथांतर स्याप्युपलक्षकम् ॥

केशांकामुंडनकरावे ॥ इस प्रायश्चित्तनूं करके पश्चात्व्रतकाधारणकरे १ झूठीसुगंदके विषय यमजी का वचनहै विप्रेति ॥ मैंने ब्रह्महत्याकीतीहै जेकरएह कामकीताहे ऐसे ब्राह्मणकी झूठी सुगंद चु ककें ब्रह्मघाती होताहै सो यवांके अन्नकरके चांद्रायण व्रतनूं करे ॥ १ ॥ और सुगंदकाभी एही प्रायश्चित्त जानना अर्थात् और तरहांसेभी जेकर कोई शपथकरेगा कि मेरेकोंगौकी शपथ है जैमे वेश्या द्वारपरभीगयाहोयांइत्यादि तौभी यावकान्न करके चान्द्रायण व्रत करे ॥

सुकृतमिति जेहे पुरुष संपूर्ण आयुषाके विषय कीते होए पुण्य नू किसेके तांई देदेतेहैं सो ध र्म्मराज जीकी आज्ञासे शिलाकर्के पेषणकरीदेहैं जिस प्रकारतैसै पापी पुरुष पेषण करीदेहै १ इहमार्कंडेयपुराणकेवाक्यतें जानना ॥ औसे स्थानों विषेप्रायश्चित्तकी व्यवस्था करदेहैं यत्रेति जि स स्थानमें प्रायश्चित्त कथन कीताहै अथवा जिस स्थानमें नहि कथन कीताहै इस उशनसजीके वाक्यतें तिस स्थानके विषय प्राजापत्य व्रत कल्पन करणा ॥ ब्राह्मणकों क्षत्रियादि वृत्ति करके धनके संचयकरणेमें प्रचेतसजीनें कहाहै ॥ ब्राह्मणेति पिता और माता और बहु भृत्य इनके ना शके विषय आपदसमयमें क्षत्रीके धर्मनूं ब्राह्मण जब अंगीकार करे अर तिसके विषय एक वर्ष

सुकृतंयेप्रयच्छंति यावज्जीवकृतंनराः तेपिष्यंतेशिलापेषैर्यथैतेपापकारिण इतिमार्कंडेयपुराणवाक्यात् यत्रोक्तंयत्रवानोक्तमित्यौशनसवाक्यात्तत्र प्राजापत्यः ॥ कल्पनीयःब्राह्मणस्यक्षत्रियादिवृत्त्याधनार्जने प्रचेताः । ब्रा ह्मणस्यापत्कालेपितृमातृबहुभृत्यस्यानंतरंक्षत्रोपनिवेशः आपत्कालमेवद र्शयति पित्रिति पित्राद्यभावेक्षत्रोपनिवेशः क्षत्रधर्म्मस्वीकारश्चेत्तदा तत्रे त्यादि तत्रसंवत्सरमर्थप्राप्तौ ॥ चांद्रायणंचरेदिति वैश्यवृत्तिर्जीवने तत्र वर्षाभ्यंतरे मासादौचांद्रायणभागहारःकल्पनीयः संवत्सरादूर्ध्वंद्विगुणत्रै गुण्यादिकल्पनीयम् शूद्रवृत्त्याधनार्जने मनुः ॥ नकथंचनकुर्वीतब्राह्मणः कर्मवार्षलम् वृषलःकर्मवाब्राह्मंपतनीयेहितेतयोः ॥ १ ॥ वार्षलंकर्म सेवा

व्यतीतहोजावें तब चांद्रायणव्रतकरे। अर जब वैश्यवृत्ति करके उपजीविकाकरे अर तिसस्थान के विषय वर्षके मध्यमेंहि मासादिके व्यतीतहोनेमें चंद्रायणव्रतके तीन ३ भाग अर्थात् तीनपा द कल्पन करणे योग्यहैं अर जेकदाचित् वर्षतें उपरंतहोजाए तब कालके अनुसारदूणा अथ वा त्रीणाइत्यादि चांद्रायणव्रत कल्पना करणे योग्यहैं ॥ शूद्रवृत्ति करके धनके एकत्रकरणेमें मनुजीने कहाहै नेति ब्राह्मण शूद्रके कर्म नूं कदाचित् भी न करे अर्थात् सेवा न करे अर शूद्र ब्राह्मणके कर्मनूं न करे क्योंकि ब्राह्मण और शूद्र इनोको परस्पर कीतेहोये कर्म पतित कर देते हैं ॥ १ ॥

इसप्रकार उपक्रम कर्के फेर उपनयन कर्मके साथ कृच्छ्रादि व्रतकी पश्चात् प्रवृत्तिके विषय मनुजीकावाक्यहै प्रेति परकर्मके विषये स्थित होकर जेडे ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य प्रायश्चित्त नूं करतेहैं और अपणी जातितें भ्रष्ट होए होएजो ब्राह्मणहैं तिनांकोभी एही प्रायश्चित्त कथन करे १ ॥ शूद्रकोंभी ब्राह्मण औरक्षत्री अथवा वैश्यके कर्मकरणेके विषय एहि प्रायश्चित्तहै क्योंकि शूद्रकों भी पर कर्म होनेसें अर्थात् निंदित कर्म होनेसें परंतुपरवृत्तिकर्के एकत्र कीता होआ जो धनहै तिस त्यागके सहित एह प्रायश्चित्त है क्योंकि जिस कारणतें निंदित कर्म केधन नूं संचितकरतेहैं सो तिसधनके त्यागणेते पीछे प्रायश्चित्त से शुद्ध होतेहै इस मनुके बचनतें जानना ॥ स्त्रीके धन कर्के उपजीविका करणेमे कहते हैं चांद्रेति एक चांद्रायण व्रत कर्के संपूर्ण पापांका नाश होताहैं सोधन स्त्रीके तांई दे करके चांद्रा

एवमुपक्रम्य पुनरुपनयनसहितकृच्छ्राद्यनुवृत्तौ सएव ॥ प्रायश्चित्तंप्रकुर्वंतिविकर्मस्थास्तुयेद्विजाःब्राह्मण्याच्चपरित्यक्तास्तेपामप्येतमादिशेत् १ ॥ शूद्रस्यापिद्विजकर्मकरणेऽप्येतदेव ॥तस्यापि तद्विकर्मत्वात् अर्जितधनत्यागपूर्वकंचैतत् ॥ यद्गर्हितेनार्जयंतीति मनूक्तेः ॥ स्त्रीधनोपजीवनेतु सएव चांद्रायणेनचैकेन सर्वपापक्षयोभवेत् ॥ चान्द्रायणंस्त्रियैतद्धनंदत्वाकार्य्यम् ॥ भार्यायामुखमैथुनेतूशनाः ॥ यस्तुब्राह्मणोधर्मपत्नीमुखेमैथुनंसेवेतसदुष्यतीति वैवस्वतः ॥ प्राजापत्येनशुद्ध्यतीति ॥ गोयुक्तयानस्थस्यमैथुनेयमः ॥ यदिगोभिःसमायुक्तंयानमारुह्यवैद्विजः मैथुनंसेवतेचैवमनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥ त्रिरात्रंक्षपणंकृत्वासचैलस्नानमाचरेत् गोभ्योथवसकंदद्याद्घृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति ॥ २ ॥ यत्तु स्मरणम्

यण व्रत करणा स्त्रीधन इस जगाडोहै जो विवाह विषे पित्रांदियोंने दित्ताथा और श्वशुरके घर पाद वंदनके समय दित्ताहै ॥ स्त्रीके मुखके विषय मैथुन करणेमें उशनसका वचन है यइति जो ब्राह्मण अपणी धर्म पत्नीके अर्थात् विवाहिता स्त्रीके मुखमे मैथुन करताहै सो पतित होताहै अर्थात् पापी होताहै इसका प्रायश्चित्त वैवस्वत मनुजीने कहाहै कि प्राजापत्य व्रत कर्के सो शुद्ध होताहे इति ॥ वैल कर्के युक्त जो गाडी तिसके विषय स्थित पुरुषके मैथुनमें यमजीका वचनहै यदीति जद ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य वैल कर्के युक्त जो गाडी किसके विषय स्थित होकर्के मैथुन करताहै इसमे स्वायंभुव मनुजी कहते भये ॥ १ ॥ तीन ३ रात्र उपवास कों कर्के सहित वस्त्रांदे स्नान करे अर वैलांके तांई घासदेदेवे अर्थात् वैलांनू चारे पश्चात् घृतका भक्षणकरे तो शुद्धहोताहै ॥ २ ॥ जो कथनहै

मैथुनमिति ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य वैलां कर्के संयुक्त जो गाडी तिसके विषयस्थित होकर्के स्त्रीके अथवा पुरुषके साथ दिनमे मैथुनकों करताहै सो सहित वस्त्रांके स्नानकरे । १ । एह अकामतें एक वारकरणेके विषय जानना ॥ अर काम कर्के पुरुषके साथ मैथुन करणेका प्रायश्चित्त जाति वंशादिके विषय कहाहै । तूं मेरीमाताके समानहैं ऐसे जो पुरुष क्रोधतें अपणी स्त्रीकों कह कर्के फेर मैथुनके वास्ते इच्छा करताहै तिसके विषय पराशरजीने कहाहै यइति जो पुरुष क्रुद्धहो कर्के अपणी स्त्रीकों मैथुनके अयोग्यनूं कहताहै अर्थात् तूं मेरी माताहैं ऐसें वचन कहताहै अर फेर मैथुनके वास्ते इच्छा करताहै सो पुरुष ब्राह्मणांके मध्यमें अपणे प्रायश्चित्त कों कथन करवाए । १ । इसीमें औरवचन है आर्तइति आर्त्त क्या दुःखी अथवा क्रोध अथवा अज्ञान अथवा क्षुधा अथवा तृषा अथवा भय इनां कर्के पीडित होआ होआ

मैथुनंतुसमासाद्य पुंसियोषितिवाद्विजः गोयानेप्सुदिवाचैवंसवासाःस्नानमाचरेत्१ तदकामतः सकृत्करणेज्ञेयम् क्रोधाद्भार्यांत्वंमेमाम्रासदृशीत्युक्त्वा पुनःसंभोगेपराशरः । यस्तुक्रुद्धःपुमान्ब्रूयाज्जायायास्त्वगम्यताम् पुनरिच्छतिभर्यांचविप्रमध्येतुवाचयेत् १ आर्त्तःक्रुद्धस्तमोघोवाक्षुत्पिपासाभयर्दितःदानंपुण्यमकृत्वावा प्रायश्चित्तंदिनत्रयम् २ उपस्पृशेत्त्रिषवणंमहानद्युपसंगमे स्नानांतेचैवगांदद्याद्ब्राह्मणान्भोजयेद्दशेति ३ वाचयेत्स्वस्यप्रायश्चित्तस्योपदेशंकारयेत् पुण्यंयागादिसंकल्पितंदानयागाद्यकृत्वेत्यर्थः वस्तिकर्मणियमः । वस्तिकर्मणिरूढेश्चप्रच्छर्दनविरेचनैः शिशुकृच्छ्रेणशुद्ध्येततस्मात्पापान्नसंशयः १ प्रच्छर्दनविरेचनयोरभ्यासएवशिशुकृच्छ्रःअन्यत्रतुस्नानमात्रम्

दान और यज्ञादि नूं न कर्के तिसस्त्रीनूं गमन करे तां प्रायश्चित्त तीन ३ दिन करे । २ । और जेकर दानादि होण तो व्रतका प्रयोजन नहि तिसके विना कहतेहैं उपेति अर तीन काल महानदीके संगमके विषय स्नान करे और स्नानके अंतमें गौसंकल्प करे और दश १० ब्राह्मणा नूं भोजन खुलावे ॥ ३ ॥ वस्तिकर्मके विषय यमजीका वचनहै वस्तीति मूत्राशयकी चिकित्साकानाम वस्तिकर्महै मूत्राशयके शोधन करणके वास्ते उलटी अथवा जिलाब करवाए तिस पापतें पुरुष शिशु कृच्छ्र व्रतकर्के शुद्ध होताहै इसमें संदेह नहि । १ उलटी और जुलाबके अभ्यासके विषय शिशुकृच्छ्र व्रत नूं करे जेकरकदाचित् करवाए तद स्नान कर्के हि शुद्ध होजाताहै अर वस्तिकर्मका स्वरूपदेखणा होवे तब भाव प्रकाशमें देखलेणा

तिस प्रकार अजीर्णादिकेविषयभी यमजीका कथनहै । अजीति अन्नकान पचना और पूर्वकहा
जो अभ्युदित और उद्वमन और क्षौर कर्म और मैथुन और खोटा स्वप्न और दुष्ट पुरुषके साथ
स्पर्श इनके विषयमें स्नान मात्र अर्थात् केवल स्नानाहि कहाहै । २ । देवताके मंदिरके शिलादि
करके अपने गृहके बनानेमेंयमजो निंदाकरतेहैं इष्टेति देवताके मंदिरमे लगिआंहोआं जो पकि
आं इष्टां और काष्ट और लोहा और पाषाण इनानूं स्था करके लोभतें अपणे गृहके विषय जो
पुरुष जोड़तें हैं अर्थात् इनां करके अपणे गृहनूं बनातेहैं । १ । सो एकले और भयभीत और
क्षुधातृषा करके दुःखी होए होए जितना पर्यंत पापका नाश नहि होता तितना पर्यंत बंधनमें

तथाच सएव ॥ अजीर्णेऽभ्युदितेवान्तेश्मश्रुकर्मणिमैथुने दुःस्वप्नेदुर्जनस्प
र्शेस्नानमात्रंविधीयते ॥ २ ॥ देवागारशिलादिना स्वगृहकरणंनिंदति यमः
इष्टकाकाष्ठलोहाश्मदेवालयसमन्वितम् गृहीत्वात्मगृहेचैवलोभाद्येयोजयं
तिये १ ॥ एकाकिनस्तथोद्विग्नाः क्षुत्तृषापरिपीडिताःबंधनेतेतुतिष्ठंतियाव
त्पापस्यसंक्षयः २ ॥ अत्र प्राजापत्यचान्द्रायणादिकल्प्यम् ॥ वानप्रस्थय
त्योर्व्रतभंगे सएव वानप्रस्थोदीक्षाभेदेकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वामहाकक्षंव
र्द्धयेत् ॥ भिक्षुर्वानप्रस्थवत्सोमवृद्धिवर्जंस्वशास्त्रसंस्कारंचेति दीक्षाभे
दोयमनियमातिक्रमः महाकक्षमौषधवनप्रदेशमुदकसेचनादिना वर्द्धयेत
सोमशब्देनौषधिसामान्यंलक्ष्यते ॥ तद्वृद्धिःपरंभिक्षोर्निवर्तते परंतु स
ममित्यर्थः स्वशास्त्रसंस्कारः प्राणायामाभ्यासः ॥

अर्थात् नरकमें स्थित होतेहैं ॥ २ ॥ इसके विषय प्रायश्चित्त प्राजापत्य और चांद्रायणादिव्रत
कल्पन करणा ॥ वानप्रस्थ और यति के व्रत भंगमेंभी यमजीका वचनहै ॥ वानेति वानप्रस्थी
जब यम और नियम कर्मांका उल्लंघन करे तब द्वादश १२ रात्रके कृच्छ्र व्रत नूं करके पश्चात्
औषधिके बन नूं जलके सेचन करणे करके बधावे ॥ और संन्यासी भी जब यम और
नियमादि कर्मांका उल्लंघन करे तब औषधिकी वृद्धितें बिना अपणे शास्त्रके संस्कारनूं करे अ
र्थात् प्राणायामके अभ्यास नूं करे अर औषधिआंकी वृद्धिका संन्यासीको निषेधकिताहै (दीक्षा
भेदोयमनियमातिक्रमः) इत्यादि पदां करके पूर्वले वाक्यका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥

हारीतजीका वाक्यहै झूठ और चुगली इनके वचनमे अर्थात् झूठ और चुगली कथन करके संन्यासी तप्त कृच्छ्र व्रत नूं करे ॥ क्रोध और अहंकार और चुगली इनके विषय छागलेय जीका कथनहै व्रतेति संन्यासियोंके जो व्रत अर तिसी प्रकार जो उपव्रत हैं इनां मेसें एक एकके भी उल्लंघनके विषय प्रायश्चित्त विधानकरीदाहै कि एक १ दिन रात्र उपवासनूं रक्षकरके पश्चात् कृच्छ्र व्रतके सहित चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ १ ॥ व्रत और उपव्रतां नूं बौधायनजी कहतेहैं आदिके विषय मौनिके व्रतांनूं कहतेहैं ॥ अहिंसेति जीवोंकों न मारणा और सत्य कहणा और चोरी न करणी और मैथुन नकरणा एह संन्यासीके व्रत कहे हैं ॥ इसतें उपरंत उपव्रतांनूं कहतेहैं अक्रोध इति क्रोध न करणा और गुरुकी शुश्रूषा करणी और सर्वदा काल प्रसन्न

हारीतः अनृतपिशुनवचने भिक्षूणांतप्तकृच्छ्रः ॥ क्रोधाहंकारपिशुनेषुच छागलेयः ॥ व्रतानियानिभिक्षूणांतथैवोपव्रतानिच एकैकातिक्रमेतेषांप्रायश्चित्तंविधीयते अहोरात्रोपितोभूत्वाकृच्छ्रचांद्रायणंचरेत् १। कृच्छ्रपदंचांद्रायणविशेषणम् व्रतोपव्रतान्याह बौधायनः अथ मौनिव्रतानि। अहिंसा सत्यवचनमस्तेयंमैथुनस्यचवर्जनम् ॥ अथोपव्रतानि ॥ अक्रोधोगुरुशुश्रूषाप्रसादशौचमाहारशुद्धिश्चेति जलप्रतिविंबदर्शनादौयाज्ञवल्क्यः ॥ मयितेजइतिच्छायांस्वांदृष्ट्वांवुनिवैजपेत् सावित्रीमशुचौदृष्टेचापलेचानृतेपिच ॥ १ मयितेज इतिमंत्रोवाजसनेयिप्रसिद्धः

रहणा और शौच करणी और शुद्ध भोजन करणा एह उपव्रत कथन कीते हैं ॥ जलके विषय छायाके दर्शनादिमें अर्थात् जलमें अपना स्वरूपदेखनेमे याज्ञवल्क्यजीने कहाहै मयीति जलके विषय अपणी छायानूं देखकरके (मयितेजः) इत्यादि वाजसनेयिके मंत्र नूं जपे और अशुद्धवस्तुके दर्शनमें अर चित्तकीअनवस्थिति औरझूठवचन इनके विषयमें सावित्रीनूं जपे अर्थात् गायत्रीका जप करे ॥ १ ॥ इसजगा मयितेज इसमंत्रका और गायत्रीका जप एकवारहि करणा चाहिए और जेकर बहुतवार प्रतिविंबादि दर्शनहोवे तों बहुवार करणा

अशुचिस्थान और मूत्र और पुरीषादि और अनवस्थिति और निरर्थक शरीरकी क्रिया और अंगीकार करके पश्चात् झूठ कथन करणा इनके विषय हारीतजीका वाक्यहै ॥ प्रतीति जोपुरुष प्रथम अंगीकार करके पश्चात् झूठ अथवा मिथ्याकों सत्य कथन करे सो तप्तकृच्छ्रके सहित चांद्रायण व्रतकों करे ॥ १ ॥ एहवाक्य गुरुकों प्रथम कथन कीता जो है क्याकि मैं तुसाडा एह काम करांगा अथवामैं तुसानूं एह वस्तु दिआंगा इतना वचन कहकर पश्चात् न करणा तिसके विषय जानना क्योंकि प्रायश्चित्तकों बडाहोणेते । भोजन कालके विषय जो मौनव्रतहै तिसके नाशके विषय पराशरजीका वचनहै मौनेति मौन व्रतकों अंगीकार करके ब्राह्मण और क्षत्री अथवा शूद्र स्थित होआ होआ न कथन करे अर्थात् भोजनतें पहले बोल णाथा तिस विषय न बोले अर भोजन भक्षण करदा होआ जो बोलें सो पुरुष शेष अन्ननूं त्यागदेवे क्या बोलणेतें पीछे भोजन न करे ॥ १ ॥ केवल मुखकर्के

अशुचौ मूत्रपुरीषादौचापले वृथाचेष्टायांप्रतिश्रुत्यानृतोक्तौहारीतः॥ प्रति श्रुत्यानृतंब्रूयान्मिथ्यासत्यमथापिवा सतप्तकृच्छ्रसहितंचरेच्चान्द्रायणव्रत मिति।१।गुरुवस्तुविषयकप्रतिश्रुताकरणपरमेतत् प्रायश्चित्तस्य गुरुत्वात् भोजनकालीनमौनव्रतलोपे पराशरः मौनव्रतंसमाश्रित्यआसीनोनवदेद् द्विजः भुंजानोहिवदेद्यस्तुतदन्नंपरिवर्जयेत् ॥१॥ केवलमुखेन जलपानेस एव । विद्यमानेषुहस्तेषुब्राह्मणोज्ञानदुर्बलः तोयंपिबतिवक्त्रेणश्वयोनौजाय तेध्रुवम् ।२। असपिंडैःसहरोदने पारस्करः। मृतस्यबांधवैःसार्द्धंकृत्वातुपारि देवनम् वर्जयेत्तदहोरात्रंदानंश्राद्धादिकर्मचेत्यनेनैकाहः॥१॥एतच्च कामतः अकामतस्तुस्नानमेव ॥ प्रेतालंकरणेशंखः॥कृच्छ्रपादःसपिंडस्यप्रेतालंकर णेकृतेअज्ञानादुपवासःस्यादशक्तौस्नानमिष्यतइति॥ १ ॥ कामतोद्विगुणम्

जल पीणेकें विषयभी पराशरनेंहि कहाहै विद्येति हत्थांके हुंदिआं जो ज्ञानदुर्बल अर्थात् मूर्ख ब्राह्मण जलकों केवल मुख करकें पीवताहै अर्थात् लंम्मा पैकर मुखके साथ पान करता है सो निश्चय करकें कुत्तेकी योनिकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ असपिंडांके साथ रुदन करणके विषय पारस्करजीका कथनहै मृतेति मृत होआ जो कोई असंबंधी पुरुषहै तिस के संबंधिआंके साथ रुदननूं करके तिस दिन रात्रके विषय दान और श्राद्ध अर आदिपद करके तर्पणादि इनानूं न करे क्योंकि तिसतें वोह अशुद्धहै १ सो एह इच्छा करके जब करे तब एक दिन वर्जन करे अर जब इच्छासें न करे तब स्नान करकेंहि शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ प्रेतके भूषण करणे विषय शंखजीका वचनहै कृच्छ्रेति भिन्न पिंड वाला जो प्रेतहै तिसके भूषण करणेमें अर्थात् स्नानादि कराणेमें कृच्छ्र व्रतका एक पाद करे अर जब अज्ञानतें करवाए तब एक दिन उपवास करे अर जब इसमे शक्ति न होवे तब स्नानमात्रहि इच्छितहै ॥ १ ॥ अर कामके विषयमें दूणा प्रायश्चित्त करे ॥

जो तप्त कृच्छ्रकी प्रवृत्तिके विषय अंगिराजी का वाक्यहै कि आत्मत्याग करणवाले प्रेतोंके संस्कार करणके विषय अर्थात् शवोंके स्नानादि करवाणेमें पातकी होताहै अर्थात् तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै सो एह वाक्य अभ्यासके विषयमें जानना ॥ सजाति और भिन्न जाति के शवके पीछे गमनके विषयमें मनुजीका वचनहै अन्विति सजाति और भिन्नजाति वाला जो शवहै तिसके पीछे इच्छासें जो पुरुष जाताहै अर्थात् मुरदेके दाह करण वास्तें जो साथ जाताहै सो सहित वस्त्रोंके स्नान करके और अग्निनूं स्पर्श करके अर घृतका भक्षण करे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ इस स्थानमें इच्छया इस पदके ग्रहण करणेसें एह कामके विषयमें जानना ॥ अर अकामके विषयमें केवल स्नानहि कथन कीताहै ॥ फेर याज्ञवल्क्यने जो कहाहै कि ब्राह्मेति भिन्न पिंड वाले ब्राह्मणने ब्राह्मण और क्षत्री

यत्तु तप्तकृच्छ्रानुवृत्तौ अंगिराः ॥ आत्मत्यागिनांच संस्कर्तौ तदस्तुपा तककारीचेति तदभ्यासे॥समानेतरजातिप्रेतानुगमने मनुः। अनुगम्येच्छ याप्रेतंज्ञातिमज्ञातिमेवच स्नात्वासचैलःस्पृष्ट्वाग्निंघृतंप्राश्यविशुध्यतीति १ अत्रेच्छयेतिग्रहणादेतत्कामतः अकामतस्तुस्नानमेव यत्तुयाज्ञवल्क्यः ब्राह्मणेनानुगंतव्योनशूद्रोनद्विजःक्वचित् अनुगम्यांभसिस्नात्वास्पृष्ट्वाग्निं घृतभुक्शुचिः ॥१॥ ब्राह्मणेनासपिंडेन द्विजोविप्रादिः ॥ अस्यचघृतप्राशन स्यभोजनकार्यविधाने प्रमाणाभावान्नभोजननिवृत्तिरितिमिताक्षरायाम् तन्मानवसमानविषयम् ॥ वस्तुतोघृतस्यप्रायश्चित्तार्थत्वादभोजनमेवयु क्तम् अतएववसिष्ठेन मनुष्यास्थिस्निग्धंस्पृष्ट्वात्रिरात्रमस्निग्धेत्वहोरात्रं शवानुगमनेचैवमिति ॥

और वैश्य अथवा शूद्र इनके मृत होयां पीछे गमन नहि करणे योग्य जे कदाचित् जाएभी तब जलके विषय स्नान करके अर अग्निनूं स्पर्श करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होवाहै ॥ १ ॥ इस घृतभक्षणकों भोजन कार्यकी विधिके विषयमें अप्रमाण होणेतें उर भोज न की निवृत्ति नहि जाननी एह मिताक्षरामें लिखाहै सो मनुजीके वचनके तुल्यहि जानना वास्त वतें घृत भक्षणकों प्रायश्चित्तके अर्थ होणेतें भोजन नहि भक्षण करणे योग्य ॥ इसी कारणसें वसिष्ठजीने कहाहै मनुष्येति पुरुषकी नवीन हड्डीका स्पर्श करके तीन ३ रात्र उपवास करे अर पुराणी हड्डीका स्पर्श करके एक १ दिन रात्र उपवास करे इसी प्रकार शवके पीछे गमनके विषय जानना चाहिए ॥

विप्रेति ब्राह्मण प्रेतके पीछे गमनके विषय एक दिन कथन करणेतें क्षत्री प्रेत और वैश्य प्रेत के पीछे गमनके विषय कुछक अधिक प्रायश्चित्त कल्पन करणा चाहिए ॥ ब्राह्मणकों शूद्रके पीछे गमनके विषय पराशरजीका वाक्यहै । प्रेतीति लेजाईदे होए शूद्र शवके पीछे जो मूर्ख ब्राह्मण जाताहै सो तीन ३ रात्र व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ तीन रात्र व्रतके कीतिआं होआं पश्चात् समुद्रमे प्रवेश करण वाली जो नदी है तिसकों प्राप्त हो करके अर्थात् बडी नदीके विषय स्नान करके अर पश्चात् सौ १०० प्राणायाम कों करके और घृतका भक्षण करके शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ इस स्थानमें घृत भक्षणकों शुद्धिके अर्थ कथन करणेतें भोजनका निषेध नहि एह वाक्य कामका विषयहै ॥ अकामके विषयमें इसतें आधा प्रायश्चित्त करणा ॥ इसी प्रकार क्षत्रीकों वैश्य और शूद्रप्रेतके पीछे गमनमें अर वैश्यकों शूद्र प्रेतके पीछे गमन करणेमें प्रायश्चित्त कल्पन करणा ॥ अग्निहोत्रादि कर्म और वा

विप्रानुगमने एकाहस्योक्तत्वात् क्षत्रियवैश्यानुगमने त्वधिकं कल्प्यम् ब्राह्मणस्य शूद्रानुगमने पराशरः ॥ प्रेतीभूतंतुयःशूद्रंब्राह्मणोज्ञानदुर्बलःअनुगच्छेन्नीयमानंसत्रिरात्रेणशुद्ध्यति १ त्रिरात्रेतुततश्चीर्णेनदींगत्वासमुद्रगाम् प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति २ अत्र घृतप्राशनस्य शुद्ध्यर्थाभिधानान्नभोजननिवृत्तिः॥ एतच्चकामतःअकामतस्त्वर्द्धम् ॥ एवं क्षत्रियस्यवैश्यशूद्रानुगमने वैश्यस्य शूद्रानुगमनेकल्प्यम् ॥ इष्टापूर्त्तशुभाशुभमहाकर्म्मस्वनुपहतानामपिऋत्विगाचार्यादीनांत्रीणि कृच्छ्राणि चान्द्रायणास्व्यसर्वप्रायश्चित्तमाह प्रयोगपारिजाते आचार्यः॥ सएवरजस्वलाकन्यारक्षणे प्रायश्चित्तमाह॥कन्यामृतुमतींशुद्धांकृत्वानिष्कृतिमात्मवान् तथातुकारयित्वातामुद्वहेतांनृशंसधीः १ दद्यात्तदृतुसंख्यागाःशक्तःकन्यापिता यदि दातव्यैकापिनिःस्वेनदानेतस्यायथाविधि ॥ २ ॥ तस्यागोर्दानेयथाविधि ऋतुसंख्याकाविधि यथास्यात्तथाऽचरणीयमित्यर्थः

पी कूपादि और शुभ और अशुभ एह जो महाकर्म हैं इनके विषयमे चतुर भी हैं ऋत्विक् और आचार्यादि इनकों भी त्रय कृच्छ्र और चांद्रायण संपूर्ण प्रायश्चित्तकों प्रयोग पारिजातमें आचार्यजी कथन करते भये ॥ सोई आचार्यजी रजस्वला कन्याके रक्षणमें प्रायश्चित्त कों कहते हैं । कन्यामिति ज्ञानवाला और नहि निंदाके योग्य बुद्धि जिसकी ऐसा पुरुष प्रथम प्रायश्चित्तकों करके अर कन्याकों भी प्रायश्चित्त करवाके पश्चात् ऋतुवाली कन्याकों विवाह लये ॥ १ ॥ दद्येति अर कन्याका पिता जद समर्थ होवे तब कन्याकी ऋतुके समान गौआं देवे अर्थात् जितनीयां ऋतु लंघीयां होण विवाहतक तितनीयां गौआंका दान करे एह अर्थ है अर कन्याके विधि पूर्वक दानके विषय निर्धननें भी एक गौ देणी योग्यहै परंतु तिस गौके दान विषय ऋतु संख्याके नाम करके संकल्प करणा ॥ २ ॥

सो गौआं जामाता को देणियां अथवा ब्राह्मणको इसका उत्तर कहतेहैं ॥ गा इति
अर कन्याका पिता धनी होवे तब ब्राह्मणांकों गौआं देवे अर जब निर्धन होवे तब दक्षिणा
मात्रदेवे तिस कारणतें ऋतुकी संख्याके समान ब्राह्मणांकों गौआं देवे अथवा कन्या पासों
दुवाए ॥ ३ ॥ उपोष्येति अर कन्या तीन ३ दिन उपवास रखकर पश्चात् रात्रिके विषय
गौआंके दुग्धकों पीवें जब ऋतुतें रहित कन्या होवे तिस कालके विषय कन्याके सां
ई भूषण देवे ऊीर तिस कन्याकों विवाहन वाला वर भी कूष्मांड संज्ञिक मंत्रों करके •
घृतका हवन करे ॥ ४ ॥ श्राद्ध और उपवासके दिनमें दातन करणके विषय विष्णु रहस्यमें लि
खाहै । श्राद्धविति श्राद्ध और उपवासके दिनमें दातनकों करके गायत्रीके सौ १००
मंत्र करके पवित्र होआ जो जलहै तिसका आचमन करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और

गादद्याद्ब्राह्मणेष्वेवानिःस्वोनिःस्वस्तुदक्षिणाम् तस्मात्तदृतुसंख्येषुब्राह्म
णेषुप्रदापयेत् ॥ ३॥ उपोष्यत्रिदिनंकन्यारात्रौपीत्वागवांपयः अदृष्टरज
सेदद्यात्कन्यायैतत्रभूषणम् तामुद्वहन्वरश्चापिकूष्मांडैर्जुहुयाद्घृतमिति४
श्राद्धोपवासदिने दंतधावने विष्णुरहस्ये ॥ श्राद्धोपवासदिवसेखादित्वादं
तधावनम् गायत्र्याःशतसंपूतमंवुप्राश्यविशुद्ध्यतीति ॥ १ ॥ अन्यान्यपिप्र
कीर्णकान्यपरार्के शंखः ॥ प्रेतस्यप्रेतकार्याण्यकृत्वाधनहारकः वर्णा
नांयद्वधेप्रोक्तंतदर्धंप्रयतश्चरेत्॥१॥ अतिमानादतिक्रोधाद्भयादज्ञानतोपि
वा उद्बध्नीयात्स्त्रीपुमान्वापिगतिरेषांनविद्यते ॥ २ ॥ पूयशोणितसंपूर्णेत
मस्यंधेसुदारुणे षष्टिवर्षसहस्राणिनरकेयद्रुपासते ॥ ३ ॥ गोभिर्हतं
तथोद्बद्धंब्राह्मणेनचघातितम् संस्पृशंनेतुयेविप्रागरदाश्चाग्निदाश्चये ॥ ४

भी प्रकीर्णक प्रायश्चित अपरार्कमें शंखजीने कथन कीते हैं ॥ प्रेतेति ॥ प्रेतके धन कों
ग्रहण करणे वाला जब प्रेतके कर्मांकों न करे तब वर्णांके हत करणेके विषय जो प्रा
यश्चित्त कहाहै तिसतें आधा प्रायश्चित्त इंद्रियोंकोंरोककरकरे १ अब और कहतेहैं अतीाति बहु
त मान और बहुत क्रोध और भय अथवा अज्ञान इनतें स्त्री अथवा पुरुष किसीकों
फांसी दे देवे तिनकी गति नहि होती । २ । तिनकी व्यवस्था कहतेहैं पूयेति पाक और रुधिर
करके पूर्ण होआ होआ और अंधकार करके युक्त और भयानक जो नरक है तिसके
विषय सठ हजार ६०००० वर्ष रहतेहैं ॥ ३ ॥ और कथन करतेहै ॥ गोभिरिति गौआंने
जो मारिआ है और तिस प्रकार फांसी ले करके जो मृत होआ है ऊीर ब्राह्मणने जो
मारिआ है इनाकों जेडे ब्राह्मण स्पर्श करते हैं और जेडे विषके देणे वाले हैं और जेडे
अग्निके देणे वालेहैं ॥ ४ ॥

अन्विति और जेंडे फांसी कर्के मृतहोयेके पीछे जातेहैं और जेडे पाशके छेदने वाले हैं सो संपूर्ण पापकर्के संयुक्तहोतेहैं तिनांकी शुद्धिनूं मैं कहताहुं । ५ । तप्तेति सो सब तप्तकृच्छ्र व्रतकर्के शुद्धहोतेहैं और ब्राह्मणांकोंभोजन खुलावें अर ब्राह्मणकेताई बैलकेसहित गौ दक्षिणादेवें ६ ॥ इहां एकवचन बहुवचनके स्थानजानना इसी विषयमें संवर्त्तजीका वाक्यहै गविति गौआंने जो ब्राह्मणने हतकीताहैं और आप पाश्यादिकर्के मृतहोआहै कल्याणकी इच्छा करदे जो सत्पुरुषहैं तिनानें इनके विषय रोदन न करणा चाहिए । १ । और कथन करतेहैं एषामिति इनांके मध्यमे एक किसी प्रेतनूं जो पुरुष आच्छादनकरताहै अथवा चुकताहै अथवाकटोदक क्रियानूं करताहै

अनुयातारोऽपियेचान्येयेचान्येपाशछेदकाः सर्वेतेपापसंयुक्तास्तेषांवक्ष्यामिनिष्कृतिम्॥ ५॥ तप्तकृच्छ्रेणशुध्यंतिकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् अनडुत्सहितां गांचदद्याद्विप्रायदक्षिणाम् ॥ ६ संवर्त्तः॥ गोभिर्हतेतथाविप्रेतथाचैवात्मघातिनि नैवाश्रुपातनंकार्यंसद्भिःश्रेयोऽभिकांक्षिभिः ॥ १ ॥ एषामन्यतमंप्रेतं योवसेतवहेतवा कटोदकक्रियांकृत्वातप्तकृच्छ्रंसमाचरेत् ॥ २ ॥ तच्छवंकेवलंस्पृष्टमश्रुवापातितंयदि पूर्वोक्तानामकर्त्ताचेदेकरात्रमभोजनम् ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तानांकटोदकक्रियादीनामकर्त्ता केवलं तच्छवस्पर्शाश्रुपातकर्त्ताचेत्तदेदमल्पप्रायश्चित्तमिति ॥ तथा ॥ यआत्मत्यागिनःकुर्यात्स्नेहात्प्रेतक्रियां नरःसतप्तकृच्छ्रसहितंचरेच्चांद्रायणव्रतम् ॥ १ ॥ बुद्धिपूर्वकएतत् ॥

अर्थात् उठाणे वास्ते किड्डा बनाकर लेजाताहै और जल देताहै सो पुरुष तप्त कृच्छ्र नूं करे । २ । और कहतेहैं तदिति अर जिसने केवल शवकेसाथस्पर्श कीताहै अथवा रोदन कीताहै अर कटोदकादि क्रिया जिसने नहिकीती तिसको एक रात्र उपवास कहाहै॥३॥पूर्वोक्तानांइत्यादि पदों कर्के इसी श्लोकका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै ॥ तिस प्रकार औरभी कहतेहैं यइति जो पुरुष आत्मत्यागीहै अर्थात् पाशादि कर्के जो आप मृत होआहै तिसकी प्रेतक्रिया नूं जो पुरुष स्नेहतें करताहै सो तप्त कृच्छ्रके सहित चांद्रायण व्रतनूं करे॥१॥एह ज्ञानके विषयमें जानना

इसी विषयमें यमजीका वाक्यहै नेति ब्राह्मणोंके दंड करके हतहोए जो पुरुषहैं तिनके अशौच और उदक और रोदन और निंदा और दया और तखतेका चुकणा इनां नूं नकरे ।१। ब्रह्म दंड नाम शापकाहै परंतु किसे नहीं ब्राह्मणांतें मृतहोवे सो सभ ब्रह्मदंडहत जानणा और कहतेहैं ॥ स्नेहाति स्नेह और अपना कोई कार्य तिसकी सिद्धि वास्ते और भय इत्यादितें जो पुरुष आत्मत्यागींके अशौचादि नूं करताहै सो गौआंके मूत्रकर्के यवांके आहार नूं करदा होया तप्तकृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै।२।एतानि इत्यादि पदोंमें इसी श्लोकका हि अर्थस्पष्टकीताहै और कथन करतेहैं कृत्वेति आत्मात्यागीकों अग्नि और उदक और स्नान करवाणा और स्पर्श

यमः ॥ नाशौचंनोदकंचाश्रुनापवादानुकंपने ब्रह्मदंडहतानांतुनकार्य्यंकट धारणम्॥१॥स्नेहकार्य्यभयादिभ्योयस्त्वेतानिसमाचरेत् गोमूत्रयावकाहारैः सतुकृच्छ्रेणशुध्यति॥२॥एतानिआत्मत्याग्याद्यशौचादीनि कटःशवखट्वा कृत्वाग्निमुदकंस्नानंस्पर्शंवहनमेवच रज्जुच्छेदाश्रुपातेच तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यति॥३॥एतत्समुदितानां कर्म्मणां मतिपूर्वके संवर्त्तः वोढॄणामग्निदातॄणांसंविधानविधायिनाम् तप्तकृच्छ्रद्वयाच्छुद्धिरेकमेवानुयायिनाम् १संविधानविधायिनःप्रेतालंकारकारिणः एतदपिसमुदितकरणे

और चुकणा और पाशका छेदन और रोदन इना नूं जो पुरुष करदाहै सो तप्त कृच्छ्र व्रत कर्के शुद्ध होताहै ॥३॥ कथन कीते जो आत्मत्यागीके कर्महैं सभना इनकों ज्ञान कर्के जब करे तब एह प्रायश्चित्त जानना॥संवर्त्तजीका भी इसी विषयमें वाक्यहै वोढॄणामिति चुकणे वाले और अग्निके देणे वाले और प्रेतकों भूषण करणे वाले इन संपूर्णांको दो २ तप्त कृच्छ्रतें शुद्धि होतीहै और पिछे जान वाल्यांको एक तप्त कृच्छ्र कर्के शुद्धि होतीहै ॥ १ संविधान इस पदका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै कथन कीते जो कर्महैं इनके विषय भीएभी जानना इति

उशनसजीका वचनहै प्रायेति ॥ अतिशयकरके लंघनलेणे और शस्त्र और अग्नि और विष और पाश और पर्वतके शृंग उपरों गिड कर और जल और काष्ठादि इनों करके जो पुरुष अपणे आपनू हत करताहै और राजा और ब्राह्मण और वडे वडे सर्प ॥ १ ॥ और शृंगांवाले और दाडांवाले और नखांवाले और सर्प बिजली इनों करके जो हत होआ है और तिसी प्रकार संकर जातितें उत्पन्नजो होआहै इनकों अशौच और जल और अग्नि इह न देवे २ ॥ तिनके स्पर्श अथवा रोदन इनके विषयमें एक १ दिन उपवास करे अर अज्ञानतें उद्वहनादिके विषयमें अर्थात् शवादिके उठाणे विषे सांतपन कृच्छ्रव्रतका आचरण करे ३ अर जान करककरे तेत्रगौके मूत्रके सहित यवांनूं भक्षणकरदा होआ कृच्छ्रव्रत करे अथवा तप्तकृच्छ्र व्रत करे व्रतमें शक्ति न होवे तव एक मास भिक्षा अन्न खावे ।४। कृत्वेति आपेमृत होयेके चुक

उशनाः ॥ प्रायानशनशस्त्राग्निविषोद्बंधभृगूदकैः काष्ठाद्यैश्चात्मनोहंतुर्नृपब्रह्मसरीसृपैः ॥ १ ॥ शृंगिदंष्ट्रिनखिव्यालविद्युताभिहतस्यच तथासंकरजातस्यनाशौचोदकवह्नयः ॥ २ ॥ तत्स्पर्शेयदिवाक्रोशेदिनमेकमभोजनम् अज्ञानोद्वहनादौतुकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ ३ ॥ बुद्धिपूर्वेपुनस्तस्मिन्कृच्छ्रोगोमूत्रयावकः तप्तकृच्छ्रोप्यशक्तौतुमासंभिक्षाशनोपिवा ॥ ४ ॥ कृत्वातुवाहनादीनिप्रायश्चित्तमकुर्वताम् तप्तकृच्छ्रद्वयाच्छुद्धिरेकमेवानुयायिनाम् ॥५॥यस्त्वशेषाःक्रियाःकुर्यात्स्नेहान्मूल्येनवापुनः।भवेत्तस्यपुनस्तप्तकृच्छ्रचांद्रायणोत्तमः ॥ ६ ॥ बृहस्पतिः । विषोद्बंधनशस्त्रेणयस्त्वात्मानंप्रमापयेत् मृतोमेध्येनलिप्तोयोनान्यसंस्कारमर्हति १ ॥ पाशंछित्त्वातुयस्तस्यवोढावह्निप्रदस्तथा सोपिकृच्छ्रेणशुद्ध्येतघातकोपिनराधमः २ ॥

णादि कर्म नूं करके जेडे पुरुष प्रायश्चित्त नूं नहि करदे तिनकीशुद्धि दो २ तप्तकृच्छ्रसें होतीहै अर साथजान वाल्यांकी शुद्धि एक तप्तकृच्छ्रसें होतीहै ॥ ५ ॥ यइति स्नेहतें अथवा मजूरी करके जेडा पुरुष आत्मघातीकी संपूर्ण क्रिया कों करताहै तिसकी शुद्धिके वास्ते तप्तकृच्छ्र और चांद्रायण श्रेष्ठहै ॥ ६ ॥ इसी विषयमें बृहस्पतिजीने कहाहै ॥ विषेति विष और पाश और शस्त्र इनों करके जो पुरुष अपणे आपनूं हत करता है अर अपवित्र वस्तु करके लिप्त होआ होआ जो मृत होआहै सोपुरुष और संस्कारके योग्य नहि अर्थात् मरणानंतर दाहादिसंस्कार उसका नहि करणा किंतुइसीनूं जलविषे प्रवाहदेणा १। पाशमिति तिसके पाश का छेदन करके जो पुरुष तिसनू चुकणे वाला और अग्निके देणे वालाहै सोभी कृच्छ्रव्रत करके शुद्ध होताहै अर तिसके मारणे वाला भी नरांके मध्यमे नीच कृच्छ्रव्रत करके शुद्धहोताहै२

दक्षजीकावाक्यहै ॥ आरूढेति संन्यास मार्गको प्रथम धारण करके पश्चात् विषयांकी अभिलाषा करके तिसतें पतित होआ जो ब्राह्मण है अर चंडालांके दोष करके अपणी जातितें बाहर कीताजो पुरुष है और पाशकरके जो पुरुष मृत होआहै इनांनूं स्पर्श करके चांद्रायण व्रत नूं करे ॥ १ ॥ इसी का अर्थ स्पष्ट कीता है चांडालैरिति चांडालोंने पकड कर जेडा बंधनमै जोडया है सोचांडाल विनिःसृत है अथवा चांडालांके साथ रहकर जो आया है तिसका एह नाम है ॥ और स्मृतिमै इसकी जगा मंडलतें जो बाहर होया ऐसा अर्थ कीता है सुमंतु जीनें कहाहै उद्बंधेति अपरा धी को फांसी देणा

दक्षः ॥ आरूढपतितंविप्रंचांडालाच्चविनिःसृतम् उद्बंधनमृतंचैवस्पृष्ट्वाचां द्रायणंचरेत्१।चांडालैर्गृहीत्वोद्बंधने योजितं चांडालैःसहोषित्वापरागतंवा स्मृत्यंतरेतु मंडलाच्चविनिःसृतमितिपाठः तत्र सजातीयसमूहेनदूषयित्वाव हिष्कृतमित्यर्थः सुमंतुः। उद्बंधनपाशच्छेदनवहनेषु मासं भैक्षभक्षणंत्रिषव णंच स्नायात्। च्यवनः॥ आत्मघातकस्यस्पर्शनेवहने तप्तकृच्छ्रंचरेत्॥ विंश तिर्गावोदक्षिणा ब्राह्मणेषु दद्यात्॥ तथा ॥ शृंगिदंष्ट्रिनखिव्यालविषवह्नि महाजलैः सदूरात्परिहर्तव्यः कुर्वन्क्रीडांमृतस्तुयः॥ १ ॥ नागानांविप्रियं कुर्वन्दग्धश्चाप्यथविद्युता निगृहीताश्चयेराज्ञाचौरदोषेणकुत्रचित्॥ २ ॥

और पाशका छेदनकरणा और तिसको चुकणा इस विषयमें एक १ मास तक भिक्षाका अन्न भक्षण करे और तीन ३ काल स्नान करे ॥ च्यवन जीका वाक्य है आत्मेति आत्मघातीके स्पर्श और चुकणेके विषयमें तप्तकृच्छ्र व्रत का आचरण करे और बीस २० गौआं ब्राह्मणों को दक्षिणादेवे तैसे और कहतेहैं शृंगीति शृगांवाले अर्थात् गोमाहिष्यादि और सिंहादि और नखां वाले और सर्प और अग्नि और वडाजल इनोंकके और क्रीडा करदा होआ जो पुरुष मृत होआहै सो दूरतें हि त्याग करणे योग्यहै ॥ १ ॥ नागेति और सर्पांनू पगडदा होआ जो पुरुष मृत होआहै अथवा विजलीनें जो दग्ध कीता हैऔर चोरीके दोषकरके राजाने जेडे पुरुष पकडे हैं ॥ २ ॥

परेति परस्त्रीके हरनवाले अर कोधतें तिनां स्त्रीआंके पतिआंनें जो हत कीतेहैं अर भिन्न जातिवालोंनें अर संकीर्णजातिवालोंनें अर चांडालादियोंनें हत कीते जो पुरुष हैं ३ ॥ चौरेति चोर और अग्नि और विषइनके देणे वाले जोहैं और पाषंडी और खोटिआंबुद्धिआं वालेजो पुरुषहैं उीर क्रोधतें अतिशयकरके विषउीर अग्नि और शस्त्र और पाश और जल। ४। और पर्वत और वृक्ष इनांके गिडानेवाले नरांके मध्यमें नीच जेडेपुरुष तिनांकर्मांनू करदेहैं अर्थात् विषआदि करके जेडेपुरुष मृतहोवेहैं वा मारतेहैं और जेडे निंदित षिल्पकारि करके उपजीविका करतेहैं और जेडे स्थानांकों भूषण करतेहैं अर्थात् स्थान भूषण करणे करके उपजीविका करतेहैं ॥ ५ मुखइति जेडे कोईक पुरुष मुखे भग हैं अर्थात् जिनांके मुखसें दुर्गंध आवतीहै उीर जेडे नमर्दहैं उीर जेडे नपुंसकहैं अर्थात् जिनांका कीताहोया कार्य्य नाहि सिद्धहुंदा असे जो हैं

परदाराहरंतश्चरोषात्तत्पतिभिर्हताः असमानैस्तुसंकीर्णैश्चांडालाद्यैस्तथाहताः ॥ ३ ॥ चौराग्निविषदाश्चैवपाषण्डाःक्रूरबुद्धयः क्रोधात्प्रायोविषंवह्निंशस्त्रमुद्बंधनंजलम् ॥ ४ ॥ गिरिवृक्षप्रपातांश्च येकुर्वन्तिनराधमाः कुशिल्पजीविनोयेचस्थानालंकारकारिणः ॥ ५ ॥ मुखेभगास्तुयेकेचित्क्लीबप्रायानपुंसकाः ब्रह्मदंडहतायेचयेचवाब्राह्मणैर्हताः ॥ ६ ॥ महापातकिनोयेचपतितास्तेप्रकीर्त्तिताः पतितानांनदाहःस्यान्नांत्येष्टिर्नास्थिसंचयः ॥ ७ ॥ नचास्रुपातःपिंडोवाकार्यंश्राद्धादिकंक्वचित् एतानिपतितानांतुयःकरोतिविमोहितः तप्तकृच्छ्रद्वयेनैवतस्यशुद्धिर्नचान्यथा ॥ ८ ॥ पराशरः ॥ चांडालेनश्वपाकेनगोभिर्विप्रैर्हतोयदा आहिताग्निर्मृतोविप्रोविषेणात्महतोपिवा लौकाग्निनाप्रदग्धव्योमंत्रसंस्कारवर्जितः ॥ १ ॥

उीर जेडे ब्राह्मणांके शापकरके हतहोएहैं उीर जेडे ब्राह्मणांने हतकीतेहैं। ६ ।महेति उीर जेडे महापातकीहैं एह संपूर्णपतितकथन कीतेहैं और इनांपतितांका दाह उीर अंत्येष्टिकर्म उीर अस्थिआंका चुणना ७ ॥ उीर रोदन उीर पिंडदान उीर श्राद्धादिकर्म इनांनूंनकरे पतितांके इना कर्मांको जो पुरुष मोहित होया होया करताहै तिसकी शुद्धि दो २ तप्त कृच्छ्रव्रतकरके होतीहै उीर प्रकार करके नहि होती ॥ पराशरजीका वाकयहै ॥ ८ चंडेति चंडाल और श्वपाक अर्थात् चंडाल भेद उीर गो उीर ब्राह्मण इनांने जो हतकीताहै और विषकरके मृत होआजो अग्निहोत्री ब्राह्मणहै और आपजो हत होआहै अर्थात् आप पाशादि लै करकेजो हतहोआ है मंत्रांकरके संस्कारतें रहित लोककी अग्निकरके इनका दाह करणा हवन वालीअग्नि करके नहिकरणा १

स्पृष्टेति सजातियोंके मध्यमें इसकों जो स्पर्श करणे वाला और चुकणे वाला है सो प्राजापत्य व्रतनूंकरे अर पश्चात् ब्राह्मणांकी शिक्षानूं ग्रहण करे अर्थात् ब्राह्मण जो आज्ञा करें तिसनूंकरे ॥ २ ॥ दग्ध्वेति दाहकरके तिसकी अस्थिआंनू ग्रहण करके पश्चात् बुद्धिमान् पुरुष तिनाकों दुग्धकरके धोवेवे अर पश्चात् हवनवाली अग्नि करके अपणे मंत्रकों पढकर भिन्न २ दाहकरे ॥ ३ ॥ वशिष्ठजीका वचनहै जीवेति जो पुरुष पाश और विष आदिकरके मृत होनेलगे अर मृत नहि होआ जीवतारहाहै सो बारां १२ रात्रकृच्छ्रव्रतनूं करे और तीन ३ रात्र उपवास करे और नित्य हि गिल्ले वस्त्रनूं धारणकरके ॥ १ ॥ अर प्राणांनूं आत्माके विषय रोककरके तीन ३ बार अघमर्षण मंत्रका पठनकरे इसतें उपरंत तिसीविधिकरके गायत्रीकों जपे २

स्पृष्टादग्धाचवोढाचसपिंडेषुचसर्वशः ॥ प्राजापत्यंचरेत्पश्चाद्विप्राणामनुशासनम् ॥ २ ॥ दग्ध्वास्थीनिपुनर्गृह्यक्षीरेणक्षालयेद्बुधः ॥ स्वेनाग्निनापुनर्दाहःस्वमंत्रेणपृथक्पृथक् ॥ ३ ॥ वसिष्ठः ॥ जीवन्नात्मपरित्यागात्कृच्छ्रंद्वादशरात्रकम् ॥ चरेत्त्रिरात्रंचोपवसेन्नित्यंक्लिन्नेनवाससा ॥ १ ॥ प्राणानात्मनिचायम्यत्रिःपठेदघमर्षणम् अथवैतेनकल्पेनगायत्रींपरिवर्त्तयेत् ॥ २ ॥ अपिवाग्निंसमाधायकूष्माण्डैर्जुहुयाद्घृतम् यदन्यन्महापातकेभ्यस्सर्वमेतेनपूयते ॥ ३ ॥ अथवाचामेत् अग्निश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यःपापेभ्यो रक्षंतांयदह्नापापमकार्षमनसावाचाहस्ताभ्यांपद्भ्यामुदरेण शिश्नाअहस्तदवलुम्पतुयत्किंचिदुरितंमयीदमहमापोऽमृतयोनौसत्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहेति ॥ विष्णुः ॥ उद्बंधनमृतस्ययःपाशंछिंद्यात्सप्तरात्रेणकृच्छ्रेण शुद्ध्यति तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यतीति पाठांतरम्

अथवाअग्निनूं समाधानकरके कूष्मांड संज्ञिक मंत्रोंकरके घृतका हवनकरे अर औरभी महापातकोंतें जो पाप होआहै सोभी संपूर्ण इसअनुष्ठान करके नष्टहोताहै ३ । अथवा आचमनकरके अग्निश्चमेति इस मंत्रकरके होमकरे इति ॥ इसमंत्रका अर्थ संध्याके व्याख्यानमे स्पष्टकरके लिखाहै सो उसीजगासें देखलेना । पापांतेंरक्षाहोणी तिसमे प्रार्थनाहै इसमंत्रमे । विष्णुजीकावचन है उद्बंधन करके अर्थात् फांसी लेकरके जोमृतहोआहै तिसके पाशकों जोपुरुष छेदताहै सो सप्तरात्रके कृच्छ्रव्रत करके शुद्ध होताहै । १ । और किसेजगा तप्त कृच्छ्र करके शुद्ध हुंदाहै ऐसा लिखाहै

आत्मेति पाशादिकरके जेडेदेहकों त्यागतेहैं अर्थात् फांसी और विष इत्यादिकरके जो मृत होएहैं तिनाकों स्नानादि पूर्वकभूषण करणे वाला और तिनांके निमित्तरोदनकरणे वाला और संपूर्ण प्रेतके बांधवांके साथरोदन करणे वाला स्नान करके शुद्धहोताहै और प्रेतकेबांधवांके साथ अस्थिसंचयनकों करके साहितवस्त्रांके स्नानकरे तों शुद्धहोताहै जो ब्राह्मणक्षत्री अथवा वैश्य शूद्र शवकेसाथ जावे तब नदीकों प्राप्त होकरके आठ सें अधिक हजार १००८ गायत्रीका जप करें (अर्थ) केवल ब्राह्मण शवके साथ जावे तब आठ से अधिक हजार १००८ गायत्रीका जप करे अर शूद्र किसे शवके साथ गमन करके स्नानकों करे ॥ अर प्रेतके संबंधिआंके साथ रोदन कों करके भी स्नान करके शुद्ध होताहै अर प्रेतके बांधवांके साथ अस्थिसंचयनकों करे तब समेत वस्त्रांके स्नानकों करके शुद्ध होताहै ॥ अथेति इसतें उपरंत अनाशका दि जो व्रत कुरुक्षेत्रादि विषे धारण कीते होए तिनांसें यो हट जाय

आत्मत्यागिनांच संस्कर्त्ता तदश्रुपातकारीच सर्वस्यैवप्रेतस्य तद्बान्धवैःसहा श्रुपातंकृत्वास्नानेवाकृतेऽस्थिसंचयने सचैलस्नानाद्द्विजःशूद्रःप्रेतानुगमनंकृत्वा स्रवन्तीमासाद्यगायत्र्यष्टसहस्रंजपेत्। द्विजःप्रेतानुगमनेष्टाधिकसहस्रम् शूद्रःप्रेतानुगमनंकृत्वास्नानमाचरेत् । तद्बांधवैःसहाश्रुपातंकृत्वास्नानेनशुद्ध्यति। तद्बांधवैःसहास्थिसंचयने कृते सचैलस्नानाच्छुद्ध्यतीत्यन्वयः ॥ अथानाशकादिप्रच्युतप्रायश्चित्तानि ॥ तत्रमार्कण्डेयः ॥ येप्रत्यवसिता विप्राः प्रव्रज्यादिजलाग्नितः अनाशकान्निवृत्तायेवांछंतिगृहमेधिताम् १ ॥ तांश्चारयित्वात्रीन्कृच्छ्रांस्त्रीणिचान्द्रायणानिवा जातकर्मादिसंस्कारैः संस्कृताः शुद्धिभाजनाः ॥ २ ॥ पराशरः ॥ अनाशनान्निवृत्तस्तुचातुर्वर्ण्येव्यवस्थितः चांडालस्सतुविज्ञेयोवर्जनीयःप्रयत्नतः ॥ १ ॥

तिनके प्रायश्चित्तांकों कहतेहैं। तिनांके विषय प्रथम मार्कंडेयजीका वाक्यहै । यइति जो ब्राह्मण संन्यासकर्म और जल और अग्नि इनके विषय मरणके वास्ते प्रथम उद्यत होए हैं अर फेर हट गये हैं और जिनांने इच्छा सें अन्नका त्याग कीता है तिसतें जेडे हट गये हे अर फेर गृहस्थ की इच्छा करतेहैं ॥ १ ॥ तानिति तिनां कों तीन ३ कृच्छ्र व्रत अथवा तीन ३ चांद्रायण व्रत करवाके पश्चात् जात कर्मतें आद लेकर संस्कारां करके संस्कृत कीते होए शुद्ध होतेहैं ॥ २ ॥ पराशर जीका वाक्यहे अनेति अनाशक तें जो हटिआ है और ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य अथवा शूद्र जलादिके विषय मरणके वास्ते प्रथम निश्चय करके फेर जो हट गयाहे सो पुरुष चंडाल कथन कीताहे अर सो यत्न करके दूरतें हि त्यागना चाहिए ॥ १ ॥

एह उनको कथन कीताहै जेडे पुरुष चिर काल पिछे प्रायश्चित्तकों करतेहैं अर जेडे तात्काल प्रायश्चित्तकों करतेहैं तिनको फेर संस्कार नहि करवाणा ॥ पूर्वोक्त हि अर्थ स्पष्ट करके किहाहै इसमें एह अभिप्रायहै कि मरणेवास्ते पिछले कहेहोए हेतुयोंकर्के प्रवृत्ती कहीहै सो जेकरधर्म्म के वास्ते होवे तां पूर्वोक्त दोष जानणा सो किहाहि कि गंगा प्रवाहलेणे कर्के जो मृत होए हैं और कुरुक्षेत्रादिविषे अनशन कर्के और बदरिकाश्रमादिस्थानके समीपजो स्थान तिसमें पर्वतपर आरूढ होकर डिगणेकर्के और उसी स्थानविषे कोइ स्थानहे जिसमे इंधनकी विधिहै तिस कर्केऔर उसी स्थानविषेकोई अग्निकास्थानहै तिस कर्के जो मरणहै सो सुगतिकाहेतुहै इस प्रसिद्धिसें॥और जेकर क्रोध आदिकर्के मरण वास्ते प्रवृत्ति होवे तदतिसते हटणेह दोष नहि जानना

चिरकालंप्रायश्चित्तमकुर्वतोऽवस्थानेएतत्॥ जलेऽग्न्यादौ वा मरणायानिश्चित्यप्रवृत्तःप्रत्यवसितः इयंचपूर्वोक्तहेतुभिर्मरणायप्रवृत्तिर्धर्म्मायचेत्तद्दोषं बोध्यम् ॥ गंगाप्रवाहस्वीकारेण कुरुक्षेत्रादावनशनेन बदरिकाश्रमादिसामीप्यभृगुपातेन तत्रैव स्थानविशेषेणेंधनेन तत्रैवस्थानविशेषेणाग्निना मरणं सुगतिहेतुकमितिप्रसिद्धेः।क्रोधादिनाप्रवृत्तिश्चेत्तदानदोषः आपस्तम्बः।चितिभ्रष्टातुयानारीमोहाद्विचलिताततः प्राजापत्येनशुद्ध्येत्तुतस्माद्वैपापकर्मणः ॥ १ ॥भविष्यत्पुराणम् ॥ आरूढोनैष्ठिकंधर्मं प्रत्यावर्त्तिंव्रजेत्तुयः चांद्रायणंचरेन्मासामितिविद्धिखगाधिप॥ १ ॥ मानस्यांप्रत्यापत्तावेतत् ॥ ❀ अथस्पर्शप्रायश्चित्तानिदक्षः॥पानेमैथुनसंसर्गेतथामूत्रपुरीषयोः।संस्पर्शंयदिगच्छेत्तुशवोदक्यांत्यजैस्सह॥१॥

आपस्तंबजोका वचन है चितीति चिखा उपर चड करके जो स्त्री पीछेसें मोहतें हट गईहै सो तिस पापकर्मतें प्राजापत्यव्रत करके शुद्ध होतीहै ॥ १ ॥ विष्णुजीने भविष्यत्पुराणमें गरुडजीके प्रति कहाहै आरूढइति जो पुरुष संन्यास मार्गके विषय स्थित हो करके पीछेसें गृहस्थ धर्मकों प्राप्तहुआहै सो एक मास पर्यंत चांद्रायण व्रतकोंकरे हे गरुड ऐसेंतूं जान । १ । एह प्रायश्चित्त तब जानना जबमन करके निवृत्त होवे ।❀ अथेति इसतें उपरंतदक्षजी स्पर्शके प्रायश्चित्तांनूं कथन करते हैं पानइति जलादिका पान और मैथुन और मूत्र और पुरीष इनके करणेतें पिछे जब मनुष्य शव और रजस्वला स्त्री और चंडाल इनके साथ स्पर्शनूं करे १ ॥

संवर्त जीने कहाहे संन्येति जो खोटी बुद्धि वाला पुरुष संन्यासकों प्रथम धार कर के पश्चात् निवृत्त होताहे सो श्रमतें रहित होकर अर्थात् श्रमकों न मानकर के ६ मास निरंतर कृच्छ्र व्रतकों करे ॥ १ ॥ पराशरजीका वचन है जलेति जल और अग्नि इनके पतनके विषय और संन्यास और अन्न जलके त्याग व्रतके विषय मरणके वास्ते निश्चयनूं कर्के पश्चात् निवृत्त होए जो पुरुष हैं तिनकी शुद्धि किस प्रकार होवे ॥ १ ॥ तिनकी शुद्धि नूं आपहिं पराशरजी कहतेहैं ब्राह्मेति ब्राह्मणांकी प्रसन्नता कर्के और तीर्थोके सेवन करणे कर्के और सैकडे गौआंके दान कर्के तीनों ३ वर्ण शुद्धहोते हैं ॥ २ ॥ इसीमें यमजी कहतेहैं जलेति जल और अग्नि और पाश और संन्यास और अनाशक अर्थात् अन्न जल

संवर्त्तः ॥ संन्यस्यदुर्मतिःकश्चित्प्रत्यापत्तिंभजेत्तुयः सकुर्यात्कृच्छ्रमश्रांतः षण्मासान्प्रत्यनंतरम् ॥ १ ॥ अश्रांतः श्रममन्यमानोनिरालसो वा प्रत्यनंतरंकृच्छ्रोत्तरकृच्छ्रंयथा ॥ पराशरः ॥ जलाग्निपतनेचैवप्रव्रज्यानशनेतथा अध्यवस्यानिवृत्तानांप्रायश्चित्तंकथंभवेत्॥ ॥ १ ॥ ब्राह्मणानां प्रसादेनतीर्थानुगमनेनचगवांचशतदानेनवर्णाःशुद्ध्यंतिवैत्रयः ॥ २ ॥ यमः ॥ जलाग्न्युद्बंधनभ्रष्टाःप्रव्रज्यानाशकच्युताः विषप्रपतनप्रायशस्त्रघाताश्चयेच्युताः ॥ १ ॥ सर्वेतेप्रत्यवसिताः सर्वलोकविगर्हिताः चान्द्रायणेनशुद्ध्येयुस्तप्तकृच्छ्रद्वयेनवा ॥ २ ॥ असमर्थविषयमेतत् । अंगिराः । यः प्रत्यवसितोविप्रःप्रव्रज्याग्निजलादितः अनाशननिवृत्तस्तुगृहस्थत्वंचिकीर्षति ॥ १ ॥ चारयेत्त्रीणिकृच्छ्राणित्रीणिचांद्रायणानितु जातकर्मादिभिः प्रोक्तंपुनःसंस्कारमर्हति ॥ २ ॥

का त्याग और विषभक्षण और पर्वतादितें पतन और शस्त्र इनके विषय मरणके वास्ते निश्चय कर्के फेर तिनातें निवृत्त होएहैं ॥१॥ एह संपूर्ण प्रत्यवसित हैं और संपूर्ण लोकके विषय निंदितहैं और चांद्रायणव्रत अथवा दो२ तप्त कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होतेहैं ॥ २ ॥ एह असमर्थताका विषयहै २ इसी विषयमें अंगिराजीकाभी वचनहै यइति संन्यास और जल और अग्नि इनके विषय मरणके वास्ते निश्चय करके फेर जो ब्राह्मण निवृत्त होआहे और अनाशनव्रततें जो निवृत्त होआहै अरतिनातें हट कर फेर गृहस्थकी इच्छा करता है ॥ १ ॥ तिस पुरुषकों तीन ३ कृच्छ्र अथवा तीन ३ चांद्रायण कर वाके फेर जातकर्मादि संस्कार कर्मकरवाणे योग्यहै ॥ २ ॥

मूत्रेतितवमूत्रकरणेतेंअनंतर स्पर्शके विषयमें एक१ दिन उपवास करे ऊौर पुरीषके विषयमें दो२दिन ऊौर मैथुनके विषयमे तीन३ दिन ऊौर पानके विषयमे चार४दिन उपवास करे॥२॥चंडालके ष्ठीवनादिके स्पर्शके विषय तात्काल स्नान नूं आपस्तंवजी कथन करेंगे ॥ भुक्तेति भक्षण करके उच्छिष्ट होआ होआ आचमननूं नकरके प्रमादते जद चंडाल अथवा श्वपचके साथ स्पर्शनूं करे तब तात्काल स्नान नूं करे।३। पश्चात् गायत्रीका आठसअधिक हजार १०८ तिसप्रकार द्रुपदादि वह्नयादिमंत्रोंका एकसौ १०० जपकरे ऊौर तीन ३ रात्र उपवास नूं रक्ष कर पीछेसे पंचगव्यके पीनेकरके शुद्ध होताहै॥४॥शातातपने भी कहाहै उच्छिष्टइति उच्छिष्ट होआ होआ ब्राह्मण जद

दिनमेकंचरेन्मूत्रेपुरीषेतुदिनद्वयम् दिनत्रयंमैथुनेस्यात्पानेतुस्याच्चतुष्टयम् ॥ २ ॥ चांडालष्ठीवनादिस्पर्शे सद्यःस्नानंवक्ष्यत्यापस्तंवः भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतश्चांडालैःश्वपचेनवा प्रमादात्स्पर्शनंगच्छेत्तत्रकुर्याद्विशोधनम् ॥ ३ ॥ गायत्र्यष्टसहस्रंतुद्रुपदानांशतंतथा ॥ त्रिरात्रोपोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ ४ ॥ शातातपः ॥ उच्छिष्टस्तुस्पृशेद्विप्रश्चांडालंचेत्कथंचन ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टस्तु संस्पृश्यद्विजस्सांतपनंचरेत् ॥ अधोच्छिष्टस्त्रिरात्रांतेपंचगव्येनशुध्यति ॥ १ ॥ भुक्तोच्छिष्ट ऊर्ध्वोच्छिष्टः उत्सृष्टमूत्रपुरीषःअधउच्छिष्टः ॥ उशनाः ॥ चांडालश्वपचैःस्पृष्टोविण्मूत्रेकुरुतेद्विजः त्रिरात्रेणविशुद्ध्येत्तुभुक्तोच्छिष्टः षडाचरेत् ॥ १ ॥

कदाचित् चंडाल नूं स्पर्शकरे॥ऊर्ध्वोच्छिष्ट होआ होआ ब्राह्मण चंडाल नूं स्पर्श करे तव सांतपन व्रतका आचरण करे अर जव अधोच्छिष्ट होकर चंडालनूं स्पर्श करे तव पंचगव्यकेपान करके ऊौर तीन ३ आचमन करेतो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अन्ननूं भक्षण करके ऊर्ध्वोच्छिष्ट होताहै अर मूत्र ऊौर पुरीष नूं त्याग करके अध उच्छिष्ट होताहै एह इनका भेद है । उशनसजी का वचन है चांडेति चांडाल ऊौर श्वपच इनकरके स्पर्श कीता होआ ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य जब विष्टा ऊौर मूत्रकों त्यागता है तब तीन ३ रात्रकरके शुद्ध होता है अरभुक्तोच्छिष्ट क्याभोजनकेपीछे जेकर इनके साथ स्पर्शकरे तां छे ६ रात्र करके शुद्ध होता है॥ १

व्याघ्रजीका वाक्य है चंडेति जो पुरुष चंडालके जल करके स्पर्श करताहै सो स्नान करके शुद्ध होताहै उच्छिष्ट जब चंडालके जलकरके स्पर्शवाळाहोवे तब तीन३ रात्र व्रत करके शुद्ध होताहै १ ॥ कश्यपजीने कहाहै श्वेति कुत्ता और सूर और निंदित और चंडाल और मदिराका भांडा और ऋतुवाली स्त्री इनांकों जब उच्छिष्ट होआ होआ स्पर्श करे तब कृच्छ्रसांतपनव्रत करे ॥ १ ॥ एह प्रायश्चित्त कामतें अभ्यासके विषयमे जानना क्योंकि अकामकें विषयमें थोडा प्रायश्चित्त कथन करणेंतें ॥ तिस प्रकार वृद्धशातातपजीने कहाहै उच्छिष्टेति ॥ २ ॥ उच्छिष्ट होआ ब्राह्मण मदिरा और शूद्र और कुत्ता और जो अपवित्रवस्तु हैं इनांनूं

व्याघ्रः॥ चंडालोदकसंस्पृष्टः स्नानेनसविशुद्ध्यति उच्छिष्टस्तेनसंस्पृष्टस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति १ कश्यपः॥श्वसूकरांत्यचंडालमद्यभांडरजस्वलाःयद्युच्छिष्टः स्पृशेत्तत्कृच्छ्रसांतपनंचरेत्१ एतत्कामतोभ्यासे मद्यंसुराअन्यत्राल्पप्रायश्चित्तस्योक्तत्वात् तथाचवृद्धशातातपः॥उच्छिष्टः संस्पृशेद्विप्रोमद्यंशूद्रंशुनोऽशुचीन्अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १ आपस्तम्बः॥भुक्तोच्छिष्टोंत्यजैःस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् अधोच्छिष्टेस्मृतः पादःपादआचमनेतथा १ अधोच्छिष्टोवर्त्तमानभोजनः भोजनसमयेआचमनसमयेवायदाऽधोच्छिष्टोभवेत्तदेदंप्रा एकवृक्षेसमारूढौचांडालब्राह्मणौयदि फलंभक्षयतस्तत्रप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ २ ॥

जब स्पर्श करे तब एक दिनरात्र उपवास को रखकरके पश्चात् पंचगव्य के पीनेसें शुद्ध होता है ॥ १ ॥ आपस्तंबकावाक्यहै भुक्तेति अन्ननूं भक्षणकरके उच्छिष्टहोआ चंडालां केसाथ स्पर्श करे तब प्राजापत्यव्रतनूं करे अर भोजनकालविषय और आचमन काल विषय जब अधोच्छिष्ट होवे तब प्राजापत्यव्रतका एक १ पाद करे अर्थात् चौथाहि रसा करे ॥ १ ॥ और कथनकरतेहैं(प्रश्न)एकेति एक वृक्षके विषय स्थित होए होए चांडाल और ब्राह्मण जब फल कों भक्षण करें तब तिसकी शुद्धि किस प्रकार होवे २ (उत्तर)इसकी शुद्धिनूं आपहि आपस्तंबजी कहतेहैं

ब्राह्मेति अपने पापनू ब्राह्मणांनूं द सकरके सहित वस्त्रांके स्नान करे और एक दिन रात्र उपवासनू करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ इसमें व्यवधान करके अर्थात् दूरकर्के और अव्यवधानकर्के क्यासमीपकर्के त्रयरात्र अर एक रात्रका व्रतग्रहण करणा बुद्धिकेविषयमें एह प्रायश्चित्त जानना ॥ अर अज्ञानके विषयमें ब्रह्म पुराणमें कहाहै विप्रइति ब्राह्मण चंडालके सहित एक जिस वृक्षके विषय अज्ञानतें फलनूं भक्षण करे तब अघमर्षणा नूजपे १ ॥ सो जप पूर्वोक्त वचनसे तीनवार जलविषे निमग्न होकर करणाचाहिए ॥ एकेति जद ब्राह्मण चंडालके साथ वृक्षकी एक शाखाके विषें स्थित होआ होआ फलांनू भक्षणकरे तब तीन ३ रात्र प्रायश्चित्तहै अर पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होताहै इसमे समीपताके

ब्राह्मणान्समनुज्ञाप्यसवासाःस्नानमाचरेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्ये नशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ अत्राग्रिमश्लोकेच व्यवधानसंनिधानाभ्यामेकरात्र त्रिरात्रे ॥ मतिपूर्वेचैतत् अमतिपूर्वेतु ब्रह्मपुराणे विप्रश्चांडालसहितोयत्र कस्मिन्वनस्पतौ ॥ अज्ञानात्फलंभुंक्तेचेत्तत्राघमर्षणम् ॥ १ ॥ एकशा खांसमारूढःफलान्यश्नात्यसौयदि प्रायश्चित्तंत्रिरात्रंस्यात्पंचगव्येनशुध्य ति ॥ २ ॥ चांडालेनगृहीतंयस्त्वज्ञानादुदकंपिबेत् तत्रशुद्धिंविजानीया त्प्राजापत्येननित्यशः ॥ ३ ॥ भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतोह्यमेध्यंयदिसंस्पृशेत् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुध्यति ॥ ४ ॥ बृहस्पतिः ॥ उच्छिष्टोच्छिष्ट संस्पृष्टःशुनाशूद्रेणवाद्विजः कृत्वोपवासंनक्तंचपंचगव्येनशुध्यति १ ॥

विषय तीन ३ रात्र प्रायश्चित्त जानना ॥ २ ॥ और कहतेहैं चांडेति जो पुरुष चंडाल कर्के ग्रहण कीते होए जलनू अज्ञानसें पानकरे तिसकी शुद्धि प्राजापत्य व्रत करके जाननी चाहिए । ३ । भुक्तेति भुक्तोच्छिष्ट अथवा अनाचांत अर्थात् आचमन नूं न करके अपवित्र वस्तुनू जद स्पर्शकरे तब एक दिनरात्र उपवासनू रक्ष करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ बृहस्पतिजीने कहा है । उच्छिष्टेति ॥ ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य उच्छिष्ट करके उच्छिष्ट स्पर्शकीताहोआ अर्थात् जूठे कर्के जूठाछोताहोया पश्चात् कुत्ता अथवाशूद्र इनके साथ स्पर्श नू करे तब उपवास अथवा नक्त व्रत नू करके पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होता है ॥ १ ॥

एहप्रायश्चित्त इच्छाके विषयमें है ॥ अकामके विषयमें छागलेयजीने कहाहै ॥ उच्छीति उच्छिष्टकर्के उच्छिष्ट स्पर्शकीता होआ स्नाननू करे और जब स्नानकर रहे और फेर उच्छिष्ट करकें स्पर्श करे तब प्राजापत्य व्रतनू करे ॥ १ ॥ संवर्त्त जीका वाक्यहै ॥ कृतेति त्यागया है मूत्र और पुरीष जिसने अर्थात् अथ उच्छिष्ट अथवाभुक्तोच्छिष्ट ब्राह्मण अथवाक्षत्री अथवा वैश्यजद कुत्ता और चंडाल इन करके स्पर्श करे तब प्रथम स्नान करके देवीका एकहजार १००० जप करे अर्थात् गायत्रीका जप करे १ कर्मेति लुहार और धोबा और घुमार और झीवर और नट इनांकरके उच्छिष्ट जद स्पर्श करे तब एक रात्रजल पानकरे और जब लुहारादि उ

कामकारविषयमेतत् ॥ अकामतस्तुछागलेयोदितम् । उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टंस्नानंयेषुविधीयते तेनैवोच्छिष्टसंस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् १ संवर्त्तः कृतमूत्रपुरीषोवाभुक्तोच्छिष्टोथवाद्विजः श्वादिस्पर्शेजपेद्देव्याःसहस्त्रंस्नानपूर्वकमिति १ तेनस्नातेनपुनरुच्छिष्टःसंस्पृष्टश्चेत्तदाप्राजापत्यमित्यर्थः कर्मारंरजकंवेनंधीवरंनटमेवच एभिःस्पृष्टस्तथोच्छिष्टएकरात्रंपयःपिवेत् १ ब्राह्मणाद्वैश्यकन्यायांजातोम्बष्ठः ब्राह्मण्यांविशोजातोवैदेहकः वैदेहकादम्बष्ठ्यांजातोवेनः संकरजातीयः ॥ तैरुच्छिष्टैस्त्रिरात्रंस्याद्घृतं प्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ भुंजानेनतुविप्रेणस्पृष्टायदिरजस्वला ॥ शिशुकृच्छ्रेणशुद्ध्येत्तुप्राणायामशतेनच ॥ २ ॥ आपस्तंबः ॥ उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टोविशोचंस्तुद्विजोत्तमः ॥ उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १॥ चांडालादिविषयमेतत् ॥

च्छिष्टहोन तिनकरके स्पर्शकरे तबतीन ३ रात्रजलपान करे पश्चात् घृत नू भक्षणकरके शुद्धहोताहै १ भुंजेति ॥ भोजनकरदे होए ब्राह्मणने रजस्वला स्त्री जद स्पर्श करी तब शिशुकृच्छ्र व्रत अथवा सौ १०प्राणायाम करके शुद्धहोता है ॥ २ ॥ आपस्तंबजीका वचनहै ॥ उच्छिष्टइति विशोचन्‌क्या विशेष करके शोक कर्त्ताहोया ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य इनकेमध्यमें श्रेष्ठ उच्छिष्ट चंडालनें जद स्पर्श कारिए तबएक १ रात्र उपवास रक्षा करके पश्चात् पंचगव्य करके शुद्ध होताहै १ चंडालादिका एहविषयहै

हारीत जीका वाक्यहै ॥ महेति ब्रह्महत्यादि पाप नू करण वालेके साथ स्पर्श होवे तब स्नानमात्र करें जब चंडालादिके साथ स्पर्श कीता होआ फेर चंडालादिके साथस्पर्श करे तब ब्रह्मकूर्च करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और कहते हैं त्रीति तीन ३ रात्र अथवा एक १ रात्र जो पुरुष अन्न नू न भक्षण करदा होआ अर पंच गव्य नू भक्षण करदा होआ इच्छीतरां ओंकार नू जपे सो भी शुद्धि नू प्राप्तहोताहै अर्थात् शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ कृतेति मूत्र अथवा पुरीष इनके त्यागयां होआं अथवा भुक्तोच्छिष्ट ब्राह्मण और क्षत्री अथवा वैश्य जब कुत्ता और चंडाल इत्यादि कर्के स्पर्श करे तब स्नान नू करके पश्चात् हजार गायत्री काजपकरे ॥ ३ ॥ आपस्तंबजीनेकहाहै विप्रइति जब उच्छिष्ट ब्राह्मणकेसाथ कदाचित् ब्राह्मण स्पर्श करे तब आचमनकर्के शुद्ध होताहै एह आंगिरसजीने कहाहै ॥ १ ॥ और कथन करतेहैं

हारीतः महापातकिसंस्पर्शेस्नानमेवविधीयते संस्पृष्टस्तुयदास्पृष्टोब्रह्मकूर्चेनशुद्धयति १ स्पर्शानंतरंपुनः स्पृष्टइत्यर्थः त्रिरात्रमेकरात्रंवायोनश्नन्पंचगव्यभुक् जपेच्चप्रणवंसम्यगेवंशुद्धिमवाप्नुयात् २ कृतमूत्रपुरीषोवाभुक्तोच्छिष्टोथवाद्विजः श्वादिस्पृष्टोजपेद्देव्याः सहस्रंस्नानपूर्वकम् ३ देव्यागायत्र्याः आपस्तंवः विप्रोविप्रेणसंस्पृष्टउच्छिष्टेनकथंचन आचम्यवैतुशुद्धःस्यादित्यांगिरसभाषितम् १ उदक्यास्पृष्टउच्छिष्टोविड्वराहश्वकुक्कुटैःकाकमार्जाररुज्याद्भिरुपवासेनशुद्धयति २ येनकेनचिदुच्छिष्टोह्यमेध्यंयदिसंस्पृशेत् अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्येनशुद्धयति ३ छागलेयः ॥ उच्छिष्टःसंस्पृशेद्विप्रोमद्यशूद्रशुनोशुचीन् अहोरात्रोपितःस्नात्वापंचगव्येनशुद्धयति १ उच्छिष्टःस्पृष्टआचामेदुच्छिष्टेनस्वजातिना नक्तेनचोपवासेनक्षत्रविट्स्पर्शनेक्रमात् ॥ २ ॥

उदेति रजस्वलास्त्री और वैश्य औरग्राम्य सूकर और कुत्ता और कुकुड और काक और बिल्ला और गिरजादि इनकरके जद उच्छिष्ट स्पर्श करे तब एक १ उपवासकर्के शुद्ध होताहै २ ॥ येनेति जिस किसे वस्तु करके उच्छिष्ट होआ पुरुष अपवित्र वस्तु नू जद स्पर्श करे तब एक १दिन रात्र उपवास रक्षकर्के पश्चात् पंचगव्य कर्के शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ छागलेयजीकावाक्यहै उच्छिष्टइति उच्छिष्ट ब्राह्मण मदिरा और शूद्र और कुत्ताऔर अपवित्र वस्तु इनांनू जद स्पर्श करे तबएक दिनरात्र उपवास नू रक्षकर्के पश्चात् स्नान करे फेर पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होजाताहै ॥ १ ॥ उच्छिष्टइति उच्छिष्ट सजातिकरके उच्छिष्ट पुरुष जब स्पर्शकारिए तब आचमन कर्के शुद्ध होताहै अर जब उच्छिष्ट क्षत्री कर्के ब्राह्मण स्पर्शकरे तब नक्तव्रतकर्केशुद्ध होताहै अर जद उच्छिष्ट वैश्य कर्के ब्राह्मण स्पर्श करे तब उपवास करके शुद्धहोताहै ॥ २ ॥

इसोमे शातातपजीका वाक्यहै जो ब्राह्मण जेकर चांडालकी छाया विषे आजावे तद तिसकी शुद्धिवास्तेस्नान और घृतप्राशन किहाहै । १ । और जब ब्राह्मण चांडालादिने हस्थलए काष्ठ कक अथवा वस्त्रकर्के स्पृष्ट क्या छोता होवे तद अंगांनु धो कर्के आचमनकरे और जेकर उह जूठा भीया तद रात्रि भोजनका त्यागभी करे । २ । औपकायन ऋषिका वाक्यहै अस्पृश्य जो चांडालादि तिनांके साथ व्यवधानसें वेडी आदिकर्के तरणेकी इच्छावाला होया होया जावेतद हस्थ और पाद जलविषपारक्षे परंतु साक्षात् स्पर्श नकरे तां उसको दोष नहि ॥ १ ॥ शातातपजी का वचनहै कापालिक जो हैं पाषंडी तिनके साथ जब ब्राह्मणादि स्पर्श करे तद विधि पूर्वक स्नानकर्के १०० इकसउ प्राणायामकरे और तप्तघृतकापानकरे तां शुद्ध हुंदाहै। १ । षट्त्रिंशन्मत

शातातपः । यस्तुछायांश्वपाकस्यब्राह्मणोप्यधिगच्छति तत्रस्नानंतुतस्यैवघृ तप्राशश्चशोधनम् ॥ १ ॥ अंत्यजैर्हस्तकाष्ठेनवाससास्पृष्टएवच प्रक्षाल्यां गंतदाचामेदुच्छिष्टस्तुनिशांक्षिपेत् ॥ २ ॥ औपकायनः । अस्पृश्येनसहैकां तेतरन्नौसंक्रमादिभिः निदध्यादप्सुपाण्यादीन्नदुष्येत्तेनचास्पृशन् ॥१ ॥ शातातपः ॥ कापालिकानांसंस्पर्शेस्नानंकृत्वायथाविधि प्राणायामशतंकृ त्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ षट्त्रिंशन्मते ॥ बौद्धान्पाशुपतांश्चैवलो कायतिकनास्तिकान् विकर्म्मस्थान्द्विजान्स्पृष्ट्वासचैलोजलमाविशेत् ॥ १ ॥ मनुः ॥ दिवाकीर्त्तिमुदक्यांचपतितंसूतिकांतथा शवंतत्स्पर्शिनंचैव स्पृष्ट्वास्नानंसमाचरेत् ॥ १ ॥ दिवाकीर्त्तिश्चाण्डालः ॥ एतदकामतः तथाचबृहस्पतिः ॥ दिवाकीर्त्तिंचितियूपंपतितंचरजस्वलां स्पृष्ट्वाप्रमाद तोविप्रः स्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥ १ ॥

जो३६ छत्री ऋषियों ने कठे होकर्के वनायाहै तिसमै लिखयाहे । वाविंति बौद्ध नास्तिक लोक और पाशुपत पशुपतिजीकेमतवाले और लोकायतिकएभी तिन्हांकेमतमैमिलतेहैं और नास्ति क और विरुद्ध कर्म्मवाले जो त्रयवर्ण इनको स्पर्शकर्के सहित वस्त्रांके जलमै प्रवेशकरे । १ । मनु जी कहतेहैं दिवाकीर्त्ति इसजगा चांडालजानणा और रजस्वलास्त्री और पतित और सूतिकाक्या प्रसूतास्त्री और शव क्या मृतदेह और तिसके स्पर्श करण वाला इनका स्पर्शकर्के स्नानकरे १ ॥ इह प्रायश्चित्त अकामते कीते होए पापविषे जानणा। सोई बृहस्पति जी कहतेहैं दिवेति चांडाल और चिता शवस्थट्वा और यूप जिसस्तंभके साथ पशुको बांध कर्के मारतेहैं और पतित और रजस्वला इनांको जेकर प्रमादसे ब्राह्मण स्पर्श करे तां स्नान कर्के शुद्ध होताहै ॥ १ ॥

और कामनाकर्के इसकोंजो कर्त्ताहै तिसवास्तेभी बृहस्पतिजो कहतेहैं पततीति पतित और सूतिका और नीच और शव इनका कामनाते दर्शनकरे तां स्नानकर्के और पवित्रवस्तुस्पर्शते अनंतर घृतको प्राशनकरे तो शुद्धहोताहै ॥ १ ॥ और शव इसजगा मृत मनुष्यका जानणा जेकर कुत्ते आदि मृत होए के साथ स्पर्शादि होवे तां अधिककल्पना करणी अर्थात् गायत्रीका जपभी साथ करणा और मृत चांडालके स्पर्श विषे आगे प्रायश्चित्त आवेगा ॥ और मोल लेकर मुडदा उठाणे वाले जो पुरुषहैं तिनांको प्राजापत्य कराणा परंतु तिसके स्पर्श विषे गायत्रीका जपभीकराणा ॥ आगेकहणा जो वाक्य तिसतेंइहबहुतवार करणेमें जानना ॥ और एकवारकरणेमें मार्कण्डेयपुराण विषे वचनहै अभोज्येति अभोज्य और सूतिका और खंडक्या नपुंसक और मा

कामतोपिसएव पतितंसूतिकामंत्यंशवंस्पृष्ट्वातुकामतःस्नात्वाचैवशुभंस्पृष्ट्वा घृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ १ ॥ शवेति मृतमनुष्यशवस्पर्शे मृतश्वादिस्पर्शेत्वधिकंकल्प्यम् मृतचांडालस्पर्शेवक्ष्यते मूल्येनशवहारकाणां प्राजापत्यं। तत्स्पर्शेगायत्रीजपोपिवक्ष्यमाणवाक्यात् ॥ एतच्चाभ्यासेसकृद्विषये मार्कण्डेयपुराणे अभोज्यसूतिकाखण्डुमार्जाराखुश्वकुकुटान् पतितापविद्धचांडालमृतहारांश्चधर्म्मवित् संस्पृश्यशुद्ध्यति स्नानादुदक्याग्रामसूकरौ ॥ १ ॥ कापालिकानांस्वरूपं यथा नरास्थिमालाकृतभूरिभूषणः श्मशानवासीनृकपालभोजनः पश्यामियोगांजनशुद्धदर्शनोजगन्मिथोभिन्नमभिन्नमीश्वरादिति॥१॥अभोज्यारजकादयः अपविद्धोवहिष्कृतः मृतहारोमूल्येनशवहारकः मार्जारोवनमार्जारःस्नानेविशेषमाहगार्ग्यः

जार क्या बिल्ला और चूहा औरकुत्ता औरकुक्कुट और पतित और अपविद्ध और चांडाल और मृतके उठाणेवाला और रजस्वला औरग्रामशूकरइनांके साथधर्म्मवेत्तापुरुष स्पर्शकरेतां स्नानतें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ कापालिकादियोंका स्वरूपकहतेहैं नरेति मनुष्यकी हड्डिओंकीमालाकर्के जो भूषित होवे और श्मशानवासी और नृकपाल जो मनुष्यके मस्तककी हड्डी तिसविषे भोजन करे और कहे किजगत् ईश्वरसें भिन्नहै और अभिन्नभी है ऐसे मैं देखताहुं ऐसे योगरूपी अंजन कर्के शुद्धहै दर्शन जिसका ऐसे का नाम कापालिकहै ॥ १ ॥ अभोज्यनाम रजकादिका है अपविद्ध नाम उसका है जो लोकसे बाहरनिकाल्याहै और मृतहार वोहै जो मोल लेके मुडदेकों उठाताहै और मार्जार इसजगा बनका बिल्ला ग्रहण करणा ॥ स्नानमे विशेष गार्ग्यजी कहतेहैं ॥

क्रव्येति कच्चे मासनूं भक्षणे वाला जीव अर्थात् गिरझ काकादि घोडा और गधा और ऊट इनके साथ जद व्यवधान करके स्पर्श करे तव वस्त्रांतें रहित अथवा वस्त्रांके सहित स्नाननूं करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ जव जानके स्पर्श करे तवसहित वस्त्रांके स्नानकरे अर जव जानके न करे तव वस्त्रांतेंरहित स्नान करे ॥ और कथन करते हैं । शूद्रमिति शूद्र और मलाह इनांनूं स्पर्श करके ब्राह्मण अथवा क्षत्री अथवा वैश्य आचमनहि करके शुद्ध होजाताहै अर सूर्यका दर्शन अथवा स्नान अथवा प्राणायाम अथवा तपका वल अथवा गायत्र्यादिका जप इनकरके भी सो प्रायश्चित्तहो जाताहै ॥ २ ॥ जो पुरुष स्नानमें अशक है तिसकों शूद्रके स्पर्शमें आचमनही कहाहै अर समर्थकों स्नानहि कहाहै इस कारणतें और किसे स्मृतिकाभी वाक्यहै ॥ एडेति ग्रामका सूर और कुकड और काक और कुत्ता और शूद्र और चांडालइनांनूं

क्रव्यादश्वखरोष्ट्रैश्चस्पर्शेऽव्यवहितेद्विजः ॥ अचैलंवासचैलंवास्नानंकृत्वाविशुध्यति ।१ । सचैलंमतिपूर्वेऽन्यत्राचैलम् शूद्रंस्पृष्ट्वानिषादंचशुध्येदाचमनाद्द्विजः तद्वनिदर्शनस्नानप्राणायामतपोवलात् । २ । तत्प्रायश्चित्तं हि इनस्यसूर्य्यस्यदर्शनेनस्नानेनप्राणायामेनतपोवलेन गायत्र्यादिनावा भवति स्नानासमर्थस्यशूद्रस्पर्शनेआचमनम् समर्थस्यतु स्नानमेव अतएवस्मृत्यन्तरम् । एडकंकुक्कुटंकाकंश्वशूद्रांत्यावसायिनःदृष्ट्वैतान्नाचरेत्कर्म्म स्पृष्ट्वैतान्स्नानमाचरेदिति १ एतान्दृष्ट्वाकर्म्मनाचरेत्किंतुआचम्याचरेदित्यर्थः॥ यद्वा दृष्ट्वैतानाचमेत्प्राज्ञइतिपाठान्तरम् यद्वा सच्छूद्रस्पर्शेआचमनमसच्छूद्रस्पर्शेस्नानम् ॥ एडकोग्राम्यशूकरः॥ वृद्धयाज्ञवल्क्यः॥चांडालपुस्कसम्लेच्छभिल्लकापालिपारदान् उपपातकिनश्चैवस्पृष्ट्वास्नानंसमाचरेत् ॥ संवर्त्तः ॥ कैवर्त्तमृगयुव्याधसौरशाकुनकानपिरजकंचतथास्पृष्ट्वास्नात्वैवाशनमाचरेत् ॥ १ ॥

देख करके कर्मनूं न करे क्या करे आचमन नूं करके कर्मनूं करे अर इनांनूं स्पर्श करके स्नाननूं करे ॥ १ ॥ एतान् इत्यादि पद करके इसीका हि अर्थ स्पष्ट कीताहै और भीहै क्या श्रेष्ठशूद्रके स्पर्शमें आचमन करे असत् शूद्रके स्पर्शमें स्नान करे इति ॥ वृद्धयाज्ञवल्क्यजीने कहा है ॥ चांडेति । चंडाल और चांडाल भेद और म्लेछ और भील और सर्वंगी और परलोके गमन करणे वाला पुरुष (पारदान्) इसजगा (रा) कालोपसमझणा अथवा पारलघाणे वाला और गोवधादि पापके करणवाला पुरुष इनांनूं स्पर्श करके स्नाननूं करे ॥ १ ॥ संवर्त्त जीका वचनहै । कैवेति झीवर और मृगोंके मारण वाला पुरुष और फंधक और वावुरीआ और पाक्षिहंता अर्थात् माछी और धोवा इनांनूं स्पर्शकरके पश्चात्स्नानकरके भोजनकरे १ ॥

वृद्धशातातपजी विशेषकहतेहैं चांडालमिति चांडाल और पतित और व्यंगक्या काणादि और उन्मत्त मदिरापानादि करके औरशव और अंत्यज और प्रसव करवाणे वाली और प्रसूता स्त्री और रजस्वला ॥ १ ॥ और कुत्ते आदलेके जो पशु हैं इनांको जेकर कोई स्पर्शकरे तां वस्त्रांके साथ शिर तक स्नान करके शुद्ध हुंदाहै ॥ २ ॥ जेडी प्रसूतिकों करावे सोभी सूतिका कहीदी है॥ जेकर अशुद्धांको आपभी अशुद्ध होकर स्पर्श करे तद एक उपवास करके शुद्ध हुंदाहै और जेकर भोजनतें उपरंत स्पर्श करे तां त्रिरात्र व्रत करके शुद्ध हुंदाहै॥ ३ ॥ हारीतजीके मतमें विशेषहै चांडालोंके साथ संयोगके होयां २ प्राजापत्य व्रतकरके शुद्ध होताहै परंतु क्या करके १०

वृद्धशातातपः ॥ चांडालंपतितंव्यंगमुन्मत्तंशवमंत्यजम् ॥ सूतिकांसूतिकां नारीं रजसाचपरिप्लुताम् १ श्वकुक्कुटवराहांश्चग्राम्यान्संस्पृश्यमानवःसचैलः साशिरःस्नात्वातदानीमेवशुध्यति २ प्रसवंयाकारयतिसासूतिका॥ अशुद्धान्स्वयमप्येतानशुद्धश्चयदिस्पृशेत् विशुद्ध्यत्युपवासेनत्रिरात्रेणोत्तरेणतु उत्तरेणभुक्तोच्छिष्टेनेत्यर्थः हारीतः ॥ चांडालैःसहसंयोगेप्राजापत्येन शुद्ध्यति विप्रान्दशवरान् कृत्वातैरनुज्ञाप्यशासनात् दशविप्रान् वरान्सभ्यान्कृत्वा शासनात्शास्त्राद्धेतोःतैर्दशभिरनुज्ञाप्यआत्मानमनु शास्येत्यर्थःअथवा आढकस्यप्रमाणंतु कुर्याद्गोमयकर्दमम् तत्रास्थित्वात्वहोरात्रं वायुभक्षःसमाहितः ॥ १ ॥ वालकृच्छ्रंततः कुर्याद्गोष्टेवसतुसर्वथा सकेशवपनं कुर्यात्परमां शुद्धिमृच्छतीत्येववालकृच्छ्रम् ॥ २ ॥

दस्सां ब्राह्मणांको सभामें ल्याकरके और शासन जो शास्त्र तिसतें तिनांकरके बोधकरवा करके १ ॥ अथवा प्राजापत्य विषे समर्थ न होवे तां आढक जो द्रोणका चौथा हिस्सा तितने प्रमाणके गोमयका क्यागोएका कर्दम चिक्कड करे तिस विषे एकदिनरात्र स्थित होकरके परंतु वायुके विना और कुछ भक्षण नकरे और समाहित क्यासमाधानहोकर रहे ॥ १ ॥ इस व्रतका नामवालकृच्छ्रहैं । इसकों करे और सर्वथा गोष्टी विषे क्या गौआंके स्थानविषे वसे और सहित केशांके मुंडन करावे अर्थात् सारे देहके वाल दूर करे जोपरम शुद्धिको इच्छा करदाहै। एह वाल कृच्छ्रकाभी स्वरूप दिखायाहै ॥ २ ॥

और जो वृद्धहारीत जीने किहा है कि चांडालादि के साथ यद सबंध होवे तद एक दिन रात अथवा २ दोरात्रं अथवा तीनरात्र अथवा ६ छेदिनका व्रत करे ॥ १ ॥ और ना जाणया होआ चांडाल सत्तरोजतक जब किसे ब्राह्मणादिके घरमे रहे तां तिस चांडालादि संसर्ग पर जिसका वृत्तांत अच्छीतरहसे जाणचुकेहें सो ब्राह्मण धर्मशास्त्री अनुग्रह करें ॥ २ ॥ दधिक्षीर घृत कर्के युक्त गोमूत्रविषे पकाहोआ जवांदा काहडा तिसकों सहित सेवकादि के एक महीना निरंतर भक्षण करदा रहे विनातृप्तिसे जिसकर्के एह व्रतहैं ॥ ३ ॥ सो एह वचन जिसका बहुत संबंधहो चुकाहै तिसपरजानणा ॥ इसीमे पराशरजीका वचन है । रजकीआदिक्या

यत्तुवृद्धहारीतः ॥ चंडालश्वपचानांचसंकरेसमुपस्थिते अहोरात्रंद्विरात्रंवा त्रिरात्रंषडहंस्मृतम् ॥ १ ॥ अविज्ञातस्तुचंडालःसप्ताहंनिवसेद्यदि तस्य ज्ञानोपपन्नस्यविप्राःकुर्य्युरनुग्रहम् ॥ २ ॥ दधिक्षीरघृतैर्युक्तैःकृच्छ्रगोमूत्र यावकं प्राशयेत्सहभृत्यैस्तुमासमेकंनिरंतरमिति ॥ ३ ॥ तस्यचांडाल संसर्गिणोद्विजस्य ज्ञानोपपन्नस्य ज्ञाततत्संसर्गस्य तदतिसंकरेज्ञेयम् ॥ पराशरः । रजकीचर्म्मकारीचलुब्धकीवेणुजीविनी चतुर्वर्णस्यगेहेतुअज्ञाता ह्यधितिष्ठति । १ । ज्ञात्वातुनिष्कृतिंकुर्य्यात्पूर्वोक्तस्यार्द्धमेवतु गृहदाहंनकुर्वीतशेषंसर्वंसमाचरेदिति । २ । अत्रयादृशसंसर्गेयादृशप्रायश्चित्तमुक्तंतदर्द्धमित्यर्थःस्नात्वैवभुंजीतेत्यर्थः । एवंचयद्रजकादिस्पर्शेष्वाचमनं तद्व्याधितादिविषयेद्रष्टव्यम् ॥ षड्त्रिंशन्मते ॥ चांडालशवसंस्पर्शनेकृच्छ्रंकुर्यात् यानशय्यासनेषुचत्रिरात्रेण चांडालशवस्पर्शनइति ॥ चांडालस्यशवत्वमापन्नस्यस्पर्शने इत्यर्थः ॥

धोवण आदिस्त्री चारवर्णके घरविषे नजाणीहोईरहे ॥ १ ॥ तां जबप्रतीतहोवे तब तिस दोषके दूर करणे वास्ते पूर्वोक्त प्रायश्चित्तका अर्द्ध करे और घर दाह नहि करणा होर सभकृत्य करणी २ ॥ परंतु इसमे ऐसा अभिप्रायहै किजैसा जैसा पिच्छे संसर्गकाप्रायश्चित्त किहाहै तिसीका अर्द्ध करणा एह अर्थहै । स्नान कर्के भोजनकरे एह अर्थहै । एवमिति इसीतरहींजो रजकादियोंका स्पर्शकरे सो आचमनकरे एह वचन व्याधिकर्के ग्रसे होएपर जानणा और षट्त्रिंशन्मत विषे कहाहै मृतहोए चांडालके स्पर्शविषें कृच्छ्र करे अर्थात् प्राजापत्यकरे और यान क्या इकट्ठे चांडालसाथ घोडे आदिपर चढना और शय्याविषें और आसनविषें तिससाथ इकट्ठा होवेतां त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥

मृत चांडाल विषें कहकर जीवित चांडाल विषें कहतेहैं कि जीवते चांडालके साथ स्पर्श करे यानादि विषें तां त्रिरात्र व्रतकरकेहि शुद्ध हुंदाहै तथेति तैसें हि व्रणाक्या किसे कारणतें देहविषे शस्त्र लगाणा चांडाल ब्राह्मणादिकों लगावे वा ब्राह्मणादि चांडालकोंलगावे एह अर्थ आगेभी जानणा और बंधन करणा और तैलादिका मलना और विस्रावण क्या दस्तां आदिका कराणा और रुधिरोत्पादन क्या रोग निवृत्ति वास्ते लहु छुडाणा इनां ५ पंजांके होयां होयां १२ बारां रात्रिका प्रायश्चित्त कराणा इसोंमें आपस्तंबजी कहतेहैं येनेति जिस किसे कर्के तैलादिके मर्दन कर्के स्पृष्ट होया चांडाल द्विजातिकों स्पर्शकरे और तैलादि कर्के संस्कृत द्विजादि चांडालकों स्पर्श करे तां १ उपवास कर्के और पंचगव्य कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ तैलकों मलायाहै जिसने सो और वमन जिसको होयासो और दाडीकों स्पष्ट कराणवाला और मैथुन

जीवताचांडालेन सह यानादिषुत्रिरात्रमिति ॥ तथा व्रणबंधनाभ्यंजनाविस्रावणरुधिरोत्पादनेपुकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरेत् ॥ व्रणबंधनादीनांचंडालंप्रतिकरणेचंडालेनात्मनिकरणेएतत् ॥ आपस्तम्बः ॥ येन केनचिदभ्यक्तश्चंडालंयदिसंस्पृशेत् उपवासेनचैकेनपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ येनकेनेति तैलोद्वर्तनादिनाऽभ्यक्तः कृतमर्दनइत्यर्थः ॥ तैलाभ्यक्तस्तथावांतःश्मश्रुकर्मणिमैथुने मूत्रोच्चारंयदाकुर्यादहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ २ ॥ प्रचेताः ॥ स्वकायेचंडालकायादिस्पर्शनेद्विरात्राभोजनाच्छुद्धिः ॥ इदंपरिष्वंगविषयम् ॥ चंडालोयदिकायस्यरक्तमुत्पादयेत्कचित् त्रिरात्रेणविशुद्धिःस्यादेकह्रासेनचोत्तरे ॥ १ ॥ उत्तरेक्षत्रियादौत्रिरात्रादेकैकस्याहोरात्रस्यह्रासः ॥ क्रतुः ॥ चंडालस्योच्छिष्टदानेचंडालनृत्यदर्शने गीतवादित्रश्रवणे भैषज्यक्रियायांच त्रिरात्राभोजनेन शुद्धिः ॥

करणवाला जब स्नानादि शुद्धि विना मूत्रऔर विष्टकोत्यागेतां अहोरात्र कर्के क्या दिनरातकेव्रत कर्के शुद्धहुंदाहै । २ । प्रचेताजीकावचनहै अपणे देहविषें चांडालके देहका स्पर्शहोवे तां दोरात्र तक भोजनकी निवृत्ति कर्के शुद्ध हुंदाहै परंतु एह स्पर्श गलविषें बाहुलगाकर होवे तां द्विरात्र व्रत जानणा ॥ और कहतेहैं कि चांडाल किसे ब्राह्मणके देहतें रक्त निकाले तां तिसकी शुद्धि तिन्ना रातांके व्रत कर्के हुंदाहै और क्षत्रियादिके देहतें निकाले तां एक एक रात्रके घटाणे कर्के जानणा १ जैसें क्षत्रियके देह विषें रक्तनिकाले तां दो२ रात्र औरवैश्यके देहतें निकाले तां एक रात्र और शूद्रके देहतें निकाले तां स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ क्रतुजीकहते हैं चांडाल तांई उच्छिष्ट देणविषे और चांडालकी नृत्य देखणे विषें और तिसके गीतवादित्रके सुणने विषें और तिसकी औषध करणे विषें तिन्नांरात्रांके भोजनके त्याग कर्के शुद्धि हुंदीहै

और कहतेहैं कि अशुचिकों तथा चांडालको देखकरके सूर्यको देखकर और पंद्रां १५ प्राणायाम करकें शुद्ध हुवाहे । अब पराशरजी कथनकरतेहैं श्वेति कूत्ता डूम चंडाल इनांके साथ संभाषणकरे तद ब्राह्मणोंके साथ संभाषण करके अथवा गायत्रीका एकवार जप करके शुद्ध होवाहै । १ । ओर चांडालके साथ शयन करके त्रय ३ रात्रि व्रत करके शुद्ध होताहै और चंडालैकमयीकों प्राप्त होकरके गायत्रीके स्मरणतें शुद्ध होताहै । २ । अब इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं यत्रेति जिस सभाविषेंअथवा पंक्तिविषें चंडालहि एकवधाकेवल होवें सो चंडालैकमयीकहीहै एह सभाका नामहै अथवा चंडालहै एक प्रधान जिस विषे एह अर्थहै अब और प्रकार प्रचेताजी कथन करतेहैं चंडालेति जो चंडालके घरमे प्रवेश करणे विषें और चंडालकें साथ घर विषें अथवा

अशुचिंदृष्ट्वाआदित्यमीक्षेत प्राणायामंकृत्वापंचदशमात्रकम् अशुचिश्चां डालादिः । पराशरः । श्वपाकडोम्बचंडालान्मिथःसंभाषतेयदि द्विजसंभाषणंकुर्यात्सावित्रींवासकृज्जपेत् १ चंडालेनसमंसुप्त्वात्रिरात्रेणविशुध्यति चंडालैकमयींगत्वासावित्रीस्मरणाच्छुचिः ॥ २ ॥ यत्रसभायांपंक्तौवा एकेकेवलाश्चंडालाः सा चंडालैकमयी चंडालएकःप्रधानंयत्रेतिवेत्यर्थः प्रचेताः । चंडालगृहप्रवेशने चंडालेनैवगृहेवृक्षच्छायायांवा सहावस्थानेचंडालएवस्यात् ब्राह्मणानुद्दिष्टंषाण्मासिकंप्रायश्चित्तंकृच्छ्रंवा ब्राह्मणस्य चतुस्त्रिद्व्येकमासाः शेषाणाम् । शेषाःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रःकैवर्तादिश्च एषां यथासंख्यंचतुस्त्रिद्व्येकमासाःकृच्छ्राः

वृक्षच्छाया विषें साथस्थित होणेतें चंडालहि होजाताहै इस विषें ब्राह्मणांको दिखायाहै कि छे ६ महीनें कावत अथवा छे ६ महीने तक कृच्छ्र करे परंतु एह व्रत वो हैकि जो ब्राह्मणांकों उद्दिष्ट न होवे अर्थात् उपवास न होवे किंतु एकभक्तादिविधी होवे सो छे महीने तक करणा किहाहै ॥ और शेषां को चार ४ त्रय ३ दो२ एक १ महीनेका पूर्वोक्त व्रत क्रम करके करें शेष शब्दका अर्थ कहतेहैं शेष जो हैं क्षत्री वैश्य शूद्र झीवरादि अर्थात् शूद्रोंकी अधम जाति एह संपूर्ण क्रम करके चार ४ त्रय ३ दो२ एक १ महीनेंका कृच्छ्र व्रत करें ॥ क्षत्री चार ४ महीनेका वैश्य त्रय ३ महीनेका शूद्र दो२ महीनेका झीवरादि एक १ महीनेका व्रत करें तो शुद्ध होते हैं ॥

उशनाजी कहतेहैं अनिष्टगंध जो विष्टादिकी है तिसके आघ्राण विषे क्या सिंघण विषे और अनिष्ट शब्द जो किसेका किहाहोआ विष्टा मूत्रादिका शब्द तिसके श्रवण विषे और अनिष्टरूप जो गर्दभादिका स्वरूप तिसके दर्शन विषे और अनिष्टवाक्य जो तूंबि छादि भक्षण कर ऐसा वाक्य इसके उदाहरणदेणे विषे सूर्यजीके दर्शनते शुद्धि होतीहै देवलजीका वचनहै चांडालके उपदेश लैणवाला पुरुष प्राजापत्य करे तद शुद्ध हुंदाहै और चांडालों करके बनाया होआ और चांडालों करके सेव्यमान जो कूपहै तिसके सेव नसें द्विजादि त्रिरात्र व्रत करे १ और कहतेहैं दृष्ट्वेति चांडालकों और पतितकों देख करके संध्या काल विषे संध्या वंदनते अनंतर सूर्यजीका दर्शन करे तां शुद्ध हुंदाहै तैसेहि रजस्वला कों देखकरके और विष्टा मूत्रादिकों देख करकेभी सूर्यका दर्शन करे। २। इसमें मनुजीकहतेहैं

उशनाः अनिष्टगंधाद्युपाघ्राणश्रवणदर्शनोदाहरणे आदित्यदर्शनाच्छौचम् अनिष्टानां गंधशब्दरूपवाक्यानामुपाघ्राणश्रवणदर्शनोदाहरणेष्वादित्यदर्शनाच्छुद्धिरित्यर्थः देवलः। चंडालधर्मसंयोगेप्राजापत्यंसमाचरेत् चरेत्रिरात्रंचंडालकूपतीर्थनिषेवणात् १ धर्मस्यसंयोगउपदेशःदृष्ट्वाचंडालपतितौसंध्याकालउपस्थिते ईक्षेतादित्यमुद्यंतंतथोदक्यांमलानिच२ उदक्यां रजस्वलां.मलानिविण्मूत्रादीनिदृष्ट्वाप्यादित्यमीक्षेतेत्यर्थः मनुः। आचम्य प्रयतोनित्यंजपेदशुचिदर्शने सौरान्मंत्रान्यथोत्साहंपावमानीश्चशक्तितः १ अशुचीनां चंडालश्वपचविण्मूत्रादीनांदर्शने आचमनानंतमाकृष्णेत्यादिसूर्यमंत्रान् जपेत् ॥ पराशरः अविज्ञातस्तुचांडालोनिवसेद्यस्यवेश्मनि विज्ञातेतूपसन्नस्याद्द्विजाःकुर्युरनुग्रहम् १ उपसन्नस्येति विज्ञातेसत्युपसन्नस्यपरिषदुपासत्तिंविधायास्थितस्योपरिद्विजाःपरिषदुपसन्नाअनुग्रहं वक्ष्यमाणश्लोकोक्तरीत्याकुर्युरित्यर्थः ॥

आचम्येति जेकर अशुचि वस्तु जो है पूर्वोक्त तिसके दर्शन विषे इंद्रियोंको रोकता होआ आचमन करके नित्यहि सूर्यजीके मंत्रांकोंपढे और पावमानीजो ऋग्वेदके मंत्र तिनांकोभी यथाशक्तिसें जपे। ऐहि अर्थ स्पष्टकरके कहीदाहै अशुचीनामिति अशुचि जोहै चांडाल और श्वपच तिसीका भेद और विष्टामूत्रादि इनांके दर्शन होआं होआं आचमनकरे पीच्छे (आकृष्णेनरजसा) इत्यादि मंत्रांका जपकरे और (उद्वयंतमसस्परिस्वः) इत्यादि उपस्थानके मंत्रांका जपकरे इसमें पराशरजी कहते हैं अवीति अविज्ञात चांडाल क्या नहि जाणयाथाकि एह चांडालहै सो जिसके घरविषे रहे और जद जाणयाजावे कि एह चांडालहि साडेघरमो रैंहदाथा तद उस ऊपर धर्मशास्त्री ब्राह्मण अनुग्रह करें ॥ १ ॥

(उपसन्नस्य) इसका अर्थ कहतेहैं ज्ञानते पीछे सभाकी सेवा कर्के जेहा स्थित होरिहाहै तिसपर प्रायश्चित्तका उपदेशकरें वक्ष्यमाण रीतिसें ● (प्रश्न) सभजगा पापके होआं होआं सभामें जाणा वणदाहै इसजगा वकुखरा कर्के क्यों लिखाहै (उत्तर) रहस्य प्रायश्चित्त विषे सभाकी आज्ञा नहि इसकर्के किहाहै कि इसजगा रहस्यभी करणा होवे तांभी प्रकाश करणा इस अभिप्रायसे लिखाहै उपसन्नस्येति उपदेश का प्रकार कहतेहैं ऋषीति सो धर्म्मशास्त्रके पाठक ब्राह्मण ऋषियोंके मुखसे निकले होए धर्म्मोंकोगायनकरदेहोए तिस पतितका उद्धार करें शास्त्रकर्के कहेहोए कर्म्म कर्के ॥ २ ॥ दहीं कर्के और घृतकर्के और दुग्ध कर्के गोमूत्र विष्ठा निकालकर यवांके काडेको भक्षणकरे जितने घरके लोकहैं सेवकादि तिनके साथ और त्रयकाल स्नानकरे ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तकीहि व्यवस्था

अत्र परिषदुपसत्त्यर्थमुपसन्नस्येत्युक्तम् यद्यपि सर्वत्र पापे परिषदुपसत्तिरभिहिता तथापि रहस्ये परिषदुपसत्तेरननुज्ञानादत्र रहस्यमपिप्रकाशनीयमित्येतदर्थमिदमिति ॥ ऋषिवक्त्रच्युतान्धर्मान्गायंतोधर्मपाठकाः पतंतमुद्धरेयुस्तंशास्त्रदृष्टेनकर्मणा ॥ २ ॥ दध्नाघृतेनक्षीरेणकृच्छ्रंगोमूत्रयावकं भुंजीतसहितोभृत्यैस्त्रिसंध्यमवगाहनम् ॥ ३ ॥ त्र्यहंतुदध्नाभुंजीत सर्पिषातुत्र्यहंततः क्षीरेणतुत्र्यहंभोज्यमेकैकेनपुनस्त्र्यहम् । ४ भावदुष्टंनभुंजीतभोक्तव्यंगोरसप्लुतं तिष्ठेद्दिनानियावंतितावंत्येवसमाचरेत् ५ त्रिपलंतुदधिक्षीरंपलमेकंतुसर्पिषः आकरेतुभवेच्छुद्धिरारकूटेसकांस्यके ६ आकरउत्पत्तिस्थानं सजातिसमूहोमह्यांखननंवा आरकूटोरीतिकम्

कहेहैं त्र्यहमिति तिन्नदिन दहींकेसाथ गोमूत्र यावकका भोजनकरे और त्रयदिन घृतकर्के खावे और त्रयदिनदुग्धकर्के खावे और इसी प्रकार पीछे इनांहि वस्तुयोंके साथ एक २ दिन खावें तो एभीद्वादश दिनका व्रतहोआ । ४ । और भावदुष्ट जो वस्तुहै जैसे तक्रपाकमें पतले दस्तकी भावनाहैं तिसको न भोजनकरे और गोरस जो दहीं तिसकर्के मिले होएका हि भोजन करे परंतु जितने दिन सो चांडाल घराविषे रहाहै तितने दिन इसव्रतको करे ॥ ५ ॥ तिनका परिमाणकहतेहैं त्रीनि तिन्न १ पा दहीं और दुग्ध और १ एकपा घृत इसमर्य्यादासें लए और उसघरमे जितने भांडेहैं पित्तलके और कांस्यके तिनांको शुद्धि आकरमे रक्षणेकर्के जानणी ६ । आकरनाम उत्पत्ति स्थानकाहै तिसविषे अथवा सजातिकासमूह तिसविषे स्थापन करणा अथवा पृथ्वीविषे दब्बदेणा ऊेर आरकूटनाम पित्तलकाहै

अंगिराजी कहतेहैं ॥ कांस्यके भांडेविच चुली नहि करणी और पैर नाहि धोणे जेकर ऐसा करे तां पृथ्वी विच छे ६ महीने तिस कांस्यभाजनकों रखकर पीछे बहुते भांडे विच रखे तां शुद्ध हुंदा है ॥ १ ॥ वस्त्रजेडे उस घर विषे हैं सो जल करके शुद्धकरणे और जे हे मृत्तिकादे भांडेहैं सो सभत्यागदेणे और कुसुंभा १ गुड २ कपाह ३ लून ४ मधु ५ घृत ६ इनाकों दरवाजेविच ल्या रखणा वायुकर्के शुद्ध होणगे इसी तहाँ धान्यभी शुद्ध करणे और घर विषे अग्नि लगाणी तिसके सेक लगणे कर्के घर पवित्र हुंदाहै एह मनुजीका वाक्यहै ॥ ३ और सहित पुत्रके और सहित सेवकांके ब्राह्मणांकों भोजनदेवे और २० गौआं और १ बैल दक्षिणा देवे ॥ ४ ॥ पीछे लेपन और किसेजगा खातकरणे कर्के और होम और जप

अंगिराः ॥ गंडूषंपादशौचंतुनकुर्यात्कांस्यभाजने भूमौनिक्षिप्यषण्मासा न्पुनराकरमादिशेदिति ॥ १ ॥ जलशौचेनवस्त्राणिपरित्यागे नमृण्मयम् कुसुंभगुडकर्पासलवणंमधुसर्पिषी ॥ २ ॥ द्वारिकुर्वी तधान्यानिदद्याद्वेश्मनिपावकम् हुताशज्वालासंस्पृष्टंशुचितन्मनुरब्रवी त् ॥ ३ ॥ सपुत्रःसहभृत्यैश्चकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं गोविंशतिंवृषंचैकंदद्या द्विप्रेषुदक्षिणाम् ४ पुनर्लेपनखातेनहोमजप्येनचैवहि अवधारणेनविप्रा णांतत्रदोषोनविद्यते ॥ ५ ॥ स्वल्पकालसंपर्केएतत् संवर्त्तः ॥ अंत्यजः पतितोवापिनिगूढोयत्रतिष्ठति सम्यग्ज्ञात्वातुकालेनततःकुर्याद्विशोधनम् ॥ १ ॥ चांद्रायणपराकौवाद्विजातीनांविशोधनम् प्राजापत्यंतुशूद्राणां शेषाणामिदमुच्यते ॥ २ ॥ यैस्तत्रभुक्तंपक्वान्नंतेषामुक्तोविधिक्रमः ॥ प्राजापत्यइत्यर्थः ॥ तेषामपिचयैर्भुक्तंकृच्छ्रपादोविधीयते ३ ॥

कर्के ब्राह्मणां के अनुग्रह कर्के तिसविषे दोष नाहि ॥ ५ ॥ परंतु एह प्रायश्चित्त थोडे संबंध विषे है तिसचांडालका संबंध उसमें बहुतहोवे तां तिस वास्ते प्रायश्चित्त होर है ॥ संवर्त्तजी कहतेहैं ॥ अंत्यज क्या चांडाल अथवा पतित जिसके घर छपकर्के रहे और पिच्छे जद मलूम होवे तां इसतहाँ शुद्धि करे। १। चांद्रायण अथवा पराककर्के ब्राह्मणादिकी शुद्धि और शूद्रांकी शुद्धि प्राजापत्य करके है और इनांतेंजो होर हैं आश्रमी लोक तिनके अर्थ भी एहहै ॥ २ ॥ जेडे होर दूसरे घरवाले हैं तिनांकोंभी कहतेहैं कि जिनांने तिस घर विषे पका अ भक्षण कीताहै तिनां वास्ते प्राजापत्य किहाहै और जिनांनें इनके घर अर्थात् चांडलवाले घर खाणा वालेके घर खादाहै तिनकी शुद्धि पादकृच्छ्र कर्केहै ॥ ३ ॥

और कहतेहैं कूपैकेति जेडे एक खूएके जल पान करके दोष वालेहैं अर्थात् जिस खूए विषे चांडालपीदेहैं तिसी खूये विषे जलपान करणवाले । और संसर्ग जो परंपरा संसर्गहै तिसकर्के दोष वाले जो हैं इनसभनांकों उपवास कर्के और पिच्छे पंचगव्य के पान कर्के शुद्ध करे ॥ ४ ॥ जिस स्त्रीका बालक छोटाहोवे और रोगी और गर्भिणी और वृद्ध इनांको नक्त कया नक्त देणा चाहिए और बालकांकों २ पहरका व्रतदेणा चाहिए ॥ ५ ॥ अथवा जिनांकों व्रतकरणेसें पीडा बहुत होवे तिनांकों थोडा व्रतदेणा उचितहै जिसतें व्रतिकी मृत्यु न होवे ॥ ६

कूपैकपानदुष्टायेतथासंसर्गदूषिताः सर्वानेवोपवासेनपंचगव्येनशोधयेत् ॥ ४ ॥ बालापत्यातथारोगीगर्भिणीवृद्धएववा तेषांनक्तंप्रदातव्यंबालानांप्रहरद्वयम् ॥ ५ ॥ अथवाक्रियमाणेषुयेषामार्त्तिःप्रदृश्यते ॥ शेषंसंपादयेत्तेषांविपत्तिर्नभवेद्यथा ॥ ६ ॥ अंत्यजोऽत्रचंडालः ॥ वसिष्ठः ॥ चंडालोनिवसेद्यत्रगृहेत्वज्ञातएवतु तस्यान्नंतुद्विजोभुक्त्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥ अकामतःसकृद्भुक्त्वाकुर्य्यादितद्विजोत्तमः कामाच्छुद्धिः पराकेणमहासांतपनेनवा॥२॥चांद्रायणंपराकोवाद्विजातीनां विशोधनम् प्राजापत्यंतुशूद्राणांशेषाणामिदमुच्यते॥३॥योन्योपिभुंक्तेपक्वान्नंकृच्छ्रंस्यात्तस्यशोधनम् शुष्कान्नभोजनेपादमित्याहभगवान्मनुः ॥ ४ ॥

अंत्यज नाम इसजगा चंडालकाहै ॥ इसमे वसिष्ठजी कहतेहैं ॥ चांडाल जिसके घर अज्ञात हो या २ वसे तिसका अन्न द्विजकया ब्राह्मणादि जेकर खावे तां प्राजापत्य व्रतकरे ॥ १ ॥ परंतु अकामते एक वार खाणेमें एह प्रायश्चित्तहै कामनातें खावे तां पराक कर्के शुद्ध हुंदाहै अथवा महासांतपन कर्के ॥ २ ॥ चान्द्रायण अथवा पराक द्विजातियोंका शोधकहै और प्राजापत्य शूद्रों का शोधकहै और जो दूसरे घरवालेहैं तिनांवास्ते कहतेहैं ॥ ३ ॥ जो होर तिस घरविषे पक्कान्न खावे तिसके शोधन करणे वाला कृच्छ्रहै और जो सुका अन्न खावे तिसके वास्ते लघुकृच्छ्रहै एह भगवान् मनुजी कहतेहैं ॥ ४ ॥

तैसेंहि जेकर तिनां चांडालघरवालयेंनें स्पर्श कीतेहोए अन्नको जद भोजनकरे और विधिवाले ज्ञानतें विना जो भोजन करदाहै तां भोजनमे कृच्छ्र किहाहै और पानविषें तिसका चौथा हिस्साकिहाहै ॥ ५ ॥ और चांडालकर्के जद संस्पृष्टहोवे कांसका भांडा अथवा मृत्तिकाका और अज्ञानतें जो कांस्यके भांडेमें भोजन करता है और मृत्तिकाके भांडेमें जलपान करताहै तिनांमें कांस्यभोजीकृच्छ्र व्रतकरे और जलपानवाला कृच्छ्रका पादव्रतकरे ६कांस्यभाजन इसजगा भज्जादा समझणा । ६ । अब च्यवन ऋषिजी और प्रकार कहतेहैं चंडाल घरविषे प्रवेश करे तो घर कों फूक देवे संपूर्ण मृत्तिकाके भांडे भन्न देवे और लकडीको छिला देवे और शंखसिप्पी सो

तथा ॥ तैःस्पृष्टोयदिभुंक्तेन्नमज्ञात्वाविधिवज्जले विहितांभोजनेकृच्छ्रंपाने स्यात्पादएवतु ॥ ५ ॥ चंडालेनतुसंस्पृष्टंकांस्यभांडंसमृण्मयं ॥ अज्ञानात्कांस्यभोजीतुमृण्मयेजलपानकृत् कांस्येभुक्त्वाचरेत्कृच्छ्रंजलपानेतुकृच्छ्रकम् ६॥ कृच्छ्रकः कृच्छ्रपादः ॥ च्यवनः ॥ चंडालसंकरेस्वभवनदहनं सर्वमृद्भांडभेदनं दारवाणांतुतक्षणं शंखशुक्तिसुवर्णरजतवैदलानामद्भिः क्षालनं कांस्यताम्राणामाकरेशुद्धिः ॥ आकरशब्दार्थस्तूक्तः पूर्वम् ॥ सौवीरपयोदधितक्राणांपरित्यागः ॥ सौवीरं वदरं ॥ गोमूत्रयावकाहारोमासं क्षिपेत् वालवृद्धस्त्रीणामर्द्धंप्रायश्चित्तम् ॥ आपोडशाद्वालःअशीत्यूर्ध्वंतुवृद्धः चीर्णेप्रायश्चित्तेब्राह्मणभोजनं गोशतंदद्यात्तदभावेसर्वस्वम् ॥

ना चांदी वंश इनके जो पात्र हैं तिनां पर जल सिंचन करे और कांस ताम्रकी आकर विषे शुद्धि कहीहै आकर शब्दका अर्थ पिच्छे कहाहै ॥ और वेर दुग्ध दधि छाह इनांको त्यागें देवे और गोमूत्र युक्त यवोंका भक्षण करदा होया महीना रोज व्यतीत करे और बालक वृद्ध स्त्री इनको अर्द्ध प्रायश्चित देणा अर्थात् पंदरां १५ दिन । और सोलां १६ वर्षतें उरें बालक होता है और अस्सी ८० वर्ष तें उपरंत वृद्ध होताहै और प्रायश्चित्तके कीते होयां ब्राह्मणोंको भोजन देवे और सो १०० गौ देवे जेकर एह न मिले तां सर्वस्व दे देवे ॥

अब बोधायन जी और विशेष कहतेहैं चंडालके देखणे विषे तारयोंका दर्शन करे तो शुद्ध होताहै और चंडालके साथ संभाषण क्या बोले तो ब्राह्मणके साथ संभाषण करे और स्पर्श करे तो स्नान करके शुद्ध होताहै और जूठा होकर चंडालका दर्शन करे तो एक रात्र उपवास व्रत करे और संभाषण करे तो दो २ रात्र उपवास करे और स्पर्श करे तो त्रय रात्रि उपवास करे और जूठे चंडालके दर्शन संभाषण स्पर्श करणे में भी एही व्रत करणे ॥ और चंडालके साथ मार्ग चले तो सवस्त्र स्नान करे ॥ अब प्रायश्चित्त मयूख विषे कहतेहैं द्रव्येति द्रव्यहै हस्थ विषे जिसके सो जूठेका स्पर्श करे तिसमे मनुका वचन है द्रव्यहस्तवाला होया १ जूठेके साथ स्पर्श करे तो तिस द्रव्यको हस्थमें हि रख कर आचमन करे तो शुद्ध होता है

वौधायनः। चंडालदर्शनेज्योतिषांदर्शनं संभाषणेब्राह्मणसंभाषणम् स्पर्शनेस्नानम् उच्छिष्टदर्शन एकरात्रमुपवसेत् संभाषणे द्विरात्रं स्पर्शने त्रिरात्रम् चंडालिनसहाध्वगमनेसचैलस्नानम्। प्रायश्चित्तमयूखे द्रव्यहस्तस्योच्छिष्टस्पर्शे। मनुः। उच्छिष्टेनसमंस्पृष्टवाद्रव्यहस्तः कथंचन अनिधायैव तद्द्रव्यमाचांतः शुचितामियात् १ एतच्चामान्नविषयम्। भोज्यविषयेतु वसिष्ठः। प्रचरन्नन्नपानेषुयदुच्छिष्टमुपस्पृशेत् भूमौनिधायतद्द्रव्यमाचांतः प्रचरेत्ततः ॥ १ ॥ तद्द्रव्यस्यह्यभ्युक्षणं कार्य्यमित्याहतुः शंखलिखितौ॥ द्रव्यहस्तोच्छिष्टेनिधायाभ्युक्षयेद्द्रव्यमिति उच्छिष्टउच्छिष्टस्पृष्टः। एतच्चानुच्छिष्टहस्तादिनास्पर्शे ॥ साक्षादुच्छिष्टहस्तादिस्पर्शेत्वभोज्यमेव

एह कच्चे अन्नके विषयमें जानणा । १ । और भोज्यअन्नके विषयमे वसिष्ठजीकहतेहैं प्रेति प्रचरनकया अन्न वरतांदा होया जूठेका स्पर्श करे तो तिसद्रव्यको भूमि पर स्थापन करके आचमन करे फेर तिस अन्न नूं वरतावे । १ । परंतु तिसद्रव्यको सेचन करणा एह किहाहै शंख और लिखितजी ने द्रव्येति अपूपादि भक्ष्य द्रव्य जिसके हाथ मे है और जूठेके साथ स्पर्श वाला होवे तां उस वस्तु को हेठ रखकर जल हाथ सिंचे पीछे ग्रहण करके वर्तां देवे तां दोष नहि परंतु एहप्रायश्चित्त जेडा हस्थ नहि जूठा तिसके स्पर्शविषे जानणा जेकर साक्षात् जूठे हस्थनाल स्पर्श होवे तां नहि भोजन करणा

सोई वासिष्ठजी कहतेहैं उच्छिष्टमिति गुरुका उच्छिष्ट होवे तां भोजन करलेणा और किसेका होवे तां नाहि भोजन करणा और अपणा जूठा और जूठेके साथ जेडा मिलया होआहे तिसका भी भोजन नाहि करणा ॥ जेकर भोजन करे तां स्नानतें पीच्छे १०० प्राणायाम करे एह जान लेणा ॥ जूठे मनुष्यको सूर्यादिका दर्शन करणेमे मार्कंडेयपुराणमें दोष कहाहे सूर्येंद्विति सूर्य और चंद्रमा और तारे जिसजूठे ने दिक्खे होंण कदाचित् तिहां पुरुषांदे अक्षिपर अग्निको रक्षकर यमदूतांने फूकां लगाइंदीआंहें ॥ १ ॥ उच्छिष्टने पलांडुआदिके स्पर्शविषे बृहस्पतिजीका वचनहै सुरेति मदिरा १ गंडा २ लस्सन ३ इनांके कामनाकर्के

यथाहवसिष्ठः.उच्छिष्टमगुरोरभोज्यंस्वमुच्छिष्टोपहतंचेति उच्छिष्टस्यसूर्यादिदर्शनेदोषउक्तोमार्कंडेयपुराणे ॥ सूर्येंदुतारकादृष्टायैरुच्छिष्टैः कदाचन तेषांयाम्यैर्नरैरक्षिन्यस्तोवह्निःसामिध्यते ॥ १ ॥ उच्छिष्टस्यपलांड्वादिस्पर्शे बृहस्पतिः ॥ सुरापलांडुलशुनस्पर्शेकामकृतेद्विजः त्र्यहंपिबेत्कुशजलं सावित्रींचजपेत्तथा ॥ १ ॥ इदमूर्ध्वोच्छिष्टस्येति शूलपाणिः ॥ यत्तु सएव पलांडुलशुनस्पर्शेस्नात्वानक्तंसमाचरेत् कृतोच्चारस्त्वहोरात्रमुच्छिष्टोद्व्यहमाचरेदिति १ तदधोच्छिष्टविषयमूर्ध्वोच्छिष्टेऽकामविषयंवा नक्तं शूद्रोच्छिष्टविषयं द्व्यहमूर्ध्वोच्छिष्टद्विजविषयमितिकेचित् ॥

स्पर्श कीतिआं होआं द्विजक्यो ब्राह्मणादि त्रयदिन कुशाकाजलपीवे और गायत्रीको १० दशादिकीसंख्यासेंजपे ॥ १ ॥ परंतुएह ऊर्ध्वोच्छिष्टजोपुरुषहे तिसपर जानणा एह शूलपाणिजी कहतेहैं । और जो सोईशूल पाणि कहतेहैं पलेति पलांडुक्या और लशुन इनके स्पर्शविषे स्नानतें पिछे नक्त व्रत करे क्या एकाहारकरे और कृतोच्चार क्या जिसने दिशा होकर दिनरात्र तक शौच नहि कीता और भोजन करचुकाहै सो दो २ दिन उपवासकरे तां शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ सो एहअधोच्छिष्टका विषयहै अथवा ऊर्ध्वोच्छिष्टमे अकामका विषयहै और कोई कहतेहैं किनक्त व्रत शूद्रांके लियेहै और दो दिनका व्रत ऊर्ध्वोच्छिष्ट ब्राह्मणादिको विषयकरताहै ॥

एह पूर्वोक व्रत त्रय अकामके विषयहै और सावित्रीके जपसाथ तीन रात्र कुश जलको पानकी अशक्ति होयां २४ चौवी पण मुल्लवाला सुवर्ण देणा चाहिए। और जो उच्छिष्ठ नहि है और लशुनादिको स्पर्श करै तिसको स्नानमात्रहि किहाहै ॥ और शूलपाणि जीके बनाएहोए ग्रंथमे वृद्धशातातपजीका वचनहै ॥ उच्छिष्ट होआ होआ विप्र मदिराको और कुत्तेको लशुनादिको स्पर्शकरे तो दिनरात्रके व्रत कर्के पीछे पंचगव्यके पीणे कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ सोएह ऊर्ध्वोच्छिष्टके काम कर्के कीते होये स्पर्श विषे जानणा ॥ अव इसीका अर्थ स्पष्ट करके कहतेहैं मद्यमिति मद्य क्या सुरातें पृथक् जानणा क्यों कि सुराके स्पर्शमे अधिक प्रायश्चित्त होणेते और शूद्रक्या शूद्रकाजूठा अशुचि क्या लस्सनादि

तथात्रयमिदमकामतः सावित्रीजपान्वितत्रिरात्रकुशवारिपानाशक्तौ चतुर्विंशतिपणलभ्यं कांचनंदेयम् अनुच्छिष्टस्पर्शेकेवलस्नानमेव ॥ शूलपाणौ वृद्धशातातपः ॥ उच्छिष्टःसंस्पृशेद्विप्रोमद्यंशूद्रंशुनोऽशुचीन् अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुध्यति १ एतदूर्ध्वोच्छिष्टस्यकामतः ॥ मद्यंसुरेतरं शूद्रंशूद्रोच्छिष्टं अशुचीन्लशुनादीन् ॥ सुरानुवृत्तौ यमः ॥ दर्शनात्स्पर्शनाद् घ्राणात् प्रायश्चित्तंविधीयते प्राणायामैस्त्रिभिःस्नात्वा घृतं प्राश्यविशुद्ध्यति १ दर्शने कामतः स्पर्शनेऽकामतः घ्राणेवाकामतः कामतोजातिभ्रंशकरत्वं तथा ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ आघ्रायरसगंधंच सुरागंधंचसोमपाःस्नात्वाऽपःस्पृश्यकृत्वात्रीन् प्राणायामान्विशुद्ध्यति १ ॥

सुराकी अनुवृत्ति विषे यमजी कहतेहै देति सुराके दर्शनतें स्पर्शतें सिंघणतें प्रायश्चित्त होताहै कि तीन ३ प्राणायाम करके स्नानकरे और घृतका भक्षणकरे तो शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ और इसमें ऐसी व्यवस्थाहै कि देखणेमें इच्छा विषे जानणा और न इच्छातें स्पर्श विषे और सिंघण विषे इच्छातें जानणा ॥ और इच्छातें करणे विषे जातिभ्रंशकर पाप होताहै ॥ तैसेंहि इसीमें याज्ञवल्क्य जी कहतेहैं आघ्रायेति रसगंध क्या विष्टा दि और सुरागंध क्या मदिरादि इनांनू सोमपा पुरुष सिंघे तो स्नान कर्के जलका स्पर्श करेऔर त्रय ३ प्राणायाम करे तो शुद्ध होताहै १ ॥

जो सुमंतुजीने किहाहै सो कहतेहैं मद्येति मदिराके साथ स्पर्श करणेमें ऋषभ मंत्रका जप करे और मदिराके सिंघण विषे प्राणायाम करे सो एह न इच्छातें करण विषे जानणा और इच्छातें करणेमें विष्णुजी कहतेहैं सुरामिति सोमपा पुरुष मदिराका गंध सिंघकर्के जल विषे डुब्बा होया त्रय ३ अघमर्षण जपे फेर घृत प्राशनकरे तो शुद्धहोताहै ॥ अब जूठे पुरुषकों नरादिकी विष्टा स्पर्श विषे लघुहारीतजीकहतेहैं श्वेति कुत्तेको विष्टा और काक विष्टा और कंक गिरज पक्षिकी विष्टा और पुरुषको विष्टाका और अधोच्छिष्टका स्पर्श करे तो सवस्त्र जलमें स्नान करे ॥ १ ॥ और जूठे पुरुषको स्पर्श करणेमे एह प्रायश्चित्त करे कि एकरात्रि उपवासकर्के पंचगव्य पान करे तो शुद्ध होताहै २ इस जगा अधोच्छिष्ट क्या विष्टाके

यत्तुसुमंतुनोक्तम् मद्यसंकरेऋषभंजपेत् सुराघ्राणेप्राणायामइति तदकामतः ॥ कामतस्तु विष्णुः ॥ सुरामाघ्रायगंधंसोमपउदकेमज्जमा नस्त्रिरघमर्षणंजप्त्वाघृतप्राशनमाचरेदिति अधोच्छिष्टस्यनरादिपुरीष स्पर्शेलघुहारीतः । श्वविष्टांकाकविष्टांवाकंकगृध्रनरस्यच अधोच्छिष्टंतुसं स्पृश्यसचैलोजलमाविशेत् ॥ १ ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टंतुसंस्पृश्यप्रायश्चित्तमि दंचरेत् उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २ ॥ अत्राधोच्छिष्टस्यपु रीषस्यस्पर्शेस्नानम् ऊर्ध्वोच्छिष्टस्यतूपवासःपंचगव्यंचपेयम् । अथानुच्छि ष्टस्यमलस्यस्पर्शे तत्रांगिराः ॥ ऊर्ध्वंनाभेःकरौमुक्त्वायदंगमुपहन्यते तत्र स्नानमधस्तात्तुक्षालनेनैवशुद्ध्यति ॥ १ ॥

स्पर्श विषे स्नान करे तो शुद्ध होताहै एह अर्थ है इस जगा प्रायश्चित्त वहुत होणेतें जानणा कि उच्छिष्टहि जद उच्छिष्टको स्पर्श करे तां ऐसा करे एह अभिप्रायहै और जेडा आप जूठा होवे और जूठेको अथवा मनुष्यादिमलको छोए सो उपवास कर्के पंचगव्यकों पीवे । अब जो जूठा नहि तिसको मलके स्पर्शविषे अंगिराजी कहतेहैं ऊर्ध्वमिति इत्यादि विना नाभिते उपर जेकर कोई अंग मलादि कर्के (उपहन्यते) क्या स्पृष्ट होवे तां तिस विषे स्नान करणा किहाहै और उसके हेठ स्पर्शहोवे तां तिस जगाके धोणेकर्के हि शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥

एह प्रायश्चित्त विष्टादि स्पर्श विषें है तिसमें भी गाढा अंगमे जद लगे तां है इसी मे शंखजी कहतेहैं ॥ रथ्येति गली कूचेके जल करके और थुक करके श्लेष्मादि करके नाभिते उपर पुरुष स्पृष्ट होवे तां शीघ्र स्नान करके शुद्धहुंदाहै ॥ १ ॥ और अंगिराजीने किहा कि धोणा जो है नाभिके हेठले अंगका सो मृत्तिका करके और जल करके करणा विष्णुजीभीकहतेहैं नाभेरिति नाभिके हेठले अंगांविषे देहदीमलकरके और सुराकरके मद्यकरके जो युक्त होवे सो निरालस होश्रा होश्रा मृत्तिका और जलकरके धोवे तां शुद्ध हुंदाहै ॥ जेकर और जगा अर्थात् नाभितें उपर मलादि करके युक्त होवे तां मृत्तिका जल करके तिस

अमेध्यादिस्पर्शविषयमिदम् निविडांगादिस्पर्शविषयमपि॥ तथाह शंखः रथ्याकर्दमतोयेनष्ठीवनाद्येनवापुनःनाभेरूर्ध्वंनरःस्पृष्टःसद्यः स्नानेनशुध्यति १ अंगिरसोक्तंक्षालनंमृदंभसाकार्य्यमित्यत्र विष्णुः॥ नाभेरधस्तात्प्रवाहेषुचकायिभिर्मलैः सुराभिर्मद्यैर्वोपहतोमृत्तोयैस्तदंगप्रक्षाल्यातंद्रितः शुध्येत् अन्यत्रोपहतोमृत्तोयैस्तदंगं प्रक्षाल्य स्नानेन चक्षुष्युपहत उपोष्य पंचगव्येनदशनच्छदोपहतः प्रवाहेषु करयोः ॥ अत्रमृत्तोयपदमुपलक्षणं अन्यदपिगंधलेपक्षयकरंज्ञेयम्॥ तथाचदेवलः॥ प्रलेपगंधस्नेहाणामशुद्धौ व्यपकर्षणम् शौचलक्षणमित्याहुर्मृदंभोगोमयादिभिः ॥ १ ॥ लेपन स्नेहगंधेषुव्यपकृष्टेषुदूरतः पश्चादाचमनंवापिशौचार्थंवक्ष्यतेवुधैः २

अंगनु धो करके और पिच्छे स्नान करके और नेत्रां विषे मलादि करके युक्त होवे तां उपवास ते पिच्छे पंचगव्य पान करके और जेकर होठां विषे युक्त होवे और कपोलांदिविषे हत्थां विषे युक्त होवे तांभी स्नानादि करके हि शुद्ध हुंदाहै परंतु सभनांके पिच्छे पंचगव्यका पान हि करणा ॥ सोई देवलजी कहतेहैं प्रलेपेति प्रलेप गंध स्नेह इनांकी अशुद्धि विषें मृत्तिका जल गोमयादि करके इनोंका दूरकरणा हि शुद्धिका लक्षण कहाहै इस जगा आदिशब्द करके आटा तोआंका ग्रहण करणा १ और लेप स्नेह गंध इनांको दूरतेंहि हटा देवे पीछेतें आचमन करे एहि बुद्धिमानों नें शुद्धि कहीहै ॥ २ ॥

जो फेर व्यासजीने कहाहि सो कहते हैं मांसमिति वानर बिल्ला गधा ऊट कुत्ता इनांका मांस और शूकरोंकी मिंज इनांका स्पर्श करके सवस्त्र स्नान करे ॥ १ ॥ सो एह भी न जूठे को नाभि तें उपर लेपके दूर करणे के विषय में जानणा अर्थात् जो झूठा नहि होवे तिसको प्रायश्चित्त थोडाहै ॥ अथवा लघुहारीत का किहा होया अधोच्छिष्ट के विषय में जानणा । इसी वास्ते आपस्तंवजी कहतेहैं यदिति जो काक ऊैर बगुले करके वेष्टित वस्तु और मिंज करके लिप्त शरीर होवे और मुख कर्ण विषे लगीहोई न शुके तिस जगाहै और स्नेह करके लेप दूरकरणकी शुद्धि पूर्वोक्त गोमयादि करके हि जानणी ॥ १ ॥ अब इसीका अर्थ मूल में स्पष्ट करके किहाहै

यत्पुनर्व्यासेनोक्तम् । मांसंवानरमार्जारखरोष्ट्राणांशुनांतथा सूकराणाममेध्यंवैस्पृष्ट्वास्नायात्सचैलकमिति १ तदप्यनुच्छिष्टस्यनाभ्यूर्ध्वलेपोपहतविषयम् लघुहारीतोक्ताधउच्छिष्टविषयंवा अतएवाहापस्तंवः यद्वेष्टितंकाकवलाकिकाभ्याममेध्यलिप्तंचभवेच्छरीरं श्रोत्रेमुखेनप्रतिशेतसम्यक्स्नेहेनलेपोपहतस्यशुद्धिः ॥ १ अमेध्यादिलिप्तशरीरंमुखेश्रोत्रेवानप्रतिशेतनशुष्कंभवेदित्यर्थः ॥ मलमाहमनुः वसाशुक्रमसृङ्मज्जामूत्रविट्कर्णविण्नखाः श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेनृणांमलाः १ अमेध्यमाहदेवलः ॥ मानुषास्थिशवोविष्ठारेतोमूत्रार्त्तवंवसा ॥ स्वेदोश्रुदूषिकाश्लेष्मामलंवाऽमेध्यमुच्यते १ एषांदेहात्प्रच्युतानामेवामेध्यत्वम् ॥ देहाच्चैवच्युतामला इतिमनुवचनात् ॥

अमेध्येति ॥ अब मनुजी मलां कों कहतेहैं वसेति मिंज १ वीर्य २ रुधिर ३ मज्जा ४ मूत्र ५ विष्टा ६ कर्ण मल ७ नख ८ श्लेष्म ९ अश्रु १० नेत्र मल ११ परसीना १२ एह वारां पुरुषको मल होतेहैं ॥ १ ॥ अमेध्य को देवल जी कहते हैं मानुषेति मनुष्यकी हड्डी शव विष्टा वीर्य मूत्र ऋतुकाल में स्त्री का रुधिर मिंज परसीना अश्रु नेत्रमल श्लेष्म मल एह अमेध्य कहीदे हैं परंतु इनांकों देहतें वगकर वाहर होयां कों हि अमेध्यत्व किहाहै देहादिति देहतें जो वगे सो मल कहाहै इसमनुजी के वचन तें ॥

अब ऋष्य शृंगजी कहतेहैं मद्येति मदिरा विष्टा मूत्रके किणके करके मुख जिसका स्पर्शवाला होवे सो मृत्तिका और गोए करके लेपकरे फेर पंचगव्यपानकरके शुद्धहोताहै । १ । इसको स्पष्ट करके कहतेहैं स्नात्वेति स्नानकरके उपवास करे फेर पंचगव्यपान करके शुद्ध होताहै इसपूर्वोक्त विष्णुके वचनतें । इस विषय देवलजी विशेष कहतेहैं मनुष्यकीयां हड्डीयां चरवी विष्टा और रजस्वलाका रुधिर मूत्र वीर्य मिंज रुधिर एह संपूर्ण जेकर दूसरेके होवें इनांका स्पर्श करे । १ । तां स्नान करके लेपादियोंकों दूर करके आचमन करे तो शुद्धहोताहै सो एह अपणे होवें तब इनांका स्पर्श करे तो मार्जन करणे करके शुद्ध होताहै । २ । और इसीका तात्पर्य

ऋष्यशृंगः ॥ मद्यविण्मूत्रविप्रुड्भिःसंस्पृष्टंमुखमंडलं मृत्तिकागोमयैर्लेपात्पंचगव्येनशुद्ध्यति १ स्नात्वोपोष्यपंचगव्येनशुद्ध्यतीत्यर्थः पूर्वोक्तविष्णुवचनात् ॥ अत्रविशेषमाह देवलः ॥ मानुषास्थिवसांविष्टामार्तवंमूत्ररेतसी मज्जानंशोणितंवापिपरस्ययदिसंस्पृशेत् १ स्नात्वापमृज्यलेपादीनाचम्यसशुचिर्भवेत् तान्येवस्वानिसंस्पृश्यपूतःस्यात्परिमार्जनात् ॥ २ ॥ अतःपरमलस्पर्शेस्नानमात्ममलस्पर्शे प्रक्षालनमाचमनंच ॥ सुमंतुः ॥ चंडालंपतितंवापितथानारींरजस्वलां उच्छिष्टस्तुद्विजःस्पृष्ट्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ १ ॥ एतत्कामतः ॥ यत्त्वापस्तंबः ॥ भुक्तोच्छिष्टोंत्यजैःस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ अर्द्धोच्छिष्टेस्मृतः पादः पाद आस्याशनेतथा ॥ १ ॥

कहतेहैं इसतें दूसरेकी मल स्पर्श विषे स्नानमात्र है और अपणी मल क्या विष्टादिके स्पर्श विषे सिंचन और आचमन करणा । अब सुमंतु जी कहते हैं चंडालमिति चंडाल और पतित तैसेंहि रजस्वला कों जूठा होया २ ब्राह्मणादि स्पर्श करे तो प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ सो एह इच्छातें करण में जानणा । जो आपस्तंब जीने कहाहै सो कहतेहैं भुक्तेति भक्षणकरके जूठेकों हि चंडाल स्पर्श करे तो सो ब्राह्मणादि प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होताहै और अर्द्धोच्छिष्टविषें एह पाद व्रत कहाहै और एक पाद मुख स्पर्श मात्रविषे जानणा । १ ।

इस विषे अर्द्धोच्छिष्ट मुख विषे ग्रास पाणे मात्रमें जानणा निगलने में नहिं है। और न इच्छातें करण में सोई आपस्तंब जी कहतेहैं ॥ भोजन करके जूठा होया २ आचमनतें रहित हि प्रमादतें चंडाल अथवा नीच करके स्पर्श वाला होवे ॥ १ ॥ तिसकी शुद्धि इस तहाँ करे गायत्रीका आठ सें अधिक १००८ हजार जप और सौ १०० (द्रुपदादिव) इसमंत्रका जप करे और त्रय ३ रात्रि उपवास करके पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होताहै। २। जो सोई आपस्तंब जी कहतेहैं चमिति चंडाल करके स्पर्श वाला ब्राह्मण विशेष कर्के शोककरताहुआ शुद्धिकों करे क्या एक रात्रि उपवासव्रत करके पंचगव्यका पान करे तो शुद्ध होतहि। ३। सो एह आपत्ति विषें इच्छातें विना करण विषें जानणा लघुहारीतस्मृति मे लिखाहै ॥ जूठा मनुष्य जेकर स्पर्श करे नटुएकों ललारीकों

अत्रार्द्धोच्छिष्टो मुखेग्रासप्रक्षेपमात्रिकृते नतु निगीर्णे आस्याशनेमुख स्पर्शमात्रे अकामतः सएव भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतः चांडालैःश्वपचेनवाप्र मादात्स्पर्शनंगच्छेत्तत्रकुर्याद्विशोधनम् १ गायत्र्यष्टसहस्रंतुद्रुपदानांशतंत था त्रिरात्रोपोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ यत्तुसएव॥चंडालेनतुसं स्पृष्टोविप्रशोचंस्तुद्विजोत्तमः उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ ३ तदापद्यकामतः। लघुहारीतः। उच्छिष्टः संस्पृशेद्यस्तुनटरंजकमोचकान् अधोच्छिष्टोयदास्यादेकरात्रमभोजनम् १ ऊर्ध्वोच्छिष्टोयदास्यात्प्राय श्चित्तंभवेदिदम् उपवासास्त्रिरात्रंस्याद् घृतंप्राश्यविशुद्ध्यतीति२अतश्चऊ र्ध्वोच्छिष्टस्यतैरुच्छिष्टैः स्पर्शेषड्रात्रम् एवमेव यत्रोर्ध्वोच्छिष्टस्यचांडालादि स्पर्शेषड्रात्रम् तत्राधोच्छिष्टस्यतदर्द्धंत्रिरात्रम् कालिकापुराणे स्पृष्ट्वारुद्रस्य निर्माल्यंसवासाआप्लुतःशुचिरिति मलादिदूषितकूपादिजलपाने संवर्त्तः चंडालभांडसंस्पृष्टंपिबेत्कूपगतंजलम् गोमूत्रयावकाहारास्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति१

मोचीकों सो जेकर दिशा फिरकर आयाहै इसतहींका जूठा होवे तां एकरात्र भोजन न करे ॥ १ ॥ और जेकर भोजन करणेतें पिच्छे इनांको छोवे तां इस प्रायश्चित्तनुं करे किं तीनरातां उपवासकरकेपिच्छे घृतपानकरे तोशुद्धहुंदाहै ॥ २ ॥ इसीकारणतें और जिनांके साथ स्पर्श होया है जेकर सोभी जूठे होण तां ६ छेरात्रका व्रत करे इसी तहाँ जित्थे ऊर्ध्वो च्छिष्टका चांडालादिके स्पर्श विषे छे ६ रात्रिका व्रतहै तिस जगा अधोच्छिष्टका तिसी के स्पर्शमें तीन ३ रात्रिका व्रत जानणा ॥ और विशेष कालिका पुराणविषे किहा है। शिवके निर्माल्यकों स्पर्श कर्के सहित वस्त्रांके स्नानकरे तां शुद्ध हुंदा है ॥ मलमूत्रादि जि सखूएमे पडे होण तिसके जलपानविषें संवर्त्तजी कहेतेहैं चांडालके भांडे कर्के स्पर्श वाला जो खूहहै तिसके जलको पीवेसो गोमूत्रयावकके आहारकर्के तीन३रात्र व्यतीतकरेतो शुद्ध हुंदाहै१

और कहतेहैं अंत्यजैरिति चांडालों कर्के सेवितजो तडागक्यातला और नदिआं तिस विषे ज
लपीके अकामनाते पंचगव्य पीणे कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ २ मदिरा वाला घडा और चर्म्मंगा
लाका जल और पनालेका जल इनको पीके दिनरात्रका उपवास रक्षकर पंचगव्य पीवे तां
द्विजक्याब्राह्मणादि शुद्ध हुंदाहे ॥ ३ ॥ जेकर खुंया विष्टामूत्र कर्के युक्त होवे तिस विचों ब्राह्मणादि
जलपान करे तां तीनरात्रके व्रत कर्के शुद्ध हुंदाहै और जेकर ऐसा घडाहि होवे क्या विष्टा
मूत्र वाला होवे और तिसके जलको पीवेतांसांतपनव्रतकरे ॥ ४ ॥ और बाउलीं १ खूया २
तलाओं ३ एह जेकर दूषितहोण तां इनकी शुद्धि इसतहीं जानणी जलका १०० सउघडा

अंत्यजैःस्वीकृतेष्वेवतडागेषुनदीषुच शुध्यतेपंचगव्येनपीत्वातोयमकामतः
२ सुराघटप्रपातोयंपीत्वाकाशजलंतथा अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्यंपि
वेद्द्विजः ३ कूपेविण्मूत्रसंस्पृष्टेप्राश्यचापोद्विजातयः त्रिरात्रेणैवशुध्यं
तिकुंभेसांतपनंस्मृतम् ४ वापीकूपतडागानांदूषितानांविशोधनम् अपांघ
टशतोद्धारःपंचगव्यंचनिःक्षिपेत् ५ प्रसंगाज्जलशुद्धिरप्युच्यते तत्रपरा
शरमाधवः वापीकूपतडागेषुदूषितेषुकथंचन उद्धृत्यवैघटशतंपंचगव्ये
नशुध्यतीति १ कूपादिदूषणंद्विधा श्वमार्जारादीनांतत्रपततंमरणात् मृ
तशरीराणांतत्रैव चिरंजरणाच्च तत्र मरणविषयमिदंविशोधनम्

निकाल कर पंचगव्य उसमे पावे तां शुद्धहुंदाहे ॥ ५ ॥ प्रसंगतें जलशुद्धिभी कहिदीहै तिसमे
पराशर माधवजीका वचनहै वाउली १ खूया २ तलाओं कदाचित् दूषितहो जाए तां जलका
सउ १०० घढा कडा कर पंचगव्य तिस विचपाणा तिसकर्के शुद्ध हुंदेहै ॥ १ ॥ पिछलाहि
अर्थहै।कूपादियोंका सो दूषण दोतर्हाकाहै कुत्ते बिल्ले आदिका तिनमैपैं कर्के मरणा और मृतहो
यांका चिरकाल कर्के जीर्ण होणा इनमेसे पहलेकी क्या जो मृतहोआ और जिसते शीघ्रनि
कालदिआ तिसकी एह सउ १०० घडे वाली शुद्धिहै

इसीकों हारीत जी भी कहतेहैं बाउली खूश्रा तला एह किसे करकें दूषित होवें तो इनांकी शुद्धि करे क्यासौ १०० घडा जल कडा करकें पंचगव्य तिसमे पादेवे। १। संवर्त्त जी भी इसीमे कहतेहैं वापीति बाउली खूश्रा तलाश्रो एह कदाचित् मलादि करकें दूषित होवें इनांकी शुद्धि वास्ते जलका सौ १०० घडा निकाल करकें पंचगव्य तिसमें पादेवे। १। एही शुद्धि जोडे श्रादिके दूषण विषें भी देखणे योग्यहै। सांई श्रापस्तंब जी कहतेहैं उपेति जोडा श्रौर पुराणे जोडेका एक भाग छिप्य किहाहै श्रौर विष्टा मूत्र स्त्रीका रज मदिरा इनांके पैने करकें दूषित जो खूश्रा तिसतें सौ १०० घडा जलका निकाल देवे। १। श्रब इसीमे श्रौर विचार करतेहैं उच्छीति(प्रश्ण)जूठा श्रौर श्रपवित्र उौर जो विष्टा करकें लिप्त होवे एह संपूर्ण जल करकें शुद्ध होते

एतदेवहारीतोप्याह वापीकूपतडागेषुदूषितेषुविशोधनम् घटानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंक्षिपेत्ततइति १ संवर्त्तोपि वापीकूपतडागानांदूषितानांचशुद्धये श्रपांघटशतोद्धारः पंचगव्यंचशोधनमिति १ इयमेवशुद्धिरुपानहादिदूषणेपिद्रष्टव्या तदाहापस्तंबः उपानच्छिप्यविण्मत्रस्त्रीरजोमद्यमेवच पतितैर्दूषितंकूपेकुंभानांशतमुद्धरेदिति ॥ १ ॥ पुरातनोपानदेकभागश्छिप्यम्। उच्छिष्टमशुचित्वंचयच्चविष्टानुलेपनम् सर्वंशुध्यतितोयेनतत्तोयंकेन शुध्यति ॥ २ ॥ सूर्यरश्मिनिपातेनमारुतस्पर्शनेनच गवांमूत्रपुरीषेणतत्तोयंतेनशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ श्रस्थिचर्मादियुक्तंतुखरश्वानोपदूषितं उद्धरेदुदकंसर्वंशोधनंपरिमार्जनम् ॥ ४ ॥ कूपोमूत्रपुरीषेणयवनेनापिदूषितः श्वसृगालखरोष्ट्रैश्चक्रव्यादैश्चजुगुप्सितः ॥ ५ ॥

हैंश्रौर सो जल किस करकें शुद्ध होताहै २ (उत्तर)सूर्यकी किरणांके डिगणें करकें श्रौर वायुके स्पर्श करणें करकें सो जल शुद्ध होताहै उौर गौश्रांकें मूत्र करकें श्रौर गोए करकें सो जल शुद्ध हुंदाहै। ३। श्रब छोटे जलाशयके वास्ते कहतेहैं श्रस्थीति हड्डीश्रां करकें श्रौर चम्म करकें श्रादि शब्दते मलमूत्र करकें युक्त होवे श्रौर गधा कुत्ता इन करकें दूषित होवे तां तिस जलाशयते-साराजल निकाल कर उसके तलकों पूंज देवे तां शुद्ध होवेगा ॥ ४ खूश्रा मूत्र पुरीष करकें श्रर यवन जो नीचजाति तिस करकें दूषित होवे श्रथवा कुत्तेकरकें गिद्दडकरकें गधे करकें ऊट करकें व्याघ्रादि करकें दोषवाला होवे ॥ ५ ॥

वा तिसके सारे जलको निकाल करके सब टोकरिआं मिटीकिआं काढे, और खूया करके पवित्र होआ २ पंचगव्य उस खूये विषे पावे ॥ ६ ॥ इसीमें विशेष कहतेहैं वापि जिस खूएका जल शुक न सके तिस विषों १०० सउघडाजलदा निकालके पंचगव्य पावे एह पिछलाहि अर्थहे ॥ ७ ॥ अब प्रासंगिकको कहतेहैं यद्येति जेडा ब्राह्मण दुष्ट खूए का जल पीवे खूया केसाहै कि मुडदे करके दोषवालाहै तां किसतर्हा तिसकी शुद्धि होतीहै एह मेरेको संशयहै ८ (उत्तर)जेकर मुडदा तिसविषे गलया नहि डौरटुटा नहि केवल दूषण मात्र हि होआहै तां तिसके जल पीणे करके जो दोषहै सो पंचगव्य करके दूरहुंदाहै ९ और जेकर जल विषें मुडदा गलगया होवे तो तिस जल कों पान करण वाला चांद्रायण अथवा तप्त कृ

उद्धृत्यैवचतत्तोयंसप्तपिंडान्समुद्धरेत् पंचगव्यमृचापूतंकूपेतच्छोधनंस्मृत
म् ६ वापीकूपतडागानांदूषितानांचशोधनम् कुंभानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंत
तःक्षिपेत् ॥ ७ यस्तुकूपात्पिवेत्तोयंब्राह्मणःशवदूषितात् कथंतत्रविशुद्धिः
स्यादितिमेसंशयोभवेत् ८ ॥ अक्लिन्नेनाप्यभिन्नेनकेवलंदूषिताद्धि पीत्वा
कूपादहोरात्रंपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ९ ॥ क्लिन्नेभिन्नेशवेचैवतत्रस्थंयदित
त्पिवेत् शुद्धिश्चांद्रायणंतस्यतप्तकृच्छ्रमथापिवा ॥ १० ॥ अत्रकामतश्चां
द्रायणमकामतस्तप्तकृच्छ्रमितिव्यवस्था ऽपरार्के ॥ पराशरः ॥ कूपेतुपति
तंदृष्ट्वाश्वसृगालंचमर्कटं अस्थिचर्मादिपतनात्पीत्वामेध्याद्यपोद्विजः १
नारंतुकुणपंकाकंविड्वराहंखरोष्ट्रयोः गावयंसौप्रतीकंचवाभ्रवंत्वाखुजंत
था ॥ २ ॥ वैयाघ्रमार्गंसैहंवाकूपेयद्यस्थिमज्जति तडागस्यैवदुष्टस्यपी
तंस्यादुदकंयदि ॥ ३ ॥ प्रायश्चित्तंभवेत्तस्यक्रमेणैतेनसर्वशः ॥ ४ ॥

च्छ्र व्रत करके शुद्ध होताहै ॥ १० ॥ इस विषें इच्छातें करणे में चांद्रायण और न इच्छातें करणें विषें तप्त कृच्छ्र व्रतकरे एह व्यवस्था अपरार्कमें कहीहै अब पराशर जी कहतेहैं कूपेति कुत्ता गिद्दड वानर इनांनु खूए विषें डिगे होआं नूं देख करके औरहड्डी चर्मादिके डिगणे तें अपवित्र जो जल तिसनूं ब्राह्मण पान करके ॥ १ और पुरुषका मुडदा काक विट् भक्षक शू॰ कर गधा ऊट गोइंद हस्ती नील चूहा ॥ २ ॥ व्याघ्र मृग शेर इनका मुडदा खूए विषें डि गया होवे और हड्डि डिगे खूए विषें अथवा तलाओ विषें इनका जेकर जल पान करे ३ तो इसका प्रायश्चित संपूर्ण इस क्रम करके करणे योग्यहै ॥ ४ ॥

विप्र इति ब्राह्मण त्रय ३ रात्रि करके और क्षत्रि दो २ दिनतें वैश्य एक दिन करके शूद्र उपवास करके शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ एह तलाओंके जल पानमें जानणा ॥ और खूएके जल पान में अधिक प्रायश्चित कल्पना करणा । मृत शरीर जिस विषे गल गया होवे तिस जल के पान में विष्णु जी कहतेहैं मृतेति मृत होए पंचनख जिस खूएमें डिगें तैसें मुडदा जिसमे गल जावे तो तिस संपूर्ण जलकों निकाल देवे वाकी दें जल कों शास्त्र करके शुद्ध करे ॥ १ ॥ और अग्नि जगा करके पीछे पका बणाजो खूआ तिस विषे पंचगव्य पा देवे फेर नवीन जल उत्पन्न होवे तो जानणा शुद्ध भया ॥ २ ॥ और कुष्ठ्यादि मनुष्यके श

विप्रः शुद्धयेत्त्रिरात्रेण क्षत्रियश्चदिनद्वयात् ॥ एकाहेनचवैश्यस्तु शूद्रो नक्तेनशुद्धयति ॥ ५ ॥ सुप्रतीकोगजःतस्येदंसौप्रतीकम् ॥ तडागोदकोपयोगविषयमेतत् कूपोदकोपयोगेत्वधिकंकल्प्यम् ॥ मृतशरीरजरणकृतायामत्यंतोपहतौ विष्णुराह मृतपंचनखात्कूपादत्यंतोपहतात्तथा ॥ अपस्तदुद्धरेत्सर्वाः शेषंशास्त्रेणशोधयेत् १ वह्निप्रज्वालनंकृत्वाकूपेपक्वेष्टिकाचिते पंचगव्यंन्यसेत्तत्रनवतोयसमुद्भव इति ॥ २ ॥ कुष्ठ्यादिमनुष्यशरीरजरणेप्येषैवशुद्धिः ॥ तदाहहारीतः ॥ वापीकूपतडागेषु मानुषंशीर्य्यतेयदि अस्थिचर्मविनिर्मुक्तैर्दूषितंश्वखरादिभिः उद्धृत्यतज्जलंसर्वंशोधनंपरिमार्जनम् १ ॥ मानुषंशवम् ॥ अत्रसर्वजलोद्धारप्रकारोजलोद्धारकयंत्रविशेषेण वा तावन्मृदापूर्य्यपश्चात्सर्वमृदुद्धरणेनभवतीतियौक्तिकोऽर्थः

रीर गलनें में भी एही शुद्धि जानणी । सोई हारीत जी भी कहतेहैं वापीति वाउली खूआ तलाओ इनां विषे जेकर पुरुषका मुडदा अर्थात् किसें कुष्टी आदिका मुडदा गल जावे और हड्डी चर्म इन करके रहित कुत्ता गधादि करके दूषित जो जल तिस सारे जलकों हि निकाल देवे और परिमार्जन करके क्या थका सोत देवे तां शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ अत्रेति इस विषे संपूर्ण जल निकालनेंका प्रकार एहहै जलोद्धारक यंत्र विशेष करके निकाल देवे अथवा जितना जल होवे तितनी मृत्तिका पाकर पूर्ण कर देवे पीछेंतें संपूर्ण मृत्तिका निकालनें करके शुद्ध होताहै एह युक्ति सिद्ध अर्थहै वचन करके नाहीं है ॥

और बडे तला आदिविषें दोष नाहिं है सो विष्णुजीकहतेहैं जलेति छोटे जो जलस्थान और बडे जो पृथ्वी विषें जल स्थान जेडे स्थावरहैं क्या वगदे नहि तिनांकी शुद्धि खूह की न्यां ई कही है और बडे जल स्थानों में दोष नहिहै । १ ।इसी में देवलजी भी कहते हैं बडे जो जल स्थान हैं तिनामें दोष नाहिं है और जिनां में सें जल वगता है तिनामें भी दोष नाहिं है और छोटे को जल निकालनें सें शुद्धि कही है क्योंकि जिस करके मल विषें हि दोष होंताहै। १। अल्प जल स्थानों विषें भी पूर्व कथन कीत्ता होया जो दोष तिसतें अल्प दोष विषें विष्णु जी कहते हैं अव्यात्तमिति अपवित्र वस्तु थोडी जगामें जिस जल में पडी हो और तैसें हि जिस में पत्थर लगे हों तिनकी शुद्धि चंद्रमा सूर्यकी किरणां करके और वायु

प्रौढेषुतडागादिषुनास्तिदोषस्तदाहविष्णुः ॥ जलाशयेषुस्वल्पेषुस्थावरेषुमहीतले कूपवत्कथिताशुद्धिर्महत्सुचनदूषणामिति ॥ १ ॥ देवलोपि अक्षुद्राणामपांनास्तिप्रस्त्रुतानांचदूषणम् ॥ स्तोकानामुद्धृतानांचकश्मलेदूषणंभवेदिति १ अल्पोदकेष्वपिपूर्वोदाहृतादोषादल्पेदोषेविष्णुराह अव्यात्तंचदमेध्येनतद्वेदवाशिलागतम् सोमसूर्यांशुपातेनमारुतस्पर्शनेनच गवां मूत्रपुरीषेणशुद्ध्यंत्यापइतिस्मृताइति ॥ जानुदघ्नाधिकजलेकूपेऽन्त्यजेस्सहजलोद्धरणे न दोषस्ततोऽल्पेतु दोषएव। तथाचापरार्केऽत्रिः॥ म्लेच्छादीनांजलंपीत्वापुष्कराणांह्रदेपिवा जानुदघ्नंशुचिज्ञेयमधस्तादशुचिस्मृतम् ॥ १ ॥ म्लेच्छादीनांसंबंधिनांपुष्कराणां तडागादिजलाशयानांवाह्रदेताद्दशह्रदेजलंपीत्वातृप्तस्यशुद्ध्यर्थंजानुदघ्नंशुचि ततोऽल्पमशुचीत्यर्थः

स्पर्श कर्के और गौआं के मूत्र पुरीष करके होतीहै एह स्मृतिकार कहते हैं अब इसोंमे और विशेषकहतेहैं जान्विति जानुतक अर्थात् गोडेतक जिसखूएमें जलहोवे और उसीसे ब्राह्मणादि और नीचादि जलपीतेहोण तां ब्राह्मणादिको कोइ दोष नहि और जेकर इससे जलवहुतहोवे तां क्याकहणा और जेकर गोडेसें थोडा जल होवे तां पूर्वोकमे दोषहि है एहअर्थ अपरार्क विषें अत्रिजीने किहाहै म्लेच्छे ति म्लेच्छादियोंके संबंधिजोतडागादि वा ह्रद तिनांका जलपीके तृप्तहोया जो द्विजादि तिसको जानुके बराबर जलपवित्रहै हेठहोवेतां अपवित्रहै ॥ १ ॥

तिस जलको जेडा ब्राह्मण कामनातें अथवा अकामते पीवे तां अकामके पान विषे नक्तभोजी होवें क्या रात्रिमे भोजन करे और कामनाते पीवे तां दिनरात्रके व्रतकर्के शुद्धहुंदा है ॥ २ ॥ और शातातपजी कहते हैं चांडेति चांडालके जलपात्रतें तृषातुर पुरुष जलपीवे तां तत्क्षणहि उसको त्यागकर प्राजापत्यसे शुद्ध हुंदाहै ॥ १ ॥ जेकर सो जल तिसके उदर विषेहि जीर्ण होजावे तां शुद्धिवास्ते प्राजापत्य और सांतपनभीकरे ॥ २ ॥ इसीमें और विशेषकहते हैं कि जूठे आदिवस्तुका संयोग जिसजलमें नहि और गौओंके पीणेते क्षय नाहि होआ ऐसा जो पृथ्वीविषे स्थित जलहै सोई शुद्धहै और तिसतें थोडा होवे तां शुद्ध नाहि सोई देवलजी कहतेहैं अवीति दुर्गंधिसे जो रहित और रसवाले क्या स्वादु और निर्म्मल

तत्तोयंयः पिबेद्विप्रः कामतोऽकामतोपिवा अकामान्नक्तभोजीस्या दहोरात्रंतुकामतः ॥ २ ॥ शातातपः ॥ चंडालोदकभांडेषुयः पिबे त्तृषितोजलम् ॥ तत्क्षणात्क्षिपतेतच्चप्राजापत्येनशुद्ध्यति ॥ १ ॥ यदिनक्षि पतेतोयंचिरेणैवास्यजीर्यते प्राजापत्यंतुकर्त्तव्यंकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ २ ॥ उच्छिष्टाद्युपघाताभावेपि गवांपानाद्यदुदकंनक्षीयतेतदेवशुद्धंनतुततोल्पम् तदाहदेवलः अविगंधारसोपेतानिर्मलाः पृथिवीगताः अक्षीणाश्चैवगोपा नादापः शुद्धिकराः स्मृताइति १ मनुरपि ॥ आपः शुद्धाभूमिगतावैतृष्ण्यं यासुगोर्भवेत् अव्याप्ताश्चेदमेध्येनगंधवर्णरसान्विताइति १ नवोदकेकाला च्छुद्धिमाहयमः अजागावोमहिष्यश्चनार्य्यश्चैवप्रसूतिकाःदशरात्रेणशुद्ध्यंति भूमिष्ठंचनवोदकमिति १ उद्धृतोदकंप्रतिदेवलआह। उद्धृताश्चापिशुद्ध्यंति शुद्धैः पात्रैःसमुद्धृताः एकरात्रोषिताश्चापस्त्याज्याः शुद्धाअपिस्वयमिति १

और पृथिवीविषे स्थित और गौओंके पीणेते नष्ट नहिहोए सोजल शुद्धिके करणेवाले हैं।१।म नुजीभीकहतेहैं ॥ जो जल पृथ्वीविषे स्थितहैं जिनां विषे गौ तृप्तहोजावे और विष्टा आदि कर्के युक्त नहि और अपणा गुण जो है मधुर रसादि तिसकर्के युक्त हैं सो जल शुद्धजानणे।१।नवीन जलविषे कालते शुद्धि यमजीकहते हैं ॥ अजाइति बकरी १ गौ २ महिषी ३ स्त्री ४ एह प्रसूत होइआं होइआं १०दस्सां दिनां कर्के शुद्ध हुंदीआंहैं और पृथ्वीविषे नवीनजो जल है सोभी १०रात्रकर्केहि शुद्धहुंदाहै।१।और जोजल खूए आदिते निकालयाहोवे सोजल जेकरशु द्धपात्रसाथ निकाल्याहोवे तां शुद्धहै एहदेवलजी कहते हैं जेकर सो निकाल्याहोआ जल एक १ रात्र उसपात्रमे रहे तां अशुद्धहुंदाहै उसकों त्यागदेणा चाहिए चाहे प्रथमशुद्धभीपा।१।

इसमे यमजी कहतेहैं अपइति जलको रात्रिमै नहिभरणा अर्थात् खूहआदिसे नहिनिकालना जेकर किसेकार्य्यवशतें निकाले तां अग्निउपररक्खे और धाम्रो धाम्न इसमंत्रका उच्चारणकरे तां शुद्ध होतेहैं ❀ १ अब रजस्वला स्त्रियोंके आपसमे स्पर्श विषे प्रायश्चित्तमयूखविषे किहाहै तिस विषे सपत्नी आंजेडीआं रजस्वलाहैं और एक कुलदीआंहैं तिनके आपसमें स्पर्शविषे वसिष्ठजी कहते हैं स्पृष्ट इति कदाचित् दोए रजस्वला एक कुलदीआं एक पति वालियां आप समें जाण कर्के अथवा नजाणकर्के छोणतां शीघ्रहि स्नान करणे कर्के शुद्ध हुंदिआंहैं। १। और जेकर भिन्न पति वालिआं और इक कुल दिआंहोण तां मार्कंडेयजी कहतेहैं उदक्येति ॥ इककुलदिआं रजस्वला साथ जेकर तैसी दूसरी स्पर्श करे तां तिसीदिनाविषे स्नानकर्केशुद्ध

यमोपि अपोन्निशिनगृह्णीयाद्गृह्णीतापिकदाचन निधायाग्निमुपर्या सांधाम्नोधाम्नइतीरयन् ॥ १ ॥ ततश्चशुद्धाभवेयुरित्यर्थः ॥ ❀ अथ रजस्वलायाअस्पृश्यस्पर्शे प्रायश्चित्तमयूखे तत्ररजस्वलयोः सपत्न्योरेक गोत्रयोः स्पर्शेवसिष्ठः स्पृष्टेरजस्वलेन्योन्यंसगोत्रेत्वेकभर्तृके कामादका मतोवापिसद्यःस्नानेनशुध्यतः १ असपत्न्योस्तुसवर्णयोर्मार्कण्डेयः उदक्या तुसवर्णायास्पृष्टाचेत्स्यादुदक्यया तस्मिन्नेवाहनिस्नाताशुद्धिमाप्नोत्यसं शयः १ इदंचाकामतः ॥ कामतस्तु काश्यपः। रजस्वलातुसंस्पृष्टाब्राह्म ण्याब्राह्मणीयदि एकरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति १ यत्तुपराशरः॥ स्पृ ष्टवारजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणीब्राह्मणींतथा तावत्तिष्ठेन्निराहारात्रिरात्रेणैव शुद्ध्यतीति १ तत्कामतोभ्यासे सहशयनादिविरस्पर्शेवा ॥असवर्णास्पर्शे पुनः सएव ! रजस्वलातुसंस्पृष्टाराजन्याब्राह्मणीचया त्रिरात्रेणविशु द्धिःस्याद्व्याघ्रस्यवचनंयथा १

हुंदीहै इसमें संशयनहिहै ॥ १ ॥ एह अकामकृत स्पर्शमे है जेकर कामकृतमे होवें तां कश्यप जीकहतेहैं रजइतिरजस्वलाब्राह्मणीजेकर रजस्वला ब्राह्मणीके साथ छोजावे तां एकरात्र निराहार रहकर पंच गव्य कर्के शुद्ध होतीहै। १। और जो पराशर जीने किहाहै कि आ पसमे ब्राह्मणीआं रजस्वला स्पर्श करें तां तिन रात्र तक निराहार स्थित रहें तां शुद्ध हुं दीआंहैं एह प्रायश्चित्त कामनाते बहुत वारकरणे मैहै अथवा एकठीआंदे शयनादि स्पर्श विषे है ॥ जो एक वर्णकीआं नहि तिनाके आपसमे छोणे विषे सोई पराशरजी कहतेहैं जेकर ब्राह्मणी रजस्वला क्षत्रियाणी रजस्वलाके साथ स्पर्शवाली होवे तां तिन्नांरात्रांकर्के शुद्ध हुं दीहै एह व्याघ्रजीका वचनहै ॥ १

और रजस्वला ब्राह्मणी वैश्या रजस्वला कर्के स्पर्श वाली होवे तां पंज रातां निराहार रहकर पीछे पंचगव्यके पान कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ २ ॥ और रजस्वला ब्राह्मणी शूद्रा रजस्वला कर्के स्पर्शवाली होवे तां छे ६ रात्र कर्के शुद्ध हुंदीहै एह सभकामनाके स्पर्शविषे है ॥ ३ ॥ अकाम ते स्पर्श विषे ब्राह्मणी सभजाति विषे अर्द्ध प्रायश्चित्त करे ॥ ४ ॥ इसमैं ऐसा जानणा कि जिसतर्हांब्राह्मणीआं रजस्वला आपसमैं स्पर्श वालिआं होण तां तिनांको उपवास और पंचगव्यपान किहाहै तिसतर्हां होरणांको समान कुल वालि आंके स्पर्श विषे भी उपवास

रजस्वलातुसंस्पृष्टावैश्ययाब्राह्मणीचया पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्धयति ॥ २ ॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टाशूद्रयाब्राह्मणीचया षड्रात्रेणविशुद्धिः स्याद्ब्राह्मण्याः कामकारतः ॥ ३ ॥ अज्ञानतश्चरेदर्धंब्राह्मणी सर्वजातिषु ॥ ४ ॥ अत्र यथा ब्राह्मणी रजस्वलयोःस्पर्शेउपवासः पंचगव्याशनंच तथाऽन्यासामपि सवर्णरजस्वलास्पर्शेपि तदेव ॥ असवर्णेतु यथाब्राह्मण्याःक्षत्रियास्पर्शेत्रिरात्रम् ॥ तथाक्षत्रियायावैश्यास्पर्शे ॥ वैश्यायाःशूद्रास्पर्शेपितदेव ॥ तथाचभवदेवनिबंधेस्मृतिः ॥ रजस्वलातुयानारी अन्योन्यमुभयंस्पृशेत् सवर्णेपंचगव्येनत्रिरात्रमसवर्णके ॥ १ ॥ पंचगव्येनउपवाससाहितेनेतिभवदेवः ॥ तथाशातातपः रजस्वलेउभेनार्यावन्योन्यंस्पृशतोयदि सवर्णेपंचगव्येनब्रह्मकूर्चमतःपरमिति १ ब्रह्मकूर्चप्रकारोव्रतप्रकरणेद्रष्टव्यः ॥

और पंचगव्यपानहै और असमानवर्णविषे जैसे ब्राह्मणीको क्षत्रियाणीके स्पर्शविषे त्रिरात्रहै इतनाहि क्षत्रियाणीको वैश्याकेस्पर्शाविषेहै और वैश्याको शूद्राके स्पर्श विषेभी सोई है तैसेहि भवदेवके निबंधमैं स्मृतिहै रजइति रजस्वलाजो स्त्रीहै सो दो आपसमै स्पर्शकरें अपणे वर्णमै तां उपवाससहित पंचगव्यकर्के और भिन्नवर्ण विषे त्रिरात्र व्रत कर्के शुद्धहुंदीआंहैं । १ । तैसेहि शातातपजी कहतेहैं दोस्त्रीयां रजस्वला आपसमै स्पर्शकरें तां सवर्णविषे पंचगव्यके पीछे ब्रह्मकूर्च करने कर्के शुद्ध हुंदिआंहैं ॥ १ ॥ सो ब्रह्मकूर्चका प्रकार व्रतप्रकरणमें देखलेना

जो वृद्ध वसिष्ठजीने किहाहै स्पृष्टेति ब्राह्मणी और शूद्रा एह दोनो रजस्वलाहोवें और आपसमे स्पर्श करें तां ब्राह्मणी प्राजापत्य कर्के और शूद्रा गोदान कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ १ ॥ और ब्राह्मणी वैश्या एह दोनो रजस्वलाहोण और परस्पर स्पर्श करें तां पूर्वा क्या ब्राह्मणी पादोन प्राजापत्य करे क्या ९ दिनका व्रत करे और उत्तरा क्या वैश्या तिसका इकपाद व्रत करे ॥ २ ॥ और ब्राह्मणी तथा क्षत्रियाणी एह आपसमे रजस्वला होकर स्पर्श करें तां पहली अर्द्ध कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदीहै और दूसरी लघु कृच्छ्र कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ ३ ॥ और क्षत्रि

यत्तुवृद्धवसिष्ठः ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीशूद्रजापिवा कृच्छ्रेणशुध्यतेपूर्वाशूद्रादानेनशुध्यति ॥ १ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीवैश्यजापिवा पादहीनंचरेत्पूर्वाकृच्छ्रपादंतथोत्तरा ॥ २ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीक्षत्रियातथा कृच्छ्रार्धात् शुध्यतेपूर्वाइतरातुतदर्द्धतः ॥ ३ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंक्षत्रियाशूद्रजापिवा उपवासैस्त्रिभिःपूर्वात्वहोरात्रेणचोत्तरा ॥ ४ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंक्षत्रियावैश्यजापिवा त्रिरात्राच्छुध्यतेपूर्वात्वहोरात्रेणचोत्तरा ॥ ५ ॥ स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंवैश्याशूद्रातथैवच त्रिरात्राच्छुध्यतेपूर्वा उत्तरातुदिनद्वयात् ॥ ६ ॥ वर्णानांकामतःस्पर्शेशुद्धिरेषासनातनीति ❀ ❀ ❀

याणी तथा शूद्रा एह रजस्वला होयां होयां आपसमे स्पर्श करें तां पहली क्या क्षत्रियाणीतिन्नां उपवासां कर्के शुद्ध हुंदीहै और दूसरीक्याशूद्रा अहोरात्रके अर्थात् दिनरात्रके व्रत कर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ ४ ॥ और क्षत्रियाणी तथा वैश्या एह रजस्वलाहोइयांदीआं आपसमे स्पर्श करें तां तिन्नांरातां कर्के क्षत्रिया और दिनरातके व्रत कर्के वैश्या शुद्ध हुंदीहै ॥ ५ ॥ और वैश्या और शूद्रा एह दोनो रजस्वलिआं होकर स्पर्श करें तां तिन्नांरातां कर्के वैश्या और दोदिन कर्के शूद्रा शुद्ध हुंदीहै ॥ ६ ॥ एह वर्णांकी कामकृत स्पर्श विषे शुद्धि कहीहै सो सनातनीहै ●

एह व्रत कामनासें बहुतवार करणेमे जानणा दान कर्के पादकृच्छ्रके प्रत्याम्नाय विषे और पतित चांडालादिके स्पर्श विषे वृद्धवसिष्ठ उार वृद्धवृहस्पतिजीका वचन है ॥ पतीति पतित १ अंत्यक्याडूम २ श्वपाक चांडाल ३ इनांकर्के कदाचित् रजस्वला स्त्री स्पर्श वाली होवे तां तिनां दिनानूं लंघकर्के प्रायश्चित्त करे ॥ १ ॥ पहले दिनहि पतिता दिके साथ स्पर्श होवे तां तिन्न ३ रातां व्रत करे परंतु स्नान दिनतें पीछे इसीतहांदूसरें दिन स्पर्श होवे तां दो २ दिन और तीसरे दिन दिनरात्रका व्रतकरे और चौथे दि न स्पर्श करे तां नक्त करे तां शुद्धहुंदीहै ॥ २ ॥ और जूठीशूद्रा कर्के और कुत्ते कर्के स्पर्श वाली रजस्वला होवे तां भी दो २ दिनका हि व्रतकरे इस स्मृतिका अर्थ

एतच्चकामतोऽभ्यासे ॥ दानेनपादकृच्छ्रप्रत्याम्नाये ॥ पतितचांडालादिस्प र्शे वृद्धवसिष्ठवृद्धवृहस्पती ॥ पतितांत्यश्वपाकेन संस्पृष्टाचेद्रजस्वला ता न्यहानिव्यतिक्रम्यप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥ प्रथमेह्नित्रिरात्रंस्याद्द्विती येद्व्यहमेवतु अहोरात्रंतृतीयेह्निचतुर्थेनक्तमेवच ॥ २ ॥ शूद्रयोच्छिष्ट यास्पृष्टाशुनावाद्व्यहमाचरेदिति चत्वारिदिनान्यस्पृश्यानि रजस्वलायाय स्मिन्दिनेस्पर्शोजातस्तदाग्रिमाणिदिनानि व्यतिक्रम्यानाशकेन नत्वित्य र्थः।अत्रसर्वत्रपंचगव्यप्राशनमपिकर्त्तव्यमिति चतुर्थेनक्तमिति विशुद्धिस्ना नात्पूर्वम ॥ तथाचविष्णुः। रजस्वलाचतुर्थाह्निस्नात्वाशुद्ध्येत् ॥ त्रिरात्राशक्तौ पणचतुर्विंशतिलभ्यंकांचनंदेयम् उपवासद्वये पुराणैकमूल्यं कांचनं देयम्

स्पष्ट कर्के कहीदा है ॥ चार दिन रजस्वला स्त्रीके हैं जिनोंमे स्पर्श नहि करणा ति नां विच्चों जिस दिन स्पर्श होवे तिसके अगले दिन व्यतीत कर्के क्या निराहार कर्के लंघकर एह अर्थ है परंतु इसजगा पंचगव्यका पान अंत्यमे अवश्य कर्के है और जो चौथे दिनमै नक्त किहा है सो स्नानते पहले स्पर्श होवे तां जानणा। सोई विष्णुजी कहते हैं रजइलि रजस्वला चौथे दिन विषे शुद्ध हुंदीहै और जो पि च्छे त्रिरात्र व्रत किहा है तिस विषे सामर्थ्य न होवे तां २४ चौवी पैसेके मुल्लका सुवर्ण दान करे और जो दो २ उपवास किहेहैं तिनांविषे सामर्थ्य न होवे तां इक्क पुराणके मुल्लका सु वर्ण दानकरे ॥ और पुराणादिमान व्रत प्रकरणविषे कहीहोई मानपरिभाषासें जानणा

इसमे भवदेव जी का बचन है रजइति जेकर रजस्वला चांडाल १ गर्दभादि २ काक ३ इनां कर्के छोजावे तां तितने दिन निराहार रहे जितने दिनां कर्के सो शुद्ध होवे एह बौधायन जीका वचन असमर्थ रजस्वला विषे और अकाम स्पर्शविषे जानणा ॥ १ ॥ और कामना विषे वृद्ध शातातप जी कहते हैं रजइति रजस्वला स्त्री जद चांडाल १ अंत्यकया नीच २ कुत्ता ३ काक ४ इनांकर्के स्पर्श वाली होवे तितना काल निराहार रहेजितने काल कर्के स्नानसें शुद्ध हुंदीहैं ॥ १ ॥ इसका अर्थ कहते हैं रजस्वला स्त्री चांडालादि स्पर्श वाली जिसकालमे होवे तिस कालतें लेकर जितने दिनां कर्के शुद्धि होवे

भवदेवः।रजस्वलातुसंस्पृष्टाचांडालाऽपशुवायसैः तावत्तिष्ठेन्निराहारायाव त्कालेनशुध्यतीति ॥ १ ॥ वौधायनीयमशक्तायामकामिवावोध्यम् ॥ अप शवोगर्दभादयः॥यावत्कालेन रजस्वलीयास्पृश्यदिनावच्छिन्नेन ॥ काम तस्तुवृद्धशातातपः ॥ रजस्वलायदास्पृष्टाचांडालांत्यश्ववायसैः तावत्तिष्ठे न्निराहारा स्नात्वाकालेनशुध्यति ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ रजस्वलाचांडाल स्पर्शकालादूर्ध्वं यावद्दिनैः शुध्यति तावत्संख्यंदिनं चतुर्थदिनेविशुद्धि स्नानं कृत्वापंचमदिनात्प्रभृतिनिहारातिष्ठेदिति॥ यत्तु ॥ शातातपः ॥ उद क्यासूतिकावापिशवांगंसंस्पृशेद्यदि त्रिरात्रेणैवशुध्येत इतिशातातपोब्रवी त् ॥ १ ॥ तथा चांडालैः श्वपचैर्वापिआत्रेयीस्पृशतेयदि त्रिरात्रोपोषि ताभूत्वापंचगव्येनशुध्यति ॥ १ ॥ तथा काश्यपः ॥ चांडालेनतुसंस्पृष्टा कदाचित्स्त्रीरजस्वला तान्यहान्यतिक्रम्यप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ १ ॥

तितने दिनोंकी संख्याकर्के चौथे दिनशुद्ध स्नान कर्के पंचम दिनतें लेकर निराहार रहे ॥ जो शातातपजी कहतेहैं उदेति रजस्वला और प्रसूति वालीस्त्री शवांगक्यामुडदेदेअंगको जद स्पर्श करे तां तिन्नांरातांकर्केशुद्धहोतीहैं एह शातातपजीका वचनहै ॥ १ तैसेहिऔरवचनहै चांडालैरिति चांडालोंकेसाथ और श्वपचांकेसाथ जोतिनकेतुल्यहै आत्रेयीकया रजस्वला जदस्पर्शकरेतां त्रिरात्रउपवासकेअनंतर पंचगव्यपानकर्के शुद्ध हुंदीहै ॥ १ ॥ तैसेंहिकश्यपजीकावाक्यहै चांडालके साथ कदाचित् रजस्वलास्त्री स्पर्शवालीहोवे तांतिन्नांदिनानुलंघकर प्रायश्चित्तकरे ॥ १

त्रिरात्रउपवासकर्के पंचगव्यपानकर्केशुद्धहुंदीहै श्रौर तिन्हारातांकोव्यतीतकरकेवकरीसेश्रपणेदेह कोंसिहणदेवे ॥ २ ॥ एहपहलेदिनके स्पर्शमेंहै एह कैक कहतेहैं श्रौर शूलपाणिजी ने कश्यपजीकेवचनमे प्रथमदिनकी व्यवस्था नहि है किंतु वृद्धशातातपजीके वचन ते कामनाके स्पर्शकी विषय करताहै एह कहाहै ॥ श्रौर पहलेदिनकेविषयकरणवाला(प्रथमेऽह्नित्रिरात्रंस्यात्) इत्यादि वृहस्पतिजीका वचनहै एहियुक्तहै ॥ उपवासमे श्रसमर्थ जोस्त्रीनिसमे श्रंगिराजीकहतेहैं चंडालइति ॥ चंडाल श्रौर श्वपच जेकर रजस्वलाकोंस्पर्शकरें तांश्रपक्वकृष्टको सोस्त्रीखावे तितनेदिन श्रौर स्नानतेपीछे पंचगव्यकापानकरेतांशुद्धहोतीहै ॥ १ ॥ श्रपक्वेति जो वस्तु श्रग्नि

त्रिरात्रमुपवासःस्यात्पंचगव्येनशोधनम् तानिशास्तुव्यतिक्रम्यश्रजाघ्राणं तुकारयेत् २ इत्येतत्प्रथमदिनविषयमितिकेचित् शूलपाणिस्तुकाश्यपवाक्येप्रथमदिनव्यवस्थानास्ति त्रिरात्रेणैवेतिवृद्धशातातपवचनात्कामविषयमेवैतदित्याह प्रथमदिनविषयंतुप्रथमेऽह्नित्रिरात्रंस्यादित्यादिबार्हस्पत्यमेवन्याय्यम् ॥ उपवासासमर्थायांत्वंगिराः। चंडालःश्वपचोवापियद्यात्रेयींस्पृशेत्तदा अपक्वकृष्टंवर्तेतपंचगव्येनशुध्यति १ पंचगव्यपानंस्नानानंतरंकार्य्यम्। अपक्वकृष्टमग्निपक्वहलकृष्टोत्पन्नव्यतिरिक्तम् चंडालेनसहैकवृक्षाद्यारोहणे पराशरः॥ एकवृक्षसमारूढौ चंडालोथरजस्वला अहोरात्रोषिताभूत्वा पंचगव्येनशुद्ध्यति १॥ एकशब्द एकावयव्युपलक्षणएतच्चविशुद्धिस्नानानंतरमित्यापस्तंबीयमग्रे श्वादिस्पर्शेविशेषमाह यमः॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टाशुनाजंबुकवायसैः निराहाराभवेत्तावद्यावत्कालेनशुद्ध्यति ॥ १ ॥

कर्केनहिपकी श्रौरहलकर्के नहिपैदेहोईतिसकानामहै। श्रौरचांडालकेसाथएकवृक्षपरश्रारूढ रजस्वलाविषे पराशरजीकहतेहैं एकेति एकवृक्षमेश्रारूढहोणचांडालश्रौररजस्वला तां सो स्त्रीदिनरातकेव्रतपीछेपंचगव्यकर्केशुद्धहुंदीहै।१। इसजगाएकशब्दएकश्रवयविकावाचकहै एहविशुद्धिस्नानतेपीछेपीणा श्रैसावचनश्रागेश्रावेगा। कुत्तेश्रादिकेस्पर्शमेयमजीविशेषकहतेहैं रजइति रजस्वला जद कुत्ता १ गिदड २ काक ३ इनांकर्केस्पर्शवालीहोवेतां तितने दिन निराहाररहेजितनेकाल कर्के शुद्ध हुंदी है ॥ १ ॥

एह विना कामनातें स्पर्शविषे जानणा और कामनाकर्के स्पर्शविषे रजस्वलापदकी अनुवृत्ति विषे बृहस्पति जीका वचनहै शुनेति कुत्तेकर्के और जूठीस्त्री कर्के और शूद्राकर्के स्पर्शवालीहोवे तां दोरात्रकाव्रतरक्षे परंतुजदतीसरेदिनस्पर्शहोवेतां एकादिनरात्रकाव्रतकरे और चउथेदिनस्पर्श करे तां नक्तकरे । १ ।और पहलेदूसरेदिनके स्पर्शविषे दोदिनकाव्रनजानणा और इसजगाभीसो दिनव्यतीतकर्के असाअर्थकरलेना ॥ जोवौधायनजी कहतेहैं रजइति रजवालीस्त्री ग्राम्यकुक्कुट और काक कुत्ता इनांकर्के स्पर्शवाली होवे तां जवतकचंद्रदर्शन नहि होयाहै तांतक निराहाररहे अर्थात् नक्तव्रतकरे ॥ १ ॥ एह चौथे दिनके स्पर्शविषे अशक्त स्त्री विषे जानणा ॥

एतदकामतः॥ कामतस्तुरजस्वलानुवृत्तौ बृहस्पतिः। शुनावोच्छिष्टयाशूद्रासंस्पृष्टाद्व्यहमाचरेत् अहोरात्रंतृतीयेह्निपरतोनक्तमाचरेत् १ प्रथमद्वितीयदिनेश्वादिस्पर्शेद्व्यहम् परतश्चतुर्थे अत्रापितान्यहानिव्यतिक्रम्येतियोज्यम् यत्तुवौधायनः।रजस्वलातुसंस्पृष्टाग्राम्यकुक्कुटवायसैःश्वभिःस्नात्वापिवेत्तावद्यावच्चन्द्रस्यदर्शनमिति १ चंद्रदर्शनंनक्तमित्यर्थः एतदशक्तायाश्चतुर्थदिनविषयम्। रजकादिस्पर्शेतु चंडालस्पर्शसमानमेव तयोः समानत्वादितिशूलपाणिः ॥ यत्तुप्रचेताः ॥ रजस्वलातुसंस्पृष्टाशुनाचंडालरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति १ तत्कामतोभ्यासे ॥ भोजनकालेश्वांत्यजादिस्पर्शेतु । वौधायनः । रजस्वलांतुभुंजानांश्वांत्यजोयदिसंस्पृशेत् गोमूत्रयावकाहाराषड्रात्रेणविशुद्ध्यति ॥ अशक्तौकांचनंदद्याद्विप्रेभ्योवापिभोजनमिति ॥ १ ॥

और धोवे आदि के स्पर्श में तुपुनः चंडाल स्पर्शके समान है तिना दोआंकी तुल्य होणेतें एह शूलपाणिने किहा है ॥ जो तुपुनः प्रचेताने किहाहै कि कुत्ता और चंडाल और गर्दभ इनां कर्के स्पर्श होइहोइ रजस्वला स्त्री पंच दिन निराहार व्रतकरणेकर्के पीछेतें पंच गव्यपानक के शुद्ध हुंदी है ॥ १ ॥ एह इच्छा तें अभ्यास विषे जानणा ॥ और भोजन समय विषे कुते चांडाल आदिके स्पर्शमे वौधायन जी कहते हैं भोजनकों कर्दी होइ रजस्वलाकों जेकर कुत्ता और चंडाल स्पर्शकरे तां छे ६ दिन गोमूत्र कर्के यावक भक्षण करोंते शुद्ध हुंदीहै और न समर्थाहोवे तां सुवर्ण वा भोजन ब्राह्मणांके तांई देवे ॥ १ ॥

जेकर दोए रजस्वला जूठीआं होण तां तिना उच्छिष्टांमे स्पर्श विषे तुपुनः अत्रिजीका वाक्यहै ॥ कदाचित् रजस्वला स्त्री जूठी होवे और दूसरी जूठी रजस्वलाके साथ स्पर्श वाली होवे तां पूर्वां क्याब्राह्मणी क्षत्रियाणी वैश्या एह प्राजापत्य कर्के और शूद्री दानकर्के और उपवासकर्के शुद्ध हुंदीहै १ परंतु एकहि जातिकीआं दोए होण तिनांविषे एह है जेकर भिन्नजातिकियां होण तां ब्राह्मणी क्षत्रियाणीके स्पर्श मे २ दो प्राजापत्य और वैश्या रजस्वलाके स्पर्शमें ३ त्रय इत्यादि जानणा। और शूद्रीआं रजस्वलाके परस्पर स्पर्शमे २ दो उपवास सहितप्राजापत्यके प्रत्याम्नाय दानकर्के शुद्धिहुंदीहै एहकामनातें करणेमेहै अकामकृतमे अद्धा है शूलपाणि जी ने इसतर्हां पाठ लिखाहै जूठे कर्के कदाचित् रजस्वला स्त्रीछोजावे तां

उच्छिष्टयोःपरस्परंस्पर्शे त्वत्रिः । उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीर जस्वला कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रादानैरुपोषितेति १ अत्रपूर्वाशब्देनब्रा ह्मणक्षत्रियवैश्यस्त्रियोभिधीयंते॥तेनरजस्वलयो;समानजातीययोरुच्छि ष्टयोःब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानांपरस्परस्पर्शेप्राजापत्यम् ॥ स्वस्वानंतरस्पर्शे त्वेकैकवृद्धिरूहनीया ॥ तादृशशूद्रयोःस्पर्शेपरस्परंतूपवाससहितप्राजाप त्यप्रत्याम्नायदानेनशुद्धिः । एतच्च कामतः । अकामतस्तदर्द्धम्॥ शूलपा णिस्तु उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीरजस्वला कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रा दानेनशुद्ध्यतीतिपपाठ १ तत्रोच्छिष्टेन चांडालादिना। दानेन कृच्छ्रप्रत्या म्नायेन एषुरजस्वलात्वमेव निमित्तमतोनक्षत्रियवैश्ययोर्ब्राह्मण्यादिभ्यो विशेषइत्याह। उच्छिष्टद्विजसंस्पर्शेतुमार्कंडेयः॥ द्विजान्कथंचिदुच्छिष्टा न्रजःस्त्रीयदिसंस्पृशेत् अधोच्छिष्टेत्वहोरात्रमूर्ध्वोच्छिष्टेत्र्यहंक्षिपेदिति १

पूर्वां क्या ब्राह्मणी आदि प्राजापत्य कर्कें शुद्ध हुंदीहै और शूद्रा दान कर्के १ इस जगा उच्छिष्ठ चांडाल समझणा और दान कृच्छ्रका प्रत्याम्नाय जानणा। और इसमें रजस्वलात्व धर्म हि उक्त प्रायश्चित्तका निमित्त है कोई ब्राह्मणत्वादि जाति नहि इस कर्के सभना वर्णां कीआं स्त्रीयां का तुल्यहि प्रायश्चित्त है किसेमे विशेष नहि ऐसा किहाहै ॥ जूठे द्विजके क्या ब्राह्मणा दिके स्पर्शाविषे मार्कण्डेय जी कहते हैं॥ द्विजानिति कदाचित् ब्राह्मणादिको जूठआं कौ रजस्वला स्त्री स्पर्श करे जेकर अधोच्छिष्टांको स्पर्श करे तां दिनरात्रव्रत करे और ऊर्ध्वोच्छिष्टांको स्पर्श करे तां त्रय दिन व्रत करे॥ १ ॥

इस विषे यद्यपि विशेष नहिंसुणींदाहै तथापि ब्राह्मणादिकी अपेक्षा करके उच्छिष्टक्षत्रियादि स्पर्श विषे ब्राह्मणीको अधिक कल्पना करणी । इसी तहीं हीनजाति की रजस्वला ते अधिकजातिवालीके स्पर्श विषेहै जैसे क्षत्रियाणीको ब्राह्मणी के स्पर्श विषे कुछ न्यून क्या थोडा कल्पना करणा ॥ भोजनकालमें रजस्वला दूसरी रजस्वलाकों देखे तां तिसमे आप स्तंबजी कहते हैं उदे ति। जेकर रजस्वला भोजन करदी होई दूसरी रजस्वला कों देखे तां स्ना नके दिन तक भोजन न खावे और पीछे ब्रह्मकूर्च पीवे ॥ १ ॥ एह कामनाके दर्शन विषे जानना । और चांडालादि के दर्शनमें अत्रिजी कहतेहैं रजस्वलेति भोजन कों करदीहोई रजस्वलाओचंडालकों देखे तां त्रय उपवास व्रत करे उौर इच्छातें देखे तां

अत्रयद्यपि नविशेषः श्रूयते तथापिब्राह्मण्यपेक्षया उच्छिष्टक्षत्रियादिस्पर्शे ब्राह्मण्या अधिकंकल्प्यम्।एवंहीनायाउच्छिष्टस्पर्शेन्यूनम्। भोजनकालेरज स्वलांतरंदृष्ट्वापुनर्भोजनेत्वापस्तंवः उदक्यायदिवाभुंक्तेदृष्ट्वान्यांतुरजस्व लाम् आस्नानकालंनाश्नीयाद्ब्रह्मकूर्चंततःपिवेत् १ एतच्चकामतःचांडालादिदर्श नेत्वत्रिः रजस्वलातुभुंजानाचंडालंयादिपश्यति उपवासत्रयंकुर्यात्प्राजापत्यं तुकामत इति १ रजस्वलायाः श्वादिदंशनेव्यासः रजस्वलायदादष्टाशुना जंबुकरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यतीति ॥ रजस्वलायाआ शौचिस्पर्शेशातातपः ॥ आर्त्तवाभिप्लुतानारीस्पृशेच्चशवसूतकम् ऊर्ध्वं त्रिरात्रंस्नातांतांत्रिरात्रमुपवासयेत् १ स्पृष्ट्वाभोजनादौत्वत्रिः आर्त्तवाभि प्लुतानारीमृतसूतकयोःस्पृशेत् भुक्त्वापीत्वाचरेत्कृच्छ्रंस्पृष्ट्वातुत्र्यहमेवच १

प्राजापत्यकरे ॥ १ ॥ रजस्वलाकोंकुत्ते आदिके डंगनमेंव्यासजीकहतेहैं कुत्ता उौर गिदड उौर गर्दभ रजस्वलाकों दंश करें क्या वडण तां पांच दिन निराहार व्रतकरके पंच गव्यकापानकरे तां शुद्धहोतीहै ॥ १ रजस्वलाकों सूतकीके स्पर्शमें शातातपजीकावचनहै ॥ ऋतुकरके युक्त्ती मरणके सूतकी पुरुषकों स्पर्श करे उौर त्रयदिनतें उपरंत स्नातहोवेतां त्रयदिन उपवास व्रतकरे। १। स्पर्शकरके भोजनके खाणेमें अत्रिजीका वाक्यहै रजस्वला स्त्री जन्म सूतक उौर मृतसूत कियोंके साथ स्पर्शकरे उौर पीछे अन्न जलकों भक्षणकरे तां कृच्छ्र व्रतकों करे उौर केवल स्पर्शमें त्रयदिन व्रतकरे १

सूतकी के साथ स्पर्श में स्नानतें पूर्व ऋतुके देख णेमें मार्कंडेयजी का वाक्य है मृत सूतक के स्पर्श होयां होयां जेकर स्त्री ऋतुकों देखे तां क्या करे सो कहते हां चारदिन पर्य्यंत न भक्षण करे जेकर भक्षण करे तां चांद्रायणव्रतकों करे ॥ १ ॥ मदन रत्नमें स्मृत्यंतरविषेंकहाहै मृत सूतकके होयां होयां जेकर रजस्वला होवेतां अभिषेक कर्के शुद्धि हो तीहै और तात्काल स्नान कर्के भोजनकर्के एह असमर्थ स्त्रीमें जानणावा वालक संतानवालीमेंजान णा। १ । इनांतें अन्य स्त्रीकोंत्रयदिन उपवासकिहाहै । संबंधीकेमरणआदिके सुणनेविषे व्यास

स्पर्शानंतरंभोजनादौकृच्छ्रंकेवलस्पर्शेतुत्र्यहम् आशौचिस्पर्शेस्नानात्प्राग्र जोदर्शनेमार्कंण्डेयः ॥ मृतसूतकसंस्पर्शेऋतुंदृष्ट्वाकथंभवेत् नास्नानका लमश्नीयाद्भुक्त्वाचांद्रायणंचरेदिति १ आस्नानकालपर्यंतंचतुर्थदिनपर्यंतम् मदनरत्नेस्मृत्यंतरे ॥ अप्रायत्येसमुत्पन्नेमलवद्वाससीयदि अभिषेकेण शुद्धिः स्यात्सद्यःस्नानेनभोजनम् १ इदमशक्तायावालापत्याविपयंवा॥अ न्यस्यास्तुत्रिरात्रोपवासः अप्रायत्यंमृतसूतकम् । मलवद्वाससीरजस्वलाशु द्धिःस्पर्शयोग्यता ॥ बंधुमरणश्रवणादौव्यासः ॥ मलवद्वसनायास्तुअप्राय त्यंभवेद्यदि अभिषेकेणशुद्धिःस्यान्नाशनंवादिनत्रयमिति १ अत्रापिपूर्ववद् व्यवस्थादिनत्रयमित्यवशिष्टकालोपलक्षणम् ॥ अप्रायत्यंबंधुमरणादिना सएव आर्त्तवाभिप्लुतानारीनावगाहेत्कदाचन उद्धृतेनजलेनैवस्नात्वाशेषंस मापयेत् २ सिक्तगात्राभवेदद्भिःसांगोपांगमलैर्युता नवस्त्रपीडनंकुर्यान्ना न्यवासाभवेत्पुनरिति ३ तत्रपराशरः ॥ स्नानेनैमित्तिकेप्राप्तेनारीयदिरज स्वला पात्रांतरिततोयेनस्नानंकृत्वाव्रतंचरेत् ॥ १ ॥

जीका वाक्यहै ऋतुके होयां होयां मरण सूतक होवे तांअभिषेक कर्के शुद्धि कहीहै आगेपू र्वकीन्याईं अर्थजानणा ॥ १ ॥ सोई व्यासजीकहतेहैं ऋतुयुक्त स्त्रीतलाआदिमें स्नाननकरे जल कों बाहर निकासकर स्नानकरे शेषकर्म्मसोहै जिसका आरंभ कीता होआहै तिसकों पूराकरे।२ पक्षांतर कहतेहैं सिक्तेति अथवा जलकर्के अंगाकों सिंचन करावे और सांगोपांगमल कर्के युक्तहै और वस्त्रकों निष्पीडनन करे और दूसरे वस्त्रकों नधारनकरे । ३ । तिसमें पराशरजीका वाक्यहै रजस्वलाकी नैमित्तिक स्नानके प्राप्तहोयांहोयां पात्रकेजलकर्के स्नानकरे और व्रतकरे १

● अब परंपरा स्पर्श विषे तिसविषे भी अचेतन दंडादि व्यवधान विषे याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं उदेति रजस्वला अशुचि पतितादि तिनांकर्के स्पर्श वाला पुरुष स्नान करे और आपः पुनंत्वित्यादि मंत्र और गायत्रीका एकवार मनकर्के जपकरे और जेडा रजस्वला दिकर्के स्पर्श वालाहै तिसकर्के जिसको स्पर्श होवे सो आचमन कर्के शुद्धहुंदाहै क्योंकि इसको साक्षात् स्पर्श नहि किंतु परंपरा स्पर्श है १ ॥ और चेतनके व्यवधान विषे मनुजी कावचनहै ॥ मुडदेका और तिसके स्पर्शवालेका तृणादि व्यवधान कर्के जो स्पर्श वाला है सो स्नान कर्के शुद्ध हुंदाहै ॥ पहलेश्लोकमेजो (अशुचिभिः) एहपदहै सो कुत्तेआदिका वाचकहै ॥ परंपराकेंहि स्पर्श मे शांतातपजीका वचनहै जेडा अशुचिजो मलमूत्रादि तिसको

● अथपरंपरास्पर्शे तत्राप्यचेतनदंडादिव्यवधानेयाज्ञवल्क्यः उदक्याशुचिभिःस्नायात्संस्पृष्टस्तैरुपस्पृशेत् अब्लिंगानिजपेच्चैवगायत्रींमनसासकृदिति १ तैरुदक्याशुचिसंस्पृष्टैःसंस्पृष्टउपस्पृशेदाचामेदित्यर्थः अशुचिरत्र शुनकादिःचेतनव्यवधानेतुमानवं शवंतत्स्पर्शिनंचैवस्पृष्ट्वास्नानेनशुध्यतीति ॥ स्पृष्टस्पर्शनेतुशातातपः । अशुचिंसंस्पृशेद्यस्तुएकएवसदुष्यति तंस्पृष्ट्वान्योनदुष्येतसर्वद्रव्येष्वयंविधिरिति ॥ १ तथासंहतानांतुपात्राणांयद्येकमुपहन्यते तस्यतच्छोधनंप्रोक्तंनतुतत्स्पर्शिनामपि २ क्वचिदचेतनव्यवधानेपिवचनात्प्रायश्चित्ताधिक्यम् यथाहापस्तंवः ॥ एकशाखासमारूढश्चांडालादिर्यदाभवेत् ब्राह्मणस्तत्रनिवसन्स्नानेनशुचितामियात् १ ॥ आदिशब्दादुदक्यादीनांग्रहणम् ॥ शाखाग्रहणमवयव्युपलक्षणमिति

स्पर्शकरे सोई अपवित्र हुंदाहै और इसकेसाथ जो दूसरा स्पर्शकरे उसको दोष नहि सभना वस्तुयों विषे एहि विधि जानणी।१।तैसेहि जेडेपात्र इकट्ठे हैं तिनां विचों एकपात्र मलादि कर्के दूषित होवे तां तिसीकी शुद्धि करणी होर सभ पवित्रहैं।२।और किसे जगा अचेतनके व्यवधान विषे भी वचनते प्रायश्चित्त वहुतहै जैसे आपस्तंबजी कहते हैं एकशाखामे क्या वृक्षमें चंडाल आदि जद स्थित होवे और तिसमे ब्राह्मण भी स्थित होवे तां स्नानकर्के शुद्ध हुंदा है । १ ।इसजगा आदि शब्दतें रजस्वला पतितादिका [illegible] और शाखाग्रहणते [illegible] अंगांवाले [illegible] ग्रहण है ॥

इसमे परंपरास्पर्शमे स्पर्शशब्दगौणहै तिसमै वचनते प्रायश्चित्तहै इसमे अपवादकों पराशरजीक हतेहैं ॥ गलीका चिकड और जल और वेडीऔर मार्गऔर तृणघास और पकीयांइटांकीकंध एह स्पर्शतें दोष वालियां नाहि १ स्पर्श प्रायश्चित्तके अपवादकों बृहस्पतिजीकहतेहैं तीर्थ और विवाह और यात्रा और युद्ध और भाजड और नगर ग्राम आदिकादाहतिन्हांमें स्पर्शास्पर्शि दोष नाहि अर्थात् परंपरास्पर्शका दोष नहिहै १॥ ऐसेहि होर वाक्यभीहैं और ब्राह्मणकों चैत्यवृक्ष आदिके स्पर्शमें पराशरजी कहतेहैं चैत्यवृक्ष क्या मार्गादि विषे साधारण वृक्ष साधारण पुरुषां कर्के जो नमस्कार करीदाहै और श्मशानकाष्ट और पशुयांके मारणे वास्ते जो बंधने वाला काष्ट

अत्रपरंपरास्पर्शेपि स्पर्शशब्दोगौणस्तत्रवचनात्प्रायश्चित्तम् अत्रापवाद माहपराशरः ॥ रथ्याकर्दमतोयानिनावः पंथास्तृणानिवा स्पर्शनान्नप्रदुष्येतपक्केष्टकचितानिच १ स्पर्शप्रायश्चित्तापवादमाह बृहस्पतिः ॥ तीर्थे विवाहेयात्रायांसंग्रामेदेशविप्लवे नगरग्रामदाहेपुस्पृष्टास्पृष्टिर्नदुष्यति एवमन्यान्यप्यपवादवचनानिव्यवस्थापनीयानि ॥ ब्राह्मणस्यचैत्यवृक्षादि स्पर्शे पराशर:॥ चैत्यवृक्षश्चितिर्यूपश्चंडाल:सोमविक्रयी एतांस्तुब्राह्मणः स्पृष्ट्वासवासाजलमाविशेदिति १ क्षत्रियादीनांन्यूनंकल्पनीयम् चैत्यवृक्षो ग्रामादौसाधारणजनवंद्यः चितिःश्मशानकाष्ठम्। यूपःपशुमारणार्थंबन्धनकाष्ठम् उपरिभागस्पर्शेशंखः॥ रथ्याकर्दमतोयेनष्ठीवनाद्येनवाप्यथ नाभेरूर्ध्वंनरःस्पृष्टःसद्यःस्नानेनशुध्यतीति १ अधोभागस्पर्शेयमः सकर्दमंतु वर्षासुप्रविश्यग्रामसंकरम्जंघयोर्मृत्तिकास्तिस्रःपादयोःषण्मृदः स्मृता इति इत्यस्पृश्यस्पर्शप्रायश्चित्तानि॥

और चांडाल और सोमविक्रयी इनांके साथ ब्राह्मण स्पर्श करे तो सहित वस्त्रांके जलमें स्नान करे १ क्षत्रियादिकों थोडा किहाहै ऊपर भागमें स्पर्शविषे शंखजीकावाक्यहै गलीका चिकड और थुक इनांकर्के नाभितें ऊर्ध्व स्पर्शमे तात्काल स्नान कर्के शुद्ध होताहै १ और नाभितें अधो भाग स्पर्शमें यमजी कहतेहैं वर्षामें नगरके कूडेके साथ जो चिकड जंघामें स्पर्शहोवे तां त्रय बार मृत्तिका लगाणे कर्के और पैरांविषे ६ बार लगाणे कर्के शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ एह जिनका स्पर्श नहि करणा तिनांके स्पर्शका प्रायश्चित्त समाप्त हुया ॥ ७॥

अब कुते आदिके डंगमे मनुजी कहतेहैं श्वेति कुत्ता और गिदड और खोता और जोमांसके भक्षणकरणेवाले नगरमें जीवहैं और घोडा और ऊट और सूकर इनांकर्के वड या होया जो पुरुष है सो प्राणायामकर्के शुद्ध हुंदाहे ॥ १ ॥ प्राणायाममें विशेषघृतभक्षणकों याज्ञवल्क्यजी कहतेहैं ॥ पुंश्चली और वानर और खोता और ऊट आदिक और काक इ नांकर्के वडया होया पुरुष जलमें प्राणायाम कर्के और घृतभक्षण कर्के शुद्धहुंदाहै २ एह ना भितें हिठां थोडे वडणेमें जानणा ॥ जोतुपुनः सुमंतुने किहाहे ॥ कुत्ता और गिदड और मृ ग और महिष और बकरा और भेड और खोता और करभक्याऊट और नेवल और

अथश्वादिदंशे मनुः ॥ श्वसृगालखरैर्दष्टोग्राम्यैः क्रव्याद्भिरेवच ॥ नराश्वोष्ट्रवराहैश्चप्राणायामेनशुध्यतीति १ प्राणायामेविशेषंघृतप्राशनंचाह याज्ञवल्क्यः ॥ पुंश्चलीवनरखरैर्दष्टश्चोष्ट्रादिवायसैः प्राणायामंजलेकृत्वाघृतंप्राश्यविशुध्यति २ एतच्चनाभेरधस्तादीषद्दष्टस्य। यत्तुसुमंतुः ॥ श्वसृगाल मृगाज महिषाजाविखरकरभनकुलमार्जारमूषकाप्लवकाकपुरुषदष्टानामापोहिष्ठेयाभिःस्नानंप्राणायामत्रयंचेति॥ एतच्चपादयोःकिंचिदधिकदंशे नाभेरूर्ध्वंदंशेतु बौधायनः॥ शुनादष्टस्तुयोविप्रोनदींगत्वासमुद्रगां प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुध्यतीति १ नाभेरधस्तादतिगाढदंशविषयं ॥ एतस्मिन्नेवविषयेदेवलः ॥ श्वदष्टःसागरगायांनद्यांस्नातोनिराहारः प्राणायामशतमावर्त्तयंस्त्रिरात्रादपगतपाप्माभवति ॥ तन्नाभेरूर्ध्वे गाढदंशे ॥

विल्लाओर चूहा और डडूडू और काक और पुरुष इनांकर्के डंगेहोये जोपुरुषहैं सो आपोहिष्ठा आदिक ऋचाकर्के स्नानकरे और त्रय ३ प्राणायामकरे एह पादोंमें वहुत डंगणेमें प्रायश्चित्तहे नाभितें ऊपर डंगणेमे बौधायनजीकहतेहैं कुत्तेकर्के डंगया होया ब्राह्मण समुद्रमें प्राप्त होणा वालीनदीकों प्राप्त होकर सउ१००प्राणायामकर्के और घृतभक्षणकर्के शुद्धहुंदाहै १ ॥ एहनाभितें अधःक्योंहिठवहुत डंगणेमें जानणा ॥ इसीविषयमे देवलजीकहतेहैं ॥ कुत्तेकर्के वडया होया पुरुष समुद्रमें जाणेवाली नदीमें स्नानकोंकरे और निराहारव्रतकरे सउ १०० प्राणायामकरे त्रयदिनतें उपरंत शुद्ध हुंदाहि एह नाभितें उपरवहुते डंगमें जानणा ॥

इसीमें शंखजीकावाक्यहे वसमेंकेकाष्ठकर्के क्षतहोयाहोया औंर तेसेकुत्तेकर्के डंगयाहोव्या और व्यभिचारिणीस्त्रीके दंदांकर्के डंगयाहोयात्रयदिनके व्रतकर्केंशुद्धहुंदाहे १ इसीवाक्यकोंयमजीकहते हैं ॥ गिदड और सूर और खोता ओर ऊठ और कुत्ता और वानर और हाथी इनांकर्के डंगयाहोया ब्राह्मणदिनमें त्रयआचमनकरे तांशुद्धहुदाहे और पंजवासत्त ब्राह्मणाकेतांई हविष्यभोजन देवें १ ब्रह्मचारिमें हारीतजीकहतेहैं कुत्तेकर्के डंगयाहोयादिनमें एकवारभोजनकरे और समुद्रपर्यंत नदीमें प्राप्तहोकर सौप्राणायामकरे और घृतभक्षणकरे तां शुद्धहुंदाहे ॥ इसीप्रकार गिदड और बिल्ला और नेवल और चूहा इनांकर्के डंगयां होयांकों भीजानणा ॥ अब ब्रह्मचारीके अधिकारमें पैठीनसीजीकहतेहैं ॥ कुत्तेकर्के वडेहोयेको त्रयदिनउपवासव्रत और ब्राह्मणकेगृहमेंनि

अत्रैवशंखः । नीलीकाष्ठक्षतोविप्रः शुनादष्टस्तथैवच त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्यात्पुश्चलीदशनक्षतइति १ यमोपि सृगालसूकरखरोष्ट्श्ववानरकुंजरैः एतैस्तुब्राह्मणोदष्टस्त्रिरक्तःसमुपस्पृशेत् १ हविष्यंभोजयेदन्नंब्राह्मणान्सप्तपंचचेति१ ब्रह्मचार्यधिकारेहारीतः॥ शुनादष्टस्त्वहन्येकाहारः समुद्रगांनदींगत्वाप्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यततःशुचिरेवंगोमायुमार्जारनकुलमूषकैर्दष्टानाम् ॥ ब्रह्मचार्यधिकारे पैठीनसिः शुनादष्टस्यत्रिरात्रमुपवासोविप्रगृहेवासश्च ॥ यत्तुशातातपः ॥ गवांशृंगोदकस्नातः शुनादष्टस्तुब्राह्मणः समुद्रदर्शनाद्वापिशुनादष्टःशुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ अत्रसमुद्रेत्यादिसाक्षाद्धेतुप्रदर्शनेनपूर्ववाक्यवैलक्षण्यात्पुनःशुनादष्टइत्युपात्तम् ॥ १ ॥ वेदविद्याव्रतस्नातः शुनादष्टस्तुब्राह्मणः हिरण्योदकमिश्रंचघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ २ ॥ तन्नाभेरधस्ताद्दीपदष्टविषयम् वचनाद्विशिष्टब्राह्मणमात्रविषयं वा समुद्रदर्शनेतुतत्तीरवासिनाम्॥ व्रतस्थस्यविशेषमाह बौधायनः । व्रतस्थस्तुशुनादष्टस्त्रिरात्रमुपवासयेत् सघृतंयावकंपीत्वाव्रतशेषंसमापयेत् ॥ १ ॥ यत्तुशातातपः॥ अव्रतःसव्रतोवापिशुनादष्टोभवेद्द्विजः॥

वासशुद्धिकेदेणवालाकिहाहै जोतुपुनःशातातपनेंकिहाहै कुत्तेकर्के डंगयाहोया गौयांके शृंगांके जलकर्के स्नानकीतयां होयां शुद्धहोताहै और समुद्रके दर्शनकर्केंभी शुद्ध होताहै १ वेदविद्याव्रतमें जिसनें स्नानकीताहै अर्थात् वेदविद्यामे चतुरहे तिसकों जेकर कुत्तावडे तां सुवर्णके जलकर्के रलयाहोया जोघृत तिसकों भक्षणकर्के शुद्ध हुंदाहै २ सोनाभिकेहेठां थोडे डंगमेजानणा इसवचनतें अथवाविशिष्टगोत्री ब्राह्मणके विषय जानणा और समुद्रदेखणा तिसके कनारेमें रहणवाल्यांविषे जानणा ॥ जो व्रतमे स्थितहै तिसकोविशेष बौधायनजीकहतेहैं व्रतमेंस्थित पुरुषको कुत्ताडंगे तां त्रयदिनउपवासव्रतकरे सहितघृतके यावककोंपीकरशेषव्रतकों समाप्तकरे १ जोतुपुनःशातातपनें किहाहै अव्रतइति व्रततें रहितहोवे वा युक्तहोवे कुत्तेकर्के डंगयाहोवे

सो सुवर्णके जलकर्के मिश्रितजोघृत तिसकों पीकरशुद्धहुंदाहै १ सोभ्रतिअसमर्थमेंजानणा ब्राह्मणांते रहित ग्राममें पराशरजी कहतेहैं ब्राह्मणांते रहित ग्राममें कुत्ते कर्के डंगया होया पुरुष वैलकी प्रदक्षिणा और शीघ्रहि स्नानकर्के शुद्धहुंदाहै ॥ १ ॥ स्त्रीयांकों विशेष पराशरजीक हतेहैं ॥ ब्रह्मणी कों जेकर कुत्ता वा गिद्दड वाविगहाड वडे तां उदय होयेग्रहनक्षत्रकों देख कर तात्काल शुद्धहुंदीहै १ वैधायनजी कहतेहैं ब्राह्मणी कुत्ते कर्के डंगीहोवे तां चंद्रमाकेदे खणेकर्के वानक्षत्रांकेदेखणेकर्के शुद्धहुंदीहै १ जेकर कृष्णपक्षमें चंद्रमानादिस्से तद जिसदिशामें चंद्रमास्थितहै तिसादिशापासेदेखे २ अंगिरसऋषिनें पंचगव्यकाभीभक्षण किहाहै ब्राह्मणीति इ सका अर्थपूर्वकहीदसाहि कुछ विशेष कहतहां १ सोममार्गकर्के क्या तिसके देखणे कर्के पवित्र होई २पंचगव्यकर्केशुद्धहुंदीहै २ ब्राह्मणीकाग्रहण उपलक्षणमात्रहै॥ व्रतमें स्थितजो स्त्रीतिसवि

हिरण्योदकमिश्रंतुघृतंप्राश्यविशुध्यति ॥ १ ॥ तदत्यंताशक्तविषयम् ब्राह्मणरहितग्रामेतुपराशरः ॥ असद्ब्राह्मणकेग्रामेशुनादष्टोद्विजोत्तमः वृषं प्रदक्षिणीकृत्यसद्यःस्नात्वाशुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ स्त्रीणांविशेषमाहपराशरः ॥ ब्राह्मणीतुशुनादष्टाजंवुकेणवृकेणवा उदितंग्रहनक्षत्रंदृष्ट्वासद्यःशुचिर्भवे त् १ वौधायनोपि ॥ ब्राह्मणीतुशुनादष्टासोमेदृष्टिंनिपातयेत् नक्षत्रदर्शना द्वापिशुनादष्टाशुचिर्भवेत् १ कृष्णपक्षेयदासोमोनदृश्येतकदाचन यांदिशं व्रजतेसोमस्तांदिशंत्ववलोकयेदिति २ अंगिरसा त्वत्र पंचगव्यप्राशन मप्युक्तम् ब्राह्मणीतुशुनादष्टासोमेदृष्टिंनिपातयेत् यदानदृश्यतेसोमःप्रा यश्चित्तंकथंभवेत् १ यांदिशंतुगतःसोमस्तांदिशंचावलोकयेत् सोममार्गेण सापूतापंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ ब्राह्मणीग्रहणमुपलक्षणम् व्रतस्थस्त्रीवि षयेपराशरः॥ त्रिरात्रमेकोपवसेच्छुनादष्टातुसव्रता सघृतंयावकंभुक्त्वाव्रत शेषंसमापयेत् १ रजस्वलायाविशेषमाह पुलस्त्यः रजस्वलायदादष्टाशु नाजंबुकरासभैः पंचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति १ ऊर्ध्वंतुद्विगुणंना भेर्वक्त्रेतुत्रिगुणंतथा चतुर्गुणंस्मृतंमूर्ध्निदष्टेऽन्यत्राशुचिर्भवेत् ॥ २ ॥ अन्यत्ररजस्वलावस्थाया इतिशेषः

अब पराशरजी कहतेहैं व्रतकर्के युक्त जोस्त्री तिसकों कुत्तावड्डे तां त्र्यदिन उपवासव्रतकोंकरे और सहितघृतके यावककों भक्षण कर्के व्रतकी न्यूनताकों पूर्णकरे१ रजस्वला स्त्रीमें विशेष पुलस्त्य जी कहतेहैं रजस्वलाकों कुत्ता गिदड खोत्ता जेकर वडे तां पंच ५ दिन निराहार व्रतकों करे पीछे पंचगव्य कर्के शुद्ध हुंदीहै १ नाभितें ऊपरडंगहोवेतां दूणा व्रत किहाहै और मुखमें भी त्रागुणा किहाहै शिरमें चारगुणा अधिक किहाहै ॥ २ ॥ और जोरजस्वला नहिहै तिसकों व्रत नहि किहाहै किंतुअशुद्धि कहीहै सो पूर्वोक्त प्रकार कर्के हि दूरहोवेगी ॥

कुत्तेके सिंघणे आदिमे शातातपजी कहतेहैं जिस पुरुषकों कुत्तेने सिंघयाहै वा चटयाहै वा नखां करके विलुंद्रया है तिसकी शुद्धि जल करके धोणेतें और अग्नि करके तपाणेतें हुंदीहै ॥१ और व्रणमे काडेकी उत्पत्तिमें बौधायनजी कहतेहैं(प्रश्न)जिस ब्राह्मणके फटमें पाक डेर आदिके होयाहोयां कीडे उत्पन्न होण तिसका प्रायश्चित्त कैसे हुंदा है ॥ १ ॥ (उत्तर) गोमूत्र गो मय और दुध दधि घृत कुशाका जल इनां द्वारा त्रय दिन स्नान करके और पान करके कृमि दष्ट होया होया शुद्ध हुंदाहै।२।एह नाभितें हिठां जानणा॥मनुजीभी कहतेहैं ब्राह्मणदेति इ

शुनाघ्रातादिषुशातातपः॥ शुनाघ्रातावलीढस्यनखैर्विदालितस्यच अद्भिः प्रक्षालनंशौचमग्निनाचोपचूलनमिति १ उपचूलनंतापनम् ॥ व्रणेकृम्यु त्पत्तौतु बौधायनः ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेय स्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १ ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् त्र्यहं स्नात्वाचपीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेदिति २ एतन्नाभेरधस्ताद्ज्ञेयम्।मनु रपि ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चि त्तंकथंभवेत् ॥ १ गवांमूत्रपुरीषेणत्रिसंध्यंस्नानमाचरेत् त्रिरात्रंपंचगव्या शीत्वधोनाभ्याविशुद्ध्यति ॥ २ ॥ नाभिकंठांतरोद्भूतेव्रणेचोत्पद्यतेकृमिः षड्रात्रंतुतदाप्रोक्तंप्राजापत्यंशिरोव्रणइति ॥ ३ यत्तुशातातपः। ब्राह्मण स्यव्रणद्वारेयदासंपद्यतेकृमिः प्रायश्चित्तंतदाकार्यमितिशातातपोब्रवी त् १ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम् त्र्यहंस्नात्वापीत्वाचकृमि दष्टःशुचिर्भवेदिति ॥ २ ॥ तदोषदष्टविषयम् ॥

सके पूर्व श्लोकका डोहि अर्थ कथन कीताहै ॥ १ ॥ और गौवांके गोहे और मूत्र करके त्रय काल स्नान करे त्रयदिन पंच गव्य भक्षण करे नाभिते हिठां कृमि डंगणेसें शुद्ध होताहै ॥ २ और नाभि कंठके मध्यमे फट विषे कोडयांकी उत्पत्ति होवे तां छे ६ दिनका व्रत किहाहै और शिरके फटमें कृमि होण तां प्राजापत्य किहाहै ॥ ३ जो तुपुनः शातातपजीने किहाहै सो बौधायन जीके वाक्यके तुल्य अर्थ जानणा परंतु एकदिन करणा ॥ १ ॥ एह थोडे दंश में जानणा ॥ २ ॥

[illegible]भेद करके तिसीनें क्या मनु जीने प्रायश्चित्तकहाहै ब्राह्मणस्येति ब्राह्मणके व्रणमें क्या फट विषे [illegible] वालेविषे कृमि उत्पन्न होया तां तिसका प्रायश्चित्त किस तहीं होवे ॥ १ ॥ इस [illegible] ॥ गौआंके मूत्रादि पंचगव्य करके स्नान करे त्रय दिन और पीवेतां कृमिदष्ट पवि[illegible] ॥ २ ॥ और ऐसा जेकर क्षत्री होवेतां पंजमासे सोना दान करे और वैश्य जेकर [illegible] होवे तां उपवासके पीछे गोदान करे ३ ॥ और शूद्र जेकर ऐसा होवे तां गोदान [illegible] करे उपवास न करे तां शुद्ध होवाहै ॥ एभि नाभितें हेठ कृमि होया तां जानणा ॥ तिस

वर्णभेदेनप्रायश्चित्तविशेषउक्तस्तेनैव ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेदस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ १ गवांमूत्रपुरीषेणदधिक्षीरेणस र्पिषा त्र्यहंस्नात्वाचपीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेत् २ क्षत्रियोपिसुवर्णस्यपं चमाषान्प्रदापयेत् गोदक्षिणातुवैश्यस्याप्युपवासंविनिर्दिशेत् ३ शूद्राणां नोपवासःस्याच्छूद्रोदानेनशुद्ध्यतीति स्नानंपानंचपंचगव्येनैव दानंगोदा नम् ॥ एतदपिनाभेरधस्तात्क्रिम्युत्पत्तौज्ञेयम् नाभेरुपरिविशेषउक्तोभ विष्यत्पुराणे ॥ ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे कृमिरुत्पद्यतेय स्यनिष्कृतिंतस्यवच्मितु १ गवांमूत्रपुरीषेणत्रिसंध्यंस्नानमाचरेत् दधिक्षी रंघृतंप्राश्यपंचगव्येनशुद्ध्यतीति २ ॥ अधोनाभेःप्रदष्टस्यआपादाद्विनता त्मज एतद्विनिर्दिशेत्प्राज्ञःप्रायश्चित्तंयथाभवेत् ३ नाभिकंठांतरेवीरयदा चोत्पद्यतेकृमिः षड्रात्रंतुतदाप्रोक्तंप्रायश्चित्तंमनीषिभिरिति ॥ ४ ॥

जगातें उपर जेकर होण तां तिस विषे विशेष किहाहै भविष्यत्पुराणमे [illegible]ति ब्राह्मणके व्रण विषे कृमि होजाण तां तिसकी निष्कृतिकों क्या प्रायश्चित्तकों कहताहुं ॥ १ ॥ गौआंके मूत्र करके और गोहे करके त्रय काल स्नान करे और दहीं १ दुध २ घृत ३ इनकों खा करके पी के पंचगव्य पान करके शुद्ध हुंदाहै एह विधि त्रय दिन तकहै ॥ २ ॥ नाभिके हेठ पैरां तक जेकर [illegible] होण हेविनताके पुत्र इसप्रायश्चित्तकों बुद्धिमान् कहे ॥ ३ और नाभि और कंठके ; मध्यमें कृमि होण तां छे ६ रात्रिके परिमाणवाला व्रत मुनियोंने शुद्ध वास्ते किहाहै ४ ॥

आपस्तंब जी कहते हैं बलादिति बलते क्या जोरावरीते जो दास बना लये हैं म्लेछोंने क्या मुसलमानोंने ओर चांडालोंने दस्यु जो नीच जाति तिनोंने डीर अशुभ कर्म्म गो वधादि जिनांते कराया है १ तिनांका जूठा उठाणा ओर जूठाहि खाणा ओर गधा १ ऊंट ग्राम्य बराह १ इनका मांस भक्षण करणा ॥ २ ॥ ओर तिनांकिआं स्त्रीआंका संग ओर तिनां स्त्रीयां साथ भोजन करणा जेकर महीना रोज द्विजाति असा करे तां तिसका शोधन प्राजापत्यसे हुंदा है ॥ ३ ॥ और अग्निहोत्री जेकर असा कर्म करे तां चांद्रायण करके अथवा पराक करके शुद्ध होवे ओर जो आहिताग्नि नहि है परंतु वर्ष रोज तक तिनके साथ रिहा होवे सो जैसा कैसा हो चांद्रायण वा पराक करे ॥ ४ ॥ ओर जेकर शूद्र वर्ष रोज रहे तां अद्दा महीना यावक पीवे ओर जेकर महीना रोज पूर्वोक्त म्लेच्छा

आपस्तंबः । बलाद्दासीकृतायेतुम्लेच्छचंडालदस्युभिः अशुभंकारिताःकर्मगवादिप्राणिहिंसनम् ॥ १ ॥ उच्छिष्टमार्जनंचैवतथातस्यैवभोजनम् खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिषस्यचभक्षणम् ॥ २ ॥ तत्स्त्रीणांचतथासंगस्ताभिश्चसहभोजनम् मासोषितेद्विजातौतुप्राजापत्यंविशोधनम् ॥ ३ ॥ चांद्रायणंत्वाहिताग्नेः पराकस्त्वथवाभवेत् चांद्रायणंपराकंचचरेत्संवत्सरोषितः ॥ ४ ॥ संवत्सरोषितःशूद्रोमासार्द्धंयावकंपिबेत् मासमात्रोषितःशूद्रः कृच्छ्रपादेनशुद्ध्यति ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वंसंवत्सरात्कल्प्यं प्रायश्चित्तंद्विजोत्तमैः त्रिभिःसंवत्सरैश्चापितद्भावमनुगच्छतीति ॥ ६ ॥ हीनवर्णस्तुयःकश्चिदंत्यजैःसहसंवसेत् सशिखंवपनंकृत्वामासमेकं यवान्पिबेत् ॥ ७ ॥ सर्वाण्येतानि प्रायश्चित्तानि यथाशक्तियथानुबंधप्रत्ययाभ्यासापेक्षया व्यवस्थापनीयानीत्यपरार्के ॥ इदंचमहापातकिसंसर्गिप्रायश्चित्तानंतरं देवलस्मरणेनाप्युद्घाटितं तत्र द्रष्टव्यम् ॥

से तिनां साथ रहे तां लघु कृच्छ्र करके शुद्ध हुंदा है ॥ ५ ॥ वर्षते उपरंत तिनांके साथ रहे तां प्रायश्चित्त विद्वानोने कल्पना करणे योग्य है ओर त्रय वर्ष पर्यंत तिनांके साथ रहणे करके तिनांके हि स्वरूपको प्राप्त हुंदा है ॥ ६ ॥ जो कोई हीनवर्णदा नीचांदे साथ वासकरे तां सहित शिखादे मुंडन करावे ओर महीना रोज जवानू पीदा रहे अर्थात् जवानू बनाकर खांदा होया महीना व्यतीत करे ॥ ७ ॥ संपूर्ण एह प्रायश्चित्त यथाश किसे ओर पाप करणे मे दृढतासे ओर एक वार वहुवार के ज्ञान से जोड लेने एह अपरार्क में लिखया है ॥ ओर एह म्लेच्छ संसर्ग प्रायश्चित्त महापातकि संसर्गि प्रकरण में देवल स्मृति के दिखाणे करके प्रकट कीता है सो तिस जगाहि देखलेना इस जगा प्रसंगसें किहा है ओर उपपातक प्रकरण विषे भी किहा है प्रसंग वशाते

• अब जो लोक केदरह कर पीछे अपणेघरआवतेहैं तिनकेअर्थ प्रायश्चित्त कहीदाहै जेडे मनुष्य राजाने अपराध जाण कर जोरसे दास बनाए हैं और तिनातें स्नानादि नित्य कर्म्मभी छुडाआ है सो उसजगाते छुटेहोए वर्षादि कालके उचित जो चांद्रायणादि तिनांका संकोच करके प्राजापत्य करके शुद्धकर लैने उसमेभी तिनके निवासकी अल्पता और बाहुल्यताको देख कर द्विकृच्छ्र लघु कृच्छ्रादि व्यवस्था कर लैणी ॥ धर्म्म शास्त्रके योग्य जेडा न्यायाधि कारीराजा है तिसने बंदीघरविषें जोडे हौये लोक सो केवल नित्य कर्म्मके लोप करणे वि षेहि हैं तिनांका प्रायश्चित्त केवल नित्यकर्म्म लोपनिमित्त हि कहणा ॥ सो कहतेहैं

• अथबंदीगृहनिवासपरावृत्तप्रायश्चित्तम् येतुराज्ञाऽपराधपूर्ववलाद्दासीकृताअशुभंकारिताश्चतन्मुक्तास्तेपूर्वोक्तसंवत्सरोचितचान्द्रायणादिह्रासापेक्षयाप्राजापत्यं कुर्य्युस्तत्रापि वासतारतम्येन द्विकृच्छ्रलघुकृच्छ्रादिव्यवस्थोह्या ॥ येतुधर्म्मशास्त्रोचितन्यायाधिकारिणा क्षत्रियादिराज्ञावंदीगृहेनियुक्तानित्यकर्म्ममात्रलोपिनस्तेषांनित्यकर्म्महानिनिमित्तम् ॥संध्योपासनहानौतुनित्यस्नानंप्रलोप्यच होमंचनैत्यकंशुद्ध्यैगायत्र्यष्टसहस्रकमित्यादि पूर्वोक्तंप्रायश्चित्तंज्ञेयम् स्वयं परेण वा कारयेत् ॥ अत्रान्यत्रवानुक्तविषये देशकालौचित्यं संभावनीयम् ॥

संध्योपेति संध्योपासन की हानि होयां क्या किसे कारण ते लोप होयां चपुना नित्य स्नानको लोप करके और नित्य करीदा जो हवन है तिसका लोप करके शुद्धिवास्ते आठसे अधिक हजार १००८ गायत्री जपे एह पीछे कहा होआ जानणा १ सो जप आपकरे अथवा दूसरेंते करावे ॥ इस जगा वा और जगा जो विषय कहणेमे नाहि आया जैसे जिनां कीडयांतें पट्टकी उत्पत्ति है तिनांके मारणेंका प्रायश्चित्त जुदे नहि लिखया तां इत्यादियोंमे देशकालोचितकी भावना करणी तां इनका प्रायश्चित्त (किंचित्सास्थिवधेदेयंप्राणायामस्त्वनस्थिके) इत्यादि वचनते एकके वधमे १ प्राणायाम है तिना बहुतयांके वधमे तिस द्रव्यका यथायथदान कल्पना मे आवेगा ॥

सोई याज्ञवल्क्य जीने किहाहै । देशमिति देश १ काल २ और अवस्था ३ शक्ति ४ पाप ५ इनाकों यत्नतें देख कर प्रायश्चित्तकी कल्पना करे ॥ जिस जगा प्रायश्चि त्त इस पापका एहहै ऐसा नहि किहा १ इसका अर्थ कहतेहैं जद निमित्त क्या पाप बहुत होवे तां तिसका नैमित्तिक प्रायश्चित्त बहुत हि होणा चाहिए जैसें वस्त्रांके भांडेआदि चुरा णेका प्रायश्चित्त एक एकका बक्खरा करके नहि हो सका इसवास्ते व्यवस्था करदे हैं कि जि स्थे प्रायश्चित्तका उपदेश करणाहै उस जगा देशादिकों देख कर कहे जैसे करण वाले का प्राणवियोग न होवे तिस तरहाँ करे जैसे प्रायश्चित्तहै ॥ वाय्विति वायु भक्षण करदा होया दि ने खलोता रहे और रात्रिमें जलेमें वास करे और सूर्य्यके सामणे दृष्टि रक्खे रात्रिमें सूर्य्य

तथाचयाज्ञवल्क्यः । देशंकालंवयःशक्तिंपापंचावेक्ष्ययत्नतः प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यंस्याद्यत्रचोक्तानिष्कृतिः १ अर्थः । निमित्तबाहुल्येन प्रतिव्यक्तिनै मित्तिकस्यवक्तुमशक्यत्वादुक्तानुक्तविषये व्यवस्थोच्यते । यत्रप्रायश्चि त्तमादिश्यते तद्देशादिकमपेक्ष्य यथाकर्त्तुः प्राणवियोगोनस्यात् तथा विषयविशेषोविधेयः॥ तथा वायुभक्षोदिवातिष्ठेद्रात्रिंनीत्वाप्सुसूर्य्यदृगि त्यत्रयदिहिमवद्गिरिनिकटवर्त्तिनामुदकवासउपादिश्यतेअतिशीताकुलिते वाशिशिरादिकालेतदाप्राणवियोगोभवेदितितद्देशकालपरिहारेणोदवासः कल्पनीयः तथावयोविशेषादपि यदि नवतिवार्षिकादेरपरिपूर्णद्वादश वार्षिकस्यवाद्वादशाब्दिकं प्रायश्चित्तमुपदिश्यते तदाप्राणाविपद्येरन् ततो वयोविशेषादपि अन्यवयस्केतत्प्रायश्चित्तंकल्प्यम् ॥ अतएवस्मृत्यंतरे क्वचिदर्द्धंक्वचित्पादइति वृद्धादिषु प्रायश्चित्तस्य ह्रासोदर्शितः तच्च प्राक् प्रपंचितम् ॥

न देखण मे आवे तां तिस की दिशाको देखतारहे ॥ एह प्रायश्चित्त जद हिमालय वासियोंकों अथवा पौषमाघमे दित्ता जावे तां प्राणवियोगकी भावना होवेगी तां तिसके परिहार करके उसके जल वासकी कल्पना करणी तैसेहि अवस्थाके देखणेतेहै । जैसे ९० नब्बे वर्ष की आयु वालेकों अथवा १२ वारां वर्षकी आयु वालेको जेकर वारां वर्षका प्रा यश्चित्त किहाजावे तां तिसके प्राण दूर हो जाणगे इस करके उनको ऐसा नहि कहणा किंतु जुयानकों देखकर कहणा इसी करकें और स्मृतिमें किहाहै । कि किस जगा अद्धा और कि से जगा चौथा हिस्सा प्रायश्चित्त बाल वृद्धादि विषे कहणा इसका प्रपंच पिच्छे भी होचुकाहै

एवं मिति इसीप्रकार निर्धन पुरुषविषे गजदानकी आज्ञा और आतुर जो रोगादि कर्के पीडितहै तिसनूं बारांदिनके उपवासवाळे पराक व्रतकी आज्ञा और स्त्री शूद्रादिके विषय गायत्री जपा दिकी आज्ञा और बाळादिविषय समग्रकी आज्ञा नहि होणीचाहिए किंतु कृच्छ्रकी जगा लघु कृच्छ्रादि हि उपदेशकरणे ॥ इसतें एह वार्त्ता सिद्ध होई कि प्रायश्चित्तदेणके समयमे सारे धर्म्म शास्त्रके वेखणेका आवश्यकहै । इसी कर्के पहले १ दूसरे २ तीसरे ३ प्रकरणोंमे कामाकामा दि एकवारं बहुवारादिका निर्णय विस्तरसे किहाहै ॥ इसजगा मिताक्षराकी व्यवस्था श्री

एवंनिर्धने गजदानादि आतुरादौ पराकादि स्त्रीशूद्रादौजपादिकं बाला दौ समग्रं नोपदिश्यते किंतु कृच्छ्रोपवासपादाद्येवोपदिश्यते एवंच प्राय श्चित्तदाने सकलधर्म्मशास्त्रावलोकनमपेक्षितंभवति अतएव प्रथमद्वितीय तृतीयप्रकरणेषु कामाकामसकृदभ्यासादिनिमित्तता प्रपंचिता अत्रमिताक्ष रा तथा महापापोपपापाभ्यांयोभिशंसेन्मृषापरम् अब्भक्षोमासमासीतेत्यु क्तम् तत्रमहापापोपपापयोस्तुल्यप्रायश्चित्तस्याप्युक्तत्वात्पापापेक्षयोपपात के मासिकव्रतस्यह्रासःकल्पनीयः तत्रच हसितजृंभितास्फोटनानि नाक स्मात्कुर्य्यात् तथा नोदन्वतोंभसिस्नायान्नचश्मश्रुवादिकर्त्तयेत् अंतर्वत्न्याः पतिः कुर्वन्नप्रजोभवतिध्रुवमित्यादौ प्रायश्चित्तंनोपादिष्टम् ।

सोहे महेति महापापकर्के और उपपाप कर्के जो झूठा दोष किसेको लगावे सो महीना रोज जल पानमात्र करदां होआ व्यतीतकरे एह महापाप ओर उपपापाक तुल्यकप्रायश्चित्त किहाहै परंतु पूर्वोक्त वचनते उपपातकमे पूरामहीना नहि कहणा किंतु १० दिनकहणाचाहिए ॥ हासि तेति और हस्सणा १ उबासी लयणी २ बाहु ठोकणी ३ इनको कारणते बिना नकरे तैसेहि समुद्रके जलविषे स्नान १ और दाढीका कटणा गर्भिणीकापति नकरे जेकर करे तो संतानसें रहित होताहै १ इत्यादि स्थानों मे प्रायश्चित्त नहि किहा ॥

तिसजगाभी देशादिकी अपेक्षाकर्के प्रायश्चित्त कल्पनाकरणी (प्रश्ण) जितने निमित्त क्या पाप मनुजीके कहे होएहैं सो सभ प्रायश्चित्त कर्के युक्तहिहैं जैसे (प्राणेति) १०० सउप्राणा याम करणा चाहिए सभना पापांकेदूर करणे वास्ते उपपातकांदे समूहां वास्ते श्रीर अनादिष्ट क्या जिनका प्रायश्चित्त विशेषकर्के नाहे किहा तिनां वास्ते इसकर्के सभका प्रायश्चित्त होचुका है किसकर्के कहतेहोकि आप कल्प लयना ॥ श्रीर गौतमजीने भीकिहाहै कि एहि एकाहादि श्रादिरूप प्रायश्चित्त आदेश विना जो स्थानहैं तिसजगा विकल्प कर्के कीतेजाण (उत्तर) यद्यपि सभजगा प्रायश्चित्तोपदेश है परंतु सामान्यकर्केहे विशेष कर्के नहि तिसवास्ते देशकालादिकों

तत्रापिदेशाद्यपेक्षयाप्रायश्चित्तंकल्प्यम् ननुकिंचिदपिनिमित्तजातंमनूक्त निष्कृतिकमुपलभ्यते प्राणायामशतंकार्य्यं सर्वपापापनुत्तये उपपातकजाता नामनादिष्टस्यचैवहीत्यनुक्तनिष्कृतिष्वपिप्रायश्चित्तस्यविद्यमानत्वात् गौ तमेनाप्येतान्येवानादेशेविकल्पेन क्रियेरन्नित्येकाहादयः प्रतिपादिताः उच्यते । सत्यमस्त्येव सामान्यतःप्रायश्चित्तोपदेशस्तथापि सर्वदेशकाला दीनामपेक्षितत्वादस्त्येवकल्पनावसरः नच हसितादिषु सर्वत्र प्राणा यामशतंयुक्तंनिमित्तस्यलघुत्वादतःपापापेक्षया ह्रासः कल्पनीयः प्राय श्चित्तांतरंवा ॥ ननु कथंपापस्यलघुत्वं येनप्रायश्चित्तस्य ह्रासस्यवाकल्प नास्यात् नचप्रायश्चित्ताल्पत्वादितिवाच्यम् अनुक्तनिष्कृतित्वादितिचेत्

अपेक्षाहोणेते कल्पनाकरणीआवश्यकहै एहिअर्थ स्पष्टकरीदाहै नचेति जेडे पिच्छे हसितादिपाप कोहैं तिनां सभनांविषे १०० प्राणायाम उचित नहि क्योंकि निमित्तको लघुहोणेतें इसकार णते पापकी अपेक्षाकर्के १०० सउप्राणायामको थोडा करणा होगा अथवा कोई श्रीर प्रायश्चित्त कल्पनाकरणाहोगा (प्रश्ण)किसतर्हां पाप छोटाजानणा जिसकर्के १००सउका श्रीर प्रायश्चित्त का ह्रास क्या अल्पत्वकीकल्पनाहोवे जेकर कहो कि थोडा प्रायश्चित्तदेखणेकर्के मलूमहुंदाहै ऐसा मत कहणा कि इसजगा प्रायश्चित्तका नहि कथनहोणेते ॥ जिसजगा प्रायश्चित्तका उपदे श हि नहि उसजगा किसतर्हां जाणोगे ॥

सत्यमिति (उत्तर) एहआपने सच्च किहाहै तथापि कुछक अर्थवाद क्या प्रशंसाके पहले कहणेते पीछे जाणकर करना और नजाण कर करना और हठकर करणा और विनाहठसे करना इत्यादि विचारसे पापका थोडा वहुत होनेका ज्ञान सुखालाहिहै और तहां भी थोडे वहुतेका ज्ञान हुंदाहै इसको कहहैंते तथेति जिसजगा राजदंडका प्रसंगहै तिसमेभी एह प्रतीत होवेगा सो दंड विधान विधि विषे देख लेना जैसे ब्राह्मणको दुर्वचन पूर्वक दंड उठाणे आदि अपराध विषे अपणी जाति विषे प्राजापत्यादिक कहेहैं तिसमे जद आनुलोम्य करके क्या ब्राह्मणादिसे क्षत्रियाणी आदिसे उत्पन्न होयां विषे तिस ब्राह्मणावगूरणादि पापका पूर्वोकसे थोडा देखणेते और मूर्द्धावसिकादियोंने ब्राह्मणां विषे पूर्वोक अपराध

सत्यं किंचिदर्थवादसंकीर्त्तनाद्बुद्धिपूर्वाबुद्धिपूर्वानुवंधाद्यपेक्षया चसुवोधएव दोषस्यगुरुलघुभावः तथादंडह्रासवृद्ध्यपेक्षयाच प्रायश्चित्तस्यगुरुलघुभावः सतु दण्डप्रणयनविधौद्रष्टव्यइति यथा ब्राह्मणावगूरणादौ सजातिविषयेप्राजापत्यादिकमुक्तम् तत्र यदानुलोम्येनप्रातिलोम्येन वाऽवगूरणादिक्रियते यदावामूर्द्धावसिकादिभिस्तदादंडस्यतारतम्यदर्शनाद्दोषाल्पत्व महत्त्वावगमात् प्रायश्चित्तस्यापि गुरुलघुभावः कल्पनीयः। दर्शितश्चदण्डस्यगुरुलघुभावः प्रातिलोम्यापवादेषुद्विगुणास्त्रिगुणोदमइत्यादिनेति ॥ अथप्रायश्चित्तविवेके ॥ प्रायश्चित्तीयतेनर इत्यत्र नरपदोपादानात्सर्वेषां चांडालादीनामपि तद्धर्मप्रदर्शनपूर्वं प्रायश्चित्तं प्रदर्शितम् ॥

विषे वहुत दंडहै इसीसे प्रायश्चित्तमेभी ऐसा देखणेते विचार सुगमहै सो तिसजगा दिखायाहिहै (प्रातिलोम्यापवादेषु) इत्यादि श्लोकों करके शूद्रादिसे क्षत्रियाणी आदि विषे उत्पन्न होए अपणेते उच्चजाति वाले विषे अपराधकरें तां तिनांको दूणादंड करणा एह अर्थहै। अब प्रायश्चित्त विवेक ग्रंथमे और विचार लिखाहै सो कहीदाहै विहितके नकरणेसे १ और निंदितके सेवनेसे २ इन्द्रियोंके नरोकणेसे ३ नर प्रायश्चित्तीहुंदाहै इसजगा (नर) ऐसा किहाहै ॥ द्विज ॥ ऐसा नहि किहा इसते प्रतीत होया कि चांडालादिकोभी कोई अपना धर्महै और तिसके त्यागणेते तिनोंकोभी प्रायश्चित्त है ॥

सो देवलजीने किहाहै कि अपणी जातिका पोषण करणा १ और सभको प्रणाम करणा २ शीतोष्णादिका सहारणा ३ व्यवहारशुद्ध रखणा ४ और किसेका अनादर नहि करना ५ और अपणे सेवककों पालना ६ प्रधानकर्म्मपरिवर्जन क्या उत्तम जातिके योग्य जो कर्म्म तिसका त्यागणा ७ एह चांडालोंके धर्म्मकी हानिहोयां मनुजी प्रायश्चित कहतेहैं ब्राह्मणके अर्थ और गौआंके अर्थ जो देह त्यागहै और जेकर चांडाल किसेकी स्त्रीको वाबालकको मारे तां शस्त्रादिके विना अर्थात् अनशनादि कर्के देह त्यागहै एह वाह्य क्या जो वर्णाश्रमते हीन तिनांकी शुद्धिका हेतुहै परंतु इसमे एभी अर्थहै कि जद थोडा अपराधहै तां गो ब्राह्मणके अर्थ देह त्याग करणा क्या देहको समर्प्पण करणा तिनांकी सेवा वास्ते जद सेवा

तथथा देवलः॥ स्वजातिपोषणंसर्वप्रणामस्तितिक्षाव्यवहारशुद्धिरपरानवमाननंस्वभृत्यपोषणंप्रधानकर्म्मपरिवर्जनमितिचांडालधर्म्मःएतदादिधर्म्मप्रच्युतौ स्वजातिवैमुख्ये प्रायश्चितमाहमनुः ॥ ब्राह्मणार्थेगवार्थेवादेहत्यागोऽनुपस्कृतः स्त्रीवालाभ्युपपत्तौचवाह्यानांशुद्धिकारणम् ॥ १ ॥ चाण्डालादिकर्तृकस्त्रीवालादिविपत्तौजायमानायामनुपस्कृतः शस्त्रादिसंभारशून्योदेहत्यागोगोब्राह्मणरक्षार्थंवाह्यानांवर्णाश्रमहीनानां शुद्धिहेतुः ॥ अत्राल्पेऽपराधे गोब्राह्मणकार्य्यार्थे देहत्यागोदेहसमर्पणम् तत्प्रीतौसत्यां तच्छुद्धिरित्यर्थोवसेयः ॥ स्त्रीवालेतिपदंगवादिहिंसोपलक्षणपरम् ॥ अत्रसाधारणप्रकरणोक्ततीर्थसेवापि पापतारतम्येन योज्या प्रायश्चित्तानंतरंसजातिभोजनमपि॥इतिवर्णाश्रमवाह्यशुद्धिहेतुप्रायश्चित्तम्॥ * किंतुकालमवेक्ष्यप्रायश्चित्तंदातव्यमित्यत्रेदमपिचिन्तनीयम् पूर्वोक्तसंसर्गादिप्रायश्चित्तं प्रायोयुगान्तरयोग्यमेव तस्याधुनाकलौसंकोचःकर्त्तव्यः ॥

कर्के सो प्रसन्न होणगे तां शुद्ध होवेगा ऐसा जानणा १ और स्त्रीवाल पद गवादिके मारणेका उपलक्षणहै अर्थात् तिनांके मारणेमेभी पूर्वोक्त प्रायश्चित करणा इसजगा साधारण प्रकरणमे किहा जो तीर्थ सेवनादि सोभी पापकी न्यूनता वा अधिकता देखकर जोडने और जद प्रायश्चित्त हो जावे तां पीछे सजातियोंको भोजन देणा एह वर्णाश्रमते हीन जो लोकहैं तिनकी शुद्धि करने वाला प्रायश्चित पूराहोआ * अब और विचार करतेहैं किंचेति कालको देखकर प्रायश्चितदेणा इसमे एभीविचार है कि जेडा पिच्छे छोणे का और परंपरा छोणेका प्रायश्चित किहाहै सोसभ और युगोंमेहै कलियुगमे नहि

क्योंकि जिनके साथ छोड़कर प्रायश्चित्त करणा है सोई कलियुगमें राजा हैं किसप्रकार अथवा कितने वार एकवृक्षकी छाया विषे बैठ कर अथवा लकडी पर किसे आसनपर एकफरसवाली सभामें और संभाषण करणा क्या तिनके साथ वार्ता करणीआं जिसमें संबंधवालाहोकर प्रायश्चित्तकरे इसते ऐसा करणा चाहिए कि साथभोजनमें जलपीणेमें तिनको स्त्रीके भोगमें और तिनको पढाणेमें और तिनसे पढनेमेंहि प्रायश्चित्त कल्प नाकरनो और इनसे हीरनां छोटे पापमें सूर्यादि दर्शन और मध्यममें १०० सउ गायत्रीका जप और उससे जो वडेहैं तिनमें नक्त और स्नान रूप प्रायश्चित्त किहाहै सोमहापातकिके संसर्गि प्रकरणमें देखलेना क्योंकि इससमयविषे तिसतहींके संसर्गको अव श्यहोणेते तैसे प्रायश्चित्तको करेभी नहिं होणेते देशकालके देखणेसे और अनुग्रह

यैःसंसृज्यप्रायश्चित्तीयते तएव यत्र राजानः कथंकतिवारान्वातत्रैकवृक्ष च्छायादौ एकशाखादावेकवस्त्रास्तृतसभादौ संभाषणादिप्रवृत्तौ संसर्गी भूत्वा प्रायश्चित्तंकुर्य्यादतस्तत्र सहभोजनपानयौनादौ सत्येव प्रायश्चि त्तंकल्प्यम् एतदतिरिक्तसंसर्गेलघौ सूर्य्यादिदर्शनंमध्यमे शतंगायत्रीजपः १००उत्तमेनक्तं स्नानं चेति महापातकिसंसर्गिप्रकरणेपि द्रष्टव्यम्॥ सा म्प्रतंतेषांतथाविधस्यन्यूनस्यापिसंसर्गस्यनाप्राप्तत्वात् तथाविधप्रायश्चि त्तस्यकर्तुमशक्यतयादेशकालावेक्षणेनानुग्रहस्यशास्त्रानुमतत्वेनाल्पतर प्रायश्चित्तोपदेशस्ययुक्तत्वादेवंचांडालादिधूमयंत्रेण ॥ द्विजात्यादिना धू मपाने उच्छिष्टभक्षणादौसाक्षात्तच्छब्दानुपादानात्तदुपलक्षणेनैवतत्प्राय श्चित्तोपलंभोभवति यथा अन्त्यानांभुक्तशेषंतुभक्षयित्वाद्विजातयःचान्द्रंकृ च्छ्रंतदर्धंचब्रह्मक्षत्रविशांविधिरित्यापस्तंवीयेभुक्तशेषंधूमयंत्रोपभुक्तिशेषो पलक्षणम् अत्रक्षत्रियाविशोःकृच्छ्रतदर्धविधानंतदापदिवलात्कारादन्येतर ताम्बूलाद्युच्छिष्टपरमितिप्रायश्चित्तकदंवः अत्रादिनातदुच्छिष्टधूमोगृह्यते

करणेसे शास्त्रकी संमतिसे प्रायश्चित्तोपदेशको युक्तहोणेते ॥ इसी प्रकार चांडालादिके धूमयंत्र करके द्विजात्यादिके धूमपानविषे अर्थात् तमाकूके पीणे विषे उच्छिष्ट भक्षणादि विषे साक्षात् कोईतिसका वाचकपद नहि लभदा तथापि उपलक्षण विधानसेक्या चांडालादिका जूठाजा णकरके प्रायश्चित्त देणाचाहिए ॥ जैसे नीचांके भुक्तशेष कों क्या जूठेको द्विजाति खाकर ब्रा ह्मण चांद्रायण करे क्षत्री प्राजापत्यकरे वैश्य अर्द्धकृच्छ्रकरेतो शुद्ध हुंदाहै एहआपस्तंवजीका वचनहै भुक्तशेषपद झारी नरेले आदिका बोधकहै अत्रेति इसजगा क्षत्रिय वैश्यको कृच्छ्रका और तिसके अर्द्धका जो विधानहै सो आपत्ति विषेक्या किसेकेशविषे अथवा वलत्कारसे अपने बिना तांबूलादि जूठेके भक्षणके विधान विषे जानणा एह प्रायश्चित्तकदंवविषेलिख याहै इसमें आदिशब्दसे जूठे धूमकाभी ग्रहण करना

और जगानकहणेते एहकामनामेहै विनाकामनाते अहाजानणा सोई आंगिराजीने किहाहै चांडाल पतितादिओंके जूठेखाणेविषे ब्राह्मण चांद्रायणकरे और क्षत्रीसांतपनकरे औरवैश्यको६रात्रका और शूद्रको तिन्ना३रातांका व्रतकिहाहै १ इसमे सांतपनकर्के महासांतपन समझणा बहुत पाप होणेते इहांभी अन्नपद धूमका उपलक्षणहै भोजनभी जोउदरमै चलाजावे सोजानणा मुखमवेश मात्रनहि जानणा तिसविषेभी वहुतवार करणेमे जानणा एकवार करणेमे लघुकृच्छ्रकी विधिहै मत्रोक्त) इस उशनाजीके वचनसे १ इसका अर्थ पीछे होचुकाहै इसमे कुछ और पराशरजी कहतेहैं भांडेति नीचांके भांडे विषे जो जल १ दही २ दुध ३ है इसको ब्राह्मण क्षत्री वैश्य

अन्यत्रानुक्तत्वादिदंकामतःअकामतस्त्वर्द्धम् तथांगिराअपि चांडालपति तादीनामुच्छिष्टान्नस्यभोजने चांद्रायणंचरेद्विप्रःक्षत्रःसांतपनंचरेत् षड्रात्रंच त्रिरात्रंचवर्णयोरनुपूर्वशइति १ सांतपनमत्रमहासांतपनंद्रष्टव्यम् अत्राप्यन्न पदंधूमोपलक्षणम् भोजनंचगलाधोदेशसंयोगानुकूलव्यापारएव इदमभ्या सविषयम् सकृद्विषयेतुलघुकृच्छ्रं यत्रोक्तंयत्रवानोक्तमिहपातकनाशनम् प्राजापत्येनशुद्ध्येतेत्युशनस्सामान्यप्रायश्चित्तस्मरणात् किंच पराशरः भांडस्थमंत्यजानांतुजलंदधिपयःपिबेत् ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चैवप्र मादतः १ ब्रह्मकूर्चोपवासेनद्विजातीनांतुनिष्कृतिः शूद्रस्यचोपवासेनतथादा नेनशक्तितः २ इत्यत्रापिभांडपदंधूमयंत्रोपलक्षणम् ॥ जलंधूमोपलक्षणंबो ध्यम् ॥ प्रायश्चित्तस्योचितत्वादन्यत्रानुक्तत्वाच्च ॥ किंच साधारणप्रकरणे विश्वामित्रः कृच्छ्रचान्द्रायणादीनिशुच्यभ्युदयकारणम् प्रकाशेचरहस्येचअ नुक्तेसंशयेस्फुटे १

शूद्र भुल्लकरपीवे १ तांतिन्नावर्णांको ब्रह्मकूर्चके साथ उपवासकर्के शुद्धिहुंदीहैं औरशूद्रकोदानके साथ उपवास कर्के हुंदीहै ॥ २ ॥ इसजगाभी भांडपद धूमयंत्रका उपलक्षणहै और जल धूमका उपलक्षण क्याबोधकहै क्योंकिप्रायश्चित्तको उचितहोणेतें और दूसरी जगा नाहि कथनतें ॥ कुछ होर कहते हैं किंचेति साधारण प्रकरणमे विश्वामित्रजीका वचनहै कृच्छ्र चांद्रायणते लेक र जोव्रतहैं सोसभ पवित्रताके और अभ्युदयके क्यावृद्धिके कारणहैं प्रकाशविषे क्या जोस भको विदितहोवे तिसके प्रायश्चित्त विषे और रहस्य विषे और अनुक्त प्रायश्चित्तविषे और जि समे संशयहै तिसमे और स्फुटक्या जिसपापका निर्णय होचुकाहै ॥ १

तिसमैं प्राजापत्य इत्यादि १२ बारां व्रतहैं एहसभ इकठे अथवा जुदे जुदे इकपापमे॰ इकमा॰ अथवा दो तिन आदिपापमें इकप्रा॰ सवनांपातकांविषे और उपपापांविषे ॥ ४ ॥ चांद्रायणाकर्कें युक्त होएहोए करनेयोग्यहैं अथवा विना चांद्रायणके करनेयोग्यहैं चांद्रायणके भेदकहतेहैं शिशिचांद्रा.१ यति.२ यव.३ पिपीलका. ४ और उपवासादि ७ एहसभ शुद्धि फलकी इच्छावालेने करनेचाहिए उपपातकादि सभना पापांके दूरकरणेकी इच्छावालयांने ७ प्रकाशविषे अप्रकाशविषे पापिके अभिप्रायको जाणकरके और जाति शक्ति गुणानुं देखकर्कें एकवार दोवारको जाण कर्कें ॥ ८ ॥ और अनुबंधादिको देखकर्कें सभएह प्रायश्चित्त यथाक्रम कर्कें करे ॥

प्राजापत्यः सांतपनः शिशुकृच्छ्रःपराककः अतिकृच्छ्रः पर्णकृच्छ्रः सौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः २ महासांतपनःसिद्धैतप्तकृच्छ्रस्तुयावकः जपोपवासकृच्छ्रस्तुब्रह्मकूर्चस्तुशोधकः ३ एतेव्यस्ताःसमस्तावाप्रत्येकद्वेकशोऽपिवा पातकादिषुसर्वेषुउपवासेषुयत्नतः ॥ ४ ॥ कार्याश्चान्द्रायणैर्युक्ताःकेवलावाविशुद्धये शिशुचान्द्रायणंप्रोक्तंयतिचान्द्रायणंतथा ॥ ५ ॥ यवमध्यंतथाप्रोक्तं तथापैपीलिकाकृतिः उपवासस्त्रिरात्रंवामासः पक्षस्तदर्द्धकम् ६ षडहोद्वादशाहानिकार्य्यंशुद्धिफलार्थिना उपपातकयुक्तानामनादिष्टस्यचैवहि ७ प्रकाशेवाऽप्रकाशेवाअभिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वाअसकृद्द्विः कृतंतथा८अनुबंधादिकंदृष्ट्वासर्वंकार्य्यं यथाक्रममिति एषुपक्षेषुजातिशक्तिगुणावस्थाद्यपेक्षयाविषयविभागोवसेयः ॥ इतिचंडालाद्युच्छिष्टधूमपानप्रायश्चित्तम् ● क्षुद्रजन्तुवधप्रा- उपपातकप्रकरणेहिंसाप्रसंगेऽवगंतव्यम् ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपंडितदेवीदत्तसुतपंण्डितगंगारामसंगृहीतेपञ्चविषयात्मकप्रतिरूपके धर्म्मशास्त्रमहानिबन्धे प्रायश्चित्तभागेजातिभ्रंशकर. संकरीकरण.अपात्रीकरण ● मलिनीकरण. प्रकीर्णकानिपंचप्रकरणानि ७ ८ ९ १० ११ ॥●॥

एह चांडालादिकर्कें जूठा धूआं तिसके पीणेका प्रायश्चित्त पूराहोया ● । होर निक्के जीवांके मारणेका प्रा॰ उपपातक प्रकरणमैं हिंसाके प्रसंगविषे देखलेना ॥ ● ॥ एहश्रीराजाधि राज रणवीर सिंह जीकी आज्ञासे पंडितवरसारस्वत देवीदत्तजीके पुत्र पंडित गंगारामने संग्रहकी तेहोएधर्म्मशास्त्रके ग्रंथके प्रायश्चित्त भागविषे जातिभ्रंशादि ४ और प्रकीर्णक प्रकरण पूराहोआ ॥ ४ ॥ शुभं भूयात् ॥ ॥ ७ । ८ । ९ । १० ११ ॥

॥ पंचमप्रकरणसूचीपत्रमिदम् ॥

पृ०	पं०	
१	१	मंगलाचरणम्
१	३	व्रतशब्दार्थः
२	९	अत्रैवमनुवाक्यम्
३	४	व्रतानिपंचैवेतिकथनम्
३	७	अथमानपरिभाषा
५	३	इतिस्वर्णोन्मानम्
६	१	धेनुमूल्यमानंषड्त्रिंशन्मते
७	१	प्रायश्चित्तेन्दुशेखरोक्तामानपरिभाषा
८	१	अथव्रतार्केधान्यमानम्
८	८	परिमाणांतरमुक्तंपराशरेण
९	६	शब्दकल्पद्रुमेमानपरिभाषा
९	८	आदौयाज्ञवल्क्यीयपादकृच्छ्रम्
९	९	ग्राससंख्यानियमः
१०	२	ग्राससंख्यायाः प्रकारांतरम्
१०	५	चतुरःपादकृच्छ्रान्कृत्वावर्णानुरूपेणव्यवस्थादार्शिता ॥
११	३	अर्द्धकृच्छ्रस्यप्रकारांतरम्
१२	३	अथप्राजापत्यम्
१३	८	दंडकालितवदावृत्तिपक्षोवसिष्ठनदर्शितः
१४	८	गौत्तमवाक्यम्
१५	१	अथोदकतर्पणम्
१५	१०	एतदेवादित्योपस्थानम्
१६	७	एवमन्यान्यपिस्मृत्यन्तरोक्तानिव्रतविशेषणानि
१७	१	प्राजापत्यस्वरूपमाह
१७	४	अत्रैवजाबालिवाक्यम्
१७	८	कृच्छ्राणांनामान्याहमार्कंडेयः
१८	१०	तप्तकृच्छ्रविषयेस्मृत्यंतरम्

तिसमें प्राजापत्य इत्यादि १२ बारां व्रतहैं एहसभ इकठे अथवा जुदे जुदे इकपापमें॰ इकप्रा॰ अथवा दो तिन आदिपापमें एकप्रा॰ सवनांपातकांविषे और उपपापांविषे ॥ ४ ॥ चांद्रायणकर्के युक होएहोए करनेयोग्यहैं अथवा विना चांद्रायणके करनेयोग्यहैं चांद्रायणके भेदकहतेहैं शिशुचांद्रा. १ यति. २ यव. ३ पिपीलका. ४ और उपवासादि ७ एहसभ शुद्धि फलकी इच्छावालेने करनेचाहिए उपपातकादि सभना पापांके दूरकरणेकी इच्छावालयांने ७ प्रकाशविषे अप्रकाशविषे पापिके अभिप्रायको जाणकरके और जाति शक्ति गुणानुं देखकर्के एकवार दोवारको जाणां कर्के ॥ ८ ॥ और अनुवंधादिको देखकर्के सभएह प्रायश्चित्त यथाक्रम कर्के करे ॥

प्राजापत्यः सांतपनः शिशुकृच्छ्रःपराककः अतिकृच्छ्रः पर्णकृच्छ्रः सौम्यकृच्छ्रोऽतिकृच्छ्रकः २ महासांतपनःसिद्धैतप्तकृच्छ्रस्तुयावकः जपोपवासकृच्छ्रस्तुब्रह्मकूर्चस्तुशोधकः ३ एतेव्यस्ताःसमस्तावाप्रत्येकद्वेकशोऽपिवा पातकादिषुसर्वेषुप्रकाशेषुप्रयत्नतः ॥ ४ ॥ कार्याश्चान्द्रायणैर्युक्ताःकेवलावाविशुद्धये शिशुचान्द्रायणंप्रोक्तंयतिचान्द्रायणंतथा ॥ ५ ॥ यवमध्यंतथाप्रोक्तं तथापिपीलिकाकृतिः उपवासस्त्रिरात्रंवामासः पक्षस्तदर्द्धकम् ६ षडहोद्वादशाहानिकार्य्यंशुद्धिफलार्थिना उपपातकयुक्तानामनादिष्टस्यचैवहि ७ प्रकाशेवाऽप्रकाशेवाअभिसंध्याद्यपेक्षया जातिशक्तिगुणान्दृष्ट्वाअसकृद्द्विः कृतंतथा ८ अनुवंधादिकंदृष्ट्वासर्वंकार्य्यं यथाक्रममिति एषुपक्षेषुजातिशक्तिगुणावस्थाद्यपेक्षयाविषयविभागोवसेयः ॥ इतिचंडालाद्युच्छिष्टधूमपानप्रायश्चित्तम् ॐ क्षुद्रजन्तुवधप्रा- उपपातकप्रकरणेहिंसाप्रसंगेऽवगंतव्यम् ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीशप्रभुवररणवीरसिंहाज्ञप्तसारस्वतपंडितदेवीदत्तसुतपण्डितगंगारामसंगृहीतेपञ्चविषयात्मकप्रतिरूपके धर्म्मशास्त्रमहानिवन्धे प्रायश्चित्तभागेजातिभ्रंशकर. संकरीकरण. अपात्रीकरण ॐ मलिनीकरण. प्रकीर्णकानिपंचप्रकरणानि ७ ८ ९ १० ११ ॥ॐ॥

एह चांडालादिकर्के जूठा धूआं तिसके पीणेका प्रायश्चित्त पूराहोया ॐ । होर निक्के जीवांके मारणेका प्रा॰ उपपातक प्रकरणमें हिंसाके प्रसंगविषे देखलेना ॥ ॐ ॥ एहश्रीराजाधि राज रणवीर सिंह जीकी आज्ञासे पंडितवरसारस्वत देवीदत्तजीके पुत्र पंडित गंगारामने संग्रहकीतेहोए धर्म्मशास्त्रके ग्रंथके प्रायश्चित्त भागविषे जातिभ्रंशादि ४ और प्रकीर्णक प्रकरण पूराहोआ ॥ ४ ॥ शुभं भूयात् ॥ ॥ ७ । ८ । ९ । १० ११ ॥

पृ०	पं०	
१	१	मंगलाचरणम्
१	३	व्रतशब्दार्थः
२	९	अत्रैवमनुवाक्यम्
३	४	व्रतानिपंचैवेतिकथनम्
३	७	अथमानपरिभाषा
५	३	इतिस्वर्णोन्मानम्
६	१	धेनुमूल्यमानंषट्त्रिंशन्मते
७	१	प्रायश्चित्तेन्दुशेखरोक्तामानपरिभाषा
८	१	अथव्रतार्कधान्यमानम्
८	८	परिमाणांतरमुक्तंपराशरेण
९	६	शब्दकल्पद्रुमेमानपरिभाषा
९	८	आदौयाज्ञवल्क्यीयपादकृच्छ्रम्
९	९	ग्राससंख्यानियमः
१०	२	ग्राससंख्यायाः प्रकारांतरम्
१०	५	चतुरःपादकृच्छ्रान्कृत्वावर्णानुरूपेणव्यवस्थादार्शता ॥
११	३	अर्द्धकृच्छ्रस्यप्रकारांतरम्
१२	३	अथप्राजापत्यम्
१३	८	दंडकालितवदावृत्तिपक्षोवसिष्ठनदर्शितः
१४	८	गौत्तमवाक्यम्
१५	१	अथोदकतर्पणम्
१५	१०	एतदेवादित्योपस्थानम्
१६	७	एवमन्यान्यपिस्मृत्यन्तरोक्तानिव्रतविशेषणानि
१७	१	प्राजापत्यस्वरूपमाह
१७	४	अत्रैवजावालिवाक्यम्
१७	८	कृच्छ्राणांनामान्याहमार्कंडेयः
१८	१०	तप्तकृच्छ्रविषयेस्मृत्यंतरम्

पृ०	पं०	
१९	४	स्नानेचहारीतेनविशेषउक्तः
२०	१	अत्रैवगौतमवचनम्
२०	६	तथाषड्विंशतिमतेप्युक्तम्
२१	३	जपसंख्यायांविशेषस्तेनैवदर्शितः
२१	८	वशिष्ठेनाप्यत्रविशेषउक्तः
२२	१०	वपनादिष्वत्रहारीतेनविशेषउक्तः
२३	९	जाबालिनाप्यत्रविशेषउक्तः
२४	८	प्रारब्धेप्रायश्चित्तादिव्रतेऽसमाप्तेपिमृतेफलमाह
२५	२	कृच्छ्राणांसाध्यासाध्यानिपापान्याह
२६	४	सर्वेषांकृच्छ्राणांफलार्थत्वमप्याह
२६	१०	अत्रामिताक्षरा
२७	३	अथप्राजापत्यकृच्छ्रप्रत्याम्नायाः
२८	१	प्रत्याम्नायसमाचरणमाह
२८	१०	विप्रपूजामंत्रः
२९	३	प्रत्याम्नायगोदानेषुचमंत्रौ
२९	६	गोरभावेतन्मूल्यमाह
३०	१	तदाहमार्कंडेयः
३१	५	अत्रैवस्मृत्यंतरम्
३२	३	यत्तुचतुर्विंशतिमतेऽभिहितम्
३३	२	पातकेषुसाशीतिशतंप्रत्याम्नायः
३४	४	यत्पुनश्चतुर्विंशतिमतेऽभिहितम्
३५	१	नवसुदिवसेषुपाणिपूरान्नभोजनम्
३६	४	अतिपातकेनवतिसंख्याकाश्चांद्रायणादयः
३७	१	यत्पुनर्बृहस्पतिनोक्तम्
३८	३	तथास्मृत्यंतरम्
३९	१	यच्चांद्रायणस्यापितत्रैवप्रत्याम्नायेनोक्तम्

पृ०	पं०	
३९	९	दुर्बलस्योपायमाह अपरार्कः
४०	१	अत्रैवपराशरवाक्यम्
४१	४	प्रायश्चित्तेंदुशेखरेविशेषः
४२	१	तिलपात्रपरिमाणं कूर्मपुराणे उक्तम्
४३	१	अथप्राजापत्यकृच्छ्रस्यसमुद्रगनदीस्नानंप्रत्याम्नायः
४४	१	पंचविधागंगास्कंदपुराणे ॥
४५	५	प्राजापत्यप्रत्याम्नायनदीस्नानप्रकारमाह
४६	९	निष्कशब्दार्थः
४७	५	अत्रस्मृतिसंग्रहस्मृत्यर्थसाराद्युक्तप्रकारानुसारीप्रकारःप्रदर्श्यते
४८	६	वाराणस्यामगणितफलम्
४९	१	दृषद्वत्यादिनदीस्नानेकृच्छ्रफलम्
५०	९	समुद्रांतस्नानफलम्
५१	७	पातालगंगास्नानफलम्
५२	५	अल्पनद्यादिप्रमाणम्
५३	१	नदीनांचांडालादिसंज्ञा
५३	७	देवतासमीपेतीर्थस्नानेफलाधिक्यम्
५४	४	वैष्णवादिक्षेत्रदर्शनेपृथक्फलम्
५५	१	तीर्थादिगमनेपापहानिः
५५	२	अत्रैवजामदग्न्यवाक्यम्
५५	५	परार्थतीर्थगमनेफलम्
५६	१	गुर्वाचार्यादितत्पत्न्यर्थेतीर्थगमनेफलम्
५६	४	श्रावणादिमासद्वयेनदीनांरजस्वलात्वम्
५६	६	गंगागयादीनांसर्वदाशुद्धिः
५६	८	प्राजापत्यस्यप्रत्याम्नायः
५७	१	अत्रैवपराशरवाक्यम्

पृ०	पं०	
५७	६	प्राजापत्यस्यप्रत्याम्नायंवेदपारायणमाह
५९	१	प्राजापत्यप्रत्याम्नायेगायत्रीजपविधिः
६०	३	अत्रैवपराशरवचनम्
६१	१	प्राजापत्यप्रत्याम्नायेतिलहोमविधिः
६१	७	प्राजापत्यस्यशतद्वयप्राणायामरूपप्रत्याम्नायमाह
६२	१	अत्रैवमार्कंडेयः
६३	१	अथसांतपनकृच्छ्रमाह मनुः
६४	१	पुण्यक्षेत्राण्याह सएव
६५	१	अत्रैवस्मृत्यन्तरम्
६६	८	सांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह देवलः
६७	९	अत्रैव गौतमवाक्यम्
६८	१	महासांतपनव्रतमाह
६९	१	अत्रैवयमवचनम्
७०	७	गालववचनम्
७१	५	महासांतपनकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह
७२	१	अत्रैवपराशरवचनम्
७३	७	अतिकृच्छ्रस्यप्रकारमाहगालवः
७५	७	अतिकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः
७६	७	अथकृच्छ्रातिकृछ्रव्रतमाहयाज्ञवल्क्यः
७७	७	प्रकारांतरेणतप्तकृच्छ्रमाहपराशरः
७८	२	अत्रैवदेवलवचनम्
७९	९	कृच्छ्रसामान्यविधिमाहविष्णुः
८०	२	अथतप्तकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाह
८१	२	अत्रैवपराशरवाक्यम्
८२	३	अथपर्णकृच्छ्रमाहयाज्ञवल्क्यः
८३	१	अत्रैवजाबालस्त्वन्यथाह

पृ०	पं०	
८४	२	यथाहमार्कण्डेयः
८५	१	अत्रैवदेवलवचनम्
८७	१	अत्रैवमार्कण्डेयः
८८	१	अथपर्णकृच्छ्रप्रत्याम्नायमाहदेवलः ॥
८९	१	फलकृच्छ्रव्रतस्तुतिः
९०	२	फलकृच्छ्रविधिः
९०	८	फलकृच्छ्रप्रत्याम्नायः
९२	५	अथपराककृच्छ्रम्
९३	१	पराककृच्छ्रस्तुतिः
९४	१	पराककृच्छ्रविधि :
९४	७	पराकप्रत्याम्नायः
९६	१	अथमासोपवासकृच्छ्रम्
९६	५	अथयावककृच्छ्रम्
९७	१	यावककृच्छ्रस्तुतिः
९८	३	यावककृच्छ्रविधिः
९९	१	यावककृच्छ्रप्रत्याम्नायः
१००	२	अथसौम्यकृच्छ्रम्
१००	९	अथयावकृच्छ्रः
१०१	१	जलकृच्छ्रः
१०१	१	वज्रकृच्छ्रः
१०१	२	तुलापुरुषकृच्छ्रः
१०१	७	कायकृच्छ्रम्
१०१	८	पंचदशविधकृच्छ्रकथनम्
१०२	५	तुलादिदातुस्तत्प्रतिग्रहीतुश्चपरस्परावलोकननिषेधः
१०२	८	दैवात्तयोः परस्परावलोकनेप्रायश्चित्तविधानम्
१०३	१	ब्रह्मसदस्ययोस्संज्ञा

पृ०	पं०	
१०३	९	लांगलादिदातुस्तत्प्रतिग्रहीतुश्चपरस्परावलोकननिषेधः ॥
१०६	३	सात्त्विकदानेचतुर्विंशतिमूल्यादिदानावलोकनेदोषाभावः ॥
१०७	८	कायकृच्छ्लक्षणम्
१०८	२	कायकृच्छ्विधिः
१०८	८	कायकृच्छ्प्रत्याम्नायः
१०९	६	औदुम्बरकृच्छ्म्
१०९	८	सामर्थ्येसतिबंधुत्यागेदोषोक्तिः
१११	१	बंधुत्यागेप्रायश्चित्तकथनम्
११२	४	औदुम्बरकृच्छ्प्रत्याम्नायः
११३	१	माहेश्वरकृच्छ्लक्षणम्
११४	४	माहेश्वरकृच्छ्प्रत्याम्नायः
११५	३	ब्रह्मकृच्छ्लक्षणम्
११७	१	ब्रह्मकृच्छ्प्रत्याम्नायः
११८	१	धान्यकृच्छ्लक्षणम्
११९	८	अथसुवर्णकृच्छ्म्
१२१	३	अत्रैवगौतमवचनम्
१२२	५	अस्मिन्नेवविषयेमरीचवाक्यम्
१२३	३	तुलादिप्रतिग्रहीतॄणांविशेषमाह
१२५	१	अथाघमर्षणकृच्छ्ंमाधवेनोक्तम्
१२५	६	अथयज्ञकृच्छ्ः
१२६	५	देवकृतकृच्छ्ंदर्शयतियमः
१२८	९	अथब्रह्मकूर्चव्रतमाह
१२९	३	पंचगव्यपरिमाणम्
१३१	६	अथचांद्रायणंवक्तुंतावत्तस्यकार्य्यविशेषोपयोगितापदर्श्यंते

पृ०	पं०	
१३३	४	अथचांद्रायणव्रतप्रकारः
१३४	१	अत्रैवपराशरवाक्यम्
१३६	९	अस्मिन्नेवविषयेयमः
१३७	९	चांद्रायणान्तरमाह
१३९	५	अथऋषिचांद्रायणम्
१४०	१	अथचांद्रायणव्रतविधिः
१४१	५	चांद्रायणप्रकरणेपराशरः
१४३	१	अथातोविशेषतयाचांद्रायणकल्पंव्याख्यास्यामः
१४४	१	अथस्पष्टप्रयोगः
१४६	५	अथसोमायनव्रतवर्णनम्
१४७	९	अथयतिचांद्रायणम्
१४८	१२	अथशिशुचांद्रायणलक्षणांतरमाह
१५०	१	अत्रैवगौतमवचनम्
१५०	६	शिशुचांद्रायणप्रकारमाह
१५१	२	अथमहाचांद्रायणम्
१५२	१	तत्प्रकारमाहगौतमः
१५३	४	अथपंचविधानांचांद्रायणानांप्रत्याम्नायमाह
१५४	४	अत्रैवगौतमवचनम्
१५५	१	यतिचांद्रायणविषयेबृहद्विष्णुः
१५५	५	अथव्रतांगभूतव्रतायमानियमाश्चयाज्ञवल्क्ये
१५६	२	अत्रैवमनुवाक्यम्
		इतिपंचम प्रकरणसूचीपत्रंसमाप्तम्

पृ०	पं०	
१५७	२	पराकव्रतमाहात्म्यम्
	५	वेदाभ्यासफलम्
१५८	१	मासपर्य्यन्तंषोडशप्राणायाममाहात्म्यम्
	६	सुवर्णदानादिफलम्
१५९	१	तिलदानमाहात्म्यम्
	७	सत्तव्याहृतिहोममाहात्म्यम्
१६०	१	गायत्रीजपमाहात्म्यम्
१६१	१	लक्षादिभेदेनगायत्रीजपमाहात्म्यम्
१६२	१	प्राणायामऋग्वेदाभ्यासफलम्
	३	पावमान्यादिमाहात्म्यम्
१६३	७	ब्राह्मणकल्पादिमाहात्म्यम्
	८	इतिहासादिपाठफलम्
१६४	१	मतभेदेनप्राणायाममाहात्म्यम्
	३	मृगारेष्ट्यादिमाहात्म्यम्
१६५	१	महादेवपूजामाहात्म्यम्
	५	तिलांजलिमाहात्म्यम्
१६६	६	अनादेशेसंवत्सरादिकालभेदेनानुष्ठानप्रकारमाह
१६७	२	जपहोमफलंचतुर्विंशतिमतेन
	९	विष्णुनाममाहात्म्यम्
१६८	३	कृच्छ्रचांद्रायणादिमाहात्म्यम्
१६९	३	उपवासादिमाहात्म्यम्
१७०	३	कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रायणसमुच्चयमाहात्म्यम्
१७१	१	तुलापुरुषगोसेवामाहात्म्यम्
	५	पापानांगुरुलघुभेदेनप्रायश्चित्तस्यगुरुतादि
१७२	१	रौरवयोधाजयादिमाहात्म्यम्
	३	जलतर्प्पणमंत्रः

पृ०	पं०	
१७३	२	विष्णुस्मरणमाहात्म्यम्
१७४	२	अग्निपुराणेसर्वपापहरस्तोत्रम्
१७६	७	महापातकादर्वाचीनेप्रायश्चित्तम्
१७७	१	उपपातकादिप्रायश्चित्तम्
१७८	३	क्षुद्रपापविषयेउपवासादिप्रा०
	५	इतिसाधारणप्रकरणम् ६
१७९	३	अथजातिभ्रंशकराणि
१८०	२	जातिभ्रंशकरप्रा०
१८१	२	कृच्छ्रप्रत्याम्नायः
१८२	१	अथसंकरीकरणनिरूपणानंतरंप्रा०
१८४	७	इतिसंकरीकरणानि
१८५	१	अथापात्रीकरणानितत्प्रायश्चित्तानिच
१८६	११	इत्यपात्रीकरणानि
१८७	१	अथमलावहपापानिरूपणानंतरंतत्प्रायश्चित्तम्
१८९	६	इतिमलावहानि
१९०	१	अथप्रकीर्णकप्रायश्चित्तानि
१९१	४	उष्ट्रयानप्रा०
१९२	१	गुरौतुंशब्दप्रयोगप्रा०
१९३	१	ब्राह्मणयदंडावगूरणादिप्रा०
१९४	१	जलविनावाहिर्भूमौगमनादौप्रा०
१९५	१	नित्यकर्म्मलोपप्रा०
	५	महायज्ञाकरणेप्रा०
१९७	१	अनुदकमूत्रपुरीषकरणमनंतरप्याह
	६	सप्तममासादूर्ध्वंगुर्वणीपातिनिषेधवाक्यम्
१९८	४	शरणागतपरित्यागेप्रा०
१९९	१	चांडालश्रवणेश्रुतिस्मृतिपाठेप्रा०

पृ०	पं०	
१५७	२	पराकव्रतमाहात्म्यम्
	५	वेदाभ्यासफलम्
१५८	१	मासपर्य्यन्तंषोडशप्राणायाममाहात्म्यम्
	६	सुवर्णदानादिफलम्
१५९	१	तिलदानमाहात्म्यम्
	७	सप्तव्याहृतिहोममाहात्म्यम्
१६०	१	गायत्रीजपमाहात्म्यम्
१६१	१	लक्षादिभेदेनगायत्रीजपमाहात्म्यम्
१६२	१	प्राणायामऋग्वेदाभ्यासफलम्
	३	पावमान्यादिमाहात्म्यम्
१६३	७	ब्राह्मणकल्पादिमाहात्म्यम्
	८	इतिहासादिपाठफलम्
१६४	१	मतभेदेनप्राणायाममाहात्म्यम्
	३	मृगारेष्टयादिमाहात्म्यम्
१६५	१	महादेवपूजामाहात्म्यम्
	५	तिलांजलिमाहात्म्यम्
१६६	६	अनादेशेसंवत्सरादिकालभेदेनानुष्ठानप्रकारमाह
१६७	२	जपहोमफलंचतुर्विंशतिमतेन
	९	विष्णुनाममाहात्म्यम्
१६८	३	कृच्छ्रचांद्रायणादिमाहात्म्यम्
१६९	३	उपवासादिमाहात्म्यम्
१७०	३	कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रायणसमुच्चयमाहात्म्यम्
१७१	१	तुलापुरुषगोसेवामाहात्म्यम्
	५	पापानांगुरुलघुभेदेनप्रायश्चित्तस्यगुरुतादि
१७२	१	रौरवयोधाजयादिमाहात्म्यम्
	३	जलतर्प्यणमंत्रः

पृ०	पं०	
१७३	२	विष्णुस्मरणमाहात्म्यम्
१७४	२	अग्निपुराणेसर्वपापहरस्तोत्रम्
१७६	७	महापातकादर्वाचीनेप्रायश्चित्तम्
१७७	१	उपपातकादिप्रायश्चित्तम्
१७८	३	क्षुद्रपापविषयेउपवासादिप्रा०
	५	इतिसाधारणप्रकरणम् ६
१७९	३	अथजातिभ्रंशकराणि
१८०	२	जातिभ्रंशकरप्रा०
१८१	२	कृच्छ्रप्रत्याम्नायः
१८२	१	अथसंकरीकरणनिरूपणानंतरंप्रा०
१८४	७	इतिसंकरीकरणानि
१८५	१	अथापात्रीकरणानितत्प्रायश्चित्तानिच
१८६	११	इत्यपात्रीकरणानि
१८७	१	अथमलावहपापानिरूपणानंतरंतत्प्रायश्चित्तम्
१८९	६	इतिमलावहानि
१९०	१	अथप्रकीर्णकप्रायश्चित्तानि
१९१	४	उष्ट्रयानप्रा०
१९२	१	गुरौतुंशब्दप्रयोगप्रा०
१९३	१	ब्राह्मणायदंडावगूरणादिप्रा०
१९४	१	जलंविनावाहिर्भूमौगमनादौप्रा०
१९५	१	नित्यकर्म्मलोपप्रा०
	५	महायज्ञाकरणेप्रा०
१९७	१	अनुदकमूत्रपुरीषकरणेमुमंतुरप्याह
	६	सप्तममासादूर्ध्वंगुर्विणीपतिनिषेधवाक्यम्
१९८	४	शरणागतपरित्यागेप्रा०
१९९	१	चांडालश्रवणेश्रुतिस्मृतिपाठप्रा०

पृ०	पं०	
	१	सर्पादिरंतरागमनेप्रा०
२००	५	अस्नानेभोजनेप्रा०
२०१	५	पंक्तयांविषमदानेप्रा०
	८	म्लेच्छादिभिःसहसंभाषणेप्रा०
२०२	४	दंडयोग्यानामदंडेप्रा०
	७	अपांक्तेयपंक्तिभोजनेप्रा०
२०३	१	नीलीमध्येगमनेनीलीदंतधावनेप्रा०
२०४	१	कंवलादौनालीधारणेनदोषः
२०५	१	सच्छिद्रसूर्य्यादिदर्शनेप्रा०
		अग्नौपादप्रतापनेब्राह्मणेनक्षत्रियाद्यभि
	३	वादनेचप्राय०
२०६	१	समित्पुष्पादिहस्ताभिवादनेप्रा०
	८	उपवीतंविनाभोजनादौप्रा०
२०७	४	आचमनंविनाभुक्तोत्थानेप्रा०
	६	नित्ययज्ञाद्यकरणेप्रा०
२०८	८	ऋतौभार्य्यामगच्छतःप्रा०
२०९	५	भर्त्तारमगच्छंत्याःस्त्रियेपिदोषः
	७	अनापदिभिक्षाधारणेप्रा०
२१०	१	देवर्षिगोब्राह्मणादिप्रतिष्ठीवनेप्रा०
	३	वाप्यादिभेदनेप्रा०
२११	२	देवताप्रतिमाभंजनेप्रा०
२१२	६	पर्वणिमैथुनेदोषः
२१३	३	उद्गमनेद्विजातिर्दोषः
	६	यज्ञोपवीतनाशेसंस्कारविधिः
२१४	१	स्थावरसरीसृपादीनांवधेप्रा०
	६	अजीर्णादिमतःप्रा०

पृ०	पं०	
२१५	६	गर्भाधानादिसंस्काराकरणेप्रा०
	८	क्षुन्निष्ठीवनादिकरणेप्रा०
२१६	३	संवत्सरंक्रियालोपेप्रा०
२१७	५	अक्रोशनानृतवादिप्रा०
	८	व्रणमध्येकृमिपातेप्रा०
२१८	२	दिवामैथुनेप्रा०
	३	नग्नशब्दार्थःनिषिद्धकाष्ठदंतधावनेप्रा०
२१९	१	ब्रह्मचारिधर्म्मलोपेप्रा०
२२०	७	गृहीतव्रतभंगेप्रा०
	१०	शपथकरणेप्रा०
२२१	६	ब्राह्मणानांवैश्यवृत्त्याजीवनेप्रा०
२२२	३	शूद्रस्यद्विजकर्मकरणेप्रा०
२२३	१	पुंसिमैथुनेगोयानादौमैथुनेचप्रा०
	३	भार्यायाअगम्यत्वमुक्तामैथुनेप्रा०
	९	प्रछर्द्दनविरेचनयोःप्रा०
२२४	२	देवागारशिलादिनागृहकरणेप्रा०
	५	वानप्रस्थयत्योर्व्रतभंगेप्रा०
२२५	१	भिक्षूणामनृतपिशुनवचनेप्रा०
	४	अथमौनव्रतानि
	५	अथोपव्रतानि
२२६	१	अशुचौमूत्रपुरीषादौचापलेप्रा०
	४	भोजनेमौनलोपेप्रा०
	७	असपिंडैः सहरोदनेप्रा०
	९	प्रेतालंकरणेप्रा०
२२७	१	आत्मत्यागिसंस्कारेप्रा०
	९	स्निग्धमनुष्यास्थिस्पर्शेप्रा०

पृ०	पं०	
२२८	२	शूद्रप्रेतानुगमनेब्राह्मणस्यप्रा०
	८	रजस्वलाकन्यारक्षणेप्रा०
२२९	४	श्राद्धदिनेदंतधावनेप्रा०
	६	धनहर्तुःप्रेतकार्याकरणेप्रा०
	९	उद्बंधनमृतानांपाशच्छेदादौप्रा०
२३०	४	अपमृत्युमृतानांक्रियाकरणेप्रा०
२३१	१	ब्रह्मदंडहतानांक्रियाकरणेप्रा०
२३२	२	मृतसंकरजातीनामशौचादिनिषेधः
	८	विषोद्बंधादिमृतस्यसंस्कारनिषेधः
२३३	५	आत्मघातिस्पर्शेप्रा०
२३४	६	पतितानांदाहादिनिषेधः
२३५	२	आहिताग्नेरात्मघातिनःपुनर्दाहविधिः
२३६	६	धर्मार्थमरणायप्रवृत्ताःपुनर्निवृत्तास्तेषांप्रा०
२३७	६	चितिभ्रष्टनार्याःप्रा०
	७	संन्यासभ्रष्टेप्रा०
	९	अथस्पर्शप्रायश्चित्तानि
२३८	७	प्रत्यवसितशब्दार्थः
	९	अनशननिवृत्तानांप्रा०
२३९	२	चांडालष्ठीवनादिस्पर्शेप्रा०
	५	उच्छिष्टस्यचांडालस्पर्शेप्रा०
२४०	१	चांडालोदकस्पर्शेप्रा०
	२	उच्छिष्टानांश्वादिस्पर्शेप्रा०
	५	भुक्तोच्छिष्टानामंत्यजैःसहस्पर्शेप्रा०
२४१	३	चांडालेनसहैकवृक्षारोहणेप्रा०
	६	चांडालोदकपानेप्रा०
२४२	३	मूत्रपुरीषानंतरंश्वादिस्पर्शेप्रा०

पृ०	पं०	
	८	भोजनानंतरंरजस्वलास्पर्शेप्रा०
२४३	४	कृतमूत्रपुरीषानंतरंश्वादिस्पर्शेगायत्रीजपः
	९	उच्छिष्टस्यमद्यादिस्पर्शेप्रा०
२४४	१	चांडालछायास्थितौब्राह्मणस्यप्रा०
	६	बौद्धादिस्पर्शेप्रा०
२४५	१	कामतःश्वादिस्पर्शेप्रा०
	३	मौल्येनशवहाराणांप्रा०
	७	कापालिकस्वरूपम्
२४६	६	एडककुक्कुटादिस्पर्शेप्रा०
	११	कैवर्त्तादिस्पर्शेप्रा०
२४७	१	चांडालादिस्पर्शेवृद्धशातातपः
	९	बालकृच्छ्रस्वरूपम्
२४८	२	अविज्ञातचांडालस्वगृहवासेप्रा०
	६	चतुर्वर्णगृहेरजक्यादिनिवासेप्रा०
२४९	२	व्रणबंधनादौचांडालादिकृतेप्रा०
	७	स्वकार्येचांडालादिपरिष्वंगस्पर्शेप्रा०
	१०	चांडालादिगीतादिश्रवणेप्रा०
२५०	६	चांडालेनसहवृक्षछायावस्थानेप्रा०
२५१	१	अनिष्टगंधाद्याघ्राणेप्रा०
	२	रजस्वलादिदर्शनेप्रा०
	९	पुनरविज्ञातचांडालगृहवासेप्रा०
२५२	९	एतद्विषयेपात्रशुद्धिः
२५३	१	कांस्यभाजनेगंडूषादिनिषेधः
	४	धान्यशुद्धिरपिपूर्वविषये
	८	छलेनपतितस्यगृहवासेप्रा०
२५४	२	बालवृद्धयोर्नर्कदेयम्

पृ०	पं०	
२५५	१	येषांगृहेचांडालस्तस्यशेप्रा ०
२५६	१	चण्डालदर्शनादेःप्रा ०
	६	परिवेषणसमयेउच्छिष्टस्पर्शेप्रा०
२५७	१	गुरोरन्यत्रोच्छिष्टभोजनेप्रा०
	४	पलांडुलशुनादिस्पर्शेप्रा०
२५८	३	उच्छिष्टस्यमद्यादिस्पर्शेप्रा ०
२५९	३	उच्छिष्टस्यपुरीषादिस्पर्शेप्रा ०
२६०	२	नाभेरूर्ध्वंशीवनादिस्पर्शेप्रा ०
२६१	५	अमेध्यादिलिप्तशरीरेप्रा०
	७	शरीरे १२ द्वादशमलाभवंति
२६२	३	मनुष्यास्थ्यादिस्पर्शेप्रा ०
	९	भोजनानंतरनीचस्पर्शेप्रा ०
२६३	२	भुक्तोच्छिष्टस्यचांडालादिस्पर्शेप्रा ०
	११	मलादिदूषितकूपादिजलपानेप्रा ०
२६४	५	प्रसंगाज्जलशुद्धिरप्युच्यते
२६५	४	उपानहादिदूषणघटशतोद्धाररूपशुद्धिः
२६६	१	विण्मूत्रादियुक्तकूपात्सकलजलोद्धारकथनम्
	३	शवादिदूषितकूपाज्जलपानेप्रायश्चित्तम्
२६७	४	मृतपंचनखात्कूपात्सर्वजलोद्धारकथनम्
	६	कुष्ठ्यादिमनुष्यशरीरजरणेशुद्धिप्रकारः
	१०	सर्वजलोद्धारप्रकारः
२६८	१	प्रौढादिषुतडागादिषुदोषाभावकथनम्
	८	जानुदघ्नजलेदोषाभावकथनम्
२६९	२	चांडालोदकभांडजलपानेप्रा ०
	९	प्रसूतानामजादीनांपयोदशरात्रानंतरंशुद्धमितिकथनं
२७०	२	अथरजस्वलायाअस्पृश्यस्पर्शेप्रा०

पृ०	पं०	
२७१	६	वैश्यायाःशूद्रास्पर्शेप्रा०
२७२	१	ब्राह्मणीशूद्रयोरजस्वलयोःपरस्परस्पर्शेप्रा०
२७३	२	रजस्वलायाःपतितादिस्पर्शेप्रा०
	९	त्रिरात्रव्रताशक्तौकांचनदानम्
२७४	८	रजस्वलासूतिकयोःशवादिस्पर्शेप्रा०
२७५	१	रजस्वलाया पंचगव्यपानानंतरमजाघ्राणंकार्य्यम्
	७	चांडालेनसहैकवृक्षारोहणेप्रा०
२७६	६	रजस्वलायारजकादिस्पर्शेप्रा०
२७७	१०	उच्छिष्टद्विजस्पर्शेरजस्वलायाःप्रा०
२७८	१	उच्छिष्टक्षत्रियादिस्पर्शेब्राह्मण्याःप्रा०
२७९	४	मृतसूतकिस्पर्शेतस्याःप्रा०
	१०	रजस्वलायानद्यादिस्नाननिषेधः
२८०	१	अथपरंपरास्पर्शेप्रा०
	९	चांडालेनएकशाखासमारूढायारजस्वलायाःप्रा०
२८१	२	रथ्याकर्दमतोयादिस्पर्शेदोषाभावः
	६	ब्राह्मणस्यचैत्यवृक्षस्पर्शेप्रा०
२८२	१	अथश्वादिस्पर्शेमनुः
२८३	१	नीलीकाष्ठक्षतेविप्रस्यप्रा०
२८४	३	शुनादष्टब्राह्मण्याःप्रा०
	१२	श्वगर्द्दभादिस्पर्शेरजस्वलायाःप्रा०
२८५	१	शुनाघ्रातादिषुशातातपः
	२	व्रणेकृम्युत्पत्तौप्रा०
२८६	६	नाभेरूपारिव्रणेप्रा०
२८७	६	चांडालादिभिर्बलाद्दासीकृतेप्रा०
२८८	१	अथबंदीगृहानिवासपरावृत्तप्रा०

पृ०	पं०	
२८९	१	देशकालाद्यवेक्षणेनप्रायश्चित्तव्यवस्था
२९०	१	पूर्वोक्तमेवप्रवृत्तम्
२९१	८	पापलघुत्वेप्रश्नः
२९२	१	अस्योत्तरम्
२९३	१	चांडालधर्म्मकथनम्
	१०	इतिवर्णाश्रमबाह्यशुद्धिहेतुप्रा०
२९४	१	कालादिविचारेणप्रायश्चित्तव्यवस्था
	८	चांडालादिधूमयंत्रपानविचारः
२९५	९	चांडालादिधूमयंत्रपानप्रा०
२९६	१२	एकादशप्रकरणसूचीसमाप्तिः

षष्टप्रकरणशुद्धिपत्रम्

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	मू०५	स्तार्थं	स्तीर्थं
१६४	टी०५	त्रिर्हांवि	त्रिर्हावि
१६७	मू०१	ष्वंपि	ष्वपि
१६८	मू०२	हहते	दहते
१७०	टी०३	आति	अति
१७२	मू०३	तिष्वद्	तिष्ठेद

पृ०	प	अशुद्ध	शुद्ध
१७३	मू०६	नृश्यति	नश्यति
१७३	मू०७	ष्णोन्	ष्णोर्न
१७३	टी०७	पजया	पूजया
१७४	टी०२	मनकं	मनके
१७४	टी०५	नमस्कर	नमस्कार
१७५	टी०५	अदिशब्दने	अपिशब्दतें
१७५	मू०१	निमज्य	निमज्ज्य
१७६	टी०७	वर्प	वर्ष
१७६	टी०८	औरविच्छेद	औरविनाविच्छेदसे
१७७	टी०६	तियोजोए	तियोजेए
१७८	टी०७	तासि	तीस
१७८	टी०५	तीनों	तिनों
१७८	म०५	जंम्बू	जम्बू
१८४	टी०१	देवें	देवे
१९०	टी०१	व्रके	व्रतके
१९०	टी०७	वेगा	वेगासो
१९२	मू०८	विपम्	विषयम्
१९७	मू०१	कशे	कश
१९९	मू०२	आः	आह
२००	मू०१	तेर	तर
२१०	मू०५	तीयामग्रेत्रुटी०	विष्णोःकर्माणीतितृतीयां
२१४	मू०८	तिष्ट	तिष्टे
२१७	मू०९	तत्मज	तात्मज
२१७	टी०२	व्राह्म	ब्रह्म
२२०	मू०१०	ततर	तरे
२३३	मू०८	कूत्र	कुत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
२३७	मू १	चिशत्त	श्चित्त
२५६	मू ४	स्पृष्टवा	स्पृष्ट्वा

॥ व्रतादिप्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते ॥

पृ०	पं०	प्रतीक	
१५	१	हिरण्येति	हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायासुयातः सवितायास्वग्निया अग्निंगर्भंदधिरे सुवर्णास्तानआपःसंस्योनाभवंतु ॥ १ ॥
१९	७	देवकृतस्येति	देवकृतस्यैनसोवयजनमसि मनुष्यकृतस्यैनसोवयजनमसिपितृकृतस्यैनसोवयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोवयजनमस्येनसऽएनसोवयजनमसि यच्चाहमेनोविद्वांश्चकारयच्चाविद्वांस्तस्यसर्वस्यैनसोवयजनमसि य० सं० अ०८
१९	७	तरत्समिति	तरत्समंदीधावतिधारासुतस्यांधसः तरत्समंदाधावत
६१	२	त्र्यंबकइति	त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिंपुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥
१३०	३	मानस्तोकेति	मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः मानोवीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मंतःसदमित्त्वाहवामहे ॥

॥ व्रतादि प्रकरणेयत्रयत्रमंत्रप्रतीकानिकृतानितत्पूर्त्यर्थंमंत्रसंग्रहोलिख्यते ॥१९

१४०	२	संतेपयांसि	संतेपयांसिसमुयंतुवाजाःसंवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः आप्यायमानोअमृतायसोमदिविश्रवांस्युत्तमानिधिष्व
१४५	११	यतइति	यतइंद्रभयामहेततोनोअभयंकृधि मघवांछग्धितवतन्नऊतिभि र्विद्विषोविमृधोजहि ॥
१४६	१	शन्नइति	शन्नइंद्राग्नीभवतामवोभिःशन्नइंद्रावरुणारातहव्या शमिंद्रासोमासुवितायसंयोःशन्नइंद्रापूषणावाजसातौ ॥
१४६	१	पुनंतुमामिति	पुनंतुमादेवजनाःपुनंतुमनसाधियः पुनंतुविश्वाभूतानिजातवेदःपुनाहिमां
१६६	४	अवतइति	अवतेहेडोवरुणनमोभिरवयज्ञेभिरीमहेहविर्भिःक्षयंनस्मभ्यमसुरप्रचेताराजन्नेनांसिशिश्रथःकृतानि
२१०	५	विष्णोरिति	विष्णोःकर्माणिपश्यतयतोव्रतानिपस्पशे इंद्रस्ययुज्यःसखा ॥
२१५	३	इमंमेति	इमंमेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय त्वामवस्युराचके ॥
	३	उदुत्तममिति	उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमंश्रथायअथावयमादित्यव्रतेतवानागसोअदितयेस्याम ॥
२७०	२	धाम्नोधाम्नइति	धाम्नोधाम्नोराजन्नितोवरुणमुंचनयथास्मते विरोदतोभितप्समिवानाति

॥ दोहा ॥

रामचंद्रकरुणानिधिभक्तलोकउरधार
महाराजरणवीरके सभकारजसुधपार
॥ १ महाराजरणबीरसिहदूसरोंहै हर
नाम इसवलसे शो धनकरे जुपंडत गं
गाराम ॥ २ ॥